जॉयस
मेयर

परमेश्वर
को घनिष्ठता से
जानना

उसके समीप जाना
जैसा आप चाहते हैं।

परमेश्वर को घनिष्ठता से जानना

परमेश्वर को घनिष्ठता से जानना

उसके समीप जाना जैसा आप चाहते हैं।

जॉयस मेयर

JOYCE MEYER
MINISTRIES
Nanakramguda, Hyderabad - 500 008

© 2003 by Joyce Meyer

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form or by any electronic or mechanical means, including information storage and retrieval systems, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who may quote brief passages in a review.

Knowing God *Intimately - Hindi*
First Print - 2009

Printed at
Caxton Offset Pvt. Ltd.
Hyderabad - 500 004

यह पुस्तक पवित्र आत्मा को समर्पित है जो मुझे तैयार करती और अगुवाई करती है और जो मुझे सदा सिखाती रहती है कि मैं कैसे आत्मिकता में बढ़ूँ और परमेश्वर की उपस्थिति में बनी रहूँ ।

विषय सूची

परिचय : क्या इससे अधिक है ?. ix

घनिष्ठ स्तर 1: परमेश्वर की सुस्पष्ट उपस्थिति. 1

1. कुछ खोया सा लगता है. 3
2. हाँ, इससे भी और अधिक. 18
3. परमेश्वर का घर. 35
4. नई वाचा के आधीन जीना. 50

घनिष्ठ स्तर 2: परमेश्वर की परिवर्तन करने वाली सामर्थ. 63

5. "न तो बल से, न शक्ति से, पर मेरी आत्मा के द्वारा". 65
6. पवित्र सहायक. 83
7. परमेश्वर की सात आत्मा. 100
8. अलौकिक राज्य. 128
9. पवित्र आत्मा की भरपूरी को पाना. 150

घनिष्ठ स्तर 3: परमेश्वर की प्रतिबिंबित महिमा. 169

10. "सदा परिपूर्ण रहें" पवित्र आत्मा से. 171
11. पवित्र आत्मा को शोकित मत करो. 186
12. पवित्र आत्मा को न बुझाओ. 200
13. आत्मा के वरदान. 214

घनिष्ठ स्तर 4: परमेश्वर का अनंतकाल का फल. 239
14. हर एक के लिये वरदान. 241
15. आग का बपतिस्मा. 253
16. आत्मा की संगति. 274
17. सबसे अद्भुत!. 284

निष्कर्ष : वेदना निवारक रहस्य. 287

परिचय : क्या इससे अधिक है?

बहुत से मसीही चर्च जाते हैं, और जो सोचते हैं वही करते हैं, वे सभी नियमों का पालन करते हैं और यह सोचकर जीते हैं कि यही मसीही जीवन है; लेकिन अंदर ही अंदर वे विचार करते रहते है, *क्या यही है? क्या यही सब कुछ है?*

मैंने, एक मसीही होकर परमेश्वर की सेवकाई की गतिविधि में ऐसे ही कई वर्ष बीता दिए। मैंने अपने हृदय में महसूस किया कि प्रभु के साथ मेरे संबंध में कुछ खो रहा है, यद्यपि वह क्या है मैं नहीं जानती थी। परमेश्वर ने मेरे लिये बड़े अद्‌भुत कार्य किये, परंतु मेरा जीवन उनके समान निराशाजनक था जिन्हें मैं जानती थी कि वे मसीही नहीं थे। मेरे अपने व्यक्तित्व और जीवन में बहुत समस्याएँ थीं। मैं एक बदलाव देखना चाहती थी, परंतु मैं अपने आप में इतनी कमजोर थी कि मैं कुछ बदलाव नहीं ला सकती थी। मैं विश्वास नहीं कर सकती थी कि मेरे लिये जीवन का अर्थ अस्तित्वहीन था।

अंत में मैंने परमेश्वर से कहा कि मुझे वह सब कुछ दे जिसे मैं खो रही थी; मैंने उससे और अधिक पाने की चाह जीवन में की। मेरी इच्छा और विनती के प्रत्युत्तर में, यद्यपि मैं नहीं जानती थी कि मैं क्या खोज रही थी, परमेश्वर ने उत्तर दिया! मैंने यह सीखा कि परमेश्वर कौन है उसके ज्ञान में बढ़ना और उसके साथ घनिष्ठ संगति की खोज करना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है कि हम उसके उद्देश्य के द्वारा अपने जीवन में आनंदित हों।

अगर मैं बहुत वर्ष पहले परमेश्वर के साथ *प्रतिदिन* संगति करने के महत्व को नहीं सीखी रहती तो आज मैं इस पुस्तक को भी नहीं लिख पाती। और न मैं वर्ल्ड आऊटरीच सेंटर की संस्थापक और निर्देशक होती जिसमें लगभग पाँच सौ समर्पित कर्मचारी यीशु मसीह के सुसमाचार को फैला रहे हैं। प्रतिवर्ष हजारों लोग मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता के रुप में ग्रहण करते है

और हमारे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनो में पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का अनुभव प्राप्त करते हैं।

मेरे प्रकाशकों ने अब तक लाखों पुस्तकों को विकसित किया हैं, इसके अलावा हमारी सेवकाई *लाईफ इन द वर्ड* ने ४३ विदेशी भाषाओं में १.७ लाख से भी अधिक पुस्तकों को छपवाया है। एक वर्ष हमने लगभग ५० लाख से भी अधिक कैसेट्स, टेप्स और पुस्तकें वितरित किये। प्रतिदिन, २.१ अरब से भी अधिक संभावित श्रोता *लाईफ इन द वर्ड* प्रसारण द्वारा जीवन परिवर्तन करने वाली बाइबल की शिक्षाओं को सुनते हैं जो कि २५० से भी अधिक रेडियो प्रसारण केंद्र एवं ३५० से भी अधिक टेलीविज़न प्रसारण केंद्र द्वारा संसार के दो तिहाई तक फैलता है।

प्रतिवर्ष *लाईफ इन द वर्ड* के सहयोग से नये नये चर्च और बाइबल स्कूल का निर्माण होता जा रहा है। नई सेवा जेलखाने में, नर्सिंग होम्स, अनाथालय, भोजन कराने की योजना, समस्या ग्रसित युवा के लिए जो कि हमारी सेवकाई के लिये अच्छे परिणाम हैं जो परमेश्वर ने दिया है। हजारों गवाहियाँ प्रमाणित करती हैं कि जिस परमेश्वर के वचन को हम बाँट रहे हैं उसके द्वारा लोगों का जीवन बदल रहा है।

कोई भी हमारे समान सेवकाई “कैरिस्मैटिक पर्सनालिटी” पर नहीं बनाता है। वर्ल्ड आऊटरीच के पीछे परमेश्वर है, और परमेश्वर को इस सेवकाई को आगे भी चलाना है। परमेश्वर ही है जिसे सारे खर्चों का भुगतान करना है और उन्ही को लोगों के हृदय को स्पर्श करना है; यह किसी खास व्यक्तित्व के कारण नहीं हो रहा है। यदि परमेश्वर हमारी सहायता करना बंद कर दे, तो हम सभी एक ही महीने में सड़क पर आ जायेंगे। हम समझते हैं कि परमेश्वर हमारे जीवन की सबसे *महत्त्वपूर्ण आवश्यकता* है।

हम सभी की शुरुआत एक ही स्थान से परमेश्वर के साथ होती है। जितनी देर हम उसके साथ रहेंगे, उतनी गहराई से हम उसके साथ जीना चाहेंगे। मेरे पति, डेव और मैं जितना हो सके साधारण रहते हैं। यदि परमेश्वर हमें उपयोग कर सकता है, तो वह अपनी सेवा को पूर्ण करने के लिये किसी का भी उपयोग कर सकता है। मैं जानती हूँ कि अगर परमेश्वर का सामर्थी अभिषेक उसकी सच्चाई को सिखाने के लिये मुझ पर नहीं उतरेगा, तो मैं बैठ जाऊँगी और शांत हो जाऊँगी। लोग हजारों में मेरे सम्मेलनो में इसलिये नहीं आते कि किसी विशेष व्यक्ति को टेलीविज़न पर देखें - वे सिर्फ इसलिये आते हैं कि परमेश्वर का अभिषेक मेरे द्वारा आए - उसकी उपस्थिति का प्रकटीकरण खोला जाए-ताकि उनकी जरुरते पूरी हो सके।

यदि जो कुछ मैं बोलती हूँ उसका अभिषेक परमेश्वर न करे, तो सभी लोग सो जायेंगे। सो मैं यह अहसास करती हूँ कि मेरे चतुर वाकपटुता के कारण लोग हमारी सभाओं में नहीं आते; बल्कि संदेश में परमेश्वर के अभिषेक के कारण जो योग्य पात्रों से बहाता है।

परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति उसके सामर्थी अभिषेक को खोलती है ताकि जिस काम के लिये उसने हमें बुलाया है उसकी सहायता से हम पूर्ण कर सकें। वह हम में से प्रत्येक का अभिषेक करता है उन विशेष कार्य के लिये जिसे उसने हमें सौंपा है, चाहे घर चलाना, व्यवसाय या संसार में व्याप्त सेवकाई हो।

दबाव के दर्जे का अंश इस संसार में इतना ज्यादा बढ़ गया है कि हम विश्वास कर ही नहीं सकते इसलिये कि इन बुरे दिनों में, मैं विश्वास करती हूँ कि हमें परमेश्वर की उपस्थिति की आवश्यकता है कि यदि हम किराने के दुकान के अंदर जायें और वहाँ से बाहर आयें भी तो हम शान्त रहें! हम नहीं जान सकते कि जिसका "बुरा दिन" बीत रहा हो वह हम पर बरस पड़े। वे लोग दु:खी होते हैं जिनकी परमेश्वर के साथ संगति व घनिष्ठता पवित्र आत्मा के द्वारा नहीं होती - और दु:खी लोग अपने चारों तरफ रहने वालों के लिये अपने जीवन से उन्हें दु:खी करते हैं।

मैं विश्वास करती हूँ कि जिनका जीवन मसीह की देह में है वे बेहतर से बेहतरीन होने जा रहे हैं, लेकिन जिनका जीवन अब भी इस संसार के बंधन में है वे बदतर से बदतर स्थिति में होंगे एवं निराशा और उदासीनता में डूबते चले जायेंगे। परमेश्वर यशायाह ६०:२ में कहता है "घोर अंधकार हो जायेगा, परंतु मेरे लोगों पर मेरा तेज उदय होगा।" (पदान्वय)। वह चमक हम में बहुत बढ़ जायेगी जब हम उसे हमारे भीतर काम करने देंगे तब वह हमें वैसा पात्र बनायेगा जिससे उसकी महिमा और फैल सके।

परमेश्वर चाहता है कि हम उसे और घनिष्ठता से जानें। उसका वचन हमें सिखाता है कि हम उद्देश्य के साथ उसके अभिषिक्त की उपस्थिति में जा सकते हैं। जब मूसा ने कहा, "हे परमेश्वर, तू मुझे तेरे लोगों को बंधुवाई से छुड़ाने के लिये भेज रहा है, लेकिन तू ने यह नहीं बताया कि मेरे साथ कौन जायेगा।" (पदान्वय), परमेश्वर ने उससे कहा, "मेरी *उपस्थिति* तेरे साथ चलेगी और मैं तुझे *विश्राम* दूँगा।" (निर्गमन ३३:१४)। जब परमेश्वर हमारे साथ रहता है, तब वह सब बातों को आसान करता है। मैं हमेशा परमेश्वर के अभिषेक को "पवित्र विश्राम" कहती हूँ।

इस पुस्तक में, हम पुराने नियम और नये नियम के चार घनिष्ठ स्तर की समानताओं को देखेंगे जो सब विश्वासियों के लिये उपलब्ध है जिसका वर्णन मूसा और इस्राएल की संतान, और यीशु मसीह के अनुयायियों द्वारा किया गया था।

यीशु ने कहा यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य को देख नहीं सकता (यूहन्ना ३:३ देखें)। इसलिये, यह स्पष्ट है, परमेश्वर को घनिष्ठता से जानने का अनुभव तब होता है जब पवित्र आत्मा हमारे अंदर रहती है, जो हमें उद्धार देता हैं। *परमेश्वर ने अभिषेक किया है, जिसने हम पर छाप भी कर दी है और उसकी पवित्र आत्मा को हमारे हृदय में डाला है* (२ कुरिन्थियों १:२१,२२ देखें)। परमेश्वर की इच्छा है कि हम उससे प्रतिदिन की रोटी और बुद्धि माँगे (याकूब १:५ देखें) और तब उसकी आवाज की ओर कान लगायें कि वह हमारी अगुवाई करे। उसने प्रतिज्ञा किया है कि जब हम उसे पुकारेंगे तब वह उत्तर देगा, यह निश्चयता दिलाते हुए, "और जब कभी तुम दहिनी व बाईं ओर मुड़ने लगो, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, 'मार्ग यही है इसी पर चलो।'" (यशायाह ३०:२१)

इस पुस्तक के दूसरे भाग में, हम परमेश्वर के परिवर्तन करनेवाली सामर्थ के दान के विषय अध्ययन करेंगे जिसके विषय में यीशु ने अपने नये-जन्में चेलों से प्रेरितों के काम १:४-५ में कहा था, "परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।" यह जानते हुए कि पवित्र आत्मा हमारे अन्दर है और वह हमारे उद्धार के लिये निश्चयता दिलाता है, परन्तु हम में से कितने लोग अपनी इच्छा में भले काम करने के लिये संघर्ष करते रहेंगे यदि प्रभु यीशु मसीह की पवित्र आत्मा के सामर्थ का दान प्राप्त नहीं करेंगे, जैसा कि प्रेरितों के काम १:८ "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ (योग्यता, कार्यक्षमता एवं बल) पाओगे।" जब पवित्र आत्मा *हम* पर आती है, तब वह हमें योग्यता, कार्यक्षमता और बल देता है ताकि उसके काम को पवित्र विश्राम के साथ कर सकें।

अंत में, हम परमेश्वर की उपस्थिति के प्रमाण का विचार करेंगे जो हमारे जीवन द्वारा प्रतिबिंबित होता है जब हम वह करना सीखते हैं जो कुछ वह हमें करने के लिये कहता है। आज्ञाकारिता, हमें परमेश्वर कौन है? उसकी समझ की गहराई में ले चलता है। १ यूहन्ना २:३ कहता है, "यदि हम उसकी

आज्ञाओं को (नियम, उपदेश) मानेंगे (मन में रखना, ध्यान देना, अभ्यास करना) तो इससे हम जान लेंगे (प्रतिदिन, अनुभव से) कि हम उसे जान गए हैं (पहचानना, समझना, उसके साथ चिर परिचित हो जाना)। जब हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, तो परमेश्वर की भलाई की महिमा जो वह हम पर उँडेलता है औरों के सामने प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जो बड़े बड़े कार्यों वह उनके लिये करना चाहता है।" जब हम उसके वरदानों को हममें और हमारे द्वारा काम करने देते हैं, तब हम दूसरों के लिये आशीष का कारण बनते हैं।

लेकिन इससे अधिक और है, क्योंकि मत्ती ५:८ में यीशु ने कहा, "धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध है, क्योंकि वे परमेश्वर को *देखेंगे*।" (मेरा विशिष्ट उच्चारण)। परमेश्वर हमें हर उन बातों से जो मसीह के योग्य नहीं है शुद्ध करना चाहता है। यदि हम उसकी आग को हमारे जीवन में, स्वागत करते हैं। जिस प्रकार बगीचे का माली सूखी और मरी डाली को काँटता है, उसी प्रकार परमेश्वर हम में फल लाने का काम करता है, यदि हम अपने आपको उसके सामने नम्र करें और पूरी रीति से उस पर आश्रित होकर रहें ताकि वह हमारे लिये कार्य करें।

बाइबल कहती है, "मूसा तो पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था (प्रतिष्ठित, दयालु और कोमल)।" (गिनती १२:३)। मूसा परमेश्वर से आमने सामने बातचीत करता था, यह घनिष्ठ होने को दर्शाता है (निर्गमन ३३:११ देखें)। बाइबल कहती है कि अंतिम भोज के समय में यूहन्ना ने अपना सिर यीशु मसीह के छाती पर रख दिया (यूहन्ना १३:२३ देखें), जो कि और प्रकार से घनिष्ठ होने को बताती है। मूसा और यूहन्ना ने औरों से बढ़कर परमेश्वर को घनिष्ठता से जानने की बड़ी उत्तेजना को बाँटा। तो परमेश्वर के मुख का दर्शन करना उनका प्रतिफल है। जो लोग परमेश्वर की उपस्थिति के लिये याचना करते हैं इस पृथ्वी की बातों से बढ़कर। परमेश्वर का वचन कहता है, "खरे हृदय और प्रसन्न मन से उसकी सेवा करता रहा; क्योंकि यहोवा मन को जाँचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है। यदि तू उसकी खोज में रहे, (उसको पूछना एवं अपने प्रथम और अति आवश्यक बातों को उससे माँगना) तो वह तुझको मिलेगा" (१ इतिहास २८:९)।

इस पुस्तक के द्वारा, हम परमेश्वर के मूल योजना पर पुन:विचार करेंगे जिस प्रकार उत्पत्ति २ अध्याय में परमेश्वर आदम के साथ चला था वैसे ही हमारे साथ चले और मित्र के समान बातचीत करे। हम यह देखेंगे कि किस

प्रकार पाप की उपस्थिति हमारे जीवन में, हमें परमेश्वर से छिपाती है और हम परमेश्वर के समीप में रहने के भाव का अनुसरण करेंगे।

पुरानी वाचा के अनुसार, वह पर्वत चोटी पर, तंबू में और पवित्र स्थान में जहाँ से वह एक पवित्र परदे की आड़ में अपनी सामर्थी उपस्थिति एवं अपने मुख को जिनसे वह प्रेम करता था छिपा कर रख सके। मसीह के लहू द्वारा प्रायश्चित किये बिना हम परमेश्वर की भरपूर उपस्थिति में खड़े नहीं हो सकते।

लेकिन जब मसीह ने हमारे पापों के लिये अंतिम प्रायश्चित कर दिया है, इसलिये अब परमेश्वर ने हमें शीघ्र अपने परमपवित्र स्थान में बुला लिया है, क्योंकि यीशु मसीह ने अपने लहू के बलिदान के द्वारा हमारे सब पाप और लज्जा को धो दिया है। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके और समीप जायें ताकि उसका स्वभाव हमारे लिये और प्रेम से भर जाये। अब हमें किसी परदे की आड़ में रहने की आवश्यकता नहीं है जो परमेश्वर और उसके लोगों को अलग करती थी। अब हम परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संगति का आनन्द उठा सकते हैं।

हमारे जीवन में हमें परमेश्वर की उपस्थिति की जरूरत है; उसके साथ घनिष्ठ संगति की जरुरत है। जिस संसार में हम जी रहे हैं वह हमारे लिये डरावना हो सकता है। अक्सर ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जिनमें चलना कठिन होता है, परन्तु परमेश्वर हमें अपनी पवित्र आत्मा द्वारा तैयार करके हमारी अगुवाई करने के लिये तैयार रहता है यदि हम अपने आप को पवित्र वेदी के रुप में उपलब्ध करायेंगे जिसमें वह रह सके।

वह केवल हमारी सहायता ही करना नहीं चाहता, बल्कि हमारे द्वारा दूसरों की भी सहायता करना चाहता है। मैं विश्वास करती हूँ परमेश्वर ने अपने लोगों को अच्छी रणनीति के साथ संसार में चारों ओर, कमपनियों में, बाजारों में, हर अस्पताल में और स्कूल इत्यादि में रखा है। जिस प्रकार से इस संसार में इन बुरे दिनों में अंधकार घोर होता चला जा रहा है, लेकिन जो लोग सच में परमेश्वर के हैं उन पर परमेश्वर का तेज बहुतायत से चमकेगा। वे लोग खोए हुए लोगों को रास्ता दिखाने वाले होंगे।

आज का दिन है सामान्य लोगों को चमकने के लिये और परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल किये जाने के लिये है जैसे पहले कभी नहीं हुआ। यह संसार मुट्ठी भर प्रचारकों के द्वारा नहीं जीता जा सकता है। हमें बड़ी संख्या में लोगों की सेना की जरूरत है जो अपने आपको पड़ोस में, कार्य-स्थल में, और बाजारों में सेवकाई के लिये उपलब्ध करायें। इसलिये मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि

परमेश्वर को घनिष्ठता के उच्चतम स्तर पर खोंजे जिससे वह यह प्रकट करना चाहता है कि आप उसकी उपस्थिति से भरपूर हो जायें एवं छलकने लगें। केवल आपको परमेश्वर की जरूरत नहीं है, बल्कि उसको आपकी जरूरत है।

आप किसी भी प्रकार से यह विश्वास करते हुए बचाव मत कीजिये कि परमेश्वर मुझे इस्तेमाल नहीं कर सकता। "अंतिम के दिनों में," परमेश्वर कहता है "मैं अपनी आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा और तुम्हारे बेटे और बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। वरन मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उँडेलूँगा और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।" (प्रेरितों के काम २:१७-१८)। यह भविष्यद्वाणी के वचन जो प्रभु की ओर से है आपके और मेरे लिये है।

यहेजकेल ४७ अध्याय में, भविष्यवक्ता यहेजकेल एक दर्शन के बारे में बताया है जिसमें परमेश्वर के भवन से पानी बह रहा हो। मैं विश्वास करती हूँ कि यह पानी परमेश्वर की पवित्र आत्मा को हमारे ऊपर आने को दर्शाता है। पहले जल यहेजकेल के टखनों तक था; फिर घुटनों तक, फिर जल उसके कमर तक पहुँच गया। फिर अतिशीघ्र जल बढ़कर तैरने योग्य हो गया जिसके पार कोई न जा सकता।

यहाँ पर हम परमेश्वर के प्रति समर्पण के चार स्तर का प्रतिनिधित्व करते एक तस्वीर को देखते हैं। कुछ लोग सिर्फ परमेश्वर के समीप टखनों के जल तक ही बसे रहना चाहते हैं। वे अपने पाँव को सतह में रखना चाहते हैं ताकि महसुस करें कि हम पूरे नियत्रंण में हैं। वे अपने आपको उस नदी (परमेश्वर के आत्मा का प्रतिनिधित्व) नियंत्रण में पूरी रीति से न्यौछावर करना नहीं चाहते।

प्रभु विनयपूर्वक हमसे कहता है, "मैं यहाँ हूँ! मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ" (प्रकाशितवाक्य ३:२०)। वह चाहता है कि हम उसकी योजना की भरपूरी का आनंद उठाए। हममें उसकी उपस्थिति-उसका अभिषेक, उसका अनुग्रह, उसकी सामर्थ-चाहिये जिससे हम उसके कामों का आनंद प्रतिदिन उठायें जो हमारे जीवन के लिये अतिआवश्यक है।

परमेश्वर की उपस्थिति के "पहाड़ पर" आप कितना ऊपर चढ़ना चाहते हैं? आप अपने सिर को यीशु के हृदय के कितना समीप रखना चाहते हैं? जीवन के जल की नदी में आप पवित्र आत्मा को अगुवाई करने देना चाहते हैं?

जो लोग परमेश्वर को खोजते, उससे याचना करते, उसकी बाट जोहते हैं वे उसे पायेंगे और अनंत शांति के फल जो समझ से परे है उसका आनंद उठायेंगे (फिलिप्पियों ४:७ देखें)। यदि आप परमेश्वर को देख रहे हैं या उसे जान गए हैं लेकिन उसके साथ गहरे संबंध का अनुभव नहीं है जिसके लिये उसने अपने आपको आपके लिये उपलब्ध कराया, आप उस भरपूरी का अनुभव कर सकते हैं। मैंने इस पुस्तक को आपकी सहायता के लिये लिखा है, ताकि आपको दिखाऊँ जैसा परमेश्वर ने मुझे दिखाया, कैसे उसके साथ गहरा अनुभव, और घनिष्ठ संबंध रख सकते हैं।

जैसे आप इस पुस्तक के अंत तक पढ़ते हैं, मैं परमेश्वर के वचन इफिसियों की पत्री १:१७ को लेकर आपके लिये प्रार्थना कर रही हूँ:

> मैं यह माँगती हूँ कि हमारे परमेश्वर प्रभु यीशु मसीह जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे।

परमेश्वर
को घनिष्ठता से
जानना

घनिष्ठ स्तर

१

परमेश्वर की सुस्पष्ट उपस्थिति

कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें ये दान दे कि तुम उसके (पवित्र) आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवंत होते जाओ। और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में (वास्तव में) बसे (अपना स्थायी घर बनाए) कि तुम प्रेम में जड़ पकड़ कर और नेंव डालकर सब पवित्र लोगों के (परमेश्वर के भक्त लोग, उस प्रेम का अनुभव लेकर) साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ई, और लम्बाई और ऊँचाई और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को (वास्तव में) जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ (अपने अनुभव के द्वारा)। अब जो ऐसा सामर्थी है (अपने कार्य के परिणाम से) कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हममें कार्य करता है, (हमारी उच्च प्रार्थनाओं, विचारों, आशा या स्वप्न) कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे।

- इफिसियों ३:१६-२१

१

कुछ खोया सा लगता है।

उस खालीपन को जिसे मैंने १९७६ में महसूस किया, जब मैं जवान मसीही थी, मैंने एहसास किया कि सही तरीके से *कामों* को करने में क्षणिक आनंद मिला न कि गहराई और संतुष्टि। उन शुरुआति दिनों में परमेश्वर के साथ मेरी मित्रता में, मैं उसे सिर्फ दूर से ही देख सकती थी। जिस प्रकार से इस्राएल की संतान सीनै पर्वत के नीचे ठहरकर परमेश्वर को मूसा से आमने समाने बातें करते हुए पहाड़ की चोटी पर देखे होंगे। वे उसके शब्द को सुनते रहे, लेकिन उनके लिये वह भस्म करनेवाली आग के समान दिखाई दिया।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि, मैंने परमेश्वर को बड़ा और सामर्थी देखा और मैं उसके विधान के बाड़े में अपने आपको सुरक्षित रखना चाहती थी, इसलिये मैं कलीसिया के नियम के अनुसार जीने लगी। मैं हर सभाओं में जाने लगी और हर यथासंभव अवसर पर उसकी सेवा करने के लिये तैयार रही फिर भी मेरा जीवन चिड़चिड़ापन और क्रोधित होने की आदत से भरपूर था जो मेरे सच्चे आनंद को छीन लेता था।

कितने लोग अपनी इच्छापूर्ति की खोज के कारण निराश हुए जैसा मैं हुआ करती थी, क्योंकि वे लोग यह नहीं जानते कि किस *खास स्थान* पर दृष्टि डाले ताकि उससे उनको संतुष्टि हो। इसी प्रकार से बहुत से इस्राएल की सन्तान इसी सन्तुष्टि को आनंद, सुरक्षा और उनके शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति का कारण बनाया, लेकिन इन सब बातों से बढ़कर और भी कुछ अधिक है। मैं बहुत वर्ष पहले मसीही थी, इससे पहले कि मैं सच्चे भीतरी आनंद को समझ पाती कि सबसे महत्वपूर्ण बात जीवन में यह है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में रहकर आनंदित रहे।

एक दिन मैंने भजनकार दाऊद के शब्दों को पढ़ा, जिसने जीवन की एक विशेष आवश्यकता को महसूस किया, जो सब बातों से अधिक महत्वपूर्ण है :

"एक बार मैंने यहोवा से माँगा है, उसी के यत्न में लगा रहूँगा (हठपूर्वक); कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊँ (उसकी उपस्थिति में), जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ (मधुर आकर्षण देने वाली और हर्ष दायक सुन्दरता) और उसके मंदिर में ध्यान किया करूँ।"(भजन संहिता २७:४)।

दाऊद ने इसके मूल्य को समझा और भीतरी आनंद को खोज लिया। परमेश्वर की उपस्थिति और अधिकार के सामर्थ से भरकर, उसने बिना हथियार के एक सिंह और भालू को मार डाला तथा भयानक दानव जो हथियार पहने हुआ था उसे सिर्फ एक गोफन लेकर पाँच पत्थर से उसे मार गिराया। परमेश्वर ने इस अभिषिक्त गीतकार को इस्त्राएल का राजा होने के लिये चुन लिया जबकि यह घराने में सब भाईयों से छोटा था और वे सभी प्रसिद्ध थे। लेकिन उसके भविष्य में मान, सम्मान और जो धन मिला, ऐसी बातों को बहुत से लोग अपने आंतरिक संतुष्टि का कारण मानते हैं।

दाऊद के जीवन में यद्यपि कई ऐसे असाधारण घटनाएँ होती रही फिर भी वह परमेश्वर की उपस्थिति में और अधिक परमेश्वर के पीछे पीछे चलता गया, ये बातें मेरे जीवन में और दृढ़ भरोसा लाई और मुझे लगा कि मुझे और अधिक *लगातार* परमेश्वर को जानना है पहले से बढ़कर। इन बातों के बाद भी, दाऊद ने महसुस किया कि मुझे परमेश्वर को अधिक घनिष्ठता से जानने की आवश्यकता है। मैं विश्वास करती हूँ कि हम में से प्रत्येक को *निरन्तर* परमेश्वर के घनिष्ठ संगति की चाह करनी चाहिये अगर हमें भीतरी आनन्द के अनुभव को हमेशा पाना है तो।

जब मैं भजन संहिता २७:४ पर मनन कर रही थी तब "यत्न में, खोज में" इस शब्द पर मैंने जोर दिया "(एक वर मैंने यहोवा से माँगा है, और उसी के यत्न में लगी रहूँगी (हठपूर्वक); कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में (उसकी उपस्थिति में) रहने पाऊँ)" क्योंकि ये शब्द बाइबल में बार बार आया, लेकिन कुछ लोग इसके अर्थ को पूरी तरह से समझ नहीं पाते। यत्न में लगे रहना या खोजने का अर्थ है चाह करना, आग्रह करना, करना, अनुसरण करना और अपने सारे बल के साथ उसके पीछे जाना।

बहुत से लोग परमेश्वर की अगुवाई चाहते हैं, मगर वे उससे न तो याचना करते और न उसको मानते हैं और फिर जब परमेश्वर अपना वचन देता है तो अपने जीवन की अन्य बातों को हटाना नहीं चाहते हैं। परन्तु दाऊद ने अपने जीवन में सिर्फ परमेश्वर को पाने के लिये *सारी* बातों को पीछे कर दिया।

भजन संहिता २७:४ में जो दाऊद के शब्द, मेरे जीवन का सबसे प्रिय वचन है। जब मैं अपनी आत्मकथा लिखती हूँ तो ऐसे पुस्तकों में इस वचन के साथ मैं अपना हस्ताक्षर भी करती हूँ क्योंकि मैं विश्वास करती हूँ कि बीते कल की अपेक्षा, हम जितने परमेश्वर के घनिष्ठ थे उतना आज और होने की जरूरत है, क्योंकि सिर्फ यही कारण से हम भूखे प्यासे दिलों में सच्ची खुशी प्रदान कर सकते है।

उससे बढ़कर, यदि आप अपने जीवन की किसी खास घटना को याद करें जो आपको ज्यादा संतुष्टि दी तो पल भर के लिये उस पर आप परमेश्वर के साथ विचार करें। लेकिन यदि यह पल वर्षों पहले, या बीते कल के थे तो आप उस बड़े आनंद को खो रहे हैं जो प्रतिदिन परमेश्वर के साथ संगति, पवित्र आत्मा के द्वारा करने से आती है। प्रभु कहता है, "जो मुझ से प्रेम रखते हैं, उनसे मैं भी प्रेम रखता हूँ, और जो मुझको यत्न से तड़के उठकर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं।" (नीतिवचन ८:१७) और, "तुम मुझे ढूँढ़ोंगे और पाओगे भी (महत्वपूर्ण आवश्यकता के समान); क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे" (यिर्मयाह २९:१३)।

कोई बात नहीं कि हम क्या रखते हैं, कहाँ जाते हैं, और क्या करते हैं, परमेश्वर की उपस्थिति के अलावा हमें और कोई सच्ची संतुष्टि नहीं दे सकती। धन, यात्रा, अवकाश, मकान, फर्नीचर, कपड़े, ऊँची पहुँच, शादी, बच्चे और नाना प्रकार की आशीषें निश्चय हमें उत्तेजित कर सकती हैं तथा क्षणिक सुख दे सकती है। सुख की अनुभूति कुछ पलों का है, परन्तु आनंद का अनुभव भीतरी निश्चयता पर निर्भर रहता है।

नये नियम में *आनंद* के लिये यूनानी भाषा में जो अनुवाद किया गया है उसका अर्थ है "शान्त अवस्था का आनंद"। यह जरुरी नहीं है कि हम उल्लासपूर्ण हों, यद्यपि यह हो सकता है, लेकिन शान्त होकर आनन्दित रहना यह और अद्भुत है। मैं नहीं समझती कि इससे बढ़कर कोई और बात संतुष्टि दे सकती है। सुबह उठकर यह सोचना *कि जीवन अच्छा है, परमेश्वर की स्तुति हो, मैं संतुष्ट* हूँ और रात को भी यह कहते हुए मैं *संतुष्ट* हूँ जब तक नींद न आए सच में यह आत्मा की भरपूरी के जीवन को दिखाता है।

हम कभी भी उस संतुष्टि को स्थाई रूप से नहीं पा सकते हैं, क्योंकि हम अपने तरीकों से उस खाली जगह को भरना चाहते है बल्कि हमें उस आंतरिक सन्तुष्टि को खोजना चाहिये जो सिर्फ परमेश्वर के साथ समय व्यतीत करने से प्राप्त होता है। मैं इस बिन्दु पर ज्यादा जोर इसलिये दे रही हूँ क्योंकि मैं विश्वास

करती हूँ कि आज बहुत सारे नया-जन्म पाये और कई ऐसे विश्वासी हैं जो आत्मा से भरे हुए हैं परन्तु अपने सूखे और अधूरे जीवन के विषय में अनजान हैं। मैंने "नामधारी" इसलिये कहा क्योंकि आत्मा में भरे रहने का मतलब है परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण होना तथा प्रतिदिन उसको स्वीकार करना एवं उसके मार्गों की अनुसरण करना है।

परमेश्वर का वचन कहता है, "पर (पवित्र) आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।" (इफिसियों ५:१८) इसका मतलब, सदा, किसी भी समय, प्रतिदिन। हमारा पेट तब तक नहीं भरा रहेगा जब तक हम खाते पीते नहीं रहेंगे। एक अच्छी पुस्तक, एक कक्षा, और किसी के साथ एक बार का वार्तालाप हमारे सोच विचार के जीवन को कभी संतुष्ट नहीं रख सकेगा, और एक बार परमेश्वर के साथ मुलाकात हमें कभी आत्मिक रुप से तृप्ति नहीं दे सकती।

हम प्रतिदिन अपना समय व रूपये खर्च करते हैं, हम सावधानीपूर्वक योजनाएँ बनाते हैं तथा अपने आपको खिलाने एवं बढ़ाने के लिये विस्तार प्रबंध करते हैं। कभी कभी हम आज के ही दिन यह जान लेते हैं कि कल के दिन कहाँ, क्या, कुछ खायेंगे। जिस शारीरिक शारीर को भोजन मिलता है उसी तरह आत्मिक मनुष्य को भी भोजन मिलना चहिए। लेकिन कभी कभार हम यह सोचने लग जाते हैं कि बिना उसके वचन और उसकी उपस्थिति से भरने से परमेश्वर के साथ बड़ा संबंध हो जायेगा।

यीशु ने कहा, "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा" (मत्ती ४:४)। और फिर यूहन्ना ६:३३ में उसने कहा, "क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।" फिर भी हम परमेश्वर की इस प्रतिदिन की रोटी जो जीवन की बहुत ही महत्वपूर्ण आवश्यकता है-हम भूखमरी से अपने आप को मारते हैं।

हमारी सृष्टि हुई इसलिये कि हमारा परमेश्वर के साथ जीवित और अतिमहत्वपूर्ण संबंध हो। परमेश्वर के वचन को पढ़ना एवं उसकी प्रतिज्ञाओं को उससे सुनना हमारे लिये सबसे अलौकिक और अद्भुत बात है। उसके वचन में सदाकाल की सामर्थ है, उसका वचन आत्मा है और जीवन भी (देखें यूहन्ना ६:६३)। यदि हम परमेश्वर को नहीं खोजेंगे और अपनी आत्मा को उसकी सच्चाई से भरने में समय व्यतीत नहीं करेंगे, तो हम कभी भी तृप्त नहीं होंगे। मेरे विचार में सबसे बुरी बात यही होती है जब लोग निचला स्तर का असंतुष्ट आत्मिक जीवन हमेशा जीते हैं।

आप परमेश्वर के और समीप जा सकते है, जैसा आप चाहते हैं।

यह बात स्पष्ट है कि कुछ लोग दूसरों की अपेक्षा परमेश्वर के अधिक समीप हैं। कुछ लोगों की परमेश्वर के साथ घनिष्ठता अति आदरणीय होती है जो कि दूसरे मसीहियों को असंगत लगता है। यह परमेश्वर के "करीबी मित्र" आपस में बाँटते है और उससे ऐसे बातचीत करते हैं जैसे कि वे उसे व्यक्तिगत रूप से जानते हैं। उनके चेहरे में चमक रहती है तथा वे उत्साहपूर्वक यह गवाही देते हैं कि "परमेश्वर ने मुझे ऐसा कहा है..." जबकि मिथ्यावादी और शंकावादी आपस में कुड़कुड़ाते बुड़बुड़ाते हुए कहते है कि, "परमेश्वर ने मुझसे ऐसे कभी भी बात नहीं किया है!"

यह ऐसा क्यों? क्या परमेश्वर पक्षपात करता है? क्या परमेश्वर किसी व्यक्ति का विशेष आदर करता है? नहीं, परमेश्वर का वचन हमें सिखाता है कि, परमेश्वर नहीं परन्तु हमें उनके साथ हामारा घनिष्ठ संबंध बानाना चाहिए। हम सभी के लिये एक खुला हुआ आंमत्रण है "इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट (परमेश्वर के सिंहासन के पास जहाँ पापियों पर आपार दया होती हैं), हियाव बाँधकर चलें, कि हम पर दया हो (हमारी असफलताओं के लिये), और वह अनुग्रह पाएँ, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करें (उचित सहायता और एकदम समय पर सहायता, जब हम जरूरत में हों)" (इब्रानियों ४:१६)। ऐसे समय में, हम में से हर कोई परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के समीप होता हैं जैसे हम चुनते हैं।

निर्गमन १९ अध्याय के आरंभ में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने इस्राएलियों के साथ जिस प्रकार का व्यवहार किया, उसमें से हम परमेश्वर के साथ चार घनिष्ठ स्तर को चुन सकते हैं। मूसा अकेला पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गया, परन्तु परमेश्वर ने तीन स्तर से बांध दिया ताकि वे लोग पहाड़ के समीप न जा सके। यह सीमा बाड़े समतुल्य उनकी परिपक्वता एवं समर्पण का स्तर तुल्य था जिससे वे परमेश्वर का अनुसरण करें।

पहली सीमा पहाड़ के तले थी:

> तब यहोवा ने मूसा से कहा, "सुन, मैं बादल के अंधियारे में होकर तेरे पास आता हूँ, इसलिये कि जब मैं तुझसे बातें करूँ, तब वे लोग सुनें, और सदा तुझ पर विश्वास करें"। और मूसा ने यहोवा से लोगों की बातों का वर्णन किया। तब यहोवा ने मूसा से कहा, लोगों के पास जा और उन्हें आज और कल पवित्र करना, और वे अपने वस्त्र धो लें, और

> वे तीसरे दिन तक तैयार हो जाएँ; क्योंकि तीसरे दिन यहोवा सब लोगों को देखते सीनै पर्वत पर उतर आएगा। और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ा बांध देना, और उनसे कहना: "तुम सचेत रहो कि पर्वत पर न चढ़ो और उसकी सीमा को भी न छूओ; और जो कोई पहाड़ को छूए वह निश्चय मार डाला जाए।" (निर्गमन १९:९-१२)

तब यहोवा ने हारून, नादाब, अबीहू और इस्त्राएलियों के सत्तर पुरनियों को पहाड़ के समीप आकर आराधना करने के लिये बुलाया, यह परमेश्वर के साथ संबंध के दूसरे स्तर को बतलाता है। इससे पहले मूसा यहोशू को अकेला छोड़ता परमेश्वर से मिलने के लिये उसे भी ऊपर चढ़ने के लिये बुलाया गया, यह तीसरा स्तर था। (निर्गमन २४:९-१७) हमें स्पष्टता देती है।

> तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू और इस्त्राएलियों के सत्तर पुरानियों ऊपर गए और इस्त्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया और उसके चरणों के तले नीलमणि का चबूतरा सा कुछ था, जो आकाश के तुल्य ही स्वच्छ था। परन्तु परमेश्वर ने इस्त्राएलियों के प्रधानों पर हाथ न बढ़ाया; तब उन्होंने परमेश्वर का दर्शन किया, और खाया पिया। तब यहोवा ने मूसा से कहा, "पहाड़ पर मेरे पास चढ़, और वहाँ रह; और मैं तुझे पत्थर की पटियाएँ और अपनी लिखी हुई व्यवस्था और आज्ञा दूँगा, कि तू उनको सिखाए।" तब मूसा यहोशू अपने टहलुए समेत परमेश्वर के पर्वत पर चढ़ गया। और पुरनियों से वह यह कह गया, "कि जब तक हम तुम्हारे पास फिर न आएँ तब तक तुम यहीं हमारी बाट जोहते रहो; और सुनो, हारून और हूर तुम्हारे संग हैं; तो यदि किसी का मुकद्मा हो तो उन्हीं के पास जाए।" तब मूसा पर्वत पर चढ़ गया, और बादल ने पर्वत को घेर लिया, तब यहोवा के तेज ने सीनै पर्वत पर निवास किया और वह बादल उस पर छः दिन तक छाया रहा और सातवें दिन यहोवा ने मूसा को बादल के बीच में से पुकारा। इस्त्राएलियों की दृष्टि में यहोवा का तेज पर्वत की चोटी पर प्रचण्ड आग सा देख पड़ता था।

परमेश्वर क्यों कुछ ही लोगों को अपनी उपस्थिति के स्तर में आने देता है, और कुछ को और अधिक समीप आने देता है और कुछ को मूसा के समान उसके मुख का दर्शन करने, आमने सामने आने देता है? निर्गमन ३२ में देखते हैं कि हर समूह ने समर्पण के स्तर को दर्शाया जिससे परमेश्वर के पर्वत पर हम समूह का जो अनुभव था परमेश्वर की घनिष्ठता के स्तर में समान पाया

जाए। हम यह ठान लें कि किस प्रकार उसकी उपस्थिति की गहराई में हम अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा प्रवेश करेंगे जिससे हम अपने जीवन में उसके निर्देशों का पालन करें।

पहले बाड़े पर, परमेश्वर हर एक से कह रहा था, "मैं तुमसे मिलने आ रहा हूँ, लेकिन तुम उतनी दूरी तक मेरी उपस्थिति में आ सकते हो।" और वे परमेश्वर के शब्द को पहाड़ तले सुनकर शांत रहे जब वह मूसा से बातें कर रहा था। वे लोग उस बाड़े से आगे नहीं आये क्योंकि परमेश्वर उनको प्रचण्ड आग सा दिखाई पड़ता था। याद रहे, कि यह उसी समूह के लोग थे जिन्होंने बाद में अपने सोने के गहने को उतारकर सोने का बछड़ा बनवाया जिससे उसकी आराधना करें क्योंकि वे मूसा को जो परमेश्वर के पास गया था देखते देखते थक गये थे। जरा सोंचे उन्होंने अपने बालियों की आराधना की जो परमेश्वर ने उन्हें मिस्त्र से छुड़ाने के समय दिया था। (निर्गमन ३२:१-६)!

हारून जो याजकों में से था और पुरनिये भी थे जो दूसरे स्तर पर चढ़ गए जिन्होंने परमेश्वर के चरण की सुन्दरता का दर्शन किया (निर्गमन २४:९,१० देखें), फिर भी उसने इस्त्राएल की सन्तान के लिये अपवित्र बलिदान के लिये वेदी तैयार करने में सहायता किये। उसके बेटे नादाब और अबीहू जिन्होंने परमेश्वर का सामना किया, आखिरकार उनकी मृत्यु हो गई जिन्होंने परमेश्वर की आज्ञा बिना ऊपरी आग लाए। (गिनती ३:१)

यहोशू, जो मूसा का टहलूआ था, वह परमेश्वर की घनिष्ठता के तीसरे स्तर पर चढ़ गया जहाँ पर वह देखता था कि मूसा परमेश्वर की उपस्थिति के बादल के अंदर प्रवेश किया करता था। यहाँ पर हम यहोशू को नम्रता और समर्पण के साथ परमेश्वर की सेवा करते हुए देखते हैं साथ में मूसा की भी ईमानदारी से मदद करता है जब कभी भी उसको उसकी जरूरत पड़ती थी। जब यहोशू के पास मूसा का कोई संदेश ले जाने के लिये नहीं रहता था, तब वह प्रार्थना करते हुए पाया जाता था (निर्गमन ३३:१०-११)। वह बारह भेदियों में से एक था जो प्रतिज्ञा के देश की खबर लेने गये थे, और केवल दो ही थे जो अच्छी खबर लाये और विश्वास किये और कहा कि हमारा परमेश्वर सामर्थी है कि उस देश को हमें दे देगा (गिनती १३ देखें)। जब समय आया तो परमेश्वर ने अपने लोगों को प्रतिज्ञा के देश में पहुँचाने के लिये मूसा के स्थान पर यहोशू को चुना।

संबंध के लिये समर्पण की आवश्यकता है

सिर्फ मूसा ही है जो परमेश्वर की घनिष्ठ उपस्थिति में पर्वत की चोटी पर चढ़ गया। पवित्रशास्त्र हमें बताती है कि परमेश्वर की आज्ञा को मानने के लिये

मूसा ने बड़ा व्यक्तिगत त्याग किया एवं जोखिम उठाया। उसने अपने व्यक्तिगत लाभ की बातों को नकार दिया जिससे परमेश्वर के लोग आशीषित हो जाएँ। जब उसने यह जान लिया कि वह मिस्त्री नहीं बल्कि इस्त्राएली, है तब उसने फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इंकार किया (इब्रानियों ११:२४-२९)। उसके लिये यह कितना महत्वपूर्ण निर्णय था, जबकि उसका फिरौन के घर पालन-पोषण हुआ और सयाना हो गया। पृथ्वी की सब धन संपत्ति से भरपूर था। दूसरी तरफ, इस्त्राएली लोग जो दासत्व में जी रहे थे और जिन सुख सुविधाओं में मूसा पला पढ़ा, उन से वे सब वंचित थे।

इब्रानियों ११:२५ में मूसा के बारे में कहा गया है; "इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दु:ख भोगना (कठिनाईयों को सहना) और उत्तम समझा।" यह एक सामर्थी वचन है! मूसा अपने जीवन को सुख में काट सकता था, परन्तु वह कुछ और अधिक खोजने में लगा रहा। कोई भी ऐसी कीमत नहीं चुकाया होगा।

मूसा अभिलाषा और स्वार्थता की परीक्षा में सफल हो गया। वह परमेश्वर के साथ किसी और वस्तु से बढ़कर अत्याधिक घनिष्ठ होना चाहता था। मूसा परमेश्वर के साथ चालीस दिन और चालीस रात बिताया और उसे दस आज्ञाएँ मिलीं। परमेश्वर मूसा के साथ आमने सामने बातें करता था, जिस प्रकार से एक मित्र दूसरे मित्र से बातें करते हैं (निर्गमन ३३:११)। परमेश्वर की महिमा जो प्रगट हुई थी वह मूसा के चेहरे से किरण के समान निकल रही थी जिसके कारण से मूसा को परदा डालने की जरूरत पड़ती थी नहीं तो लोग अन्धे हो जाते थे (निर्गमन ३४:३०-३५)।

जो लोग यीशु को जानते हैं उनमें यह चार घनिष्ठता के स्तर पाये जाते हैं। हम जानते हैं कि यीशु ने सत्तर चेलों को ठहराया कि उसके जाने से पहले वे लोग नगर नगर जाकर सेवा करें (लूका १०:१ देखें)। और उन सत्तर चेलों में से यीशु ने बारह चेलों को चुनकर अलग कर लिया ताकि उसके साथ अति घनिष्ठता का स्तर कायम रख सके और उन बारहों में से उसने तीन चेलों को अलग किया पतरस, याकूब और यूहन्ना जिनको यीशु ने विभिन्न परिस्थितियों में से ले गया जिन में से कोई और नहीं जा सकता था। लेकिन इन तीनों में से जो यीशु के अति घनिष्ठ थे, केवल यूहन्ना ने आरामदायक महसुस किया कि यीशु की छाती पर अपना सिर रखकर परमेश्वर के राज्य के विषय में जब प्रभु शिक्षा देकर बातें कर रहा था, सुनें।

यीशु के सत्तर जान पहचान वाले थे, बारह चेले, तीन करीब के मित्र और एक ऐसा था जो भाई के समान प्रेम करता था। यीशु उन सभी से प्रेम करता था, और वे यीशु से प्रेम करते थे लेकिन कोई भी उसके साथ उसी समान स्तर का समर्पण करना नहीं चाहता था जैसे लोग जिन्होंने उससे अत्याधिक घनिष्ठ संबंध रख लिया था।

हर कोई भी कीमत चुकाना नहीं चाहता क्योंकि यह परमेश्वर के समीप ले जाती है। कोई भी ऐसे ही उसके साथ समय व्यतीत करना नहीं चाहता क्योंकि यह भी प्रभु के समीप ले जाती है। परमेश्वर हमारे पूरे समय को नहीं माँगता है। वह चाहता है कि आत्मिक क्रियाकलाप के साथ साथ और भी हमारे बाकी कामों को करें। उसने हमें शरीर, प्राण और आत्मा से सजाया है और वह हमसे अपेक्षा करता है कि हम हमारे हर अंग की देखभाल करें।

हमारे शरीर के व्यायाम में भी समय और मेहनत लगता है। हमें हमारे प्राण की देखभाल करने की जरूरत है। हमें हमारी भावनाओं की भी कदर करनी है, तथा मनोरंजन की भी जरूरत है, और हमें दूसरे लोगों के साथ संगति करने की जरूरत है। इसी प्रकार, आत्मिक स्वभाव हो जाता है जिसे हमें ध्यान देने की जरूरत है। यदि हमारा कोई भी भाग असन्तुलित होता है, तब हमारा आत्मिक क्षेत्र कष्टदायक होता है और फिर हमारा जीवन शीघ्रता से एक तरफ होता चला जाता है और हर चीज़ बिगड़ती चली जाती हैं।

मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर के साथ घनिष्ठता की चर्चा समय के साथ मतलब रखती है। हम हमेशा कहते रहते हैं कि हमारे पास परमेश्वर को खोजने के लिये समय नहीं है, लेकिन हम उन सब कामों के लिये जो हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण है उन के लिये हम समय निकाल ही लेते हैं। "मैं व्यस्त हूँ" यह एक बहाना हो सकता है। हमें प्रतिदिन सारी रूकावटों के विरुद्ध युद्ध करना है ताकि हमारा समय बचे और हम परमेश्वर को खोजने में लग जायें। वह हमारे जीवन की सबसे बड़ी जरूरत है, तो क्यों न हमारे जीवन के समय में उसको महत्वपूर्ण स्थान मिल सके? शायद यह इसलिये होता है क्योंकि जब हम आत्मिक रूप से पूँजी लगाना चाहते हैं, तब हम क्षणिक संतुष्टि को पाना चाहते हैं। लेकिन परमेश्वर को खोजने का अर्थ है निरन्तर उसकी ओर ध्यान से देखना।

हम तत्कालिक संतुष्टि का अनुभव नहीं कर सकते। कटनी के पहले हमें बोने की आवश्यकता है। बदले में पाने के लिये हमें पूँजी लगाने की आवश्यकता है; दूसरे शब्दों में कुछ पाने के लिये, कुछ खोना पड़ता है।

परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का अनुभव करने के लिये हमें समय देने की आवश्यकता है।

परमेश्वर के साथ समय बिताना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है

हमें हमारे शरीर के साथ सख्ती से बर्ताव करना चाहिये ताकि हम हमारी आत्मा की निष्क्रियता को रोक सकें जो हमें परमेश्वर के ज्ञान को पाकर बढ़ने से रोक रखती है। जैसे और कई निर्णय हम लेते हैं वैसे ही परमेश्वर के साथ समय बिताने का निर्णय भी गंभीर है।

परमेश्वर का वचन कहता है, "मेरे दर्शन के खोजी हो। (पूछना और चाहना मेरी उपस्थिति तेरी महत्वपूर्ण आवश्यकता) इसलिये मेरा मन तुझ से कहता है, "हे यहोवा तेरे दर्शन (तेरी उपस्थिति) का मैं खोजी रहूँगा" (आवश्यकता पर और तेरे वचन के अधिकार पर)।" (भजन संहिता २७:८)। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है, "तुम मुझे ढूँढ़ोंगे और पाओगे भी (महत्वपूर्ण आवश्यकता के समान) क्योंकि तुम अपने संपूर्ण मन से मेरे पास आओगे।" (यिर्मयाह २९:१३)। मैं इस वचन से प्यार करती हूँ - यह हमें बताती है कि हमारे जीवन में परमेश्वर की कितनी बड़ी आवश्यकता है।

मेरे अंकल जो प्रभु में सो गये हैं, उनके हृदय में Pacemaker (गति-निर्धारिक) लगा था जिसे हर दिन चार्ज करना पड़ता था जिससे वे बहुत दिन जीवित रहते थे। एक शनिवार के दिन डेव और मैं अंकल आँटी को रात्रिकाल के भोजन के लिये आमंत्रित किया, मगर वे आ न सके क्योंकि उसी दिन अंकल को Pacemaker (गति-निर्धारिक) गति निर्धारिक को चार्ज करना पड़ता था।

पहले मैं यह समझ नहीं पायी थी कि क्यों आँटी ने आने से मना कर दिया। तब मैंने कहा, "कल भी तो Pacemaker (गति निर्धारिक) को चार्ज किया जा सकता है।"

उन्होंने कहा, "जॉयस, वो जिन्दा नहीं रहेंगे अगर आज अपने Pacemaker (गति निर्धारिक) को चार्ज नहीं करेंगे तो।"

अगर मेरे अंकल समय निकालकर अपने Pacemaker (गति निर्धारिक) को फिर से चार्ज नहीं करेंगे, तो उनके दिल की धड़कन रूक जायेगी। यह उनके लिये *अत्यंत* आवश्यक था कि जो समय निर्धारण उस मशीन के साथ उनका रहा उसे वे बरकरार बनाये रखें जिससे उनकी लाईफ लाईन बनी रहे। यदि हम भी इस प्रकार से परमेश्वर के साथ अपने समय को बिताकर चलने लगें तो

हमारे हृदय का गति निर्धारक पुनः चार्ज हो जायेगा, यह हमारे लिये निश्चित और महत्वपूर्ण है कि हम इसे करने के लिये समय निकाले। यदि हम हमारे समय निर्धारण को परमेश्वर के साथ सही रखेंगे जैसा हम अपने और कारोबार के साथ करते हैं, तो हम अच्छी हालत में होंगे। लेकिन जब अच्छी बातें होने लगती है, तो हम तुरंत और बातों में लग जाते हैं।

यदि मुझे मेरे गुर्दे की बीमारी के लिये सप्ताह में दो बार डायलिसिस के लिये अस्पताल में ठीक सुबह ८.०० बजे जाने की जरूरत पड़ती है, तो मैं निश्चय और कोई दूसरे कारोबार में नहीं लगूँगी वह चाहे कितना महत्वपूर्ण क्यों न हो। मैं यह जानती हूँ कि मेरा जीवन मेरी नियुक्ति पर आश्रित है। इसी तरीके से हम परमेश्वर के साथ समय बिताने के लिये देखना चाहिये। हमारे जीवन का स्वभाव बहुतायत से प्रभावित होता है जब हम परमेश्वर के साथ समय बिताने लग जाते हैं, और हमारे दिनचर्या में इसका एक महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिये।

हम सोचते हैं कि परमेश्वर तो हमेशा उपलब्ध रहता है इसलिये हम उसके साथ बाद में भी समय बिता सकते हैं, इसलिये हम किसी ऐसे दूसरे काम में जो अति आवश्यक लगता है उसे चुन लेते हैं, इसके बदले में कि हम हमारे जीवन में परमेश्वर को मुख्य स्थान दें। यदि हम परमेश्वर के साथ प्राथमिक समय को बितायेंगे, तो हमारे पास हमेशा अत्यावश्यक काम नहीं रहेंगे जो हमारे समय को चुरा लेती है। हमें हमारे समय को प्रार्थना करके बचा लेना चाहिये।

जब आप परमेश्वर की उपस्थिति में ठहरते हैं, यद्यपि आप नहीं चाह रहे होते हैं तब भी आप कुछ न कुछ नया सीख रहे होते हैं, आप तब भी अपने जीवन की अच्छी कटनी के लिये अच्छा बीज बोते रहते हैं। स्थिरता के साथ आप इस बिंदु पर पहुँच जायेंगे जिससे आप परमेश्वर के वचन को अत्यधिक रूप से समझने लग जायेंगे, जहाँ आपकी परमेश्वर के साथ बड़ी संगति होगी, जहां आप उससे बातें करेंगे और वह आपसे बातें करेगा। आप उसकी उपस्थिति का एहसास करेंगे और फिर आपके जीवन में परिवर्तन होना शुरू हो जायेगा जो आपको चकित कर देगा। आशीषों का पीछा करने में समय बर्बाद न करें। परमेश्वर का पीछा करें, तब आशीषें आपका पीछा करेंगी।

परमेश्वर की आशीषें उनके साथ परिपक्वता के स्तर के आधार पर खोली जाती है। जिस प्रकार से यूहन्ना की तीसरी पत्री १:२ में लिखा है, "हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे और भला चंगा रहे।"

परिपक्वता हमारे प्रतिदिन के जीवन शैली और अपने परिवार और मित्रों के साथ हमारा व्यवहार से दिखता है। सच्ची आत्मिकता सिर्फ रविवार सुबह चर्च में ही नहीं, बल्कि पुरे सप्ताह भर जो हम करते हैं जिसे परमेश्वर करने के लिये कहता है चाहे हमें अच्छा लगे या न लगे उन सब बातों में सच्ची आत्मिकता दिखनी चाहिये। हमारी परिपक्वता की परख अनुभवी लोगों के द्वारा होती है जो हमारे अंदर की दुर्बलता को निकालने के लिये सहायक होते हैं।

जब आप परमेश्वर के साथ समय बिताते हैं, हर कोई जानता है। आप शांत होते जाते हैं, और हर बात आपके लिये आसान होती जाती हैं, और आप अपनी भावनाओं के ऊपर नियंत्रण जल्दी नहीं खोते हैं। आपका धीरज बढ़ता है, तथा आपका मन यह समझ लेता है कि क्या परमेश्वर को पसंद है और क्या नहीं। जिस प्रकार किसी मित्र के साथ, उसी प्रकार से जब हम परमेश्वर के साथ अत्याधिक समय बिताया करते हैं, तब हम उसी के समान अत्याधिक बनते जाते हैं।

परमेश्वर के साथ समय बिताना आपको अपने प्रेम के प्रति संवेदनशील बनाता है ताकि आप भी जाने और आपके द्वारा दूसरे भी जाने। आपका विवेक आपको उसकी उपस्थिति के विषय में सचेत करता है जब किसी से आप अनुचित रीति से बात कर रहे होते हैं। आपका हृदय शोकित होता है जब वह शोकित होता है, और तुरन्त आप प्रार्थना करने लगते हैं, "हे परमेश्वर, मैं दुखित हूँ कृपया मुझे क्षमा करें।" माफी माँगने की भावना आपके हृदय में भर जाती है, उस व्यक्ति के प्रति जिसको आपने ठोकर खिलाया है। आप तुरन्त यह कहने लगते हैं, "मुझे माफ करें, मेरा इरादा आपकी भावनाओं को चोट पहुँचाने का नहीं था।" यह सारी बातें कितनी मुश्किल होती हैं।

आपके हृदय की इच्छा और जिस तरीके से आप दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं यह आपके बारे में और परमेश्वर के साथ आपका संबंध प्रकट करता है और बातों से बढ़कर। है यह प्रकट करता है। मूसा ने परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का आनंद उठाया और उसने चाहा कि परमेश्वर अपने लोगों को आशीषित करे। जब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मेरे अनुग्रह की दृष्टि तुझ पर बनी हुई है (निर्गमन ३३:१२ देखें), मूसा ने समझ लिया कि अब जो कुछ उसके हृदय में है वह सब माँग सकता है। (अगर आप मूसा के स्थान पर होते तो आप क्या माँगते?)

मूसा ने परमेश्वर से कहा, "और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो, तो मुझे अपनी गति समझा दे, जिससे मैं तेरा ज्ञान पाऊँ (प्रगतिशील, अत्यधिक

गहराई और घनिष्ठ परिचय, गोचर होना, पहचानने लगना, दृढ़तापूर्वक एवं स्पष्टता से अत्याधिक समझना) तब तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। फिर (यहोवा, कर) इसकी भी सुधि कर कि यह जाति तेरी प्रजा है।" (निर्गमन ३३:१३) मूसा ने पहले से परमेश्वर के महान ऐतिहासिक आश्चर्यकर्मों को देखा था, फिर भी वह परमेश्वर के मार्गो के बारे में और अत्याधिक सीखना चाहता था ताकि यहोवा का अनुग्रह उस पर बना रहे। और उसने स्मरण करके परमेश्वर से कहा कि जिस प्रजा को तूने मुझे दिया उसे आशीष देना।

परमेश्वर के साथ एक ही स्तर की घनिष्ठता में बने रहना हमें संतुष्टि नहीं देगी। यहाँ तीन खास रूकावटें हैं जो हमें परमेश्वर के साथ समय व्यतीत करने से रोकती है और वे हैं, मनोरंजन के लिये हमारी इच्छा, हमारा काम और लोगों के द्वारा हमारा प्रयोजन। यह सब अपृथक है - और जरूरी भी - इसलिये हमें उच्च-कोटि का निर्णय लेना जरूरी है ताकि किसी और बात से बढ़कर परमेश्वर की चाह रहे और उसको खोजने के लिये समय निकालें ताकि संतुलन बनाये रखना भी सीखें।

कहीं ऐसे जगह में होना हमारे लिये भयानक हो सकता हैं, जहाँ से कोई रास्ता न निकले। मैं आपकी मदद करना चाहूँगी जहाँ आपको जाना है। लोग पुस्तक पढ़ते हैं, सेमिनार में जाते हैं, सीखते हैं कि कैसे सफल जीवन जीयें, पदोन्नति पायें, रिश्तों का आनन्द उठायें। परमेश्वर के पास हर आवश्यकता का जवाब है और हमें उसके साथ सहयोग करने की आवश्यकता है। परमेश्वर आपको आपके पहुँच से परे उस काम को करने के लिये कभी भी नहीं कहेगा जिसे आप नहीं कर सकते - वह आपकी सहमति चाहता है और तब वह अपना काम करेगा।

परमेश्वर पर पूर्ण भरोसा रखें

मैं स्मरण करती हूँ जब प्रभु ने मुझे मेरे काम को छोड़कर उसके पीछे आने के लिये कहा, जहाँ पर मैं अपने पति के बराबरी में रूपये कमा लेती थी। उससे बढ़कर मैं वहाँ पर "बाँस" थी, इसलिये मुझे बहुत से लाभ मिलते थे क्योंकि मेरा ऊँचा पद था। लेकिन परमेश्वर ने मेरे साथ व्यवहार किया और कहा, "तुझे इन सब बातों को छोड़ना है, घर जा और मेरी सेवकाई के लिये तैयारी कर।"

नौकरी के बाहर, मैं गृह-स्वामिनी, तीन बच्चों की माँ, फेन्टन मिसौरी में हमारा घर। मैं यह कैसे निश्चय जानूँ कि मैं परमेश्वर की सुन रही हूँ?

परमेश्वर ने मुझसे बातचीत किया, पुनः परमेश्वर ने मुझसे बातचीत किया, लेकिन मैं अपने नौकरी को छोड़ने के लिये डरती रही। अंत में मैंने परमेश्वर के सामने एक शर्त रख दी और कहा, "मैं तुझसे यह कहना चाहती हूँ कि मैं पूर्णकालिक नौकरी नहीं करूँगी, बल्कि अंशकालिक नौकरी करूँगी।"

फिर से मैं एक कम्पनी में अंशकालिक नौकरी के लिये चली गई क्योंकि मैं परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखने से डरती थी। डेव और मेरी पहले जैसे पर्याप्त आमदनी अब नहीं होती थी लेकिन इस पर भी मैंने पाया कि एक छोटी सी रकम के द्वारा हम जी सकते थे। हमें सारे खर्चे देखकर चलाने पड़ते थे, फिर भी हम अपना बिल वगैरह सब चुकता कर डालते थे-और सब कुछ मेरे साथ ठीक था। मुझे यह योजना अच्छी लगी परन्तु यह परमेश्वर की योजना नहीं थी।

मैंने यह सीखा कि कभी भी परमेश्वर किसी के साथ "सौदा" नहीं करता है, और अंत में मुझे फटकार दिया! अब तक मेरे नौकरी के स्थल पर मुझे कोई नहीं फटकारा था और न उससे पहले कभी। मैं हमेशा जिम्मेदार थी। मैं दूसरों को फटकारती थी, और आज मुझे फटकारा जा रहा था। मेरी नौकरी खोने पश्चात, मैं वहाँ थी जहाँ परमेश्वर चाहता था - उस पर पूरी रीति से आश्रित होकर।

जब मेरे पास कोई भी नौकरी नहीं थी तब परमेश्वर ने मुझे सिखाया कि छोटी छोटी वस्तुओं के लिये कैसे उस पर भरोसा रखूँ जैसे कि मौजे, जाँघिया, छोटी तवा, तौलिया और मेरे बच्चों के लिये टेनिस जूतों की जरूरत थी। यह सिलसिला लगातार ६ वर्ष तक चलता रहा और इन वर्षों में परमेश्वर ने अपनी विश्वासयोग्यता के बारे में मुझे बहुत सिखाया। अभी डेव और मैं परमेश्वर पर उच्च स्तर पर भरोसा रखते हैं ताकि हम सेवकाई की जरूरत को पूरा कर सकें। यदि मैं उन परख और विश्वास के खिंचाव के वर्षों के दौर से नहीं गुज़री होती तो, मैं आज इस मुकाम पर खड़ी नहीं होती।

बहुत से लोग अपने परख के समय में आशा छोड़ देते हैं। वे अपने परख में सफल नहीं हुए, इसलिये वे जीवन भर उसी पहाड़ के बाहर ही बाहर घुमते रहे (व्यवस्थाविवरण २:३)। इस समय आपको समझ में नहीं आएगा कि आप किस दौर से गुजर रहे हैं, लेकिन यदि आप आशा नहीं छोड़ेंगे, तो बाद में उसके उद्देश्य को समझ सकेंगे।

मैं आपको आपकी नौकरी छोड़कर सेवकाई की तैयारी करने के लिए नहीं कह रही हूँ। मैं उस घटना को सिर्फ इसलिये बता रही हूँ कि मैं और मेरे पति

ऐसे ही परमेश्वर की सेवकाई में नहीं आ गये और ऐसे ही हजारों लोग इस संसार भर की वृहद सेवकाई में नहीं जुड़ गये। बाइबल कहती है यीशु दुःख और यातना को सह लिया तब ही उसे महायाजक का पद मिला। और यह सब बातें यीशु को उसकी सेवकाई में सहायता दी (इब्रानियों ५:५-१० देखें)।

परमेश्वर ने मुझे मेरी नौकरी छोड़ने के लिये कहा ताकि मुझे जो कुछ जरूरत होती थी उस पर मैं भरोसा रखना सीखूँ, इस अनुभव को मैंने पाया। कृपया आप अपनी नौकरी वगैरह छोड़कर शरीर के अनुसार चलने की कोशिश न करें। परमेश्वर बहुत से लोगों को जो कुछ वे कर रहे हैं छोड़ने के लिये कभी नहीं कहता, लेकिन वह मुझे सिखाना चाहता था कि विश्वास के द्वारा जीना क्या है क्योंकि वह यह जानता है कि डेव और मुझे इस समय परमेश्वर पर विश्वास करना था। सिर्फ अनुभव ही है जो हमें प्रतिदिन के विश्वास के लिये सज्जित कर सकता है हम जिस काम को करने के लिये परमेश्वर ने बुलाया है उसमें लगे रहें।

परमेश्वर के साथ मेरे प्रारंभ के दिनों में, उसको जानने की मेरी तीव्र इच्छा इस प्रकार की प्रार्थना जीवन से हुई जिसे प्रोत्साहन के तौर पर आपको भी करने के लिये कहूँगी अगर आप परमेश्वर के अत्याधिक भूखे प्यासे हैं :

> *परमेश्वर, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हुई है, तो मुझे अपना मार्ग दिखा। मैं तेरे बारे में सोचना चाहता हूँ, और तेरे समान बनना चाहता हूँ। मैं तुझको और तेरे पुनरुत्थान की सामर्थ को जानना चाहता हूँ। परमेश्वर, मेरी मदद कर कि मैं आत्मा के फल के अनुसार चल सकूँ। मेरी सहायता कर कि मैं लोगों के साथ बुरा व्यवहार न कर सकूँ। मेरी मदद कर कि जहाँ भी मैं जाऊँ वहाँ मैं आशीष का कारण बनूँ।*

मैंने निर्णय किया कि *यदि कोई परमेश्वर से अत्याधिक पा सकता है तो मैं ही अत्याधिक पा सकती हूँ।*

२

हाँ, इससे भी और अधिक

एक शुक्रवार की सुबह फरवरी १९७६ में, जब मैं अपनी गाड़ी चलाकर नौकरी के लिये जा रही थी, तब मैं बहुत निराश थी। नौकरी में जाने से पहले मेरे पति और मेरा झगड़ा हो गया, जो हमारे बीच में हमेशा हुआ करता था।

जो कुछ चर्च में कहा जाता था वह सब मैं किया करती थी। मैं हर कोशिश किया करती थी कि मैं अच्छा काम करूँ जिससे पवित्र शास्त्र में जो प्रतिज्ञा की गई है उसके द्वारा मेरे जीवन में शांति और आनंद आ जाये। लेकिन, इसके बदले में मैंने दिल को तोड़नेवाली बातें पाई और सब कुछ बिगड़ता जा रहा था।

डेव और मैं, हम दोनों चर्च के कामों में जुटे रहे। वह बड़े पद पर थे और मैं चर्च बोर्ड की सदस्य थी-उस समय की पहली और केवल एक ही महिला थी बोर्ड में सेवा देने के लिये। चर्च के कारोबार में निर्णय लेना एक अत्यंत निराशाजनक काम है क्योंकि यहाँ का कारोबार अनियंत्रित रहता है। मैं हमेशा से इसके लिये बैठक लिया करती थी चाहे सिर्फ एक, महत्वहीन विषय ही क्यों न हो।

डेव और मैं, हम दोनों सुसमाचार प्रचार समिति में थे, एक सप्ताह तक रात में हम दोनों घर-घर जाकर यीशु के बारे में बताया करते थे। हमारा जीवन चर्च के कारोबार में लग गया। हमारे बच्चे वहाँ पर स्कूल जाने लगे। हम वहाँ के सामूहिक क्लब, स्पोर्टस टीम में जुड़ गये तथा चर्च के रात्रिकाल भोजन में भी शामिल होने लगे। मैं सोचती थी कि हमारे पास अच्छे मित्र हैं परन्तु जल्द ही मालूम हो गया कि सब कुछ उल्टा है।

मैं सोचती थी कि जो मैं कर रही हूँ वह परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार कर रही हूँ, मगर मैंने यह महसुस किया कि मेरे जीवन में अभी भी परिवर्तन की आवश्यकता है, लेकिन मैं यह स्पष्ट रूप से नहीं जानती थी वह क्या है। मैं खोजती रहती थी परन्तु मैं यह नहीं जानती थी कि मैं क्या खोज रही थी।

उस सुबह मैं बड़े पराजय और निराशा के साथ परमेश्वर को यह कहते हुए पुकार उठी, अब मैं इन जटिल परिस्थितियों में और आगे नहीं बढ़ सकती। मैं याद करती हूँ कि मैंने वह क्या कहा था, "हे परमेश्वर, कुछ तो खोया हुआ है। मैं नहीं जानती हूँ वह क्या है, परन्तु कुछ तो खोया हुआ है।"

मैं एक भूखे प्यासे व्यक्ति के समान थी। मैं आत्मिक रूप से बहुत भूखी थी तथा हमेशा कुछ न कुछ ग्रहण करने के लिये तैयार रहती थी यह जानकर कि यह परमेश्वर की ओर से है। लोग भूखे हो सकते हैं मगर जो कुछ खाते हैं उसके विषय में चुनने लग जाते हैं; यद्यपि उन्हें ज्यादा भूख लगे, तो जो कुछ उनके सामने रख दिया जाए उसे भी खा लेंगे। क्योंकि मुझमें बड़ी आत्मिक भूख थी इसलिये मैं परमेश्वर के सामने इन्हीं कारणों से खुली हुई थी।

और उसी सुबह मैंने परमेश्वर की आवाज को अपनी कार में सुना जो मुझे अचरज में डाल दी। उसने मेरा नाम पुकारा और मुझसे धीरज के विषय में कहा। उसी घड़ी से, मैंने निश्चयता के साथ जान लिया कि परमेश्वर मेरी परिस्थितियों को बदल देगा। मैं नहीं जानती थी कि यह कब और कैसे होगा, परन्तु मैं यह जानती थी कि वह मेरे जीवन में काम करने जा रहा है।

हर शुक्रवार को काम के बाद, मैं अपने बाल कटवाती थी। उसके बाद डेव और मैं हमेशा संगठन के भाग में गेंद खेला करते थे। उसी शुक्रवार दोपहर को ब्युटी पार्लर से निकलने के बाद मुझे हाईवे २७० से होकर ग्रेवोइस एक्सीट से होते हुए सन्टे लूईस, फेन्टन जहाँ हम रहते थे जाना पड़ता था। जैसे ही मैं कार में बैठी वैसे ही एक लाल बत्ती जली, और मैंने यह महसूस किया कि मेरा हृदय विश्वास से भर गया है और परमेश्वर मेरे लिये क्या कुछ करने जा रहा है। यद्यपि मुझे उसके विषय में कोई जानकारी नहीं थी कि क्या होगा, फिर भी मैं उसे धन्यवाद देना प्रारंभ कर दी।

उसी क्षण से, यीशु ने मुझे अपनी पवित्र आत्मा की उपस्थिति से इस प्रकार से भर दिया जिसका मैंने कभी अनुभव नहीं किया था। मैं यह नहीं जानती थी कि क्या हो रहा था, परन्तु मैं निश्चयता के साथ जानती थी कि परमेश्वर ने अपने आपको अभिन्न और सामर्थी ढँग से प्रकट किया था।

उसी घड़ी मैंने यह महसूस किया जिसका वर्णन बयान से बाहर है मुझे ऐसा लगा कि मानों किसी ने मेरे अंदर प्रेम को उँडेल दिया है। करीब तीन सप्ताह तक मैंने यह महसूस किया कि मैं परमेश्वर के प्रेम को पी चुकी हूँ। यह मेरे व्यवहार को प्रभावित किया। मैंने शांति, सुख, उत्तेजना और सब कुछ आसान

होता चला गया इसका अनुभव किया। मैंने यह महसूस किया कि मैं सबसे और सब कुछ से प्रेम करने लगी हूँ।

एक बार मैं याद करती हूँ, जब मैं अपनी गाड़ी चलाते हुए घास-पात के मैदान को देखकर उनके बारे में सोचने लगी कि वे कितने सुन्दर हैं, लेकिन इसलिए क्योंकि मैं यह जानती हूँ कि परमेश्वर ने उन्हें भी उगाया है। सब कुछ जिसे परमेश्वर ने कुछ न कुछ उद्देश्य के साथ बनाया है, वे सब मुझे सुन्दर लगने लगीं। जिन लोगों को मैं अपने चारो तरफ देखना भी पसंद नहीं करती थी वे सभी मुझे अचानक प्रिय और सुन्दर लगने लगे। वास्तव में मैं ही अकेली थी जो सबसे अलग थी, लेकिन जब हम बदलते हैं तब प्रत्येक व्यक्ति और सब कुछ हमें बदलता दिखाई देने लगता है।

सुबह जब मैं उठी तब यह महसुस कर रही थी कि अब सब बातों का अंत होने जा रहा है। जब मैं उस रात बिस्तर पर गयी तब मैं यह जान गई कि अब मैं एक नई शुरुआत की जगह पर हूँ। ऐसा हमारा परमेश्वर है। वह *अचानक* हमारे जीवन में काम करता है। मैं विश्वास करती हूँ कि जब आप इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं तो आपके जीवन में भी कुछ "अचानक" होने जा रहा है।

अपना हृदय परमेश्वर के लिये एकदम खोल दें। उससे कहें कि वह आपके जीवन को बदल दे जैसा वह उचित चाहता है। बिना बदलाहट के हम में से कोई भी स्थिर खड़े नहीं रह सकते। यदि हम परमेश्वर के साथ आगे नहीं बढ़ रहे हैं, तो इसका मतलब यह है कि हम पीछे की ओर हट रहे हैं।

परमेश्वर के साथ इस अनुभव के बाद, मेरा व्यवहार इस प्रकार बदल गया कि लोग मुझसे पूछने लगे कि क्या कुछ हो गया है। मैं नहीं जानती थी कि क्या कहूँ, लेकिन जल्द ही परमेश्वर ने मेरे हाथों में कुछ ऐसी वस्तु को दे दिया और वही बात मुझे सिखाती है कि मुझे क्या हो गया था।

विश्वास बनाम अनुभव

जब मैं अपने अनुभव को आपके साथ बाँट रही हूँ तो मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं आपकी ओर इशारा करूँ कि आपको भी परमेश्वर को खोजने का अनुभव हो। मैं अपने जीवन की बातों को आपके साथ इसलिये बाँट रही हूँ ताकि यदि आप परमेश्वर के साथ के संबंध में संतुष्ट नहीं है तो उसके बारे में जानने के लिये और भी बहुत कुछ बातें है। हमें प्रभु को खोजना है, अनुभव को नहीं, और वह हमारे जीवन में तय करता है कि कैसे और कब अपनी उपस्थिति को

प्रकट करे। वह हम में से प्रत्येक के साथ व्यक्तिगत तौर से व्यवहार करता है, लेकिन वह यह प्रतिज्ञा करता है यदि हम उसे खोजेंगे तो उसे पाऐंगे। यदि हम पिता से पवित्र आत्मा को बड़े पैमाने से माँगेंगे तो वह हमें देगा।

यीशु ने अपने चेलों से कहा :

> और मैं तुम से कहता हूँ; कि माँगो और माँगते रहो तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो और ढूँढ़ते रहो तो तुम पाओगे; खटखटाओं और खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिये खोला जायेगा। क्योंकि जो कोई माँगता है और माँगते रहता है, उसे मिलता है; और जो ढूँढ़ता है और ढूँढ़ते रहता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है और खटखटाते रहता है, उसके लिये खोला जाएगा। तुम में से ऐसा कौन पिता होगा, कि जब उसका पुत्र रोटी माँगे, तो उसे पत्थर दे; या मछली माँगे, तो मछली के बदले साँप दे? या अंडा माँगे तो उसे बिच्छू दे? अतः जब तुम बुरे होकर अपनें बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो (अच्छी वस्तुएँ उनके फायदे के लिये), तो स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा! (लूका ११:९-१३)

परमेश्वर सदा विश्वासयोग्य और अपने वचन के प्रति सच्चा है (इब्रानियों १०:२३ देखें)। परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता (प्रेरितों के काम १०:३४)। जो एक के लिये उपलब्ध है वह सब के लिये उपलब्ध है। परमेश्वर हम में से प्रत्येक को ठीक उसी तरीके से न देता हो, लेकिन वह हमारी प्रार्थनाओं को सुनकर हमारी आवश्यकताओं को पूरी करता है।

हम उसको ईमानदारीपूर्वक खोजते रहें और हमेशा गहरा समर्पण करने के लिये तैयार रहें। जब वैसी ही बात होती है, तब परमेश्वर हमारे जीवन में काम करना प्रारंभ कर देता है और पवित्र आत्मा को भेजता है ताकि वह विशेष तौर से हमें स्पर्श कर सके। बड़े विश्वास के साथ भरोसा रखते हुए परमेश्वर से माँगे कि वह अद्‌भुत काम करे। जब आप ऐसा करने के लिये उसकी बाट जोहते, हैं तब आप उसका धन्यवाद करें एवं उसकी स्तुति करते रहें।

क्या आप चर्च को देखते हैं और उसमें दिलचस्पी लेते हैं, या बाध्य होकर संगति करते हैं और कहते हैं कि अब बहुत हो चुका है? क्या आप सफलता की सीढ़ी को पा चुके हैं या सफलता की एक बहुत बड़ी नियमित व्यापारिक लेन-देन में शामिल हैं, लेकिन यह एहसास करते हैं कि कुछ न कुछ खोया हुआ है? शायद आप भी एक मसीही हैं और उसी दौर से गुज़र रहे हैं, जिस दौर से कभी मैं भी गुज़रा करती थी।

बहुत से लोग यीशु को मुक्तिदाता और प्रभु ग्रहण कर लेते हैं और मसीही जीवन जीकर पवित्र आत्मा की सामर्थ की भरपूरी बिना और परमेश्वर की सच्ची सफलता का कभी अनुभव किये बिना जो उनके लिये उपलब्ध है स्वर्ग जाने की कोशिश करते हैं। लोग स्वर्ग जाने के मार्ग पर तो हैं फिर भी अपनी यात्रा में आनंदित नहीं हैं।

हमारी दृष्टि हमेशा उन लोगों पर रहती है जिनके पास धन, पद, सामर्थ, बड़ा नाम और दूसरी अन्य विशेष सम्पन्नता, साथ ही साथ भौतिक वस्तुओं को पाने की लालसा रहती है, उन्हें हम सोचते हैं कि वे सबसे बड़े सफल व्यक्ति हैं। परन्तु जिन्हें हम सबसे बड़े सफल व्यक्ति समझते हैं उन्हीं के जीवन में सही-रिश्तों की, उत्तम स्वास्थ्य, शांति, आनंद और संतुष्टि की कमी होती है, परन्तु सच्ची आशीषें परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध रखने से जो सिर्फ यीशु मसीह में उपलब्ध है, प्राप्त होती है। ऐसे लोग अभी भी स्वतंत्र है और उन्होंने पवित्र आत्मा के कार्य क्षमता पर पूर्ण रूप से आश्रित रहना अब तक नहीं सीखा है।

कुछ लोग जो स्वावलंबी होते हैं वे यह सोचते हैं कि परमेश्वर पर आश्रित होना दुर्बलता की निशानी है। लेकिन यदि पवित्र आत्मा की क्षमता के द्वारा खिंचे जायेंगे, तो वे अपने जीवन में सब कुछ पूर्ण कर सकेंगे इसके बजाय की अपने बल पर ज्यादा कुछ कर लें। कुछ लोग हमेशा अपने बल पर आश्रित रहते हैं लेकिन जीवन में ऐसे समय आते हैं कि वे दूसरों की सहायता करने में असहाय हो जाते हैं, परन्तु पवित्र आत्मा उनको सामर्थ और अधिकार देकर उनके द्वारा काम कर सकता है।

परमेश्वर ने हमें इस प्रकार से बनाया है कि यद्यपि हमारे पास बल है, तो हमारे पास दुर्बलता भी है ताकि वो हमारी सहायता कर सके। हम जानते हैं कि वह हमारी सहायता करने के लिये सदा तत्पर रहता है क्योंकि उसने हमारे लिये अपने पवित्र सहायक को भेजा है जिससे वह हमारे अंदर सदा रहे। (यूहन्ना १४:१६; १ कुरिन्थियों.६:१९ देखें)।

कितनी ऐसी अनगिनत बातें हैं जिनसे हम स्वयं संघर्ष करते रहते हैं जबकि हमें उस समय पवित्र आत्मा की सहायता लेने की जरूरत थी जिससे हमें राहत मिल जाती। बहुत से लोगों को अपनी समस्या का सही जवाब इसलिये नहीं मिलता है, क्योंकि उन्होंने पवित्र परामर्शदाता को पूछना छोड़कर अपने लिये अनुचित तरीके के परामर्श और सलाह खोज लेते हैं। यह चकित करनेवाली बातें होती हैं कि कितने लोग हमें सलाह दे सकते हैं जिसका हम पर कोई

प्रभाव नहीं पड़ता। लेकिन जब परमेश्वर हमसे कुछ कहता है, तो यह सामर्थ से भरा रहता है और उसके द्वारा शांति आती है।

यीशु की मृत्यु इसलिये नहीं हुई कि वह हमें एक धर्म दे। वह इसलिये मरा ताकि उसके द्वारा विश्वास करने से परमेश्वर के साथ हमारा घनिष्ठ संबंध हो। परमेश्वर के साथ एक दु:ख का दिन, उसके बिना एक सुख के दिन से उत्तम है।

प्रतिदिन बहुत से लोग डर से ग्रस्त जीवन जीतें हैं। लेकिन अफसोस की बात यह है कि बहुत से लोग यह एहसास नहीं करते हैं कि उनकी सहायता पवित्र आत्मा के द्वारा उपलब्ध है। पवित्र आत्मा हमें शांति देकर हमारी आवश्यकता के समय सहायता करना चाहता है। वह हमें तब शांति देता है जब हम निराश होते हैं, चोट खाते हैं, हमारे साथ बुरा व्यवहार किया जाता है, और जब हम हानि का अनुभव करते हैं। वह तब भी हमें शांति देता है जब हमारे जीवन में बदलाव आता है, और जब हम थक जाते हैं, या हम किसी प्रकार से असफल हो जाते हैं। कुछ लोग इस शांति का अनुभव कभी भी नहीं कर सकते हैं क्योंकि वे यह नहीं जानते हैं कि उनके माँगने पर यह शांति उनके लिये उपलब्ध है।

तिरस्कार किये जाने के कारण मेरी भावनाओं को बहुत ही चोट पहुँची थी। दूसरों के समान, मैं भी अकेलेपन और तनहाईयों से घिरी थी जो कि सिर्फ तिरस्कार के द्वारा आती है। मानव होने के नाते हम सभी स्वीकार किऐ जाना चाहते हैं, न कि तिरस्कारित।

बहुत सालों तक मैं तिरस्कार की यातना को सहती रही क्योंकि मैं यह नहीं जानती थी कि उसका क्या उपाय है, लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो कि अब सब कुछ बदल गया है। ज्यादा दिन नहीं हुए, फिर से कुछ ऐसी घटना हुई जो कि उन पुराने तिरस्कार के जख्मों को ताज़ा कर दी। मैं उस खास व्यक्ति विशेष के पास पहुँची जिसने मुझे मेरे बचपन में जोरदार चोट पहुँचाया था। वह मुझसे माफी माँगने के बदले में मुझे और अपमानित किया जबकि मेरा कोई कसूर नहीं था, और तो और उस व्यक्ति ने स्पष्ट कह दिया कि मुझे तुममें कोई दिलचस्पी नहीं है। मैंने तुरंत यह अनुभव किया कि मैं फिर से एक कोने में जाकर अपने ज़ख्म पर मरहम लगाना चाहती थी।

मेरी भावनाओं के अंदर गहरी चोट थी। मैं सब कुछ छिपाना चाहती थी और अपने आप को कोसती रहती थी, लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो कि अब मैं जान गई हूँ कि ऐसी परिस्थितियों के लिये क्या समाधान है। मैंने तुरन्त पवित्र आत्मा की शांति के लिये परमेश्वर को पुकारा। मैंने मेरी भावनाओं के

अंदर जो जख्म हैं उन्हें चंगा करने के लिये पुकारा तथा मुझे इस परिस्थिति को संभालने के लिये योग्य बनाये, ठीक उसी तरह जैसा यीशु संभालता था। जैसे ही मैंने परमेश्वर की ओर झुकना आरंभ कर दिया, वैसे ही मैंने अपने अंदर उत्तेजना को महसूस की। यह ऐसा लगा कि मानों मेरे जख्मों के ऊपर पीड़ाहारी तेल उंडेल दिया गया हो।

मैंने परमेश्वर से कहा कि मेरी सहायता कर कि मैं उस व्यक्ति को जिसने मुझे चोट पहुँचाई थी, उसे मैं क्षमा कर सकूँ, और उसने मुझे ऐसा करने के लिये अनुग्रह दिया, इसलिये मैं याद करके दूसरों से कहती हूँ, "चोट पहुँचाने वाले लोग, लोगों को चोट पहुँचाने में चुकते नहीं।" उसके घनिष्ठ व्यक्तिगत प्रत्युत्तर ने मेरे जख्मी आत्मा को चंगा कर दिया।

२ कुरिन्थियों की पत्री १:३-४ कहती है, परमेश्वर दया का पिता (दया और करुणा का) है, और, वह शांति और सांतवना देता है तथा हर मुसीबत, विपत्ति और संकट में प्रोत्साहित करता है। अपने आप से पूछें "क्या मेरा परमेश्वर के साथ नज़दीकी का एवं व्यक्तिगत रिश्ता है? क्या मैं उसे घनिष्ठता से जानता हूँ।"

यीशु हमारे जीवन में आना चाहता है ताकि परमेश्वर के साथ हमारा व्यक्तिगत संबंध स्थापित हो जाये। वह हमें बल देगा तथा इस योग्य बनायेगा कि हमारा संघर्ष आसान हो जाए तथा उसके बिना हम कुछ भी न करें। यीशु के द्वारा, परमेश्वर ने हमारे लिये पवित्र आत्मा का प्रबंध किया है ताकि परमेश्वर के साथ हमारा संबंध गहरा हो और सब कुछ वास्तविक और घनिष्ठ हो और सब कुछ परमेश्वर से हो। उदाहरण के लिये, परमेश्वर हमें सिर्फ बल *देना* नहीं चाहता; बल्कि पवित्र आत्मा जो ईश्वरीय बल देनेवाला है उसके द्वारा वह हमारा बल *बनना* चाहता है।

यदि परमेश्वर ने आपको बनाया, तो आपको उसकी जरूरत है, यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो कैसे आप भरपूर हो सकते हैं? क्या आप पवित्र आत्मा की उपस्थिति और पूरे कार्य क्षमता का अनुभव अपने में करना नहीं चाहते? परमेश्वर को घनिष्ठता से जानने के लिये आपको यीशु को अपना केवल मुक्तिदाता और प्रभु ग्रहण करके पवित्र आत्मा के द्वारा आपको नया जन्म पाने की आवश्यकता है।

आत्मा से जन्म लेना

यूहन्ना रचित सुसमाचार से अध्याय ३ में, यीशु ने नीकुदेमुस से कहा जो प्रश्न पूछते हुए उसके पास आया:

> यदि कोई नये सिरे से न जन्में (स्वर्ग से) तो परमेश्वर का राज्य देख (जानना, चिर परिचित होना, अनुभव करना) नहीं सकता। (पद ३)
>
> नीकुदेमुस ने उससे कहा :
>
> मनुष्य जब बूढ़ा हो जाता है, तो वह दुबारा कैसे जन्म ले सकता है? क्या वह अपनी माता के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले सकता है? (पद ४)
>
> यीशु ने उत्तर दिया :
>
> मैं तुमसे सच सच कहता हूँ; जब तक कोई मनुष्य जल और (यद्यपि) आत्मा से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं (कभी भी) कर सकता। (पद ५)

जब एक व्यक्ति यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता ग्रहण करता है, यह विश्वास करते हुए कि यीशु ने उसके बदले में क्रूस पर अपनी जान दे दी तब उस व्यक्ति का पवित्र आत्मा के द्वारा नया जन्म हो जाता है (पद ३ देखें)। यह किसी मनुष्य के भले कामों के द्वारा नहीं मिलता है और न कभी ऐसा हो सकता है, परन्तु केवल अकेले परमेश्वर के अनुग्रह (या सामर्थ), दया और चुनाव (या चुनने) से मिलता है। बाइबल कहती है:

> क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। (इफिसियों २:८-९)

तीतुस ३:५ परमेश्वर का वचन हमारे उद्धार के बारे में बताता है कि, "और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा से हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।" पवित्र आत्मा हमारे उद्धार में शामिल है, और वह अन्त समय तक हमारे साथ रहेगा। परमेश्वर ने पवित्र आत्मा को हम में से प्रत्येक विश्वासियों के लिये निर्दिष्ट किया है कि इस संसार में हमारे साथ साथ चले और परमेश्वर के हाथों में हम में से प्रत्येक को उसके नियुक्त समय में स्वर्ग में दे दे।

क्या आपका नया जन्म आत्मा के द्वारा से हो गया है? यदि नहीं, तो आप निम्न प्रार्थना को इसी समय इस प्रकार करें, यह जानते हुए कि जैसे ही आप ईमानदारीपूर्वक यीशु मसीह को अपना जीवन समर्पित कर देते हैं, वैसे ही

आपकी आत्मा में जन्म हो जाता है या नया जन्म मिलता है। तब आप परमेश्वर के साथ पवित्र आत्मा के द्वारा सच्ची घनिष्ठता का अनुभव करना आरंभ कर देते हैं।

प्रभु के साथ व्यक्तिगत संबंध के लिये प्रार्थना

परमेश्वर चाहता है कि आप उसके उद्धार का दान प्राप्त करे। यीशु आपको उद्धार देकर पवित्र आत्मा से अत्याधिक भरना चाहता है। यदि आपने अभी तक यीशु को जो शांति का राजकुमार है, अपना प्रभु और मुक्तिदाता को अपने दिल में नहीं बुलाया है, तो मैं आपसे आग्रह करूँगी कि इसी समय उसे बुलाए और यदि आप इस विषय में सच में गंभीर और ईमानदार हैं, तो आप एक नया जीवन मसीह में अनुभव करेंगे। इस प्रार्थना को सरलतापूर्वक जोर से बोलें :

पिता,

तूने इस जगत से बहुत प्रेम रखा, तूने अपने एकलौते पुत्र को हमारे पापों के खातिर मरने भेज दिया ताकि जो कोई भी उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनंत जीवन पाये।

तेरा वचन कहता है कि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से हमारा उद्धार हुआ है और यह तेरा दान है। हम अपने कोई भी धर्म या कर्म के द्वारा उद्धार नहीं कमा सकते।

मैं विश्वास करता हूँ और अपने मुँह से अंगीकार करता हूँ कि यीशु मसीह ही तेरा पुत्र है और इस जगत का मुक्तिदाता है। मैं विश्वास करता हूँ कि क्रूस पर उसने मेरे लिये जान दी और मेरे पापों को अपने ऊपर उठा लिया, उसने बड़ी कीमत चुकाई। मैं अपने हृदय में यह विश्वास करता हूँ कि तूने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया।

मेरे पापों को क्षमा कर। यीशु को मैं अपना प्रभु स्वीकारता हूँ। तेरे वचन के अनुसार, मैं उद्धार पा चुका हूँ और अनंत जीवन तेरे साथ बिताऊँगा। पिता, तेरा धन्यवाद हो। मैं तेरा आभार मानता हूँ। यीशु के नाम में - आमीन। (यूहन्ना ३:१६; इफिसियों २:८-९; रोमियों १०:९-१०; १ कुरिन्थियों १५:३-४; १ यूहन्ना १:९; ४:१४-१६; ५:१,११,१२,१३)।

पवित्र आत्मा से भरना

जिस शुक्रवार फरवरी १९७६ को जब मैं ब्यूटी पार्लर से अपनी कार चलाकर घर जा रही थी प्रेरितों के काम अध्याय १ और २ में और पवित्र शास्त्र के दूसरे जगहों में लिखा है वही अनुभव मैंने किया। मैं या तो पवित्र आत्मा में डूब गयी या पवित्र आत्मा से भर गयी।

इससे पहिले यीशु स्वर्ग में उठा लिया गया, वह इस पृथ्वी पर चालीस दिन तक मरे हुओं में से जी उठने के बाद दिखाई देता रहा (प्रेरितों के काम १:३), उसने अपने चेलों को इकट्ठा करके उनसे कहा कि यरूशलेम को न छोड़ो परन्तु जिसकी प्रतिज्ञा पिता ने की है, उसकी तुम बाट जोहते रहो। "जिसकी (उसने कहा) चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से (अंदरूनी जगह, परिचय के साथ) बपतिस्मा पाओगे।" (प्रेरितों के काम १:४-५)

पिता की प्रतिज्ञा थी पवित्र आत्मा को उँडेलने की। यीशु ने कहा, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ (योग्यता, क्षमता, बल) पाओगे और यरुशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर (प्रत्येक जगह) तक मेरे गवाह होगे।" (प्रेरितों के काम १:८)।

यह कहकर वह उनको देखते देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया। (पद ९ देखें)

यह वे ही चेले थे जिनको यीशु अपने जी उठने के तुरन्त बाद दिखाई दिया था। उसी समय उसने उन पर फूंका और उनसे कहा, "पवित्र आत्मा लो" (यूहन्ना २०:२२)। मैं विश्वास करती हूँ कि यह वही समय था जब उनका नया जन्म हुआ। यदि उन्हें पहले से पवित्र आत्मा मिल गया होता जिसे वे अब पा चुके थे, तो क्यों उन्हें *पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को पाने के लिये बाट जोहने की जरूरत पड़ती,* जिस प्रकार से यीशु ने स्वर्ग में उठा लिये जाने के पहले उन्हें आज्ञा दी थी?

यदि एक खाली ग्लास में मुँहा मुँह पानी भरा न हो मगर उस ग्लास में थोड़ा पानी हो, तब हम मान लेते हैं कि उसमें पानी है। उसी प्रकार से, जब हमारा नया जन्म होता है तब हमारे *अन्दर* पवित्र आत्मा आ जाती है, परन्तु यह हो सकता है कि हम उससे भरपूर न हुए हों। प्रेरितों के काम १:८ में यीशु ने प्रतिज्ञा किया है कि पवित्र आत्मा हमें अपनी सामर्थ (योग्यता, क्षमता और बल) के साथ आयेगा। ताकि हम मसीह की गवाही पृथ्वी की छोर तक दें।

प्रेरितों के काम ४:३१ में यह संदर्भ है कि वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, "और आज़ादी के साथ, बुलंद होकर और साहस के साथ" परमेश्वर के वचन को सुनाते रहे।

पुराने नियम में, परमेश्वर का आत्मा अपने दासों पर बलपूर्वक उतरता था जैसे गिदोन, शिमशोन, दाऊद, एलिय्याह और एलिशा पर और मनुष्य की योग्यता से परे आश्चर्यकर्म होते रहें, ताकि इस भटके संसार पर परमेश्वर की सामर्थ प्रकट होती रहे। हम इतिहास के सबसे उत्तेजित समय में जी रहे हैं क्योंकि पवित्र आत्मा सब पर उँडेला जा रहा है जो लोग उसे ग्रहण कर रहे हैं। अभी हम परमेश्वर के आत्मा की आंतरिक उपस्थिति का आनंद उद्धार के द्वारा ले सकते हैं और इस बात की अपेक्षा कर सकते हैं कि हमारे चारों तरफ जो लोग भटके हुए हैं उन पर परमेश्वर की महिमा प्रकट हो सके उस सामर्थ से हम भर सकते हैं।

यूहन्ना १:२९-३३ में, यूहन्ना बपतिस्मा ने कहा कि वह पानी से बपतिस्मा देता था परन्तु जो उसके बाद आनेवाला था वह पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है। मत्ती २८:१९ में, यीशु ने अपने चेलों से कहा कि जाकर चेला बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।

पानी का बपतिस्मा एक व्यक्ति के आंतरिक परिवर्तन का बाहरी प्रकटीकरण है ताकि यीशु के पीछे समर्पित होकर जीवन भर चलें। यह पुराने जीवन को गाड़कर, नये जीवन के लिये जी उठने का संकेत है। यूहन्ना का बपतिस्मा जैसे यूहन्ना १:३३ में कहा गया है कि उसका बपतिस्मा मन फिराव का था। जो लोग बपतिस्मा लेते जाते थे उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि वे अपने पापमय जीवन से फिरकर एक नया जीवन जीयेंगे।

एक व्यक्ति के पास कुछ करने की इच्छा है मगर उसमें सामर्थ नहीं कि उसे दिखा सके। मैं विश्वास करती हूँ कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मा से सामर्थ मिलता है। बहुत वर्षों तक मुझ से कहा गया था क्या करना है मगर मैं चाहती तो थी, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती थी। यह केवल तब हो सका जब मैं पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पायी या उसमें डूब गयी, तब मैंने परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के लिये और उसकी सामर्थ के साथ पूरी करने के लिये सही इच्छा को पायी। "कमियों" के भी अलग अलग स्तर हैं। मैं हमेशा से परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहती थी, परन्तु मुझमें इतनी इच्छा-शक्ति नहीं थी कि मैं अपने आपको सख्ती के साथ आज्ञाकारिता पर चला सकूँ। पवित्र आत्मा से भरने के बाद मेरी "कमियाँ" मेरे लिये बलवंत होने का कारण बनी और मैं सब कुछ पूरा करती गयी।

जिस यूनानी शब्द का अनुवाद बपतिस्मा हुआ है उसी को यूहन्ना बपतिस्मा ने यूहन्ना १:३३ में पानी के बपतिस्मा के संदर्भ में काम में लाया; ठीक उसी प्रकार से यीशु ने प्रेरितों के काम १:५ में पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के संदर्भ में इसी यूनानी शब्द को काम में लाया है: "क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा (अंदरूनी जगह, परिचित होना) पाओगे।" दोनों पद में और दोनों प्रकार के *बपतिस्मा* के संदर्भ में जो अर्थ आया है "पानी में डुबना, डुबाना।"

यदि कोई व्यक्ति नया जन्म पाकर प्रभु में बढ़ जाता है, तो उस व्यक्ति को पानी का बपतिस्मा लेकर पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाना चाहिये।

प्रेरितों के काम १:८ में यीशु ने अपने चेलों से कहा कि जब उन्हें स्वर्ग से सामर्थ मिलेगी उसके बाद ही वे गवाही देने में समर्थ होंगे। इसका जोर मुझ पर है; मैंने इस बात को इसलिये स्पष्ट किया है कि कर्म में और उसके अस्तित्व में पाये जाने में भिन्नता है।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने से पहले मैं सप्ताह में एक बार सुसमाचार प्रचार के लिये घर घर जाया करती थी, फिर भी मेरे प्रतिदिन के जीवन में मुझमें इतनी सामर्थ नहीं थी, जैसे बाइबल की शिक्षा के अनुसार मुझमें होनी चाहिये थी। मैं, ऐसा करना चाहती थी लेकिन मुझ में सामर्थ नहीं थी कि ऐसा कर सकूँ। जहाँ तक मेरे प्रतिदिन के जीवन को सामर्थपूर्वक एवं सफलतापूर्वक नियंत्रित करने का सवाल था तो मुझमें और अविश्वासी में जिसे मैं-थोड़ा जानती थी, अंतर नहीं था, जितना होना चाहिये। यद्यपि मुझे नया जन्म मिल गया था फिर भी मुझे कुछ और अधिक चाहिये था।

पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषेक

जब यूहन्ना ने यीशु को पानी का बपतिस्मा दिया, तब पवित्र आत्मा उस पर कबूतर की नाईं उतरा:

> उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया...और यीशु, बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखा, उसके लिये आकाश खुल गया; और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा। (मत्ती ३:१३,१६)

फिलिप्पियों २:६-७ में यीशु के स्वभाव के बारे में लिखा है, इस शिक्षा को समझना कठिन है, लेकिन आवश्यक है। उसमें परमेश्वर की विशेषता की सारी भरपूरी थी, वह परमेश्वर का वचन था, स्वयं परमेश्वर था और देहधारी हुआ (देखें यूहन्ना १:१-१४), यीशु स्वयं परमेश्वर होकर कोड़े खाया, और दास का रूप धारण किया और मनुष्य की समानता में आ गया। उसने हमें एक एक कदम बढ़ने का नमूना दिखाया।

यीशु न सिर्फ पानी में डूबा था परन्तु वह पवित्र आत्मा में भी डूबा था। दूसरे शब्दों में वह सामर्थ में डूबा था, जिसके द्वारा वह सामर्थी हुआ जिस काम के लिये उसके पिता ने उसे भेजा था उसे वह पूरा कर सके। प्रेरितों के काम १०:३८ में वचन कहता है, "कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया; वह भलाई करता, और सबको जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।"

इससे पहले यीशु आम लोगों के बीच सेवकाई प्रारंभ करता, पवित्र आत्मा और सामर्थ से उसका अभिषेक किया गया। जब हम पवित्र आत्मा से भर जाते हैं, तब हम परमेश्वर के राज्य की सेवा के लिये लायक बन जाते हैं क्योंकि हम पवित्र आत्मा की सामर्थ *(योग्यता क्षमता और बल)* (प्रेरितों के काम १:८ देखें) को जिसे हमने पाया, बहाने लग जाते है, जब वह हम पर आया, उसके गवाह बनने के लिये। यह सामर्थ हमें उस योग्य बनाती है जिसके लिये परमेश्वर हमें चाहता है।

यूहन्ना १:३२ में जो वर्णन है पवित्र आत्मा यीशु पर उतरा, वह इस बात का संकेत है कि पवित्र आत्मा स्थाई रूप से "उसके साथ रह गया।" आत्मा "उसके ऊपर रहा (कभी छोड़कर जाने के लिये नहीं)" या *किंग जेम्स वर्सन* के शब्दों के अनुसार "उस पर ठहर गया।"

> यूहन्ना बपतिस्मा ने कहा, मैंने आत्मा को कबूतर की नाईं स्वर्ग से उतरते देखा है, वह उस पर (कभी छोड़कर जाने के लिये नहीं) ठहर गया। मैं तो उसे पहचानता नहीं था, परन्तु जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने भेजा, उसी ने मुझसे कहा, कि जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे; वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है। और मैंने देखा (यह घटना होते मैंने उसे वास्तव में देखा है) और गवाही दी है, कि यही परमेश्वर का पुत्र है! (यूहन्ना १:३२-३४)

यीशु के साथ पवित्र आत्मा रहा यह एक महत्वपूर्ण बात थी क्योंकि पुरानी वाचा के अन्तर्गत पवित्र आत्मा लोगों के ऊपर उतरता था किसी विशेष काम के लिये लेकिन स्थाई रूप से उनके साथ रहने के लिये नहीं। पवित्र आत्मा उतरने के बाद यीशु के ऊपर ठहर गया, आत्मा ने यीशु की अगुवाई सुनिश्चित ढंग से अधिकाई से किया।

चालीस दिन तक आत्मा के सिखाने से वह जंगल में फिरता रहा; और शैतान उसकी परीक्षा करता रहा (लूका ४:१-२)। वह सब बातों में परखा गया और सफल होकर प्रचार करने लगा, "मन फिराओ...क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।" (मत्ती ४:१७)। वह आश्चर्यकर्म करने लगा, दुष्टात्माओं को निकालने लगा एवं बीमारों को चंगा करने लगा (लूका ४,५ देखें)। यह जानना महत्वपूर्ण बात है कि यीशु ने तब कोई आश्चर्यकर्म या सामर्थ के काम नहीं किया जब तक उसे पवित्र आत्मा के द्वारा अधिकार नहीं दिया गया था। यदि यीशु को परमेश्वर की धार्मिकता को पूरी करने के लिये पानी के बपतिस्मा लेने की (मत्ती ३:१५) और पवित्र आत्मा से अधिकार पाने की जरूरत पड़ी तो हमें भी इसकी जरूरत क्यों न पड़ेगी?

पौलुस भी पवित्र आत्मा से भरा था तथा पवित्र आत्मा की शक्ति उसे प्राप्त थी।

पौलुस पवित्र आत्मा से भरा था

> तब हनन्याह उठकर उस घर में गया और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, हे भाई शाऊल (पौलुस), प्रभु अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिस से तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए। (प्रेरितों के काम ९:१७)

बहुत से लोग कहते हैं कि जब तुम यीशु को अपना मुक्तिदाता ग्रहण कर लोगे तो तुम्हें सब कुछ मिल जायेगा। हो सकता हैं यह बातें, कुछ विश्वासियों के साथ हो, लेकिन निश्चय सभी के साथ नहीं हो सकती। क्योंकि अलग अलग लोगों का अपना अलग अलग अनुभव होता है। मैं यह इंकार नही कर रही हूँ कि सभी लोग एक साथ नया जन्म और पवित्र आत्मा पाएँ; पौलुस उनमें से एक था, परन्तु दूसरे लोग वैसे नहीं थे।

जैसा कि आप यह जानते हैं कि पहले पौलुस का नाम शाऊल था, वह बहुत धार्मिक व्यक्ति था और वह एक फरीसी था (प्रेरितों के काम २३:६

देखें)। वह मसीहियों को सताया करता था यह विश्वास करते हुए कि वह ऐसा करके परमेश्वर की सेवा कर रहा है (फिलिप्पियों ३:५-६ देखें)।

प्रेरितों के काम ९:४ में वचन कहता है, एक दिन वह यरूशलेम से दमिश्क चला जा रहा था ताकि उन विश्वासियों को वापस यरूशलेम लाये और यातना व सजा दे, इतने में एक बड़ी ज्योति स्वर्ग से शाऊल के चारों तरफ चमकी और वह भूमि पर गिर पड़ा और यह शब्द सुना कि "हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?"

थरथराते हुए उसने कहा, "प्रभु, तू क्या चाहता है कि मैं करूँ?" (पद ६)। यह क्षण शाऊल के बदलने का समय था, उसके समर्पण का समय था। उसने यीशु को "प्रभु" कहा, तब उसने अपने आप का समर्पण कर दिया। उससे कहा गया कि अब उठकर उस नगर में जा, और जो तुझे करना है, वह तुझसे कहा जाएगा।

इस घटना के अनुभव से पौलुस अंधा हो गया था, अवश्य उसकी आँखे खुलीं थीं पर वह देख नहीं सकता था। सो उसके साथी लोग उसके हाथ पकड़कर दमिश्क ले गये। वह तीन दिन तक न तो देख सका, न खाया और न पीया।

दमिश्क में हनन्याह नाम एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा कि शाऊल को पूछ ले क्योंकि वह प्रार्थना कर रहा है। उसी समय शाऊल ने भी दर्शन देखा कि हनन्याह नामक एक पुरुष भीतर आया और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए। हनन्याह ने शाऊल के बारे में सुना था कि इसने पवित्र लोगों के साथ बड़ी बड़ी बुराईयाँ की हैं। सो इस कारण, वह जाने से खतरा रहा था। लेकिन प्रभु ने कहा, "तू चला जा" तब वह गया। प्रभु ने हनन्याह से कहा कि वह तो अन्यजातियों और राजाओं और इस्राएलियों के सामने उसके नाम प्रकट करने के लिये उसका चुना हुआ पात्र है (प्रेरितों के काम ९:१५ देखें)।

तब हनन्याह उठकर उस घर में गया जहाँ शाऊल रहता था और उस पर अपना हाथ रखकर कहा (बहुत सारे शब्दों में), "हे भाई शाऊल (यहाँ पर "भाई" कहना शाऊल के परिवर्तन का बड़ा प्रमाण है), प्रभु ने मुझे भेजा है कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए" (पद १७ देखें)। और तुरन्त उसके आँखों से छिलके से गिरे और उठकर देखने लगा और बपतिस्मा लिया।

इससे सब कुछ स्पष्ट हो जाता है, कि सबसे पहले शाऊल का मन परिवर्तित हुआ फिर तीन दिन के बाद वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया

और वह पानी का बपतिस्मा लिया। अगर शाऊल, जो बाद में प्रेरित पौलुस में बदल गया, जिसे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने की जरूरत पड़ी, तो मैं विश्वास करती हूँ कि हमें भी इसकी जरूरत है।

अन्य जातियाँ भी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई

> पतरस यह बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुनने वालों पर उतर आया (प्रेरितों के काम १०:४४)।

प्रेरितों के काम अध्याय १० में फिर से हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने एक बार दो अलग अलग लोगों को एक साथ दर्शन दिया ताकि उसके उद्देश्य पूरे किये जाए।

पतरस को दर्शन मिला ताकि वह कुरलेनियुस के घर में जाकर प्रचार करे, इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ क्योंकि कुरलेलियुस अन्य जाति था और यहूदियों और अन्यजातियों का कोई लेन देन नहीं था। इसी समय में, कुरनेलियुस को दर्शन मिला कि वह पतरस को बुलवा ले। इस अलौकिक घटना के द्वारा दोनों एक साथ मिल सके।

जैसे पतरस अन्यजातियों को जो कुरनेलियुस के घर में इकट्ठे थे प्रचार करना प्रारंभ कर दिया वैसे ही पवित्र आत्मा उन पर उतरा, जिस प्रकार से पिन्तेकुस्त के दिन में यहूदी विश्वासियों पर उतरा था। सब अन्यजाति लोग अन्य अन्य भाषा में बातें करने लगे ठीक उसी प्रकार से जब मसीह के १२० चेले पिन्तेकुस्त के दिन में उपरौठी कोठरी में बाट जोह रहे थे बातें करने लेगे (प्रेरितों के काम १:१३; २:१-४)। जितने कुरनेलियुस के घर में पवित्र आत्मा पाये थे, पतरस ने उन्हें पानी का बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी और वे आज्ञा पालन किये।

कुरनेलियुस के घराने में जो बातें हुई उसके अलावा, प्रेरितों के काम अध्याय ८ में वर्णन है कि किस प्रकार से फिलिप्पुस ने सामरिया में सुसमाचार प्रचार किया। एक मनुष्य विश्वास कर के पानी का बपतिस्मा लिया, जिसका नाम शिमौन था और जो बहुत बड़ा जादुगर था। जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने यीशु को ग्रहण कर लिया है, तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा ताकि वे उनके लिये प्रार्थना करें कि उन्हें पवित्र आत्मा मिले। जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा

दिया जाता है, तो वह चकित हो गया और इसको रूपये से मोल लेना चाहा मगर पतरस ने उसे जोरदार डाँटा (प्रेरितों के काम ८:९,१३-१५,१७-२३)।

शमौन एक विश्वासी था और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा, "और चिन्ह और बड़े बड़े सामर्थ के काम होते देखकर" चकित होता था (पद १३)। इसलिये जो कुछ वह देख रहा था वह बहुत प्रभावशाली था इसलिये उसे वह मोल लेना चाहता था? वास्तव में, जो कुछ पतरस ने उससे कहा, कि यदि वह परमेश्वर से इस बात के लिये क्षमा नहीं माँगेगा तो वह अपने रूपयों के साथ नाश हो जायेगा क्योंकि उसे रूपयों से मोल लेना चाहा। लेकिन बात यह है, कि शमौन ने कुछ ऐसी अत्याधिक सामर्थशाली कामों के प्रमाण के साथ देखा जो उसके पास नहीं थी।

यीशु, पौलुस और अन्यजातियाँ, यह सब पवित्र आत्मा की परिपूर्णता के द्वारा अत्याधिक सामर्थ और अधिकार पाये हुए थे हम क्यों एक ऐसे जीवन को बितायें जिसमें अत्यधिक सामर्थ और अधिकार न हो, जैसा उनमें था?

३
परमेश्वर का घर

सब बातों से बढ़कर, मैं परमेश्वर की आवाज को स्पष्ट रूप से सुनकर उसकी ठहरनेवाली उपस्थिति के प्रति मैं हमेशा चैतन्य रहना चाहती हूँ। मैं जानती हूँ कि परमेश्वर ने मुझे किसलिये बुलाया है, और जिस लिये परमेश्वर ने मुझे बुलाया है अगर वह मेरे साथ नहीं तो मैं कुछ भी नहीं कर सकती हूँ। परमेश्वर की उपस्थिति जो मेरे जीवन में प्रकट हुआ उसके प्रति मैं उत्तेजित हूँ और मैं यह जानती हूँ कि मैं शरीर में जीकर उसके घनिष्ठ संगति का आनंद प्राप्त नहीं कर सकती।

जैसा कि मैं पहले भी समझा चुकी हूँ कि मैं बहुत वर्षों तक यीशु मसीह को अपना मुक्तिदाता मानकर उस पर विश्वास करके चलती रही मगर उसकी नज़दीकी की संगति का आनंद कभी नहीं उठा सकी। मुझे ऐसा लगता था कि मैं उसके करीब पहुँच रही हूँ मगर अपने मंजिल से चूक रही हूँ। एक दिन मैं दर्पण के सामने खड़े होकर जब बाल बना रही थी तब मैंने उससे एक साधारण सा प्रश्न पूछा, "हे परमेश्वर, मुझे बार बार एक जैसा क्यों लगता है कि मैं तेरे समीप आती हूँ मगर आते आते रह जाती हूँ।"

तुरन्त मैंने मेरी आत्मा के अन्दर ये आवाज सुनी, "जॉयस, तू बाहर ही बाहर खोज रही है; तेरी जरूरत है कि तू अब अंदर खोज।"

परमेश्वर का वचन कहता है कि वह हमारे अन्दर वास करता है, लेकिन बहुत से लोगों को इस सच्चाई को समझने में कठिनाई होती है। दूसरा कुरिन्थियों ४:६-९ कहता है -

> इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, कि अंधकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका (प्रकाश फेंकना), कि परमेश्वर की महिमा (जैसे उसके व्यक्तित्व में प्रकट किया गया एवं खोला गया) की पहचान की ज्योति यीशु मसीह (जो मसीहा) के चेहरे से प्रकाशमान हो। परन्तु हमारे

पास यह धन (अलौकिक सुसमाचार का प्रकाश) मिट्टी के बरतनों में (आसानी से टूट जाने वाला, मानव) रखा है, कि यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर की ओर से ठहरे। हम चारों ओर से (दबाए) क्लेश तो भोगते हैं (कष्ट सहते और हर तरफ से कुचले जाते), पर संकट में नहीं पड़ते; निरूपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। सताए तो जाते हैं पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं(पीड़ा सहते और भगाये जाते) पर नाश नही होते (अकेले खड़े होकर)।

हमारे अन्दर परमेश्वर की उपस्थिति का धन है, जिस प्रकार से मिट्टी के बरतन में पानी बिना छलकते हुए भरा जा सकता है ठीक उसी प्रकार से हम प्रार्थना करके पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कर सकते है एवं अन्य भाषा का वरदान प्राप्त कर सकते हैं लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि हम एक ही बार आत्मा में भरने से आत्मिक हो जाते हैं। आत्मिक होने का तात्पर्य यह है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति चैतन्य रहें एवं उसके अनुसार आचरण करें।

कुरिन्थ की कलीसिया में पवित्र आत्मा के सब वरदान काम करते थे फिर भी पौलुस ने उनसे कहा कि वे अब तक शारीरिक हैं (१ कुरिन्थियों ३:३)। “क्योंकि अब तक शारीरिक हो, इसलिये, कि जब तुम में ईर्ष्या, लालच और झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?”

यीशु ने ऐसे कई धार्मिक लोगों को सुधार दिया, उनसे कहा; “हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय; तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो” (मत्ती २३:२७-२८)।

ये वचन मेरे हृदय में गड़ गया है। मैं उस चूना फिरी हुई कब्र के समान जिसमें मुर्दों की हड्डियाँ भरी हो नहीं होना चाहती। यीशु को अगर किसी व्यक्ति से ज्यादा तकलीफ हुई तो सिर्फ उन दिखावा करने वाले और पाखण्डी लोगों से हुई।

एक दिन मैं रसोई घर की ओर बड़ी कठिनाई से चलते हुए बड़ी उदासी के साथ सिर झुकाए हुए जा रही थी! मैं कुड़कुड़ाते और शिकायत करते हुए यह कह रही थी, “हे परमेश्वर, मैं इन सब बातों से बहुत थक चुकी हूँ। कब तू मेरे जीवन में कुछ करने जा रहा है? कब मेरे जीवन में एक बड़ा काम होगा? कब मैं आशीषित होने जा रही हूँ?”

तुरन्त उसके बाद मैंने परमेश्वर की आवाज को सुना, "जॉयस, क्या तू नहीं जानती कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर का जीवन तेरे अन्दर है, और ये तुझको यीशु के दूसरे आगमन तक आनंद से उछलने कूदने और उसके साथ जाने के लिये पर्याप्त है।"

इफिसियों ३:१७ कहता है, "और विश्वास के द्वारा (वास्तव में) मसीह तुम्हारे हृदय में बसे (स्थापित होना, रहना, स्थाई घर बनाना)!" यदि आपका नया जन्म हो चुका है तो आप ये जानते हैं कि पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा से यीशु आपके अन्दर रहता है, लेकिन क्या परमेश्वर आपके अन्दर आराम से रहता है, और क्या उसे आपके अन्दर घर जैसा महसुस होता है? मुझे यह समझने में काफी लंबा समय लग गया कि परमेश्वर मेरे अन्दर और अन्य पदार्थों को लेकर जो मेरे भीतरी मनुष्यत्व के लिये जरूरी है उसके साथ रहता है।

परमेश्वर ने मुझे एक दृष्टान्त समझाया कि जिस हृदय में वह रहता है और जहाँ कुड़कुड़ाहट और शिकायत होती है उसकी दशा कैसे होती है! मान लिया जाय कि आप अपने सहेली के घर में जायें और वह कहे, "अन्दर आओ, मैं तुम्हारे लिये कॉफी लाती हूँ, आराम से बैठो।" और फिर आप अपने पैर को लंबा करके आराम से बैठ जाते हैं, और फिर तुरन्त आपकी सहेली आपके सामने अपने पति के ऊपर चिल्लाना शुरू कर देती है। और जब आप बैठे हुए देख रहे हैं वे दोनों आपस में झगड़ना शुरू कर देते हैं और आपके सामने वे दोनों चिल्लाते हुए एक दूसरे पर दोषारोपण करते चले जाते हैं। उनके इस झगड़े के बीच में आप कितना आराम महसुस करेंगे?

या मान लीजिये कि आप अपनी एक दूसरी सहेली के घर पर मुलाकात करने के लिये गये हों और वह तुरन्त आपकी सहेली जिससे आप बहुत प्रेम करते हो उसके बारे में एकदम भद्दी बातें करना आरंभ कर दे, तो क्या आप उस गपशप और निन्दा के बीच में अपनापन महसुस करेंगे? फिर भी आज कितने मसीही लोग किसी भी व्यक्ति के बारे में उल्टी पुल्टी बातें करना शुरू कर देते हैं जिनसे यीशु प्रेम करता है और जो उसके प्रति समर्थन करते हैं?

क्योंकि बहुत से मसीही लोग पवित्र आत्मा के भीतरी प्रोत्साहन के प्रति समर्पित होने के इच्छुक होते और इसलिये वे पूर्ण शान्ति से भरे नहीं हैं। वे अपने भीतरी जीवन को एक स्थाई क्षेत्र में सीमित रख देते हैं। वे प्रभु की प्रभुता को थोड़ा भी आभास करना नहीं चाहते क्योंकि यद्यपि प्रभु उनके अंदर है फिर भी वे उसके प्रभाव को रोकना चाहते हैं, "उस पर भरोसा रखकर सब कुछ वैसे ही चलने दो।" उनकी पीड़ाएँ इसलिये बढ़ जाती हैं क्योंकि वे उसके प्रोत्साहन के प्रति

समर्पित नहीं रहते, और वे आराम से भी रह नहीं सकते क्योंकि उनका भीतरी जीवन मसीह के स्वभाव के अनुसार तालमेल नहीं खाता है।

यदि हम प्रभु के लिये एक आरामदायक घर बनना चाहते हैं तो हमें बड़बड़ाहट, शिकायत, दोष निकालने का स्वभाव एवं कुड़कुड़ाहट को बिल्कुल दूर करना होगा। हमारे शब्दों में स्तुति की भरमार होनी चाहिये। हमें सुबह उठकर ये कहने की जरूरत है, "गुड मॉर्निंग, यीशु, आज आप मुझ में आराम से रहिये। पिता, आपकी स्तुति हो। प्रभु मैं आपसे प्यार करता हूँ। आपके सारे भले कामों के लिये आपका धन्यवाद।"

बाइबल कहती है कि परमेश्वर अपने लोगों की स्तुति के ऊपर विराजमान होता है। (देखें भजन संहिता २२:३)। वह हमारे सुन्दर स्तुति के मध्य में आरामदायक महसुस करता है लेकिन वह हमारे कड़वे स्वभाव के मध्य में आरामदायक महसुस नहीं करता है।

मैं आपको आपके भीतरी जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी रखने के बारे में प्रोत्साहित कर रही हूँ क्योंकि वह परमेश्वर का निवासस्थान है। जब परमेश्वर चलते फिरते मिलाप वाले तम्बू में निवास करने लगा जिसे इस्राएल की सन्तान जंगल में उठाए फिरे और वे लोग ये समझ गये कि भीतरी आंगन भी एक पवित्र स्थान था। लेकिन अभी परमेश्वर की योजना के रहस्य में, हम चलते फिरते मिलापवाले तम्बू के समान हैं, हम एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते हैं और परमेश्वर स्वयं हमारे भीतर निवास करता है। और अभी भी आंगन पवित्रस्थान एवं परमपवित्र स्थान है। जो बाहरी आंगन है वह हमारा शरीर है पवित्र स्थान हमारा प्राण और परमपवित्र स्थान हमारी आत्मा है।

जब हम अपने भीतरी जीवन का परीक्षण करते हैं, तब हम उस पवित्र भूमि की ओर देखते हैं जहाँ पर पमरेश्वर की आत्मा अपना घर बनाना चाहती है। परमेश्वर हमारे बाहरी जीवन से बढ़कर हमारे भीतरी जीवन पर बड़ी गम्भीरता से रूचि लेता है। इसलिये हमें भी चाहिये कि हम अपने बाहरी जीवन से बढ़कर अपने भीतरी जीवन के प्रति संवेदनशील होना चाहिये।

बाइबल कहती है, "जिस दिन...परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का (उनके छिपे हुए विचारों का) न्याय करेगा।" (रोमियों २:१६)। वह सब कार्य जो भी हम करते है न्याय के दिन आग के द्वारा परखा जाएगा परन्तु वह सब काम जो पूरी शुद्धता और उद्देश्य के साथ नहीं किया गया वह जलकर राख हो जायेगा।

> परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे। तो जबकि ये सब वस्तुएँ, इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चालचलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए। और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए; जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे। पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी। इसलिये, हे प्रियो, जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो तो यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो। (२ पतरस ३:१०-१४)

यह परिच्छेद हमारे अन्दर बहुत ही आदर और पवित्र भय भर देना चाहिये। लोगों को प्रभावित करने की कोशिश करना यह समय की बर्बादी है बल्कि महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर हमारे बारे में सोचते है। हम उन सब कामों को करने में समय व्यतीत करें जिनका अनंत महत्व है। तथा वे बातें जो उचित और स्पष्ट उद्देश्य के साथ प्रेरित की जाती हैं।

आपके अन्दर क्या है?

हमारा जीवन उस सुन्दर लपेटे हुए पार्सल के समान हो सकता है जिसके अन्दर कोई चीज़ न हो। हमारा बाहरी जीवन अच्छा दिख सकता है लेकिन हमारा भीतरी जीवन सुखा और खाली हो सकता है। हम बाहरी तौर से आत्मिक हो सकते हैं मगर भीतरी तौर से सामर्थहीन रहेंगे अगर हम पवित्र आत्मा को हमारे हृदय में घर बनाने की अनुमति नहीं देंगे तो।

जैसे ही हम मसीह की प्रभुता को अपने भीतरी मनुष्यत्व में स्वीकारते हैं तो वैसे ही पवित्र आत्मा के द्वारा हमे धार्मिकता, शांति और आनन्द मिलता है जो हमें ऊँचा उठाता है तथा बहुतायत के जीवन के लिये शक्ति देता है। (देखें रोमियों १४:१७)।

भजन संहिता ४५:१३ कहता है, "राजकुमारी महल में (अपने राजमहल के) अति शोभायमान है, उसके वस्त्र में सुनहरे बुटे गढ़े हुए हैं।" परमेश्वर अपने पवित्र आत्मा को हमारे अन्दर डालता है ताकि हमारे भीतरी जीवन, स्वभाव, प्रतिक्रियाओं और मंज़िल को प्राप्त करने में काम करे। उसी के कार्य

द्वारा हममें, हमारा भीतरी जीवन परखा एवं शुद्ध वातावरण में बदल जाता है जिसमें प्रभु आराम से वास कर सके।

जब मैं अपने भीतरी जीवन के बारे में ज्यादा नहीं जानती थी, मैं बिल्कुल एक प्रसन्न मसीही नहीं थी। लेकिन अभी पवित्र आत्मा मेरे अन्दर एक ट्रेफिक पुलिस के समान कार्य करता है। जब मैं सही काम करती हूँ तब वह मेरे लिये हरी बत्ती जला देता है, और जब मैं गलत काम करती हूँ तब वह मेरे लिये लाल बत्ती जला देता है। और जब मैं समस्या में पड़ जाती हूँ और निकलने के लिये कोई रास्ता नहीं मिलता तथा आगे जाने के लिये निर्णय नहीं ले सकती तब मेरे लिये सावधान रहने का संकेत मिलता है।

हम जितना अधिक रूककर परमेश्वर से दिशा के बारे में पूछते हैं तो उतना ही अधिक हम पवित्र आत्मा के द्वारा संकेतों के प्रति संवेदनशील होते जाते हैं। वह कभी हम पर नहीं चिल्लाता; वह अपनी धीमी आवाज़ से बोलता है, "आह..., मैं ऐसा कभी नहीं करती अगर मैं आप होती।" अगर हम उसके प्रति समर्पित हो जायेंगे तो वह हमारे जीवन में अगुवाई करेगा और भीतर में शान्ति देगा।

रोमियों ७:६ इस तरीके से समझाता है: "परन्तु जिसके बन्धन में हम थे, उसके लिये मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं (उसकी आज्ञाकारिता पर) की नई रीति (जीवन की) पर सेवा करते हैं।"

जिस दिन से परमेश्वर ने मुझसे कहा कि अपने अन्दर झांको अर्थात् मेरे सामान्य अनुभव के बीच में की एक सामान्य दिन की यह बात है उस दिन से परमेश्वर ने अपने वचन की महान सच्चाईयों को मुझ पर प्रकट करना आरंभ कर दिया। और वह सच्चाई यह है: *हम परमेश्वर के निवासस्थान हैं।* मैं विश्वास करती हूँ कि इस सच्चाई को हम में से प्रत्येक को समझने की आवश्यकता है जिससे हम परमेश्वर की निकट संगति एवं घनिष्ठता का आनंद उठा सकें।

१ कुरिन्थियों ६:१९-२० में प्रेरित पौलुस हमसे कहता है:

> क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मंदिर (पवित्रस्थान) है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला (वरदान के स्वरूप) है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो (बहुमूल्यता के साथ खरीदे गए और कीमत चुकाई गई, अपना लिया), इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।

परमेश्वर हममें क्यों रहना चाहता है? और वह ऐसे कैसे कर सकता है? बल्कि वह पवित्र है और हम सब मानव दुर्बलता, कमजोरी, त्रुटि और असफलता से घिरे हुए हैं।

इसका उत्तर सीधा सा है: वह हमसे प्रेम करता है वह हम में अपना घर बनाने के लिये चुन लेता है। वह ऐसा इसलिये करता है क्योंकि वह परमेश्वर है - वह इस योग्य है कि जो कुछ वह चाहता है वह करता है और वह हमारे हृदयों को अपना घर बनाने के लिये चुन लेता है। वह चुनाव या पसंद हमारे कोई भले कामों के आधार पर नहीं हुआ और न कभी हो सकता है परन्तु सिर्फ परमेश्वर के अनुग्रह (या सामर्थ) दया, और चुनाव (या चयन) के द्वारा होता है। हम मसीह पर विश्वास करने के द्वारा से परमेश्वर के घर बन जाते हैं (जैसा परमेश्वर हमें बाइबल में करने के लिये कहता है) ताकि हम उसके निवास स्थान बन जाएँ।

यीशु ने समझाया है कि क्यों कुछ लोग परमेश्वर की घनिष्ठता का अनुभव कभी नहीं कर सकते, उसने कहा, "तुमने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसने भेजा उसकी प्रतीति नहीं करते। तुम पवित्र शास्त्र में ढूँढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है। फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहत।" (यूहन्ना ५:३७-४०)।

हमें साधारण तौर से ये विश्वास कर लेना चाहिये कि परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के लिये यीशु हमारे पापों के खातिर बलिदान हुआ था। जब हम यीशु को अपना जीवन दे देते हैं ये विश्वास करते हुए कि वही हमारा मुक्तिदाता और प्रभु है और परमेश्वर हमारे अन्दर अपना निवास बना लेता है। उस स्थिति के बाद से वह, पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा से वह हममें आश्चर्यकर्म करना आरंभ कर देता है। यह सच्चाई कितनी अनोखी है लेकिन हमारे छोटे से दिमाग के लिये ये संचय करना और विश्वास करना कितना मुश्किल है।

एक नया हृदय और एक नई आत्मा

यहेजकेल अध्याय ३६ में परमेश्वर की प्रतिज्ञा नबी के मुख के द्वारा से प्रगट की गई कि ऐसा दिन आने वाला है कि जिसमें वह अपने लोगों के अन्दर एक नया हृदय और उनमें *अपनी* आत्मा बसाऐ।

> मैं तुमको नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा; और तुम्हारी देह में पत्थर का हृदय निकालकर तुमको मांस का हृदय दूँगा। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उसके अनुसार करोगे। (यहेजकेल ३६:२६-२७)

जैसे कि हमने देखा कि पुरानी वाचा के अनुसार पवित्र आत्मा लोगों के ऊपर एक विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिये उतरता था परन्तु वह उनके भीतर नहीं रहता था। परमेश्वर मनुष्य के द्वारा बनाये गये मिलापवाला तम्बू में उस युग के समय निवास करता था। परन्तु नई वाचा के अनुसार, यीशु मसीह के लहू के द्वारा से हस्ताक्षरित एवं मुहर करने से (इब्रानियों १३:२०), वह अब कभी भी वह मिलापवाला तम्बू में नहीं रहता जो मनुष्यों द्वारा बनाई गई थी परन्तु अब वह मनुष्य के हृदयों में वास करता है जिन्होंने अपने जीवन को उसके प्रति समर्पित कर दिया है।

जब तक यीशु मरकर के जी नहीं उठा था तब तक कोई भी नया जन्म नहीं पा सकता था और न परमेश्वर की आत्मा का निवासस्थान बन सकता था। उसे "भाईयों में पहिलौठा ठहरे" कहा गया है (रोमियों ८:२९)। यीशु के पुनरुत्थान के बाद, वह सबसे पहले चेलों को दिखाई दिया, जो कि यहूदियों के डर के मारे अपना द्वार बन्द किए थे। उसने उनको शान्ति मिले कहा और फूँककर कहा, "पवित्र आत्मा लो!" (यूहन्ना २०:२२)। यह समय था जब चेले नया जन्म पा चुके थे या आत्मा से उनका जन्म हो चुका था। उनमें एक नई जागृति आ गई जिससे वे प्रचार कर सकें।

इस घटना से उनकी एक नई शुरुआत हुई; लेकिन फिर भी उनमें परमेश्वर के राज्य की सेवा के लिये एक समुचित तैयारी की कमी थी। परमेश्वर का वचन हमें समझाता है :

> पर अब तुम भी इन सब को अर्थात् क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा और मूँह से गालियाँ बकना ये सब बातें छोड़ दो (पूर्ण रीति से)। एक दूसरो से झूठ मत बोलो क्योंकि तुमने पुराने (मरनहार) मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए (आत्मिक) मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो (उसकी समानता में हमेशा) अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार (समानता में) ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता (संपूर्ण और अत्याधिक सिद्ध ज्ञान के द्वारा) जाता है। (इस नई सृष्टि में सारी भिन्नता समाप्त हो जाती है। उसमें

न तो यूनानी रहा, न यहूदी, न खतना, न ख़तनारहित (कोई जाति भेद नहीं यदि परदेशी भी हैं), न जंगली, न स्कूती (जो सबसे अधिक असभ्य हैं), न दास और न स्वतंत्र; केवल मसीह सब कुछ और सब में है (सब कुछ और सब जगह, सब मनुष्यों के लिये, बिना व्यक्ति भेद के) (कुलुस्सियों ३:८-११)।

शुद्ध किये गये और पवित्र किये गये

यूहन्ना १६:१३-१५ के अनुसार पवित्र आत्मा हमें सब सत्य मार्ग में अगुवाई करता है। जो कुछ पिता के पास है वह सब यीशु का है और यीशु उस वीरासत को हमें दे देता है। पवित्र आत्मा जो कुछ यीशु को उस से सब ग्रहण करके हम तक सब पहुँचा देता है।

१ पतरस १:२ के अनुसार हम पवित्र आत्मा के द्वारा से पवित्र होने मे लिये बुलाये गये हैं। पवित्र होने का अर्थ है कि एक पवित्र उद्देश्य के लिये अलग किया जाना। *वाईनस कमप्लीट एक्सपोसीटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेन्ट बर्डस* के अनुसार *पवित्रीकरण या शुद्धिकरण* शब्द की परिभाषा ऐसी की गई है, "(अ) परमेश्वर के लिये अलग हो जाना" और "(ब) जो अलग हुए उनके जीवन का समुचित क्रम।" यह "वह संबंध परमेश्वर के साथ का है जिसमें लोग मसीह में विश्वास के द्वारा प्रवेश करते हैं...और जिसका एक मात्र मूल कारण मसीह की मृत्यु है।"

वाईन इस प्रकार समझाते हैं, "शुद्धीकरण का उपयोग नये नियम में भी किया गया है जिसमें विश्वासियों का अलगाव बुराईयों से और उसके मार्गों से किया गया है।" "शुद्धिकरण परमेश्वर की इच्छा है एक विश्वासी के लिये...और सुसमाचार द्वारा उसको बुलाने का उद्देश्य है...और इस बात को परमेश्वर से सीखना चाहिये...जैसा कि वह अपने के द्वारा से सिखाता है...और विश्वासी का उत्सुकता और तत्परता के साथ अनुसरण करना चाहिये...पवित्र स्वभाव के लिये शब्द है *हैगियोसुन* यह स्थानापन्न नहीं है, इसका मतलब यह है कि यह स्थानांतरित या दोषारोपित नहीं हो सकता, यह निजी धन है, निर्माण किया जाना, थोड़ा थोड़ा करके, परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता के परिणामस्वरूप और यीशु के नमूने का पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा पालन करना। पवित्र आत्मा शुद्धीकरण का सबसे बड़ा माध्यम है।"

जैसे यहाँ पर वाईन लागू करता है कि *शुद्धीकरण* और *पवित्रीकरण* ये दोनो शब्द एक दूसरे के समानार्थी शब्द हैं।

जब हम मसीह को अपना व्यक्तिगत मुक्तिदाता स्वीकारते हैं तब पवित्र आत्मा की सामर्थ से यीशु हमारे अन्दर रहता है, और हमारा जीवन बदलना आरंभ हो जाता है। कैसे? १ यूहन्ना ३:९ कहता है, "जो कोई परमेश्वर से (एकलौता) जन्मा है (सोच विचार कर, जान बुझकर, और आदत से) वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है (उसके जीवन का सिद्धान्त, उसका पवित्र बीज उसमें स्थाई रूप से रहता है); और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से (एकलौता) जन्मा है।" यीशु, परमेश्वर पिता का सम्पूर्ण बीज बनकर आया। जब हम यीशु को अपना मुक्तिदाता ग्रहण कर लेते हैं तब हमारा नया जन्म हो जाता है और पवित्रता का बीज हममें बोया जाता है और भरपूरी में निरंतर बढ़ने लगते हैं और फलने लगते हैं जब हम पवित्र आत्मा के साथ काम करने लग जाते हैं,जो कि हमें यीशु मसीह के स्वरूप में निरंतर बदलता जाता है।

पवित्र आत्मा हमें बदलता है

> परन्तु जब हम उसके उघाड़े चेहरे से प्रभु के प्रताप को इस प्रकार प्रगट होता देखते है (परमेश्वर के वचन में), जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं। (२ कुरिन्थियों ३:१८)

इस परिच्छेद से हम यह सीखते है कि विश्वासियों के बदलने के लिये एवं उन्हें यीशु मसीह के उचित प्रतिनिधि होने के लिये परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा के सामर्थ की जरूरत है।

हम जितने मसीह के पास आते हैं हमें बदलने की आवश्यकता है। हम कर सकते हैं और हमें बदलने की इच्छा करनी चाहिये, किन्तु हम अपने आप से बदल नहीं सकते। हम सम्पूर्ण तरीके से आवश्यक प्रभावशाली बदलाहट के पवित्र आत्मा की सामर्थ पर निर्भर होना चाहिये परन्तु हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि शुद्धिकरण प्रक्रिया में पवित्र आत्मा एक अभिकर्त्ता (एजेन्ट) के समान काम करता है। दूसरे शब्दों में, बिना पवित्र आत्मा के पवित्रता संभव नहीं है।

मुझे मेरी लापरवाही के लिये अंगीकार करना पड़ता है, इसलिये कि मैं बहुत वर्षों तक परमेश्वर की सामर्थ पाने के लिये बहुत ही परिश्रम करते हुए ढूँढ़ती रही। मैं चिन्ह, चमत्कार, अद्‌भुत कार्य, दुष्टात्माओं के ऊपर अधिकार, और

यीशु के नाम में बड़े बड़े और सामर्थ के कामों को देखना चाहती थी; परन्तु मैं एक "नामधारी" मसीही थी। मैं लगभग दस साल पहिले आत्मा का बपतिस्मा पाई हुई मसीही थी इससे पहले कि मैं भीतरी जीवन में यीशु को राज्य करने के लिये स्थान देती गई वैसे ही मैंने अपने बाहरी जीवन में उसके अधिक सामर्थ को देखती चली गई।

यीशु के चेले जो कुछ वह उसके राज्य के बारे मे कहना चाह रहा था उसके बारे में अधिक कुछ समझ न सके। वे लोग यह सोचकर रहे थे कि वह इस पृथ्वी पर दूसरा कोई राज्य स्थापित करने जा रहा है और वे सभी लोग उस नये राज्य शासन में राज्य करने वाले होंगे।

"जब फरीसियों ने उससे पूछा, कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा? तो उसने उनको उत्तर दिया, 'कि परमेश्वर का राज्य प्रकट रूप में नहीं आता। और लोग यह न कहेंगे, "कि देखो यहाँ है", या "वहाँ है", क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।"' (लूका १७:२०-२१)

रोमियों १४:१७-१९ में प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर के राज्य के बारे में और आगे समझाया है, "क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनंद है; जो पवित्र आत्मा से होता है और जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों में ग्रहणयोग्य ठहराता है। इसलिये हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल-मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो।"

परमेश्वर का राज्य हमारे भीतर है, और अगर हम परमेश्वर की उपस्थिति का आनंद उठाना चाहते हैं तो हमें यीशु को हमारे भीतर पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा प्रभुता करने देना चाहिये। अगर हम यीशु को अपने जीवन का प्रभु मान लिये हैं तो हमें चाहिये कि हमारे भीतर जो राज्य है उसे हम पूर्णता से राज्य करने दें। उसकी आत्मा हमेशा हमारी अगुवाई करती है जिससे शांति और पूर्ण उत्थान हो तथा उन सबके लिये भी हो जो हमारे चारों तरफ रहते हैं।

वास्तविकता तो यह है कि पवित्र आत्मा हम विश्वासियों के भीतर रहता है, और वह खुद में प्रमाण है कि जब हम आवश्यकता में रहते हैं तब वह हमारी सहायता करने के लिये उपलब्ध रहता है यह उसकी इच्छा है। जितने लोग पवित्रता में जीना चाहते हैं उनके जीवन में परीक्षा आयेंगी, लेकिन परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने हमें अपनी आत्मा दी है जो हमें इसके ऊपर जय पाने की शक्ति देता है और उचित चुनाव करने में मदद करता है। हम धीरे धीरे अंश अंश करके बदलते जाते हैं या जैसे २ कुरिन्थियों ३:१८ में कहा गया है,

"महिमा से महिमा तक।" जब इस प्रकार की बदलाहट होती रहती है, तब भी हम गलती करते रहते हैं, परन्तु परमेश्वर की क्षमा यीशु मसीह के द्वारा हमेशा हमारे लिये उपलब्ध है। क्षमा को प्राप्त करना वास्तव में हमें बल देता है और हमें इस योग्य बनाता है कि हम पवित्रता के नये स्तर या भले स्वभाव की ओर बढ़ते जायें।

क्षमा हमें स्वतंत्र करता है और हमारे हृदय को डाह, स्वार्थ और असंतोष से शुद्ध करता है। जब हम अपने हृदय में परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति चैतन्य हो जाते हैं, फिर हम अभक्ति के स्वभाव में बने नहीं रह जाते हैं। परमेश्वर हमें पाप के ऊपर विजयी होने की ताकत देता है और हमें बदलना शुरू कर देता है, जैसे ही हम अपना मन उसकी ओर केन्द्रित करके उन बातों को खोजने में लग जाते हैं जिससे पवित्र आत्मा प्रसन्न होती है।

जब हम कोई गलती करते है तब हम अपने आप में पराजय और बेकार महसुस करते हैं, यह हमें कमजोर बना देता है। हम अपने आप में बुरा मानने के बजाय हम परमेश्वर में नये स्तर में बढ़ने के लिये हमारी आत्मिक ऊर्जा का इस्तेमाल करना चाहिये। किसी विश्वासी को जिसका हृदय परमेश्वर की ओर साफ है उसको परमेश्वर सिद्धता की ओर निरंतर बढ़ाता जायेगा। लेकिन जब तक हम इस वर्तमान संसार में शरीर में जीते हैं तब तक कोई भी पूर्ण सिद्धता में नहीं आ सकता।

हाल ही में मैं अपने से हुई एक के बारे में बहुत बुरा महसुस कर रही थी और फिर मैं एक पुस्तक उठाकर पढ़ रही थी तब मेरी नज़र इन शब्दों पर पड़ी, "इसमे १०० प्रतिशत सच्चाई है कि आज आप एक गलती कर सकते है।" इन शब्दों ने मुझे याद दिलपया कि यीशु मुझ जैसे लोगो के लिए मरप जो इच्छा तो रखता है सही काम करने के लिए परन्तु सफल नहीं होता।

परमेश्वर अपने अनुग्रह और दया के कारण से हमारे पापों (भूल चूक, त्रुटि, दुर्बलता, कमजोरी, असफलता) के लिये प्रबंध किया है। और वह प्रबंध क्षमा है। जब आप असफल हो जाये तो परमेश्वर की क्षमा प्राप्त कीजिये, लेकिन बेहतरीन होने के लिये कोशिश करना न छोड़िये।

त्रिएक में तीन व्यक्ति

यीशु ने अपने चेलों से कहा कि जब वह चला जायेगा तो पिता, एक और सहायक को अर्थात् पवित्र आत्मा को भेजेगा जो उनके भीतर रहेगा और

परामर्श देगा, सिखायेगा, सहायता करेगा, बल देगा, उनके लिये याचना करेगा, उनके लिये वकालती करेगा, पाप और धार्मिकता के प्रति कायल करेगा। पवित्र आत्मा उनके साथ घनिष्ठ संगति करेगा, सब सत्य मार्ग पर अगुवाई करेगा, और यीशु मसीह के संग संगी वारिस होने में भी मदद करेगा। (देखें यूहन्ना १६:७-१५; रोमियों ८:१७)

परमेश्वर कभी भी बिना प्रबंध के कोई भी काम करवाने की अपेक्षा नहीं करता है जो हमारी जरूरत की हो। हमें पवित्र आत्मा की जरूरत है और परमेश्वर ने उसका प्रबंध किया है। क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान परमेश्वर की ओर से है और वह सारी उत्तम पदार्थों का स्रोत है (देखें याकूब १:१७), जो कि उसके पुत्र यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा और पवित्र आत्मा के द्वारा से हमारा प्रशासन किया जाता है।

पवित्र त्रिएक जो कि एक परमेश्वर में तीन व्यक्ति हैं, यह एक ऐसा विचारधारा है कि हमारा सीमित दिमाग इसको आसानी से ग्रहण नहीं कर सकता। यहाँ पर गणित की कोई जरूरत नहीं है, बिल्कुल नहीं, यह सच्चाई है। हम एक परमेश्वर की सेवा करते हैं, जो कि केवल सच्चा परमेश्वर है, परन्तु वह तीन व्यक्तियों के द्वारा से हमारी सेवा करता है - पिता परमेश्वर, पुत्र यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा।

जैसा कि हमने देखा है कि जो कुछ हमारी जरूरत है परमेश्वर पिता से, वह सब उसके बेटे यीशु मसीह के द्वारा से मिलता है और पवित्र आत्मा के द्वारा से प्रशासित होता है। फिर मैं दुबारा इस बात को कह रही हूँ और ज़ोर दे रही हूँ कि परमेश्वर पिता और उसके बेटे यीशु को जितना जानना महत्वपूर्ण है, पवित्र आत्मा को व्यक्तिगत रूप में जानना एवं उसके साथ घनिष्ठ संगति रखना भी अति महत्वपूर्ण है।

त्रिएक के प्रमाण बाइबल में कई जगह पाये जाते हैं। उदाहरण के लिये, उत्पत्ति १:२६ कहता है, "परमेश्वर ने कहा, हम (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ।" इस पद में परमेश्वर अपने बारे में नहीं कहता है जैसे "मुझे" और "मेरा" लेकिन 'हम' और "हमारा" कहता है। हम मत्ती ३:१६-१७ में यीशु के पानी का बपतिस्मा लेने के समय त्रिएक के बारे में देखते हैं। और जब पवित्र आत्मा उसके ऊपर कबूतर की नाईं उतरा और उसी समय स्वर्ग से एक आवाज (पिता की) आयी यह कहते हुए, "कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ (पद १७)।" यूहन्ना १४:१६ में यीशु ने अपने चेलों से कहा, "और मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक सहायक देगा।"

मत्ती २८:१९ में चेलों से यीशु ने कहा था कि पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दें। प्रेरिताई आशीष वचन जो २ कुरिन्थियों १३:१४ में पाया जाता है इस प्रकार है, "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।"

जब यीशु क्रूस पर मरा, उसने परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखा कि वह उसे मरे हुओं में जिलाएगा और परमेश्वर ने ऐसा किया - पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा से। इस सच्चाई का बयान रोमियों ८:११ में किया गया है।

पवित्र त्रिएक में तीन व्यक्ति हैं इस तथ्य को इंकार करना असंभव है क्योंकि इसका अस्तित्व पवित्रशास्त्र के उपरोक्त सन्दर्भों और अन्य वचन है जहाँ पर यह आधारित है। हाँ, त्रिएक पवित्रशास्त्र के अनुसार वास्तविकता है। इस समय जो आदर हमें मिल रहा है वह सिर्फ पवित्र आत्मा के कारण से है। उसकी अवहेलना हम हमेशा से और बार बार करते चले गये हैं। वह हमारी अनभिज्ञता और नकारने की आदत को क्षमा करें।

पवित्र आत्मा को जानने की आवश्यकता

यह पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व और प्रकाशन और कार्य हैं जिसके द्वारा से मैं इस पुस्तक में लिखने का प्रयास कर रही हूँ। मैं इस विषय की ओर बहुत ही डरते और थरथराते हुए बढ़ रही हूँ, क्योंकि मनुष्य की क्या ताकत है कि पवित्र आत्मा के विषय पर छानबीन कर सही सही लिख सके जब तक पवित्र आत्मा स्वयं इस योजना का अगुवा न बने? इसलिये मैं सहायक (पवित्र आत्मा) से आपके लिये इस पुस्तक के द्वारा से बुद्धि, अगुवाई, उस पर पूर्ण आश्रित होकर आपके लिये प्रकाशन और वह स्वयं अपने आपको प्रकट करे, यह मैं माँगती हूँ।

मेरी इच्छा यह है कि आप पवित्र आत्मा की सेवकाई को समझें, इसके महत्व को समझें, सहयोग करें और - इसके द्वारा से - *परमेश्वर की घनिष्ठता* के नये स्तर को प्राप्त कर सकें जिससे आप उसकी भली योजना में उसकी अगुवाई पा सकें।

बाहरी सामर्थ सिर्फ भीतरी शुद्धता के द्वारा से आती है और भीतरी शुद्धीकरण, यह पवित्र आत्मा का कार्य है जो हमारे अन्दर रहता है। वह आपको अपने आप से भरपूर करना चाहता है ताकि आपको वह सामर्थ दे जिससे आप यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा से जो बहुतायत का जीवन उपलब्ध है जी सकें।

आप अपने भीतरी जीवन के बारे में एक विस्तृत दृष्टि बनाकर उसके प्रति जरूर गम्भीर रहें। घर की परिस्थितियों की परवाह न करते हुए और न बैंक खाते की, न शादी की या सेवकाई की परन्तु क्या कुछ आपके अन्दर चल रहा है उसकी परवाह करें। पवित्र आत्मा की सिद्ध शान्ति आपके जीवन में आने के लिये उसको अगुवाई करने दें।

४

नई वाचा के आधीन जीना

जब आदम और हव्वा अदन की वाटिका में पाप में पड़ने से पहले परमेश्वर के साथ थे तब उनकी उसके साथ अति निकट संगति वह घनिष्ठता थी; वे लोग आत्मिक तौर से जीवित थे। उनकी आत्मा, परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति चैतन्य थी तथा उनके शरीर और प्राण का अगुवा था। उन्हें यह चिताया गया था कि अगर वे परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानेंगे तो मर जायेंगे। देखें उत्पत्ति २:१६-१७)। यह शारीरिक मृत्यु नहीं थी। परन्तु यह आत्मिक मृत्यु थी।

जब आदम और हव्वा अनाज्ञाकारी हो गये, तब वे तुरन्त परमेश्वर की पवित्रता के महत्व को समझ गये। अपने अपवित्र स्वभाव के कारण वे लज्जत हो गये, और परमेश्वर से अपने आप को छिपा लिये। वे लोग परमेश्वर के साथ मित्र के समान थे; एक साथ चलते थे, और आमने सामने बातचीत करते थे। लेकिन अभी वे उससे डर गये - जैसे वह भस्म करने वाली आग हो।

पाप परमेश्वर की पवित्रता की उपस्थिति के सामने ठहर नहीं सकता, इसलिये जब आदम और हव्वा ने वाटिका में परमेश्वर के चलने की आवाज़ सुनी, वे अपने नंगेपन की लज्जा को छिपाने की कोशिश किये। यद्यपि वे अनाज्ञाकारी रहे फिर भी परमेश्वर ने उन पर तरस दिखाया उसने उनकी लज्जा को ढाँपने के लिये चमड़े का अंगरखा बनाया, यह पहली मृत्यु हुई जिसमें पाप को ढाँपने के खातिर लहू बहाया गया (देखें ३:९-२१)।

आदम और हव्वा के लिये यह बड़ा दुखदाई हो जाता अगर वे परमेश्वर से अनन्त काल के लिये छिप जाते, इसलिये उत्पत्ति ३:२२-२४ हमें समझाता है कि परमेश्वर ने उन्हें अदन की वाटिका से निकाल दिया, ऐसा न हो कि वे जीवन के वृक्ष का फल खाकर सदा के लिये उसी स्थिति में पाये जायें और पापके कारण परमेश्वर से सदा दूर रहें।

आदम और हव्वा का जीवन एकदम उल्टा पुल्टा हो गया। वे अब प्राण और शरीर के अधिकार में आ गये थे और आत्मिक रूप से मृत्यु के; परन्तु अब परमेश्वर के घनिष्ठ उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता न रही।

जब तक हम यीशु मसीह के क्रूस पर बलिदान होने के उस वैकल्पिक कार्य को हम ग्रहण नहीं कर लेते हैं और विश्वास के द्वारा उसे अपना मुक्तिदाता स्वीकार नहीं करते हैं तब तक हम परमेश्वर से अलग रहते हैं। जब हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं तब हम परमेश्वर की उपस्थिति से फिर अलग नहीं रह जाते। हम अपने सृजनहार के साथ एक घनिष्ठ मित्रता का आनन्द उठाने के लिये स्वतंत्र किये जाते हैं जैसे कि उसने आरंभ में योजना बनाई थी। परन्तु अभी परमेश्वर हमसे प्रति संध्या अब वाटिका में मिलना नहीं चाहता। वह किसी पहाड़ पर नहीं रहता जिसे मूसा ने बनवाया था जिस समय इस्राएल की संतान जंगल में यात्रा कर रही थी। और वह हमारे हाथों के द्वारा बनाये गये तम्बुओं में भी नहीं रहता।

जब हम मसीह को ग्रहण कर लेते हैं तब पवित्र आत्मा हमारे अन्दर रहने लगता है (देखें यूहन्ना १४:२०)। परमेश्वर हमारी आत्मा में होकर चलना चाहता है - हमारे जीवन का केन्द्र बिन्दु बनना चाहता है - ताकि वह हमारे समीप सब लोगों से अधिक रहे। जब परमेश्वर का पवित्र आत्मा हमारी आत्मा में होकर चलता है, तब हमारी आत्मा परमेश्वर के निवासस्थान के रूप में तैयार हो जाती है (देखें १ कुरिन्थियों ३:१६-१७) और वह पवित्र हो जाता है क्योंकि परमेश्वर वहाँ पर रहता है।

जिस पवित्र स्थिति में हम विश्वासी लोग रखे गये हैं इसका कार्य हमारे प्राण और शरीर में तथा प्रतिदिन के जीवन में दिखना चाहिये। यह एक प्रक्रिया के समान होना चाहिये, और जो बदलाव के जो क्रम हैं वह वास्तव में गवाही का कारण है उन सबके लिये जो हमें जानते हैं।

उत्पत्ति अध्याय ३ हमसे कहता है कि किस प्रकार से शैतान ने हव्वा को धोखा दिया था और वह किस प्रकार से आदम को अपने साथ आज्ञा तोड़ने में बहका दी। उनके इस अनाज्ञाकारिता के कार्य ने परमेश्वर को बाध्य किया कि उसकी दया के अनुसार वह अपनी सृष्टि के छुटकारे के लिये एक व्यवस्थित योजना को बनाये। वह अपने लोगों को पाप के दासत्व से वापस मोल ले और फिर से उस पद पर पहुँचा दे जहाँ उसकी उपस्थिति से आनन्दित रहें और पवित्र जीवन जीयें। (देखें प्रेरितों के काम २०:२८; १ कुरिन्थियों ६:२०)।

परमेश्वर अपनी योजना को हजारों साल से तैयार कर रहा था। जबकि वह यीशु के आगमन के ठहराए हुए समय का इंतजार कर रहा था, और पवित्र आत्मा मनुष्य के साथ था। मनुष्य सही और गलत क्या है इसे जानते थे क्योंकि परमेश्वर ने व्यवस्था को बनाया था। व्यवस्था पवित्र और सिद्ध थी, परन्तु मनुष्य स्वयं सिद्ध न होने के कारण व्यवस्था का पालन सिद्ध रूप में नहीं कर सका। उन वर्षों के दर्मियान, जब मनुष्य पापों के बलिदान चढ़ाया करता था परन्तु वह पाप के प्रति कायल होने के स्वभाव से बच नहीं सकता था। वह हमेशा चैतन्य था कि वह एक पापी है जो हमेशा उसे उसके अपराध के प्रति उसे दोषी ठहराती है।

मूसा को जो व्यवस्था दी गई थी, उसमें मनुष्य जाति के पापों को ढाँपने के लिये बैलों और बकरियों के लहू का बलिदान चढ़ाया जाता था, लेकिन उसके द्वारा से पाप पूरी रीति से कभी भी दूर नहीं किया जा सकता था (देखें इब्रानियों १०:१-१४)।

परमेश्वर ने इस आशय के साथ मनुष्य को व्यवस्था नहीं दिया कि वह सिर्फ इसका पालन करे, बल्कि उसको पाप के प्रति और उसकी शक्तिहीन अवस्था तथा उसे एक मुक्तिदाता की आवश्यकता है चैतन्य बनाए (देखें रोमियों ५:२०)। आप देखें, कि हमें तब तक कुछ नहीं मिलेगा जब तक हम ये विश्वास न कर लें कि हमें इसकी जरूरत है। परमेश्वर ने अपने पुत्र को बलिदान के रूप में तैयार किया जिसे विश्वास के द्वारा से उसे ग्रहण किया जाय, परन्तु पवित्र आत्मा को भी आकर अविश्वासियों के जीवन में काम करने की जरूरत थी, जिससे वे पाप के प्रति कायल हो जायें और उन्हें एक छुटकारा देने वाले की जरूरत थी।

इससे पहले कि लोग मसीह को मुक्तिदाता ग्रहण करें, उन लोगो को यह एहसास होना चाहिए कि उन्हें मुक्तिदाता की आवश्यकता है। कुछ लोग दूसरों की अपेक्षा जल्दी मान लेते हैं। दुख की बात है कि कुछ लोग कभी भी नहीं मानते हैं और बहुत से हैं जो अपने आप को बचाने के चक्कर में अपने जीवन को बरबाद कर देते हैं उसके पश्चात ही यीशु को अपना जीवन सौंपते हैं।

पवित्र आत्मा अविश्वासियों के जीवन में काम करता है ताकि वे लोग अपने पापमय अवस्था एवं उद्धार की जरूरत के प्रति चैतन्य हो जायें या उनका विवेक जाग जाये। एक बार जब वे यीशु को अपना मुक्तिदाता ग्रहण करते हैं तो एक तरफ का उसका काम पूरा हो जाता है। वह फिर भीतर रहने के लिये आ जाता है ताकि उनकी हर तरीके से जरूरत के समय मदद कर सके। यह मदद भी शामिल है मगर शुद्धीकरण प्रक्रिया के लिये यह सीमित नहीं है, जिसका

मतलब यह है कि पाप से स्वतंत्र होना और एक विशेष उद्देश्य के लिये अलग किया जाना।

जब यीशु मरा, वह परमेश्वर का सिद्ध मेम्ना था और प्रायश्चित की आवश्यकता के लिये अंतिम बलिदान था (देखें यूहन्ना १:२९; इब्रानियों ७:२६-२७)। उस समय से और आगे तक, जितने उस पर विश्वास और भरोसा करेंगे अपने उद्धार के लिये उनका विवेक धार्मिक होगा और परमेश्वर की उपस्थिति का आनंद उठा सकेंगे। वे परमेश्वर के साथ निकट और घनिष्ठ संगति में हो सकते हैं, जैसे आदम और हव्वा पाप करने से पहले संगति किया करते थे।

पाप के लिये और कोई बलिदान नहीं

> *पर यह व्यक्ति (मसीह) तो पापों (जिससे फायदा हो) के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढ़ाकर परमेश्वर के दहिने जा बैठा...* और जब इन की (पापों और व्यवस्था तोड़ने की) क्षमा (सजा का रद्द किया जाना) हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा (इब्रानियों १०:१२,१८, मेरा इसमें जोर)।

क्या सुसमाचार है? अब पापों के प्रायश्चित के लिये कोई बलिदान की जरूरत नहीं। अब हम यीशु मसीह की ओर देख सकते हैं जो सदा के लिये एक बार बलिदान हुआ जिससे हम *निरंतर* क्षमा और पापों की सजा के रद्द किये जाने का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

पुरानी वाचा के अनुसार हम यह देखते हैं कि परमपवित्र स्थान में वर्ष में एक बार महायाजक प्रवेश करता था जहाँ परमेश्वर प्रायश्चित के ढंकने के ऊपर विराजमान रहकर उससे मिला करता था। वह बैलों और बकरी के बलिदान का लहू लेकर अपने पापों के लिये और लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित करता था। (देखें इब्रानियों ९:७)

परन्तु जैसे ही जल्दी वह संस्कार सम्पन्न किया जाता है, वैसे ही अगले वर्ष के हिसाब में और जुड़ना शुरू हो जाता है। यह ऐसा है मानो साल भर काम करें और पिछले साल के क्रिसमस त्यौहार का कर्ज अदा करें, और जैसे ही जल्दी आप बिल भुगतान कर चुकें, फिर से आने वाले क्रिसमस के लिये कर्ज लेने पर जायें। हो सकता है कि आप सिर्फ कुछ पलों के लिये कर्ज मुक्त हों। यह आपके लिये बहुत ही भयानक बात हो सकती है क्योंकि ऐसा लगता है कि

कभी इस परिस्थिति से हम उबर नहीं सकते साथ ही साथ अपने आप को अपराधी और दोषी समझना।

पुरानी वाचा के अनुसार लोग यह विश्वास करते थे कि मसीहा आयेगा और उन्हें सब पापों से छुटकारा देगा लेकिन उन्होंने अपने हृदय में इसके परिणाम को देखा भले ही अपने विश्वास के परिणाम को कभी नहीं देख पाये। उन्होंने हमेशा यह प्रयास किया कि परमेश्वर को प्रसन्न करें।

नई वाचा के विश्वासी अभी भी पुरानी वाचा के आधीन जीते हैं

> इस संसार (इस युग) के सदृश्य न बनो, (बाहरी तौर से लाया जाना और सजाया जाना, बेहतरीन रीति), परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए (इसके नये नमूने एवं नये स्वभाव) हो जाने (सम्पूर्ण तरीके से) तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता (परिवर्तन) जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली,भाँति भावती, और सिद्ध (उसकी दृष्टि में आपके लिये) इच्छा अनुभव से मालूम (अपने लिये) करते रहो। (रोमियों १२:२)।

यद्यपि यीशु मसीह के त्यागपूर्ण मृत्यु एवं पुनरूत्थान के द्वारा से हमें एक नया मोड़ और जीने का तरीका मिला है (इब्रानियों १०:१९-२० देखें), फिर भी आज कितने लोग जो मसीह में विश्वास करते हैं वे पुरानी वाचा के आधीन जीते हैं। अभी वे शरीर के कामों में रहते हैं जिसके द्वारा वे परमेश्वर तक पहुंचने की कोशिश करते हैं।

अब हमें परमेश्वर तक पहुँचने के लिये कोशिश करने की जरूरत नहीं। उसने हमें खोज लिया है और यीशु मसीह द्वारा पकड़ लिया है। परमेश्वर हमारे निकट आने से बढ़कर वह हमारे अन्दर रहता है या आत्मा या हमारे हृदय में रहता है। मैंने यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत मुक्तिदाता ९ वर्ष में किया था। मैं अपने पापमय अवस्था के प्रति चैतन्य हुई और परमेश्वर को क्षमा के लिये याजना की यीशु के द्वारा से। यद्यपि मेरा नया जन्म हो चुका था फिर भी मैं इस बात को कभी नहीं जान पाई। मुझे उस विषय की शिक्षा नहीं मिल पाई थी और इस कारण मैं अन्धकार के अनुभव में जी रही थी यद्यपि ज्योति मेरे अन्दर चमक रही थी।

जब मैं जवान थी तो मैं चर्च ईमानदारी से जाया करती थी, पानी का बपतिस्मा भी ली, दृढ़ीकरण तालीम भी लिया करती थी, और जो कुछ जरूरत समझती थी सब किया करती थी तब भी मैं परमेश्वर के समीप और घनिष्ठ

आनन्द का अनुभव नहीं करती थी। मैं विश्वास करती हूँ कि इसी तरह का अनुभव हजारों लोग आज कर रहे हैं और ये सदियों से चला आ रहा है।

यीशु इसलिये नही मरा कि हमें एक धर्म दे; बल्कि वह इसलिये मरा कि हमारा परमेश्वर के साथ उसके द्वारा तथा पवित्र आत्मा जिसे वह भेजेगा हर विश्वासी के अन्दर रहने के लिये एक व्यक्तिगत संबंध स्थापित हो जाये।

मेरा आत्मा में जन्म हो गया था मगर मैं प्रकाशन रहित थी। लोग धनवान हो सकते हैं, लेकिन यदि वे विश्वास करे कि वे गरिब हैं। उनका अनुभव दूसरो के अनुभव से नहीं होगा जिनका जिवन पहले से ही गरीबी मे है! यदि लोगों के पास बहुत जयादाद है परंतु वे नहीं जानते है कि उसे कैसे खर्च करना है।

रोमियों १२:२ कहता है कि परमेश्वर के मन में हमारे लिये एक योजना है। उसकी इच्छा हमारे लिये भली, भाँती और सिद्ध है, परन्तु हम अपने मन को सम्पूर्ण रीति से नया कर लें इससे पहले हम उसकी भली योजना का अनुभव हमेशा के लिये करें (देखें पद १-२)। जब हम अपने मन को नया बनाते हैं तब हम एक नया स्वभाव और एक नमूना पाते हैं परमेश्वर के वचन को अध्ययन करने के द्वारा से। उसका वचन सत्य है (देखें यूहन्ना १७:१७) और शैतान के सारे झूठों का खुलासा करता है जिस पर हमने हमेशा से विश्वास किया और धोखा खाया है।

आदम और हव्वा ने शैतान के झूठ पर विश्वास किया जो कि परमेश्वर के प्रबंध के बाहर था जो उन्हें संतुष्ट कर सके (देखें उत्पत्ति ३:१-७)। हम सभी लोग इस प्रकार की गलती करते है और जब तक हम यह सीख नहीं लेते कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपस्थिति को छोड़ और *कोई भी बात* हमें गहराई से संतुष्टि नहीं दे सकती है।

हमारी संतुष्टि हमारी पत्नी पर निर्भर नहीं हैं। हमें आनंद हमारे बच्चों, मित्रों एंव जो लोग हमारे साथ काम करते हैं उससे प्राप्त नहीं हो सकता। लोगों के द्वारा से हमें निश्चय निराशा मिलेगी। परंतु परमेश्वर ने हमे उसके साथ संगति करने के लिए रचा है। हमे किसी भी चिज से तृप्ती नहीं मिलेगी सिवाए परमेश्वर के।

लेकिन शैतान अपने झूठ के द्वारा हमारे कानों में फुसफुसाएगा, “ओह, यह बात तुझे खुश रखेगी, तुझे इसकी ही जरूरत है।” फिर हम *उस बात* को माँगने के लिये परमेश्वर के सामने सारी शक्ति यू ही गँवा देते हैं। मैं ऐसे समय के बारे में सोच भी नहीं सकती, *ओह, परमेश्वर मुझे इसी बात की ही जरूरत*

थी। तब तो मैं उस वस्तु को माँगने के लिये मैं अपनी सारी आत्मिक शक्ति, प्रार्थना और अपना सारा अध्ययन को लगा दूँगी।

कभी कभी हमें हमारे दिल की इच्छा बहुत ही ऊँची लग सकती है। मैं वर्षों से यह चाहती थी कि मेरी सेवकाई बहुत ही बढ़े। जब नहीं बढ़ी तो मैं निराश और असंतुष्ट हो गई। मैं उपवास और प्रार्थना करना शुरू कर दी और हर प्रकार से कोशिश की कि अत्यधिक लोग मेरी सभाओं में आयें।

मैं याद करती हूँ कि जब मैं परमेश्वर से शिकायत करती थी, जैसे मैं चाहती थी तो मैं देखती थी कि लोग वहाँ विलम्ब से आते थे, और कोई उत्साहित नहीं रहता था, और पहले कि अपेक्षा लोग आधे से कम रहते थे। तब मैं सभा समाप्त करने के पश्चात् अपने आप से प्रश्न करती थी, "हे परमेश्वर क्या मैं गलत कर रही हूँ। तू मुझे क्यों आशीष नहीं दे रहा है? जबकि मैं उपवास और प्रार्थना कर रही हूँ। मैं देती भी हूँ और विश्वास भी करती हूँ। हे परमेश्वर, मेरे उन सब भले कामों पर दृष्टि कर, क्योंकि तू मेरे लिये कुछ नहीं कर रहा है।"

मैं बहुत ही उदास हो गयी और मुझे ऐसा महसुस हुआ कि मैं टूट जाऊँगी। मैंने पूछा, "हे परमेश्वर, तू मुझसे ऐसा क्यों बर्ताव कर रहा है?"

उसने कहा, "जॉयस, मैं तुम्हें यह सिखा रहा हूँ कि मनुष्य केवल रोटी ही से जीवित नहीं रहेगा।"

मैं यह जानती थी कि परमेश्वर ने मुझसे बाइबल से ही बातचीत किया था, लेकिन उस समय मैं पवित्रशास्त्र से उतना चिर परिचित नहीं थी कि वह पद कहाँ पर मिलेगा। मैं जानती थी कि उसने अपना वचन कह दिया था, *रेमा* (व्यक्तिगत, अकेले के लिये संदेश) मेरे लिये। और मैं पवित्रशास्त्र में इसकी अधिक समझाईश के लिये ढूँढ़ती रही परन्तु मुझे यह भाग नहीं मिला। मुझे व्यवस्थविवरण ८:२-३ मिला जो मुझे पसंद नहीं आया।

> और (उत्सुकतापूर्वक) स्मरण रख कि तेरा परमेश्वर यहोवा उन चालीस वर्षों में तुझे सारे जंगल के मार्ग में इसलिये ले आया है, कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके यह जान ले कि तेरे मन में क्या क्या है, और कि तू उसकी आज्ञाओं का पालन करेगा या नहीं। उसने तुझको नम्र बनाया, और भूखा भी होने दिया, फिर वह मन्ना, जिसे न तू और न तेरे पुरखा जानते थे, वही तुझको खिलाया; इसलिये कि वह तुझको

सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुँह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है।

परमेश्वर चाहता था कि उसको पाने की जो मेरी इच्छा है वह और साफ और स्पष्ट हो। प्रभु ने मुझसे कहा, "कोई भी वस्तु जो मेरे अलावा तू और चाहती है ताकि उससे तू संतुष्ट हो, तो यह जानना कि शैतान उसको तेरे विरूद्ध इस्तेमाल कर सकता है।"

इसका यह मतलब नहीं कि हमें वस्तुओं की जरूरत नहीं पड़ती; और परमेश्वर नहीं चाहता है कि हम उन बातों को हम अपनी इच्छा के द्वारा से उसके सामने रखें। वह चाहता है कि हम उसके लिये एक अलग से जगह खोजें जहाँ पर वह अपनी प्रकट उपस्थिति में जिसमें हम रहते हों और स्वयं परमेश्वर में ही हम संतुष्ट हो। वह चाहता है कि हम उसे हमेशा प्रथम स्थान दे। विचार करें १ यूहन्ना ५:२१ पर :

हे बालको, अपने आपको मूरतों (झूठे ईश्वरों) से बचाए रखो - (कोई भी वस्तु या वे सब बातें जो परमेश्वर का स्थान हमारे हृदय में ले लेती हैं और कोई भी वस्तु जो उसके विकल्प में हमारे जीवन में प्रथम स्थान ले लेती हैं)।

नई वाचा में हमारी सारी आवश्यकताएँ निहित हैं

कुलुस्सियों ३:१ कहती है, "तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज (धनी, अनन्त खजाना) में रहो, जहाँ मसीह वर्तमान है।" पद २ और ३ कहते हैं, "पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं (ऊपर की वस्तुओं पर) ध्यान लगाओ। क्योंकि...और तुम्हारा (नया, सच्चा) जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।"

हमारे मन के अन्दर दिन भर क्या चलते रहता है? किस विषय पर हम हमेशा सोचते रहते हैं? यदि हमारा दिमाग समस्याओं के ऊपर केन्द्रित रहता है तो हम यह जानें कि हम परमेश्वर को नहीं खोज रहे हैं। और अगर हम यही सोच रहे हैं कि हम किस प्रकार से परमेश्वर से हमारे खास कामों को करवा लें, तब भी हम यह जान ले कि हम उसे शुद्ध हृदय से नहीं खोज रहे हैं।

यशायाह ४९:८-१० की भविष्यद्वाणी जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा है और हमारे लिये उत्तर भी है ताकि उसके प्रति जो लालसा और प्यास है उसे वो मिटाये :

> यहोवा यों कहता है, अपनी प्रसन्नता के समय मैंने तेरी सुन ली, उद्धार करने के दिन मैंने तेरी सहायता की है; मैं तेरी रक्षा करके तुझे लोगों के लिये एक वाचा ठहराऊँगा, ताकि देश का स्थिर (इसके वर्तमान खंडहर की अवस्था से) करे और उजड़े हुए स्थानों को (नैतिक पतन अन्यजातिवाद का) उनके अधिकारियों के हाथ में दे दे; और, बन्धुओं से कहे, बन्दीगृह से निकल आओ; और जो (आत्मिक) अन्धियारे में है उन से कहे, अपने आप को दिखलाओ (धार्मिकता के सूर्य की रोशनी में आ जाओ)। वे मार्गों के किनारे किनारे पेट भरने पाएंगे (जिसमें वे जाते हों), सब मुण्डे टीलों (घास से भरपूर) पर भी उनको चराई (लेकिन मरूस्थल में नहीं) मिलेगी।

पद १० में बहुत उत्तेजना है :

> वे भूखे और प्यासे न होंगे, न मृगतृष्णा होगी (कुमार्ग में नहीं जायेंगे) न लहू और न घाव उन्हें लगेगा, क्योंकि, वह जो उन पर दया करता है, वही उनका अगुवा होगा, और जल के सोतों के पास उन्हें ले चलेगा।

हम वास्तव में परमेश्वर के लिये अधिक प्यासे रहते हैं, परन्तु यदि हम उसे नहीं जानते कि वह आखिर में कौन है जिससे हम याचना करते हैं तो हम आसानी से भटक सकते हैं। शैतान बहुत मृगतृष्णा लाता है जैसे आदम और हव्वा के साथ उसने किया था। वह कहता है, "तुम्हें इसकी जरूरत है; ये तुमको संतुष्ट रखेगी।" परन्तु यदि हम परमेश्वर को खोजने में अपना मन लगायेंगे - और यदि हम अपनी इच्छा, विचार, वार्तालाप और चुनाव में उसे प्रथम स्थान देंगे - तो सचमुच में हमारी प्यास बुझेगी और हम कभी भी नहीं भटकेंगे।

भजन संहिता ४२:१ दाऊद यहोवा के लिए अपने प्रेम को दर्शाता थे उसे उन्होंने दर्शाया है, "जैसे हरिणी नदी के जल के लिये हाँफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हाँफता हूँ।" *द एमप्लीफाईड बाईबल* के अनुवाद के अनुसार पद २ में इस प्रकार पाया जाता है, "मेरा भीतरी मनुष्यत्व परमेश्वर के लिये प्यासा है, जीवित परमेश्वर के लिये, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह दिखाऊँगा?"

हमारी अपनी आवश्यकताएँ हैं और परमेश्वर कहता है, "मैं यहाँ हूँ। मेरे पास सब कुछ है जो तेरी आवश्यकता है।" हमें परमेश्वर को इस प्रकार से खोजना चाहिये जैसा एक प्यासा व्यक्ति मरूस्थल में पानी के लिये प्यासा रहता है। एक प्यासा व्यक्ति पानी के अलावा और दूसरी बातों के बारे में सोच ही

नहीं सकता! उसे और किसी बात के बारे में ज़रा भी चिंता नहीं क्योंकि उसे किसी भी कीमत पर अपनी प्यास बुझानी है।

यदि हम भौतिक वस्तुओं पर या अपनी परिस्थितियों को ऊँचा करने के लिये केन्द्रित होते हैं, जबकि इसके बदले में हमें परमेश्‍वर पर केन्द्रित होना चाहिये, नहीं तो शैतान एक मृगतृष्णा ले आयेगा और हमें गलत पंक्ति में डाल देगा। परन्तु यदि हम परमेश्‍वर को खोज रहे हैं, तो शैतान हमें भटका नहीं सकता है, क्योंकि परमेश्‍वर ने प्रतिज्ञा की है कि जितने लोग उसे संपूर्ण हृदय से खोजेंगे वे सभी उसे पा जायेंगे।

परमेश्‍वर कहता है, "मेरे लोगों की अगुवाई अब मृगतृष्णा नहीं करेगी, परन्तु वे लोग मुझे खोजना सीख जायेंगे, मुझे जीवन जल को। जो मेरे पास आयेगा वह फिर कभी प्यासा न होगा।" (देखें यूहन्ना ४:१०,१४)।

जब तक हम अपने जीवन में परमेश्‍वर को प्रथम स्थान देने के लिये अधिक इच्छा नहीं करते तब तक शैतान हमारे जीवन में एक किनारा बनाया रहता है। और एक बार जब हम सच्चाई की ओर देखने लग जायेंगे, जब वह लाभहीन हो जायेगा, और हम एक ऐसी स्थिति में होंगे जहाँ पर हमारा संबंध और परमेश्‍वर के साथ संगति होगी और जिसके द्वारा से हम जड़ से उन्नति करते चले जायेंगे। हमें सबसे पहिले यह सीखने की आवश्यकता है कि परमेश्‍वर ने अपने आपको दिया है न कि क्या कुछ दे सकता है, लेकिन हम में से बहुत से लोग और अन्य अन्य बातों की कोशिश में रहते हैं। यह एक ऐसा समय होता है जो हमेशा से उदासी और दुःख को लाता हैं लेकिन परमेश्‍वर का धन्यवाद हो, कि उसका पवित्र आत्मा जो हमारे जीवन में रहकर हमें सिखाता है, सत्य को प्रकट करता है, जैसे हम परमेश्‍वर के वचन का अध्ययन करना, पढ़ना और सुनना लगातार जारी रखते हैं।

> तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उन की प्रतीति की थी कहा, यदि तुम मेरे वचन में (मेरी शिक्षाओं को ज़ोर पकड़े रहना एवं उसके अनुसार जीना) बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। (यूहन्ना ८:३१-३२)

यदि आप परमेश्‍वर को खोजने में परिश्रम कर रहे हैं तो आप उसे गहराई एवं अधिक घनिष्ठ रूप से जान पायेंगे। परमेश्‍वर अपने आपको आप पर प्रकट करेगा; और आप उसे पूरी रीति से खोज लेंगे। जब परमेश्‍वर अपने आपको प्रकाशित करेगा, और वह ऐसा ही करेगा, इसलिये आप उसे *खोजने* की कोशिश करते हुए निराश न

हों। उसकी बाट जोहना सीखिये एवं उससे प्रार्थना कीजिए, "हे परमेश्वर, अपने आपको मुझ पर प्रकट कर। अपनी उपस्थिति से मुझे प्रकाशित कर।"

परमेश्वर अपनी उपस्थिति को कई तरीकों से प्रकाशित करता है। कभी कभी हम उसे देख नहीं सकते, लेकिन, हम उसके काम को इस में हवा के समान देख सकते हैं। यदि मैं दुःखी, थकी, टूटी, उदास या किसी और बात से परेशान हूँ और जब मैं परमेश्वर के चरणों में समय बिताकर तरोताजा हो जाती हूँ, तब मैं जान जाती हूँ कि प्रभु की आत्मा की हवा मुझ पर बहने लगी है।

परमेश्वर अपने जीवन में एक नई ताज़गी को लाना चाहता है एक आंधी के समान। आप अपने जीवन में कंगाली के द्वारा से जकड़े न जायें जबकि स्वयं उत्तर आपके जीवन के भीतरी भाग में जीवित है। यदि आप इतने व्यस्त हैं कि आप परमेश्वर के साथ समय व्यतीत नहीं कर सकते तब तो आपको अपने जीवन शैली के साथ कुछ सुलह करना होगा। जब आपके जीवन में ताज़ा होने का समय आता है तो आप किसी भी प्रकार से न जलें न परिवर्तित हों न दुःखी और न खिंचाए जाएँ।

> इसलिये, मन फिराओ (अपने मन और इरादों को बदलें) और लौट आओ (परमेश्वर की ओर) कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ (धब्बा निकाला जाए, रगड़कर निर्मल करना), जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति (गर्मी के प्रभाव से राहत, शुद्ध जलवायु के द्वारा से ताज़गी) के दिन आएें। (प्रेरितों के काम ३:१९)

जीवन की व्यवस्था से निकलने के लिये सीखें जिससे आप यीशु के समान परमेश्वर के चरणों में समय बिता सकें। मैं लोगों से कहती हूँ, "बेहतर होगा कि आप अलगाव के जीवन में आ जाएँ इससे पहले कि आप उससे भी अलग हो जाएँ।" आप दूसरों के लिये हमेशा इंतजार नहीं कर सकते और न उस समय के लिये अनुमोदन कर सकते हैं जबकि आपको परमेश्वर के चरणों में समय बिताने की जरूरत हो। और लोगों की हमेशा कुछ न कुछ परेशानी ही रहेगी और वे सोचते रहते हैं कि आप उनके लिये बाध्य रूप में हमेशा मदद करते रहें।

परमेश्वर के लिये काम कर रहे हैं तो हम उसके लिये समय बिता रहे हैं ऐसा विचार बिल्कुल न करें, बल्कि परमेश्वर के साथ समय बितायें। मुझे चर्च में एक खास जवाबदारी मिली थी जिस पर मैं बहुत गर्व करती थी, मैं हर प्रार्थना सभा में जाया करती थी और लोगों को परमेश्वर के मार्गों के बारे में परामर्श भी दिया करती थी। परन्तु मैं याद करती हूँ कि एक दिन परमेश्वर ने

एकदम स्पष्टता से मुझसे कहा, "जॉयस, तू *मेरे लिये* काम करती तो है, लेकिन तू मेरे साथ किसी भी प्रकार से समय नहीं बिताती है।"

उसके बाद से मैंने निर्णय लिया कि प्रतिदिन मैं परमेश्वर के साथ एक समय अलग निर्धारित करके उसके साथ बिताऊँगी। जब मैं प्रभु के साथ नियमित समय बिताना आरंभ कर दी तो मेरे बच्चों को इसकी आदत नहीं हो पाई थी इसलिये उन्हें लगा कि उनका समय जा रहा है।

वे लोग मेरे पास आकर के शिकायत करते थे, "मम्मी, आप इस कमरे में हमेशा रहती हैं।"

मैं कहती थी, "नहीं तो, मैं इस कमरे में हमेशा नहीं रहती हूँ, मैं कुछ खास काम को लेकर और कुछ समय के लिये यहाँ पर आती हूँ और जब मैं पूरा कर लेती हूँ तब तो मैं बाहर चली जाती हूँ।"

"परन्तु आप बाहर आकर हमसें क्यों बातचीत नहीं करती हैं? आप क्यों हमारे लिये नाश्ता नहीं बनाती हैं?"

मैं जवाब दिया करती थी, "तुम लोग कटोरे में सीरियल दूध मिलाकर खा लो।"

मैं यह नहीं कह रही हूँ कि हमें हमारे परिवार की देखभाल नहीं करनी चाहिये और उनकी जरूरतों को हम पूरा न करें। परन्तु उस समय मेरे जीवन में बहुत सारी समस्याएँ थी, और मैं यह जानती थी कि उनका कुछ उपाय करना जरूरी था। मैं बिल्कुल अच्छा नहीं कर पा रही थी, मैं आत्मा के फल के अनुसार अपने आप को नहीं चला पा रही थी और मुझे परमेश्वर को खोजने की जरूरत थी।

इस कारण मैं अपने बच्चों से कहने लगी, "इस कमरे से मैं बाहर जाने की बजाय मैं चाहती हूँ कि तुम लोग भी मेरे साथ प्रार्थना करो, ऐसा करके तुम लोग मेरी मदद करोगे कि मैं परमेश्वर के साथ उस कमरे में समय बिताकर तुम्हारे लिये बेहतरीन करती जाऊँगी और मैं एक अच्छी व्यक्ति भी बन जाऊँगी। तुमको यह कहना चाहिये, 'मम्मी, आप कमरे में चले जाइये, हम सब भोजन की सामग्री तैयार कर लेंगे।'" मैं जानती थी कि अगर मैं परमेश्वर के साथ समय नहीं बिताती तो मेरा परिवार मेरे साथ अधिक आनंदित नहीं रह पायेगा।

शरीर पर शरीर जयवन्त नहीं हो सकता। हमें पवित्र आत्मा की ओर मुड़कर अंगीकार करने की आवश्यकता है, "हे परमेश्वर, मैं अपने आपको नहीं बदल

सकता, परन्तु आप मुझे बदलें। मैं आपको ढूँढ़ता हूँ। आप मेरे जीवन में आँधी के समान बहाव लाएँ और मेरे जीवन में ताज़गी लाएँ, मुझे आपकी आवश्यकता है।"

परमेश्वर को आप खोज लेंगे जब आप उसे पूरे हृदय से खोजेंगे। आपके कल्पना से परे आप ताज़गी को पायेंगे। वह आपको शांति और आनंद से भर देगा। परन्तु मैं परमेश्वर के आत्मा के द्वारा से यह जान सकती हूँ कि आपको अपने व्यस्त जीवन के दिनचर्या में परमेश्वर को अधिक स्थान देने के लिये अपने आपको छाँटने और तराशने की आवश्यकता है।

हो सकता है कि आप सब कुछ काँट-छाँट कर चुके होंगे, और बिना ज्ञान के बहुत सारे काम पहले से कर देते होंगे। आप उसका आनंद नहीं उठा सकते; हो सकता है कि आप उन कामों को करते समय बुरा मान गये हों। आप डर गये हों क्योंकि आपको नाली की तरह बहा दिया गया हो, आपको उदास करके आपके आनंद को छीन लिया हो - फिर भी आप उन्हीं कामों को करते हैं। यह समय है कि हम उसके उद्देश्य के अनुसार जीयें और चुनाव करें ताकि वह हमें परमेश्वर को घनिष्ठता से जानने में मदद करे।

जब कोई व्यक्ति मसीह को अपना मुक्तिदाता ग्रहण कर लेता है तो वह यात्रा करना आरंभ कर देता है, और वह यात्रा उसे परमेश्वर के साथ घनिष्ठ मित्रता की ओर ले जाती है, और यह यात्रा कितनी अद्भुत यात्रा है।

घनिष्ठ स्तर

२

परमेश्वर की परिवर्तन करने वाली सामर्थ

पर हमारा स्वदेश (राष्ट्र समूह, निज देश) स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं। वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।

- फिलिप्पियों ३:२०-२१

५
“न तो बल से, न शक्ति से, पर मेरी आत्मा के द्वारा”

न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरी आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। (जकर्याह ४:६)

पवित्र आत्मा की शक्ति बिना हम अपने जीवन में किसी भी बात में कभी भी सच्ची सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं। बड़े धन और ख्याति की प्राप्ति के लिये परिश्रम करना ये सिर्फ हममें निराशा और थकान लायेगी। परन्तु पवित्र आत्मा को हमारे जीवन में भले काम करने के लिये अवसर देने से वह हमारे जीवन में संतुष्टि और बड़ा आनन्द लायेगा।

यूहन्ना १७:४-५ में यीशु ने कहा, “हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा कर क्योंकि जो काम तूने मुझे करने को दिया था किया है उसे मैंने पूरा करके तेरी महिमा की है।” इस परिच्छेद ने मेरे हृदय को छेद दिया और मैं आँसुओं के साथ परमेश्वर के सम्मुख टूट पड़ी और मेरे विचार कुछ ऐसे थे, *हे परमेश्वर, यदि मैं तेरे सम्मुख अंतिम दिन में खड़ी हो सकूँ, और तेरी आँखों में देख सकूँ तथा लज्जित न होऊँ लेकिन मुझे यह कहने का हियाव हो, “हे प्रभु अब पूरा हुआ, क्योंकि तेरी ही सहायता से मैं जो कुछ तूने मुझे दिया था उसे मैंने पूरा किया है।”*

मैंने महसूस किया कि जब हम परमेश्वर के लिये अपने आपको खाली करते हैं तब वह अपनी महिमा के लिये हमें इस्तेमाल में लाता है और उसके बाद ही वास्तविक आनन्द मिलता है। और जहाँ वह चाहता है, मुझे ले चलता है, जो कुछ वह करना चाहे, और जब भी वह करना चाहे, उसके विषय में कोई प्रश्न चिन्ह नहीं लगाती हूँ। यह इस बात की इच्छा करना है कि सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करें (१ कुरिन्थियों १०:३१); यह दूसरी बात है

कि हम सम्पूर्ण रीति से परमेश्वर की महिमा के लिये *कुछ भी* करने के लिये तैयार रहें।

पवित्र आत्मा हमारे भीतर रहकर हमारे दिमाग एवं समस्याओं के ऊपर हमें केन्द्रित होने से बचाता है। हम अपनी समस्याओं को परमेश्वर के पास छोड़ दें, चूँकि हम उनका कोछ नहीं कर सकते, और न हमारे चारों ओर जो लोग हमें चोट पहुँचाते हैं उनके लिये हम कुछ कर सकते हैं। परमेश्वर की उपस्थिति के अभिषेक से हम दूसरों के लिये आसानी से भले काम कर सकेंगे।

> क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है - और न कामों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया। (इफिसियों २:८-१०)

वर्षों पहले जब मैं परमेश्वर के साथ अत्यधिक घनिष्ठता से चलना आंरभ कर दी, तब मैं हर काम करने के लिये परमेश्वर के वचन का इंतजार करती थी और तब मैं यह सीख पाई कि उसकी पवित्र आत्मा मेरे अन्दर रहकर उन भले कामों को करता है। परमेश्वर के साथ चलने के शुरूआती वर्षों में, एक महिला जिसे १० डॉलर की आवश्यकता थी, उसे सहायता करने के लिये मेरे हृदय में यह बात थी (उस समय की अपेक्षा अभी इसकी कीमत अधिक है)। मैं इस बात को लेकर तीन सप्ताह तक रही और फिर अंत में प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, क्या वास्तव में तू ही है जो इस व्यक्ति को इस अर्थ को देने के लिये कह रहा है? यदि तू ही कह रहा है तो मैं जरूर यह करूँगी?"

उसने मुझे स्पष्ट रूप से उत्तर दिया, "जॉयस, यदि मैं न भी कहूँ तो मुझे कोई ऐतराज़ नहीं, कि तू किसी की सहायता कर रही है और तेरे द्वारा से कोई आशीषित हो।"

भलाई, परमेश्वर के आत्मा का फल है जो हमारे अन्दर रहता है (देखे गलतियों ५:२२-२३)। इस कारण, लोगों की भलाई करने के लिये हमारी इच्छा होनी चाहिये। परमेश्वर ने अब्राहाम से कहा कि मैं तुझे आशीष देने जा रहा हूँ और तू दूसरों के लिये आशीष का मूल ठहरेगा (देखें उत्पत्ति १२:२)। हम कल्पना करें कि यह कितनी महिमामय बात होगी कि हम परमेश्वर से प्रेम करें और हमारे द्वारा से भलाई के काम प्रतिदिन होने लगे।

किसी न किसी को, कहीं न कहीं, हमेशा प्रोत्साहन के शब्दों की जरूरत है। किसी को शिशु के समान देखभाल की जरूरत है। किसी को सवारी की जरूरत है। यह दुनिया जरूरतों से भरी पड़ी है। परमेश्वर की उपस्थिति में रहने का मतलब है कि वह हमारे मन को हमारी समस्याओं पर केन्द्रित होने से फेरकर दूसरों की जरूरतों के प्रति सजग बनाता है; तब वह अपनी सामर्थ के द्वारा से हमारा अभिषेक करता है ताकि हम उसकी महिमा के लिये भले काम कर सकें।

यदि हम परमेश्वर से प्रतिदिन साधारण तौर से पूछें कि मुझे दिखा कि मैं कैसे किसी के लिये आशीष का कारण बनू, जिससे तेरी महिमा हो सके, तब हम आनन्द, संतुष्टि और शांति का जिसकी हम अपेक्षा करते हैं उसका अनुभव कर सकेंगे।

क्या आप अपने आप में ही मगन हैं?

एक बार परमेश्वर ने मुझसे कहा, "जॉयस, लोग इसलिये दु:खी रहते हैं क्योंकि वे अपने आप में ही मगन रहते हैं।" अगर हम अपने आप में मगन रहते हैं तो हम दूसरों की इच्छा, जरूरतों के बारे में सोचने की बजाय हम अपनी जरूरतों एवं इच्छाओं के बारे में हमेशा संवेदनशील रहते हैं।

मैं हमेशा अपनी सभाओं में ये कहा करती हूँ कि जब हम अपने आप में मगन रहते हैं तब हम रोबोट (ठेलीं) के समान आगे पीछे होते रहते हैं और अपने बारे में ये सुनना पसंद करतररे हैं कि, "मेरे बारे में क्या? मेरे बारे में और क्या?"

लेकिन, अगर हम परमेश्वर में मगन हैं तो हम सबसे ज्यादा खुश रहेंगे, चाहे परिस्थितियाँ कैसे भी क्यों नहीं। अगर हम परमेश्वर में मगन रहेंगे तो उसके पुनरुत्थान का जीवन हमारे भीतर जीयेगा और वह मसीह की समानता में हमें परिवर्तित कर देगा। प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर की भरपूरी की इच्छा करते हुए कहा:

> (मेरा निर्णायक उद्देश्य है) और मैं उसको (कि मैं उसको उन्नतशील ढंग से अधिक गहराई और घनिष्ठता से चिर परिचित होते हुए, गोचर होते, पहचानने, उसके अद्भुत व्यक्तित्व के बारे में अधिक समझते मजबूती से और स्पष्टता से), और उसके मृत्युजय की सामर्थ को (जो विश्वासियों पर

> प्रयोग किया जाता है), और उसके साथ दु:खों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ (आत्मा में उसकी समानता में), और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ, (आशा में) ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से (जब शरीर में भी हों) जी उठने के (जो मुझे उगता है) के पद तक पहुँचू (आत्मिक और नैतिक)। (फिलिप्पियों ३:१०-११)

जब हम अपने आप में रहते हैं, तब हममें मृत्यु और अंधकार रहता है। जब हम परमेश्वर में भरपूर रहते हैं, तब हममें पूरी ज्योति और जीवन रहता है। हमें पौलुस के समान प्रार्थना करनी चाहिये, "हे परमेश्वर, मैं तुझे जानूँ, और तेरे पुनरुत्थान की सामर्थ को जानूँ जो मुझे मरे हुओं में से जब मैं शरीर में रहता हूँ जिलाता है।" इस प्रकार से प्रार्थना करना, हमें लोगों की चतुराई से परे रखेगी और हम जो चाहते हैं उन से करवा सकते हैं, तथा जब सब कुछ प्रतिकूल होता है तब हम अति क्रोधित हो जाते हैं उससे बच सकते हैं।

विश्वास करें कि मैं भी क्रोधित होने में विशेषज्ञ थी और जब तक परमेश्वर ने नहीं सिखाया कि सब बातों के लिये उस पर भरोसा रखना। एक उदाहरण, एक बार जब मैं सभा लेने के लिये जा रही थी तब मुझे एक खास स्थान पर भोजन करने के लिये रूकना पड़ा।

मैंने डेव से कहा, "मुझे इस स्थान पर रूकना अच्छा लग रहा है क्योंकि मुझे सप्ताह भर बहुत ही परिश्रम करना है, इसलिये मुझे अच्छा भोजन भी चाहिये। और मैं ऐसा करने में आनंदित होती हूँ।"

परन्तु डेव ने कहा, "मैं तुम्हें साथ में लाना चाहता हूँ, परन्तु आगे के काम को भी देखो, क्योंकि अगर हम और रूकेंगे तो सभा के लिये हमें विलम्ब होगी और मुझे टेप टेबल्स भी देखने की जरूरत है। और सभा के आरंभ करने के लिये मुझे बहुत से प्रबंध को भी देखने की जरूरत है।"

परमेश्वर मुझसे बर्ताव करता रहा कि किस प्रकार से स्वार्थी होने के महत्व को दूर करना है एवं अपने आप में मगन न रहना। यद्यपि मैं निराश हुई, फिर भी मैंने एहसास किया कि मैं केवल अपने ही बारे में सोच रही थी और डेव की जरूरतों के बारे में कोई परवाह नहीं की जबकि वह सभा की जिम्मेदारी के लिये जल्दी ही कर रहा था; ऐसे में मैं दु:खी होती। अभी मेरे पास एक ही चुनाव था: या तो शरीर के अनुसार चलूँ या तो आत्मा के अनुसार। इस कारण मैंने कहा, "ठीक है, डेव, मैं समझती हूँ कि तुम्हें बहुत कुछ करना हैं।"

लेकिन दो, तीन, चार साल पहले जहाँ पर मुझे रूकना चाहिये था वहाँ मैं नहीं रूकी, उसके लिये मैं बहुत क्रोधित हुई होती। मैं यह जानती हूँ कि डेव शांति

प्रिय है, और अगर मैं कुछ कमी निकालते हुए बोलती तो शायद वो मुझे जहाँ मैं खाना चाहती थी वहाँ वो जरूर ले जाते। मैं जरूर देव से जीत जाती मगर परमेश्वर से हार जाती। हमें ये सीखना चाहिये कि हम अपने तौर तरीकों से अपने शरीर को प्रसन्न कर सकते हैं; परन्तु यह परमेश्वर को हमेशा प्रसन्न नहीं कर सकता है। अपने तौर - तरीकों को छोड़ना ही परमेश्वर को प्रसन्न कराता है।

मैं हमेशा से ये सोचा करती थी कि सभा में मैं ही अकेली हूँ जो सब कुछ किया करती हूँ। परन्तु मैं नहीं समझती थी कि देव को भी सारा समय सब कुछ देखना पड़ता था। आखिरकार, एक दिन देव मेरे साथ नाराज़ हो गये क्योंकि कहाँ पर खाना खाना है उसके विषय में मैं बेकार का हँगामा खड़ा कर दी थी। (ये क्या सच नहीं है कि हम भोजन के ऊपर से अति क्रोधित होते हैं? और वे सब लोग भी जो अधिक नहीं खाते फिर भी दिखावा करते हुए खाने के प्रति क्रोध करते हैं और अन्य तरीकों को अपनाते हैं!) उस दिन, हमारी पूरी टीम सुबह के नाश्ते के लिये बाहर जा रही थी, परन्तु मुझे सभा की तैयारी के लिये रूकना पड़ा और मैं चाहती थी कि वे लोग वापसी में मेरे लिये कुछ खाने के लिये लायें। लेकिन देव ने कहा, "मैं नहीं समझता कि हमें कुछ खाने के लिये मिलेगा मगर मैं चाहता भी हूँ और अगर मैं ऐसा करूँगा तो फिर मैं सभा में टेप भी नहीं कर पाऊँगा। क्या तुम इस सुबह के समय फल वगैरह नहीं खा सकती हो?"

तुरन्त मेरे अन्दर थोड़ा, "क्रोध आया" और झटके से मैं बोल पड़ी, "ठीक है, आप सब लोग मुझे इस होटल में अकेले छोड़कर चले जाइये और आनंद उठाइये। और मैं अकेली भूखी रह कर सभा के लिये तैयारी कर सकती हूँ।"

क्या आप ने कभी किसी भी बात के लिये क्रोध किया है? हम शान्त रहकर क्रोध कर सकते हैं या हम जोर से क्रोध कर सकते हैं। सिर को झूकानेवाला क्रोध, मुँह बंद रखकर करने वाला क्रोध और श्रीमान या मिस स्टोनफेस (कठोर चेहरा) क्रोध। या हमारा शोक करने वाला क्रोध जो औरों को दिखाने के लिये कि कोई भी हमारे बारे में सोचता नहीं हैं, जबकि हम दूसरों के लिये भले काम करते रहते हैं, और वे लोग हमारी थोड़ी भी परवाह नहीं करते हैं कि हमने कुछ खाया या नहीं।

और इस प्रकार से मैं अपने क्रोध को फेंक रही थी - तब तक देव थोड़ा सा मेरे साथ ठीक हो गये थे। (कभी कभी हमें किसी न किसी के द्वारा से लगाम की जरूरत पड़ती है)। देव ने कहा, "जॉयस, इस टीम का हर कोई तुम्हारे लिये हर काम को सही और आसान बनाने की कोशिश करते हैं।"

मैं जानती थी कि डेव सही थे परन्तु मेरे लिये यह स्वीकार करना मुश्किल था।

सो, जब हम बार बार अपने तरीकों में बने रहना चाहते हैं, तब हम दूसरों के बारे में जो हमारे चारों ओर रहते हैं और किन परिस्थितियों से गुज़र रहे हैं, जरा भी नहीं सोचते हैं। हर एक के पास अपनी खुद की परिस्थितियाँ हैं नियंत्रण करने के लिये। हर एक के पास अपनी निजी समस्याएँ हैं। अगर हम सचमुच में हमेशा प्रसन्न रहना चाहते हैं तो हमको हमारे अहम, अहम, अहम के पार जीवन व्यतीत करना होगा।

सब वस्तुओं के लिये परमेश्वर पर भरोसा रखना सीखें

हमारे पास एक चुनाव हैं (१) हम अपने क्रोध को अपने तरीकों से निकाल बाहर करें जिससे लोग इसका गलत अर्थ न निकाल सकें या (२) जो कुछ परमेश्वर चाहता है वही करें, ताकि उसकी सिद्ध योजनानुसार सब काम करने के लिये उस पर भरोसा रख सकें, हमारे लिये तथा उन सबके लिये जो हमारी हर परिस्थितियों में शामिल रहते हैं।

डेव अक्सर मुझसे कहा करते हैं, "क्या *तुम* मुझे कायल करना बंद करोगी? तुम मुझे कायल नहीं कर सकती हो। अगर मैं कायल होना चाहता हूँ तो परमेश्वर ही मुझे कायल करेगा।"

मेरे लिये यह कठिन समय था कि परमेश्वर किसी को किसी बात के लिये कायल करे। डेव को कायल करने के लिये कोशिश करना परमेश्वर पर भरोसा रखने में मुझे कोई समस्या नहीं थी, परन्तु मुझे इस बात का निश्चय नहीं था और न भरोसा था कि डेव सुनेंगे। परमेश्वर से सहायता पाने से परे रहना यह हमारे लिये मुश्किल बात है। हम में से प्रत्येक के पास अपने अपने छोटे छोटे तरीके हैं जिनसे हम अपनी अपनी परिस्थितियों - से सुलह करते हैं जिनमें हम सभी शामिल हैं।

परन्तु उन सभी का बड़ा ही प्रतिफल है जो परमेश्वर पर हर काम के लिए भरोसा रखना सीख जाते हैं इसलिये सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती हैं। (देखे नीतिवचन ३:५); रोमियों ८:२८)। परमेश्वर पर भरोसा रखने के लिये सीखना इसमें कुछ समय लग सकता है, इस कारण आप निराश न हों कि अगले चौबीस घण्टों में अगर आप अपनी आत्मा केन्द्रित स्वभाव से छुटकारा नहीं पा सकते हैं तो इसकी परवाह न करें। फिर भी, मैं कड़ाई से आपको हिदायत देते हुए आपको प्रोत्साहित करना चाहूँगी कि अपनी सारी जरूरतों को

परमेश्वर के नियंत्रण में सौंप दें। अपने बल और शक्ति का इस्तेमाल करने के बजाय उसको सारी परिस्थितियों के ऊपर काम करने दें जिससे आपको आपके जीवन में भरपूरी का आनंद मिलेगा। एक बार जब आप आरंभिक कदम उठा लेंगे और हर एक बात के लिये परमेश्वर पर भरोसा रखने लग जायेंगे, तब जो कुछ उसने किया है, उसका एहसास करके आप चकित हो जायेंगे।

यूहन्ना १५:५ में यीशु ने कहा, "क्योंकि मुझसे अलग होकर (मेरे महत्वपूर्ण संघ से काटकर अलग करना), तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" इब्रानियों १३:५ कहती है वह न हमें कभी छोड़ेगा और कभी त्यागेगा। दूसरे शब्दों में वह सदा हमारे साथ रहेगा (देखें मत्ती २८:२०; यूहन्ना १४:१८)। जिस कारण से यीशु ने हमारे साथ रहने के लिये प्रतिज्ञा की है कि वह जानता है कि हमें प्रतिदिन उसकी सहायता की जरूरत है।

अक्सर हमारे लिये यह बहुत समय लग जाता है कि हम अपने आपको नम्र करें तथा हम एहसास करते हैं कि हमारी सहायता सब तरफ से हो। हम स्वतंत्रापूर्वक सब तरफ से विश्वास करते हुए और बिना किसी सहायता प्राप्त किए बढ़ना चाहते हैं। फिर भी प्रभु ने हमारे लिये स्वर्गीय सहायक को भेज दिया है जिसकी हमें जरूरत है। यीशु स्वयं परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान होकर हमारे लिये *निरंतर* विनती करते रहता है (देखें इब्रानियों ७:२५; रोमियों ८:३४); इसलिये हमारे जीवन में परमेश्वर के द्वारा हस्तक्षेप की आवश्यकता है। चूँकि हम अपने जीवन को उचित रूप में नहीं चला सकते, इसलिये हम जरूरतमंद और पूरी रीति से असमर्थ हैं।

यद्यपि हमें कुछ समय के लिये लगता है कि हम अपने आपको संभाले हुए हैं, और अगर हम स्वर्गीय सहायता प्राप्त नहीं कर रहे हैं तो जल्दी या देरी से हम किसी न किसी प्रकार से गिर सकते हैं। अक्सर जब तक समस्याएँ नहीं आती हैं तब तक हम अच्छा करते रहते हैं।

हो सकता है कि एक टूटी शादी हो, किसी प्रिय जन की मृत्यु हो, कोई बीमारी या रोग, आर्थिक समस्या, नौकरी का छूट जाना या जीवन का कोई और महत्वपूर्ण मामला हो। लेकिन चाहे जल्दी हो या देरी से आखिर में हम एक ऐसे पड़ाव में आकर जरूरत का एहसास करते हैं। कम से कम हमें ये जानना चाहियें कि धार्मिकता, शांति और आनंद का जीवन जो साद के जीने का तरीका है हमें जीना चाहिये (रोमियों १४:१७ देखें)।

बाहर से लोगों को देखने से ऐसा लगता है कि उनके पास यह सब कुछ है, लेकिन जब उनके अन्दर देखने से ऐसा लगता है कि वे बहुत दुःखी हैं। कुछ

लोग जीवन भर संघर्ष करते रहते हैं क्योंकि वे बहुत ही घमंडी होते हैं और न वे अपने आप को नम्र करना चाहते और न सहायता के लिये पुकारते हैं। वे दूसरे लोगों के प्रति कायल होते हैं कि वे सफल हैं परन्तु वास्तव में वे असफल हैं। वे लोग अपने आप में कायल हो सकते हैं कि वे अपने आप में सफल हैं, परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि, बहुत से लोगों के साथ ये समस्या है कि वे स्वयं अपने आप को मिटाने में तुले हैं - जो कि एक दुःखद अंत है।

जब मैं सिर्फ एक "धार्मिक विश्वासी" की तरह थी, उस समय मैं केवल परमेश्वर से सहायता माँगती थी और जब गंभीर समस्याओं का सामना करने से मैं अधीर हो जाती थी और नहीं जानती थी कि उसका जवाब कैसे खोजूँ। मैं सामान्य तरीके से प्रतिदिन प्रार्थना करती थी - अधिक भी नहीं परन्तु जरूर प्रार्थना करती थी।

उसके बाद मैं "व्यवहारिक विश्वासी" बन गई और मैंने तुरन्त सीखना आरंभ कर दिया कि मेरे अंदर पवित्र आत्मा रहती है वह मेरे तरीके से बाल बनाने में, अच्छी स्कोर खड़ी करने, किसी के लिये उपहार खरीदने के लिये चुनाव करने, सही निर्णय लेने, और जटिल एवं गंभीर समस्याओं के मध्य में से रास्ता निकालने में मेरी सहायता करता है जिसकी वास्तव में मुझे जरूरत थी। जब मैं सच्चाई को समझना एवं एहसास करना सीख गई कि यीशु इसलिये नहीं मरा कि मुझ पर कोई खास धार्मिक चिन्ह लगाये बल्कि मेरा परमेश्वर के साथ एक गहरा व्यक्तिगत संबंध स्थापित हो जाये, और अब मैं एक "धार्मिक विश्वासी" से बदलकर "व्यवहारिक विश्वासी" बन गई। अब मेरा विश्वास मेरे कामों पर नहीं पर उसके कामों पर आधारित हो गया। मैंने देखा कि परमेश्वर के साथ निकट संगति के लिये उसकी दया और भलाई ने रास्ता खोल दिया है।

जब यीशु की मृत्यु हुई, तो मंदिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट गया जो पवित्र स्थान और परमपवित्र स्थान को अलग करता था (देखें मरकुस १५:३७-३८)। अब हर एक के लिये परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के लिये रास्ता खुल गया है। जैसे हमने देखा है कि, यीशु की मृत्यु के पहले केवल महायाजक की उपस्थिति में जा सकता था, और वर्ष में एक ही बार बलि किए हुए जानवरों के लहू को लेकर अपने पापों एवं लोगों के पापों को ढाँपने और प्रायश्चित करने के लिये जाता था।

यहाँ पर एक महत्वपूर्ण बात ये है कि मंदिर का जो परदा था वह ऊपर से नीचे तक फटा था। और यह परदा इतना ऊँचा और मोटा था कि कोई मनुष्य इसको फाड़ नहीं सकता था - बल्कि यह अलौकिक रूप से परमेश्वर के द्वारा

से ही फाड़ा गया था, यह दर्शाते हुए कि उसने एक नया और जीवित रास्ता खोल दिया ताकि उसके लोग कभी भी उसके पास पहुँच जायें।

आदि से परमेश्वर ने मनुष्य के साथ संगति करने के लिये इच्छा की; और इसी उद्देश्य के साथ उसने मनुष्य को बनाया था। उसने कभी भी मनुष्य को उसकी निकट उपस्थिति से दूर नहीं किया, परन्तु वह जानता था कि उसकी पवित्रता में इतनी सामर्थ थी कि जो कुछ भी अपवित्रता उसके सामने आयी उसे वह नाश कर डालेगा। इस कारण पापियों का मार्ग पूरी रीति से शुद्ध होना चाहिये इससे पहले कि वे परमेश्वर की उपस्थिति में आयें।

निर्गमन ३:२-५ में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार से जलती हुई झाड़ी में परमेश्वर मूसा को दिखाई दिया और उससे कहा कि अपने पाँव की जूती को उतार दे क्योंकि जिस भूमि पर तू खड़ा है वह भूमि पवित्र है। मैं विश्वास करती हूँ कि इसका कोई महत्व नहीं था कि पृथ्वी परमेश्वर की पवित्रता को स्पर्श कर सके।

हम संसार में रहते हैं, परन्तु संसार के होकर *न* रहें (यूहन्ना १७:१४-१६)। हमारी सांसारिकता और यहाँ के तौर तरीके हमें परमेश्वर की उपस्थिति से अलग कर सकती है। और जब तक हम विश्वास के द्वारा से यीशु के लहू के बलिदान के द्वारा से शुद्धता को निरंतर प्राप्त नहीं कर लेते हैं तब तक हम परमेश्वर के साथ की सही संगति और उसके घनिष्ठ आनंद को नहीं उठा सकते हैं।

मानव दुर्बलता मनुष्य को समर्पित करके आश्रित बनाती है

> हे यहोवा, मैं जान गया हूँ, कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं हैं, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं। (यिर्मयाह १०:२३)

उपरोक्त पद में यिर्मयाह ने बिल्कुल ठीक ही कहा है: मनुष्य के लिये यह बिल्कुल संभव नही है कि अपने जीवन को सही रूप से चला सके। आपको मुझको सहायता की जरूरत है और भी बहुत कुछ। इस सत्यता को स्वीकार कर लेना ही आत्मिक परिपक्वता की निशानी है, न कि दुर्बलता की निशानी। जब तक हम परमेश्वर में अपनी ताकत को खोज नहीं लेते तब तक हम दुर्बल रहते हैं, और जितनी जल्दी हम उस सत्यता का सामना करते हैं उतने ही बेहतरीन हम बनते जाते हैं।

हो सकता है कि आप भी कभी मेरे समान रहे होंगे - यह कोशिश करते हुए कि हर काम एकदम सही हो मगर हमेशा सब असफल होता जाता है। आपकी

समस्या यह नहीं है कि आप एक असफल व्यक्ति हैं; बल्कि आपकी समस्या एक सामान्य सी है कि आप सहायता के लिये अब तक उचित स्त्रोत के पास नहीं पहुँचे हैं।

परमेश्वर कभी भी हमें उसके बिना सफलता नहीं देगा। याद रखें कि धन-सम्पत्ति को अर्जित कर लेना सच्ची सफलता नहीं है; परन्तु परमेश्वर ही है जो इस योग्य बनाता है कि हम अपने जीवन में जो कुछ वह देता है उसमें वास्तविक आनन्द उठाऐं। बहुत से लोगों के पास अच्छा पद, धन, शक्ति, प्रसिद्धि और अन्य विशेषताएँ है लेकिन जो कुछ होना चाहिये वह सब उनके पास नहीं है - अच्छा रिश्ता, परमेश्वर के साथ सही जगह नहीं, शांति, आनंद, संतुष्टि, उत्तम स्वास्थ्य और जीवन का आनंद उठाने की क्षमता नहीं है जो कुछ हमें अच्छा दिखाई देता है, वह अच्छा नहीं हो सकता।

भजन संहिता १२७:१ के अनुसार यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनाने वालों का परिश्रम व्यर्थ होगा। हम बना तो सकते हैं परन्तु जो कुछ हम बनायेंगे अगर उसमें परमेश्वर शामिल नहीं है तो सब बेकार हो जायेगा। वह हमारे जीवन का साथी है, और जैसे उसकी इच्छा है कि हम जो कुछ भी करते हैं उसका वह भागीदार बनना चाहता है। परमेश्वर हमारे जीवन के हर क्षेत्र में दिलचस्पी रखना चाहता है। यह विश्वास करते हुए कि उत्साहित करने वाली जो उसके साथ यात्रा है उसकी शुरूआत सत्यता है। यह व्यक्तिगत है, व्यापक नहीं।

हम जानते हैं कि यीशु सारे संसार के लिये मरा, परन्तु हमको यह विश्वास करना चाहिये कि हम में से प्रत्येक के लिये व्यक्तिगत रूप से मरा। हम जानते हैं कि यीशु लोगों से प्रेम करता है, लेकिन हमें यह विश्वास करना चाहिये कि वह हम में से प्रत्येक से निराले और अपूर्ण रूप से प्रेम करता है। उसका प्रेम शर्तरहित है तथा वह कौन है उस पर आधारित है न कि हम कौन है या क्या करते हैं।

मैं आपको चुनौती देना चाहती हूँ कि आप विश्वास का एक कदम बढ़ाकर एक बच्चे की तरह से परमेश्वर के पास जायें। और इस समय जब मैं इस पुस्तक को लिख रही हूँ तो मेरे पास अठारह महने की मेरी पोती है जो कि वास्तव में दूसरों पर सब बातों के लिये निर्भर है। और विशेषकर वह अपने माता पिता पर निर्भर रहती है। जैसे वह बढ़ती जा रही है वह अपने खास खास कामों को करती जाती है और यह उचित है कि वह करती भी है। और जिस प्रकार से मरकुस १०:१३-१५ में यीशु ने जिस सिद्धान्त को बतलाया वह सत्य था। जब तक हम बालकों के समान परमेश्वर के राज्य को ग्रहण नहीं कर लेते

तब तक परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते। हम सब बड़े लोग उसके पास बच्चों के समान कैसे जाये? हम उसके पास बच्चों के जैसा, स्वभाव लेकर जायें।

हम सोचते हैं कि हम सभी को बढ़ जाना चाहिये, और किसी न किसी तरीके से हमें बढ़ने की जरूरत है। फिर भी हमें इस समय दूसरे प्रकार से बालक के समान बनने की जरूरत है। बचकानी होना बालक के समान होने से एकदम भिन्न है। बचपने का संबंध अपरिपक्वता, अनियंत्रित गहरी भावना और स्वार्थी स्वभाव से है। बाल्य तुल्य होने का तात्पर्य दीनता, नम्रता और क्षमा करने के लिये सदा तैयार रहने से संबंधित है।

एक नम्र व्यक्ति को सहायता मिलने में कठिनाई नहीं होती है। प्रेरित पौलुस वास्तव में एक महान व्यक्ति था फिर भी २ कुरिन्थियों ३:५ में कहा, "यह नहीं, कि अपने आपसे योग्य हैं (योग्यता एवं पर्याप्त क्षमता), कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें; पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है।"

पौलुस जानता था कि उसकी योग्यता और सामर्थ कहाँ से आती थी, और वह यह जानता था कि उसकी स्वयं की नहीं थी। उसने गवाही दी कि यह मनुष्य की निर्बलता है, परन्तु उसने कहा कि मसीह की सामर्थ उसकी निबर्लता में सिद्ध होती है (देखें २ कुरिन्थियों १२:९)।

यीशु हमारे जीवन में इसलिये आया ताकि हमारी सहायता करे एवं हमें सामर्थ दे और हमें इस योग्य बनायें कि जो कुछ अब तक हम नहीं कर पाये हैं उसे आसानी से कर सकें। *अनुग्रह* का अर्थ है *परमेश्वर का धन मसीह की कीमत द्वारा*। परमेश्वर का अनुग्रह हमारे लिये मुफ्त दान है जो कि सिर्फ विश्वास के द्वारा ग्रहण करने से प्राप्त किया जा सकता है (देखें इफिसियों २:८-९)। फिर भी हमें इसकी जरूरत के लिये स्वीकार करना पड़ता है, या हमेशा के लिये इंकार।

भला करना

क्योंकि मैं जानता हूँ, कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझमें है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते (जो उचित है वही करने की प्रबल लालसा व इरादे हैं परन्तु उन्हें करने की सामर्थ नहीं है। (रोमियों ७:१८)।

नये जन्म के द्वारा से हमारे अन्दर सदगुण आती है और यह यीशु को अपना व्यक्तिगत मुक्तिदाता ग्रहण करने से होता है और हम में अच्छा बनने की और अच्छा करने की इच्छा पैदा होती है, फिर भी उस समय हमारे अन्दर अच्छा करने की सामर्थ नहीं रहती है। क्या समस्या है?

जब हमारा नया जन्म होता है, तब परमेश्वर हमारे अन्दर एक नया स्वभाव उत्पन्न करता है (देखें २ कुरिन्थियों ५:१७) लेकिन हमें शरीर में रहने देता है जिसमें प्राण रहता है तथा जिसमें स्वभाविक तौर से निर्बलता है। यह हमारे समर्पण की जरूरत के लिये मूल उद्देश्य कारण है। याद रखें, कि यदि हमें यीशु की जरूरत नहीं है तो हम उसके तरफ ज्यादा ध्यान भी नहीं देंगे, खास करके हमारे जीवन के शुरुआती दौर में जब हम उसके साथ होते हैं।

सब भली बातें परमेश्वर की ओर से आती हैं। मनुष्य भला नहीं है; परमेश्वर भला है। इसलिये यीशु ने भी उस जवान से कहा था जिसने उसे "हे भला गुरू", कहा था; यीशु ने उससे कहा था कि परमेश्वर के अलावा कोई भला नहीं (देखें मत्ती १९:१६-१७)। यद्यपि यीशु वास्तव में परमेश्वर है, त्रिएक का दूसरा व्यक्ति, उदाहरण के लिये उसके मनुष्य रूप धारण करने की ओर संकेत करता है।

याद करें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र और मनुष्य का पुत्र था, दोनों था। उसके मानवीय स्वभाव में उसने सिर्फ पवित्र आत्मा के द्वारा से जो कुछ किया वह भलाई किया। लूका अध्याय १ में उसकी माता मरियम पवित्र आत्मा के द्वारा से गर्भवती हुई (उसके विषय में पुनः विचार करेंगे)। परमेश्वर उसका पिता था। सो यीशु वास्तव में परमेश्वर था जो मनुष्य का रूप धारण किया। वह भी हम नया जन्म पाये हुए परमेश्वर के संतान के पद में रहा। हम सब मानव शरीर में हैं परन्तु परमेश्वर हमारे अन्दर रहता है। यह वास्तव में, जैसे हमने देखा है कि यह बिल्कुल भी सत्य नहीं है जो परमेश्वर के वचन के अनुसार बार बार प्रमाणित किया जा सकता है।

क्या आप इसी तरह की हलचल से गुजर रहे हैं?

परन्तु सहायक (परामर्शदाता, मददगार, मध्यस्थता करने वाला, वकील, शक्तिदेनेवाला, समर्थन करने वाला), अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे ना से (मेरे स्थान पर, मेरा प्रतिनिधित्व करके मेरे स्थान पर काम करने के लिये) भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा

है, वह सब तुम्हें स्मरण (मन में डालेगा पुन: डालेगा, याददाश्त में लाएगा) कराएगा (यूहन्ना १४:२६)।

मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि मैंने सिर्फ धार्मिक होकर, इधर-उधर के हलचल में, विधि-विधान मानते हुए, और यीशु मुझ में जीवित है यह प्रकाशन पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा न पाते हुए इतने साल ऐसे ही बर्बाद कर दिये।

हम लोगो से हमेशा यह पूछते है बिना सोचे और समझे कि क्या उन्होंने यीशु को ग्रहण किया है। अगर हम उसे ग्रहण करते हैं तो उसके साथ क्या करते हैं? तो निश्चय है कि हम उसको छोटी सी पेटी में बंद नहीं करेंगे जिसमें मे करेगे जिसमे मानों यह लिखा हो "रविवार की सुबह", जाकर उसे खोलकर ले आओं, उसके लिये कुछ एक गीत गायें, थोड़ी सी बातचीत करें और फिर उसके बाद, उसी पेटी में बंद कर दें यह कहते हुए कि अगले रविवार तक के लिए उसको फिर मिलेंगे। यदि हम उसे ग्रहण करते हैं तब तो वह हमारे साथ रहता है कि मैं तुझे कभी न छोडूँगा और न त्यागूँगा, वह हमारे साथ रहता हैं।

मैं आपसे विनती करती हूँ कि परमेश्वर के साथ यीशु के लहू के द्वारा से खरीदे जाने का जो संबंध पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा से हुआ है उसका आप पूरा पूरा फायदा उठाना आरंभ कर दें। परमेश्वर को सिर्फ तत्कालिक सेवा और रविवार की सुबह के लिये न गिड़गिड़ायें। पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा आप अपने जीवन के हर क्षेत्र में उसे काम करने दें। आप क्यों अपने हाथों को उठाकर उसकी आराधना इसी समय ईमानदारीपूर्वक नहीं करते और कहते, "पवित्र आत्मा, मेरे जीवन में आपका स्वागत है?"

पवित्र आत्मा हमें हर भले काम को करने में मदद करेगा, परंतु वह हमें यह भी स्मरण दिलाएगा कि हम परमेश्वर को महिमा दे नकि हम इसे अपने लिए लेने की कोशिश करें। पवित्र आत्मा हमें हमेशा स्मरण कराता है कि हमे क्या जानने की जरुरत है।

अनगिनत बार पवित्र आत्मा ने इन सालों में मुझे कही बाते स्मरण कराई तथा बहुत सारी बातें जिसे मैं करना भूल गई थी उसे याद दिलाया। जब भी मेरे जीवन में निर्णय के अति महत्वपूर्ण पल आये जो परमेश्वर के वचन के अनुसार होना था उस समय पवित्र आत्मा ने स्मरण दिलाकर मुझे एकदम उचित पंक्ति में रखा।

मैंने मेरी छोटी जरूरतों को उसके पास लाकर बड़े निर्णय को भी लेकर परमेश्वर पर भरोसा रखना सीख लिया एक बार हम सब परिवार के सदस्य

मिलकर एक मसीही चल चित्र को घर में देखना चाहते थे, मगर हमें रिमोट कन्ट्रोल नहीं मिल पाया। सभी घर पर इकट्टे थे, परन्तु न तो डेव को और न मुझको पता था कि टी.वी. बिना रिमोट के कैसे काम करे, इसके विषय में हम दोनों बहुत चिंतित थे कि कहाँ से उसे ढूँढ़ें।

हम उसके लिये हर जगह ढूँढ लिये। इस शयन कक्ष में, कोच के नीचे, और तकिया के अंदर भी देख लिये। हम अपने बड़े दो बच्चों को भी बुलाये जो इससे पहले टी.वी. देख रहे थे, शायद उन्हें याद हो कि वे कहीं भी रख दिये हों, मगर कहीं भी रिमोट कन्ट्रोल नहीं मिला।

मैंने प्रार्थना करने का निर्णय लिया। इसलिये मैंने अपने दिल में धीमे शब्द से कहा, “पवित्र आत्मा, कृपया मुझे दिखाइये कि रिमोट कंन्ट्रोल कहाँ पर है?” तुरन्त मेरी आत्मा में आया कि मैं बाथरूम तरफ जाकर देखूँ और वास्तव में मैंने देखा कि रिमोट वहाँ पर था।

और फिर इसी प्रकार की घटना मेरी कार की चाबी के साथ हुई। मैं तैयार थी निकलने के लिये। जब मैं अपनी चाबी को ढूँढ नहीं पायी तो मैं कटर कटर करने लगी। मैं पागलों की तरह खोजती रही परन्तु सब कुछ बेकार साबित हुआ तब फिर मैं प्रार्थना करने के लिये निर्णय ली। और मैंने अपनी आत्मा में देखा कि चाबियां कार की प्रथम सीट पर हैं, और वास्तव में वैसा ही हुआ।

१ कुरिन्थियों अध्याय १२ में पवित्र आत्मा ने ज्ञान की बातों के वरदान के बारे में बताया है। परमेश्वर ने मुझे रिमोट कन्ट्रोल और खोई चाबियों के बारे में ज्ञान का प्रकाश दिया। यह वरदान उन सब के लिये उपलब्ध हैं जो पवित्र आत्मा से भरे हुए हैं। यह विश्वासियों के लिये ईश्वरीय सामर्थ भेंट के तौर से दी जाती है ताकि वे एक स्वाभाविक जीवन से एक ईश्वरीय जीवन जी सकें। जी हाँ, हम पवित्र आत्मा से कह सकते हैं कि हमें उन सब बातों को स्मरण दिला जिसे हमें स्मरण रखना चाहिये। अगर हमें सहायता की जरूरत नहीं होती तो, हम सबको सब कुछ अच्छी रीति से याद होता और हमें याद दिलाये जाने की जरूरत ही नहीं पड़ती; परन्तु अगर हम ईमानदार हैं तो हम सबको मालुम है कि बात ऐसी नहीं है। अगर प्रभु हमें हमारे रिमोट कन्ट्रोल और खोई चाबियों के बारे में बोल सकता है तो जरा सोचिये कि वह अत्याधिक घनिष्ठ बातों के बारें में क्योंकर ज्यादा उत्सुकता के साथ न बोलेगा।

व्यपार में मालिक को अपने हिसाब-किताब बराबर रखने के लिये सेक्रटरि रखने में कोई समस्या नहीं होती है जो कि खास - खास बातों को याद दिलाती है और उसके इस काम के लिये मालिक को उस पर आश्रित रहना पड़ता है।

जबकि, इन लोगों को अपनी इन परेशानियों के लिये परमेश्वर पर आश्रित रहने के लिये कठिनाईयाँ होती हैं, इसलिये इस हिसाब किताब के लिये अपने मुख्य पर आश्रित रहते हैं। यह दो कारणों से होता है; (१) वे अच्छी तरह से नहीं जानते हैं कि जीवन की इन छोटी छोटी जानकारियों के लिये परमेश्वर पर आश्रित रहें - वे विश्वास नहीं करते हैं कि परमेश्वर इस प्रकार से दिलचस्पी लेगा; और (२) वे अपने आपको नम्र करना नहीं चाहते तथा अपनी जरूरतों को बताना नहीं चाहते।

चूँकि मनुष्य जाति अभिमानी है, इसलिये हम जरूरतमंद दिखना नहीं चाहते हैं। याद करें, यूहन्ना १५:५ में यीशु ने कहा कि उससे अलग होकर, हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं। कुछ नहीं का मतलब है कुछ भी नहीं - जितनी जल्दी हम इस तथ्यको सीख जाते हैं, उतने बेहतरीन हम बन जाते हैं, क्योंकि बाइबल कहती है कि परमेश्वर दीनों पर अनुग्रह करता है परंतु अभिमानियों का सामना करता है (देखें याकूब ४:६; १ पतरस ५:५)।

परमेश्वर बिल्कुल प्रसन्न नहीं होता है कि लोग उसे अपने प्रतिदिन के जीवन से अलग करके कुछ धार्मिक क्रिया-कलाप में लगकर उसे सांत्वना देने की कोशिश करें। इस प्रकार की हलचल करते हुए आप अपना समय नष्ट न करें। या तो आपका परमेश्वर के साथ एक सही संबंध हो जो कि जीवित और अर्थपूर्ण हो या आप उस तथ्य का सामना करें कि आपके लिये कोई नहीं और न आपको किसी की आवश्यकता है। जैसा आप चाहते हैं वैसा आप कर सकते हैं।

अपने आपसे यह प्रश्न करें, तब आप जल्दी जान सकेंगे कि आप आत्मिक तौर से कहाँ पर हैं :

क्या आप प्रतिदिन परमेश्वर के ज्ञान और उसके मार्गों में बढ़ रहे हैं?

क्या आप कलीसिया में संगति करने के लिये लगातार जाते हैं, या किसी प्रकार से बाध्य होकर ऐसा करते हैं? क्या आप वास्तव में दिलचस्पी लेते हैं, या आप खुश होते हैं कि जब समाप्त हो जाये तो मैं दोपहर के भोजन के लिये जा सकता हूँ?

क्या आप यह महसुस करते हैं कि परमेश्वर के समीप हैं?

क्या आपके जीवन से आत्मा का फल प्रगट है-प्रेम, आनंद, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता कोमलता, दीनता), और संयम (देखें गलतियों ५:२२-२३)?

जब से आपने मसीह को जीवन दिया है तब से आप कितने बदल गये हैं?

यदि आप इन प्रश्नों के उत्तर से संतुष्ट नहीं हैं, तो अपने सम्पूर्ण जीवन को परमेश्वर के सामने खोलकर रख दें, और पवित्र आत्मा से कहें कि आपके जीवन के हर क्षेत्र में शामिल होकर काम करे। यदि आप ईमानदारी और विश्वासयोग्यता से ऐसा करेंगे, तो वह आपके अन्दर प्रभावशाली ढंग से और उत्साहपूर्वक काम करना आरंभ कर देगा।

अब आपके पुराने तौर तरीकों में लटके रहने की जरूरत नहीं है, जो कि कुछ खास समय के लिये उचित थे परन्तु अब उनका प्रभाव नहीं रहा, क्योंकि परमेश्वर चाहता है कि आप नये तौर तरीकों को अपनायें और उससे कहीं पार जायें। नई बातों से आप बिल्कुल न घबरायें; ये सुनिश्चित कर लें कि ये बाइबल सामर्थ के द्वारा से एक नई ऊँचाई में ले जाना चाहता है। वह आपके दिल के द्वार पर खटखटा रहा है। क्या आप अपना दिल खोलकर उसका स्वागत करेंगे?

यदि आप पवित्र आत्मा के लिये अपने जीवन में जगह नहीं बना रहे हैं तो, वह आपको खो रहा है, और यदि आप यह जानें या न जानें, आप भी उसे खो रहे हैं।

बहुत से लोग जो असंतुष्टि का अनुभव कर रहे हैं उसका एक मुख्य कारण यह है कि पवित्र आत्मा के द्वारा से परमेश्वर के साथ संगति व घनिष्ठता की कमी है। यदि आप उन लोगों में से एक हैं, तो मैं ये विश्वास करती हूँ कि यह पुस्तक आपको बदल सकती है। क्यों आप अपनी दिशा को जल्दी बदल नहीं देते, जिससे आप परमेश्वर का आनंद उससे अधिक बढ़कर उठाना आरंभ कर दे?

परमेश्वर की सहायता बिना आप युद्ध जीत नहीं सकते।

> यहोवा तुमसे ये कहता है, तुम इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो; क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं, परमेश्वर का है। (२ इतिहास २०:१५)

दूसरा इतिहास अध्याय २० में यहूदा के लोगों के जीवन में भारी संकट का समय आया उसमें उसका वर्णन है। उनको एक बहुत बड़ी सेना का सामना करना था जो उनको सत्यानाश करने पर थे। परन्तु परमेश्वर के नबी ने उनसे कहा कि मत डरो क्योंकि युद्ध उनका नहीं था; परन्तु यहोवा का था।

उसी अध्याय के पद १२ में हम यहूदा के राजा यहोशापात ने जो बड़ी बुद्धिमानी से परमेश्वर से प्रार्थना की उसके विषय में हम पढ़ते हैं: “हे हमारे परमेश्वर, क्या तू उनका न्याय न करेगा? यह जो बड़ी भीड़ हम पर चढ़ाई कर रही है, उसके सामने हमारा तो बस नहीं चलता और हमें कुछ सूझता नहीं कि क्या करना चाहिये? परन्तु हमारी आँखे तेरी ओर लगी हैं।”

मैंने इन सालों में इस प्रार्थना के ऊपर से बहुत बार अध्ययन किया है, और इसने मेरी सहायता की है और जिस जगह में मुझे जाना था वहाँ मैं आसानी से पहुंचकर सहायता के लिये पुकार सकती हूँ। हम बार बार अपनी चकरी को घुमाने की कोशिश करते रहते हैं जैसा कि हमें सब कुछ आता है परन्तु हमें कुछ भी नहीं आता है। मैंने कठिनाईयों के बीच में यह आसान तरीका करने के लिये खोज लिया, “मैं नहीं जानती हूँ कि क्या करना है, और अगर मैं जानती भी हूँ, तो बिना सहायता के मैं कुछ भी नहीं कर सकती हूँ। पवित्र आत्मा, मेरी सहायता कर!”

घमण्ड हमारे अंदर एक छिपा हुआ दानव है जो हमें सहायता के लिये पुकारने से हमेशा रोकता है। हम स्वालम्बी और स्वतंत्र रहना चाहते हैं। यद्यपि, परमेश्वर ने हमारी सृष्टि इस प्रकार से की है कि यद्यपि हमारे पास शक्ति है, तो हमारे पास निर्बलता भी है, और हमें हमेशा सहायता की जरूरत पड़ेगी।

परमेश्वर चाहता है कि हम सम्पूर्ण रूप से उस पर आश्रित हो जायें; और यही है वास्तविक विश्वास। *द एम्प्लीफाईड बाइबल* में कुलुस्सियों १:४ के अनुसार विश्वास की परिभाषा दी गई है जिसे मैं वास्तव में प्यार करती हूँ। यीशु में जो विश्वास है उसके बारे में कहता है, “उसकी सामर्थ, बुद्धि और भलाई और निश्चयता धरो जिससे तुम अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ उस पर आश्रित रह सको।”

हम परमेश्वर पर आश्रित रह सकते हैं जिससे हम उसकी इच्छा में बने रह सकते हैं। यह हमारे लिये बड़े असमझ की बात है कि हम अपनी सामर्थ से उसकी इच्छा में बने रहने की कोशिश करते हैं। हममें से कौन है कि कभी यह कर सकता है कि हम १०० प्रतिशत जानते है कि हमें प्रतिदिन क्या कुछ करना है? हमारा मन अपने मार्ग पर विचार करता है, परन्तु यहोवा ही हमारे पैरों को स्थिर करता है (देखें नीतिवचन १६:९)।

आप एक सही निर्णय लेने के लिये वह सब कुछ कर सकते हैं जो कुछ आप जानते हैं। आप सही हो सकते हैं मगर गलती होने की भी संभावना हो

सकती है। अगर आप सही हैं तो यह कैसे जान सकते हैं? हरगिज़ नही। आपको परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिये ताकि वह अपनी इच्छा में बनाये रखे, और आपके सामने जो टेढ़े मेढ़े मार्ग हैं उसे सीधा करे तथा छोटे मार्ग से ले जाये जो जीवन को पहुँचाता परन्तु चौड़े मार्ग में जाने से बचाये जो विनाश को पहुँचाता है (देखें मत्ती ७:१३)।

हमें यह प्रार्थना करने की आवश्यकता है, "हे परमेश्वर, तेरी इच्छा मेरे जीवन में पूरी हो जाये।" कुछ लोगों ने कहीं पर यह सिद्धान्त स्थापित कर लिये हैं कि हम कभी भी इस प्रकार की प्रार्थना नहीं करनी चाहिये कि, "तेरी इच्छा पूरी हो जाये।" परन्तु यीशु ने इसी प्रकार से प्रार्थना की (*देखें* लूका २२:४२), यह कहते हुए कि, "देख, हे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने के लिये आ गया हूँ।" (देखें यूहन्ना १७:४-५)।

मैं परमेश्वर की इच्छा के बारे में जो मेरे जीवन के लिये है कुछ तो जानती हूँ परन्तु सब कुछ नहीं जानती हूँ, इसलिये मैंने अपने आपको परमेश्वर के प्रति समर्पित करते हुए आराम और शांति में रखना सीख लिया है, ताकि मैं प्रार्थना करते हुए उसकी इच्छा पूरी कर सकूँ और उस पर भरोसा रखूँ ताकि वह मेरी रक्षा करे। मैंने यह तब सीखा जब परमेश्वर मुझे सीखा रहा था कि मैं कैसे खास निर्णय लेना सीखूँ। मैं अनुताप करने लगी, "लेकिन, हे परमेश्वर, फिर क्या अगर मैं गलती कर जाऊँ तो? फिर क्या अगर मुझसे भूल चूक हो जाये तो? फिर क्या अगर मैं तुझे खो दूँ तो!"

उसने कहा, "जॉयस, अगर तू मुझे खो देगी, तो मैं तुझे खोज लूँगा।"

आश्रित रहना एक अच्छी बात है, जब तक हम किसी बात पर और किसी व्यक्ति पर आश्रित रहते हैं तब तक हम किसी बात पर और किसी व्यक्ति पर आश्रित रहते हैं तब तक हमारी उम्मीद पर किसी प्रकार से पानी फिरने की गुजाँइश नहीं होती है। परमेश्वर पर आश्रित रहना एक अच्छा चुनाव है। जो लोग अपना जीवन उसके हवाले कर देते हैं उसके पास उनकी विश्वासयोग्यता का पूरा पूरा प्रमाण है।

६
पवित्र सहायक

> परन्तु सहायक (सलाहकार, मददगार, मध्यस्थता करने वाला, वकील, शक्ति देनेवाला, समर्थन करने वाला), अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से (मेरे स्थान पर, मेरे प्रतिनिधित्व करके मेरे स्थान पर काम करने के लिये) भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा। (यूहन्ना १४:२६)।

जब हम पवित्र सहायक से सहायता प्राप्त कर रहे होते हैं तब हमें अनगिनित बातों का संघर्ष करना पड़ता है। पवित्र आत्मा एक कोमल व्यक्ति है, वह कभी भी अपने मार्गों को हमारे जीवन या हमारे प्रतिदिन के दिनचर्या में नही थोपेगा। अगर उसे निमंत्रण दिया जाये, तो वह तुरन्त प्रत्युत्तर देगा, किन्तु उसे निमंत्रण दिया जाना चाहिये।

त्रिएक में तीसरा व्यक्ति होने के नाते, पवित्र आत्मा का स्वयं का व्यक्तित्व है। वह तिरस्कृत व शोकित किया जा सकता है। उसका बड़ा आदर किया जाना चाहिये। एक बार जब हम यह समझ जाते हैं कि वह हमारे भीतर रहता है अर्थात् जितने उस पर विश्वास करते हैं, तो हमको वह सब कुछ करना चाहिये जिससे वह हमारे अन्दर घर बनाकर रह सके।

पवित्र आत्मा सदा उपलब्ध है। *द एमप्लीफाईड बाइबल* उसे समर्थन करने वाली पुकारती है। मैं उसके स्वभाव की विशेषता से प्यार करती हूँ क्योंकि मैं उसके विषय में ज्यादा सोचना चाहती हूँ क्योंकि वह मेरा समर्थन करने के लिये सर्वदा खड़ा रहता है जब कभी मुझे सहायता की जरूरत पड़ती है। एक पल के लिये आप जरूर इस विषय पर ध्यान करें तब आपको यह बहुत ही मनभावना लगेगा। एक बहुत बड़ी प्रभावशाली प्रार्थना जो हम कर सकते हैं वह यह है कि, “प्रभु मेरी सहायता कर।”

पवित्र आत्मा न केवल हमारी परिस्थितियों के अनुसार समर्थन करता है बल्कि वह सलाह देने के लिये भी उपलब्ध रहता है। हम कैसे अक्सर इसके लिये अपने मित्रों के पास भागते हैं जबकि सलाह के लिये हमें पवित्र आत्मा के पास जाना चाहिये? वह चाहता है कि वह हमारी नेतृत्व करे, अगुवाई करे और हमारे जीवन का निर्देश करे; जब हम उससे किसी सलाह के लिये पूछते हैं तब उसका आदरमान होता है।

मैं अपने आप में गर्व महसुस करती हूँ जब मेरे बड़े बड़े बच्चे मुझसे सलाह लेते हैं, और विशेष करके तब जब वे उनका पालन करते हैं। मैं उनमें बहुत ज्यादा दिलचस्पी लेती हूँ और कोई भी बात दृढ़तापूर्वक नहीं करती हूँ जब तक मुझे यह विश्वास न हो जाये कि ये उनकी मदद करेंगी। यदि हम मानव इतना अधिक करने की कोशिश करते हैं, तो जब हम पवित्र आत्मा की ओर मन लगायेंगे तो वह हमारे लिये अधिकाई से क्योंकर कुछ न करेगा?

मैं सोचती हूँ कि बहुत से लोगों के प्रश्नों का जवाब इसलिये कभी भी नहीं मिलता है क्योंकि वे सलाह और परामर्श के लिये गलत तरीकों को खोज लेते हैं।

किस प्रकार से पवित्र आत्मा सलाह देता है?

इससे पहले भी हमने यूहन्ना १४:२६ में देखा है कि पवित्र आत्मा हमारा सलाहकार है। चूँकि आप उससे कैसे सुन सकते हैं न जानने के कारण से उससे सलाह लेने के लिये जाने से आप कतराते हैं। वह हमसे कैसे बातें करता है?

परमेश्वर अपने लोगों की अगुवाई भीतर की गवाही के द्वारा से करता है जो कि एक बहुत बड़ा कारण है। दूसरे शब्दों में हम आन्तरिक तौर से जान लेते हैं कि क्या सही या क्या गलत है। यह गहरे स्तर का ज्ञान दिमागी ज्ञान से अधिक बढ़कर है। इस प्रकार का ज्ञान होना आत्मा में होता है - हमें साधारण तौर से मालुम हो जाता है कि शांति होने से या न होने से, या उस शांति के द्वारा या शांति न होने के द्वारा क्या कुछ करना है।

एक बार जब मैं एक महिला से जो एक बहुत बड़ी गंभीर निर्णय लेने पर थी उससे बातचीत कर रही थी। उसके परिवार वाले और मित्र गण उसे परामर्श देने लगे, लेकिन वह खुद अपने आप से ये जानना चाह रही थी कि इसका सही उत्तर क्या है क्योंकि उसी को ही इन सब बातों का सामना करते हुए जीना था। किसी समय वह एक खास व्यवसाय किया करती थी और बाद में उसने महसुस किया कि उसे नौकरी से बाहर निकालकर घर में बच्चों के साथ रहना

चाहिए। यह बात सच थी, कि ऐसा करने से आर्थिक स्थिति में और व्यक्तिगत रूप में बदलाव आयेगा जिससे उसकी भावना को बहुत आघात पहुँचेगा। उसे दूसरे लोगों की अपेक्षा किसी व्यक्ति विशेष खास से जानने की आवश्यकता थी कि उसे क्या कुछ करना चाहिये।

एक बार वह महिला अपने रिश्तेदार के साथ एक सेमिनार में गई। और जब सेमिनार में शिक्षण-सत्र चल रहा था और जब वह प्रभु में स्तुति आराधना कर रही थी एवं वक्ता के द्वारा से वचन सुन रही थी, तब उसने यह जान ली कि उसके हृदय में शान्ति छा गयी है और उसे यह निश्चयता मिल गई कि जिस व्यवसाय को बंद करने जा रही थी वह सही निर्णय था। उसने आखिरकार यह कहा कि ऐसा समय आसानी से आ ही गया कि वह जान ले कि क्या उचित था। उस समय के बाद से उसके हृदय में इस विषय के प्रति शांति आ गई।

यह कितनी अज़ीब बात है कि लोग हमें कितनी बातें ऐसी ही कह डालते हैं जिसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, परन्तु जब परमेश्वर हमसे कुछ कहता है, तो हमें भिन्न महसुस होता है। दूसरे लोग अपनी परामर्श के द्वारा से हमें कभी भी शांति नहीं दे सकते सिवाय परमेश्वर के।

परमेश्वर अपने वचन के द्वारा से हमसे बातें करता है, यह उसका तरीका है। हो सकता है हम अपने कई प्रश्नों के उत्तर पाने के लिये उसको खोजते होंगे, और जैसे ही हम उसके वचन को पढ़ते जाते हैं, तब पवित्रशास्त्र का कोई भाग हमारे हृदय को स्पर्श करता है तब हम जान लेते हैं कि हमें क्या करना चाहिये।

अक्सर कई बार ऐसा होता है कि मैं पवित्र आत्मा से कहती हूँ कि मुझे वार्तालाप करने एवं निर्णय लेने में मेरी अगुवाई करे। परंतु मुझे पवित्र आत्मा कि अगुवाई नहीं मिलती है। मैं अधिकांश कुछ ऐसी परिस्थितियों से गुजरती हूँ जहाँ पर पवित्र आत्मा अगुवाई करता है। अक्सर जब मैं अपना मुँह खोलती हूँ यह सोचते हुए कि किस विषय पर बोलूँ मगर मैं यह पाती हूँ कि उस विषय में बढ़ जाती हूँ जिसकी मैंने तैयारी नहीं की थी। यह तो सम्पूर्ण वचन के अनुसार है, जैसे कि हम नीतिवचन १६:१ में देखते हैं; "मन की युक्ति मनुष्य के वश में रहती है, परन्तु मुँह से कहना यहोवा की ओर से होता है।"

हमें यह भरोसा करने में अक्सर कठिनाई होती है कि जो हम विश्वास करते हैं प्रभु की ओर से है या नहीं। ऐसा नहीं है कि जो हम अविश्वास करते हैं, परन्तु यह हमारे अविश्वास की क्षमता है कि हम उससे सुन नहीं सकते। आखिरकार मुझे विश्वास के एक कदम को उठाना पड़ा, और तब मैंने पवित्र आत्मा के द्वारा से जो नेतृत्व है उसको कैसे पहचानना है, अनुभव किया।

मैं अक्सर कहा करती हूँ, "कदम बढ़ाकर देखो।" जैसे हम पवित्र आत्मा के नेतृत्व को सीख रहे हैं यह बाध्य है कि हम गलती कर सकते हैं, परन्तु परमेश्वर अक्सर हमारी मदद करता है कि हम वापस अपने सही रास्ते पर आ जायें और फिर हम गलतियों के द्वारा से यह सीखते हैं।

परमेश्वर की अगुवाई में चलने के लिये सीखने की प्रक्रिया एवं बच्चों के चलने के लिये सीखने की प्रक्रिया, इन दोनों कार्यों में अन्तर नहीं है। वे बार बार गिरते और उठते हैं इस प्रक्रिया में और फिर कोशिश करते रहते हैं, और आखिरकार वे चलना सीख जाते हैं परन्तु वे केवल चलते ही नहीं वरन वे बड़ी तेजी से दौड़ने भी लग जाते हैं।

याकूब अध्याय १ कहता है कि किस प्रकार से जीवन की परीक्षाओं को नियंत्रण में लाना है। स्वाभाविक तौर से भी समस्याओं के ऊपर नियंत्रण करना है। और आत्मिक तौर से भी नियंत्रण करने का तरीका है।

> पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे (जो देता है), जो बिना उलाहना दिये सबको उदारता से देता है; और उसको दी जाएगी। पर विश्वास से माँगे, और कुछ सन्देह न करे (बिना हिचकिचाए और शक किए); क्योंकि सन्देह करने वाला (हिचकिचाना, शक करना) समुद्र की लहर के समान है जो हवा से बहती और उछलतीहै। (याकूब १:५-६)

याकूब यहाँ पर यह कह रहा हैं, "यदि तुम्हारे पास समस्या है, तो परमेश्वर से कहो कि क्या करना चाहिये।" हो सकता है कि आपको आपके निवेदन का तुरन्त जवाब न मिले, परन्तु यह हो सकता है जब आप व्यवसाय कर रहे हो तब ऐसी बुद्धि काम करेगी जो अलौकिक, पवित्र एवं आपके समझ से परे है।

भजन संहिता २३:२ में भजनकार हमसे कहता है कि परमेश्वर अपने लोगों को हरी हरी चराईयों और निर्मल जल के सोते के पास ले जाता है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर हमेशा अपने लोगों को जो उसे खोजते हैं एक शांति और सुरक्षा के स्थान में ले जाता है।

कृपया ध्यान दें कि जैसे याकूब कहता है, "माँगे।" अक्सर हम सभी को सहायता इसलिये नहीं मिलती क्योंकि हम माँगते नहीं। याद रखें: कि पवित्र आत्मा एक कोमल व्यक्ति है और वह प्रतीक्षा करता है कि हम अपनी हर परिस्थिति में उसे आंमत्रित करें; अन्यथा वह हमारी सुइच्छा को बिगाड़ देगा। *न कल्पना करें और न तर्क करें; बल्कि हमेशा माँगे!*

याकूब ४:१-६ में यह शिक्षा देता है कि हम में लड़ाईयाँ और झगड़े उस दुष्ट से और शारीरिक लालसाओं से जो हमारे अन्दर है उत्पन्न होती हैं। जो कुछ दूसरों के पास है, उससे हम डाह और लोभ करते हैं, और फिर हमारी लालसा पूरी नहीं होती है क्योंकि हम अपनी लालसाओं को बुरे तरीके से प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। याकूब कहता है कि जब लोग डाह के द्वारा से जल जाते हैं और जो कुछ चाहते हैं नहीं प्राप्त करते तब वे झगड़ने और लड़ने लग जाते हैं। याकूब स्पष्ट रूप से समझाता है कि, "तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें मिलता नहीं क्योंकि तुम परमेश्वर से माँगते नहीं" (पद २)। स्ट्राँग कॉनकॉर्डेंस के अनुसार *माँगना* शब्द के लिये जो यूनानी में अनुवाद किया गया है, "भीख माँगना, पुकारना, याचना करना, इच्छा करना, जरूरत होना।" यदि परमेश्वर हमें सब कुछ दे देता है जो कुछ हम ऐसे ही मांगते हैं, तो हम परमेश्वर से *याचना* करेंगे कि कुछ उनमें से वापस भी ले ले! परमेश्वर हमारी हृदय की गहरी भावनाओं एवं शुद्ध उद्देश्य दोनों का प्रत्युत्तर देता है। याकूब ४ का ३ पद जिन बातों की हम लालसा करते हैं उसके विषय में कहता है, "तुम माँगते (उनके लिये परमेश्वर से) हो और पाते नहीं, इसलिये कि बुरी इच्छा से मांगते हो ताकि अपने (आप जो कुछ हैं इच्छा करते हैं वही मिलता है) भोग विलास में उड़ा दो।"

याकूब इस संदर्भ का निष्कर्ष पद ७ के द्वारा से यह कहकर निकालता है कि परमेश्वर "वह तो और भी अनुग्रह देता है (पवित्र आत्मा की सामर्थ, ताकि इन तमाम बुराईयों के ऊपर पूर्ण रूप से जय मिले।" वह हमसे कहता है कि, "परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर (जो लोग अपने आपको इसको ग्रहण करने के लिये नम्र करते हैं) अनुग्रह (निरंतर) करता है।"

पहला पतरस ५:५ में कहा गया है कि वास्तव में परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, निराश करता है तथा उन्हें पराजित कर देता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह (पवित्र आत्मा के द्वारा से सहायता) करता है। अक्सर हम यह कोशिश करते हैं कि कुछ हो, परन्तु इसके पीछे हमें निराशा ही मिलती है। यह इसलिये होता है क्योंकि हम अपने ऊपर या किसी और दूसरे प्रकार के पहुँच पर आश्रित रहते हैं, और फिर हम पवित्र आत्मा को ठुकराते एवं उसे शोकित करते हैं क्योंकि हम उसके पास नहीं जाते हैं। इसलिये वह हमारी सहायता करने के बदले में हमारा विरोध करता है।

पवित्र शास्त्र के निम्न वचनों पर ध्यान करें जो आपको समझने में यह सहायता प्रदान करेंगी जिससे आप परमेश्वर को खोजने की सलाह के महत्व को जान सकें :

> "क्या ही धन्य (खुश, भाग्यवान, उन्नतशील और जलनशील) है वह पुरूष जो दुष्टों की युक्ति (उनके परामर्श का अनुसरण, उनकी योजनाएँ और उद्देश्य) पर नहीं चलता।" (भजन संहिता १:१)
>
> यहोवा अन्यजातियों की युक्ति को व्यर्थ कर देता है; वह देश देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है। *यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी, उसके मन की कल्पनाएँ पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी।* (भजन संहिता ३३:१०-११)।
>
> परन्तु वे झट उसके कामों को भूल गए; और उसकी युक्ति के लिये न ठहरे। उन्होंने जंगल में अति लालसा की, और निर्जल स्थान में ईश्वर की परीक्षा की। तब उसने उन्हें मुँह माँगा वर तो दिया,परन्तु उनके प्राण को सुखा दिया। (भजन संहिता १०६:१३-१५)।

हजारों विश्वासी और अविश्वासी वही करते हैं जो कुछ इस्राएलियों ने जंगल में किया था। वे अपनी माँग में डटे रहते हैं और परमेश्वर की योजनाओं के लिये धीरज धरकर बाट नहीं जोहते जिसके द्वारा से उनकी उन्नति हो। वे लोग नहीं चाहते हैं कि परमेश्वर उनको सलाह दे; वरन वे परमेश्वर को सलाह देना चाहते हैं। वे लोग परमेश्वर को कहने की कोशिश करते है कि उसे क्या करना चाहिये, और यदि वे सब बातें उसी समय न घटे तो वे सब अधीर हो जाते हैं।

इन्हीं कारणों से आज लोगों के मध्य में अप्रसन्नता और असन्तुष्टि बहुतायत से छायी हुई है। यदि परमेश्वर ने हमें बनाया है तो हमें उसकी जरूरत है, और यदि हम ऐसे जीने की कोशिश करें कि हमें उसकी जरूरत न हो तो हम कैसे कभी भरपूर हो सकते हैं?

पवित्र आत्मा हमें शांति देता है

> हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर, और पिता का धन्यवाद हो, जो दया (सहानुभूति और करूणा) का पिता, और सब प्रकार की शांति (सांत्वना और प्रोत्साहन) का परमेश्वर (जो स्त्रोत) है। वह हमारे सब क्लेशों (संकट और दुःखों) में शांति (सांत्वना एवं प्रोत्साहन) देता है; ताकि हम उस शांति (सांत्वना और प्रोत्साहन) का कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शांति (सांत्वना एवं प्रोत्साहन) दे सकें, जो किसी प्रकार के क्लेश में हों। (२ कुरिन्थियों १:३-४)

पवित्र आत्मा हमारी जरूरत के समय में हमें शांति से भरकर सहायता करना चाहता है। आपको और मुझको शांति की आवश्यकता है जब हम निराश होते हैं, चोट खाते है, किसी प्रकार से बुरा बर्ताव किया जाता है, और जब हमारी हानि होती है। हमें तब भी शांति की आवश्यकता है जब हमारे जीवन में बदलाव आते हैं और जब हम थक भी जाते है। और दूसरे समय में भी हमें शांति की आवश्यकता है जब हम किसी भी प्रकार से असफल हो जाते हैं।

इससे पहले भी हमने देखा है कि पवित्र आत्मा को वास्तव में शांतिदाता नाम से पुकार गया है। उससे अलग अलग नाम उसके स्वभाव के बारें में वर्णन करते हैं। वे वही प्रकट करते हैं जो कुछ वह करता है, और विश्वासियों के लिये कम से कम क्या कुछ करने की इच्छा करता है। अगर हम उसकी सहायता लेंगे तो वह हमारे लिये बहुत बड़े बड़े काम करना चाहता है।

बहुत सालों तक मैं अपने पति के साथ लगातार गुस्सा करती रही क्योंकि जब मुझे शांति की आवश्यकता महसुस होती थी, वह मुझे नहीं दिया करते थे। मैं निश्चिंत हूँ कि वह कोशिश करते थे, मगर अब मैं यह महसुस करती हूँ कि परमेश्वर ने डेव को उस शांति को देने के लिये तैयार नहीं किया था जिसके लिये मैं तड़पती थी, मगर मुझे कब से पवित्र आत्मा मिल गया होता यदि मैं उससे माँगी होती।

परमेश्वर लोगों को एक निश्चित समय सीमा दर या उससे थोड़ा अधिक हमारे लिये करने के लिये उभारेगा। यद्यपि बहुत सारे लोग हमारे अति घनिष्ठ होने के बावजूद भी हमें वह सब कुछ नहीं दे सकते जो हमें हमेशा आवश्यकता होती है। जिस काम को सिर्फ परमेश्वर कर सकता है जब हम दूसरों से अपेक्षा रखते हैं तो हमारी अपेक्षाऐं गलत स्थान पर है और फिर हम यूँही हमेशा हतोत्साहित रहेंगे।

परमेश्वर की सर्वोत्तम शांति से बढ़कर और कोई बात नहीं हैं। मनुष्य कभी भी हमें वह सब नहीं दे सकता जो हमें वास्तव में आवश्यकता है, जब तक परमेश्वर मनुष्य को हमारे लिये इस्तेमाल न करे तब तक वह हम तक नहीं पहुँच सकता। यह वह हम मनुष्यों के लिये हमेशा किया करता है।

लोग एक दूसरे को शांति दे सकते हैं और देना भी चाहिये, लेकिन परमेश्वर ही है सच्ची शांति को दे सकता है। मैं परमेश्वर को कुछ एक परिस्थिति में शांति के लिये पुकार सकती हूँ, और वह मुझे एक सही व्यक्ति के रूप में जान सकता है, लेकिन मैं अभी भी इसके प्रति सजग हूँ कि यह परमेश्वर ही है जो मेरी गति का निर्देशन करता है।

अक्सर हम उन लोगों को सहायता के लिये पुकारते हैं जो ऐसा करने में सामर्थहीन रहते हैं, परन्तु यदि हम परमेश्वर की सहायता के लिये पुकारेंगे तो वह लोगों को शक्ति देकर उनके द्वारा से काम कर सकता है।

परमेश्वर का वचन हमें शांति देता है। अक्सर जब मुझे शांति की आवश्यकता होती है तब मैं बाइबल का सहारा लेती हूँ। वहाँ मेरे मन पसन्द परिच्छेद है जिन्हें मैं पढ़कर मनन चिंतन भी करती हूँ जिससे मुझे अत्यधिक प्रोत्साहन मिलता है।

भजन संहिता अध्याय २३ एक सही उदाहरण है जो कि बहुत से लोगों का पंसदीदा अध्याय है। जी हाँ, परमेश्वर के वचन में इतनी सामर्थ और क्षमता है कि आपको शांति देकर आगे ले जाये। जब तक उसका वचन हमारे हृदय के अंदर है, और जब तक हमारे पास बाइबल है निर्देश पाने के लिये, हम संकट में हमेशा उससे शांति प्राप्त कर सकते हैं जिस प्रकार से रोमियों ९५:४ में पौलुस हमसे कहता है "जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी शिक्षा के लिये लिखी गई हैं कि हम (दृढ़ता और स्थिरता) धीरज और पवित्र शास्त्र की शांति के द्वारा आशा रखें।"

एक बार मुझ पर विरोधियों के द्वारा से और दूसरे दूसरे तरीकों से दोषारोपण किया गया और मैं इस दौर से गुज़र रही थी। जब समस्याएँ आती हैं तो इकट्ठी चारों ओर से आती है। और अक्सर जब कभी भी मेरे साथ ऐसा हुआ तो मैंने यह जान लिया है कि शैतान आक्रमण करना चाह रहा है। मैंने अपने अनुभव से जान लिया है कि शैतान आक्रमण करना चाह रहा है। मैंने अपने अनुभव से जान लिया है कि विश्वास में दृढ़ खड़े रहना क्योंकि ऐसा करने से, मैं शैतान को यूँही भगा दूँगी। मैंने यह सीख लिया है कि यदि मैं दृढ़ और स्थिर रहूँगी तो, शत्रु यह जान लेता है कि वह अपना समय बर्बाद कर रहा है।

इसका यह मतलब नहीं है कि मुझे इस कठिन समय में चोट नहीं लगी; अवश्य, मुझे चोट लगी और मुझे शांति की आवश्यकता थी। उस समय मैंने पवित्र शास्त्र के खास वचनों को उठाकर पढ़ने लगी। मैं उन पर मनन करने लगी एवं दूसरों के बारे में भी सोचती रही।

भजन संहिता २०:६ में दाऊद ने लिखा, "अब मैं जान गया कि यहोवा अपने अभिषिक्त का उद्धार कर सकता है।" इस पद को मैं लगातार दो दिन तक अपने लिये बार बार दुहराते रही जब तक मैं उस सदमें और विरोध की बातों से जो लोग मेरे प्रति कर रहे थे उबर न चुकी। यह बातें मुझे चकित नहीं

की क्योंकि मैं यह जानती हूँ कि शैतान कैसा है और लोग कैसे हैं परन्तु मैं यह अन्दाज़ा लगा लेती हूँ और हमेशा यह आशा रखती हूँ कि लोग चाहे जल्दी से या देरी से परमेश्वर को भरपूर प्रेम को प्राप्त कर लेने के बाद दूसरों पर दोष लगाना छोड़ देते हैं।

मैं अक्सर कहा करती हूँ कि मेरे पास अपने इतने बढ़े हुए कारोबार हैं कि मुझे दूसरे व्यक्ति के कारोबार के बारे में थोड़ा भी सोचने के लिये फुर्सत नहीं है। यद्यपि, मैं पहिले कभी भी इस क्षेत्र में मजबूत नहीं रही। इस क्षेत्र में मुझको वास्तव में सुधार करने की जरूरत थी। और मैं यह कह सकती हूं कि एक समय मैं भी बहुत ही आलोचना करने वाली और दोष लगाने वाली थी; इस कारण मैं ईमानदारी से कह सकती हूँ कि "परन्तु परमेश्वर का अनुग्रह हुआ कि मैं वहां से निकल पड़ी।"

जब कोई खास अधिकार क्षेत्र में रहता है या किसी प्रकार से लोगो की नज़रों में रहता है, जैसे मैं अपनी सेवकाई में हूँ, ऐसे लोगों को अधिकतर दोषारोपण और आलोचना का सामना करना पड़ता है उन लोगों से ज्यादा जो इस पद में नही होते हैं। दोषारोपण और आलोचना दोनों एक साथ हर क्षेत्र में काम करते हैं। ये बातें हमेशा चोट पहुँचाती हैं, यीशु इन सब बातों से गुज़रा, इसलिये जरूरी है कि हम भी गुज़रेंगे।

मैं परमेश्वर के वचन के लिये अत्यधिक धन्यवाद करती हूँ क्योंकि मैंने इसकी सामर्थ का अनुभव अपने जीवन में बहुतायत से किया है। इसके पास इतनी क्षमता है कि हर प्रकार के संकट में शांति दे सके।

यशायाह ६१:२ में आने वाले मसीहा के बारे में भविष्यद्वाणी हुई थी कि "सब मिलाप करने वालो को शांति दूँ।" पहाड़ी उपदेश में यीशु ने कहा कि धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांति पाएँगे। (देखें मत्ती ५:४)। परमेश्वर की शांति जो पवित्र आत्मा के द्वारा बहाई जाती है बहुत ही अनोखी और बहुमूल्य है लेकिन इसका अनुभव करने में लोगों को कठिनाई हो सकती है। यह शांति दूसरे प्रकार की शांति से और दूसरे वस्तुओं से एकदम परे है।

परमेश्वर आपकी शांति का सोता बन जाय। अगर भविष्य में जब आपको चोट लगती है, तब आप उसको शांति के लिये पुकार सकते हैं। तब आप उसकी उपस्थिति में ठहरे रहें जब तक वह आपके हृदय और भावनाओं से काम न करे। यदि आप उसे एक बार सेवा टहल करने के लिये मौका देंगे तो वह आपको कभी भी असफल नही होने देगा।

पवित्र आत्मा बल देता है

> अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह (सारी आशीषों और उपकार) का दाता जिसने तुम्हें मसीह में अपनी (निज) अनंत महिमा के लिये बुलाया, तुम मसीह, तुम थोड़ी देर तक दु:ख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा। (१ पतरस ५:१०)

पवित्र आत्मा हमारी सहायता एक बल देने वाले के रूप में करता है। कल्पना कीजिये कि एक कुँए भर की शक्ति आपके अंदर है, और यह एक ऐसा जरिया है और जब भी आपको इसकी आवश्यकता हो निकाल सकते हैं। यदि आप कमज़ोर या थकित या निराशा महसुस करते हुए उस स्थिति में पहुँच जाते हैं तो, आप कुछ क्षणों के लिये रूक जायें। जैसे आप उसकी उपस्थिति में ठहरेंगे, तो अक्सर आप वास्तव में यह महसुस करेंगे कि परमेश्वर का बल आपके ऊपर आ रहा है।

यह कहना बिल्कुल बुद्धिमानी नहीं होगा कि हम परमेश्वर के बिना जानते या उसके ऊपर बिना विचारे कोई काम करें। हम अक्सर बहुत सारी बातों के प्रति समर्पित हो जाते हैं लेकिन बाद में हम पाते हैं कि हम उसमें कमजोर पड़ जाते हैं और टूट जाते हैं। परमेश्वर हमें अपनी आत्मा के द्वारा से बल देगा, लेकिन जो काम उसकी इच्छा के खिलाफ है उसके लिये वह बल नहीं देगा। परमेश्वर हमें बेवकूफ होने के लिये बल नहीं देगा। जब एक बार हम समर्पित हो जाते हैं तो परमेश्वर हमसे यह अपेक्षा करता है कि हम अपने वचन में बने रहें और खरे मनुष्य बन जायें, इसलिये उसके वचन के द्वारा से हमारे लिये यह परामर्श है कि, “बिना सोचे विचारे कुछ न करो।” (प्रेरितों के काम १९:३६)।

जिस तरीके से *द लिविंग बाइबल* में सभोपदेशक ५:१-३ का अनुवाद किया गया है उससे मैं प्रेम करती हूँ;

> जब तू परमेश्वर के भवन में जाए, तब सावधानी से चलना; सुनने के लिये समीप जाना मुर्खों के बलिदान चढ़ाने से अच्छा है, क्योंकि वे नहीं जानते कि बुरा करते हैं। बातें करने में उतावली न करना, और न अपने मन से कोई बात उतावली से परमेश्वर के सामने निकालना, क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में है और तू पृथ्वी पर है; इसलिये तेरे वचन थोड़े ही हों। क्योंकि जैसे कार्य की अधिकता के कारण स्वप्न देखा जाता है, वैसे ही बहुत सी बातों का बोलनेवाला मूर्ख ठहरता है।

इससे पहले मैं क्षण भर के लिये उत्साही होकर स्वयं सेविका का कुछ काम करती मुझे यह सीखना चाहिये था कि मैं पवित्र आत्मा से पूछूँ। मेरे "चमड़े का ज़ीभ" फिसल जाने की बीमारी थी, जिससे मैं अतिश्योक्ति के कारण कहीं पर भी मैं भावुक होकर प्रतिज्ञा कर देती थी और फिर बाद में सोचती थी कि मैं कैसे इसके ऊपर नियंत्रण पाऊँ।

मैं अक्सर लोगों को खुले हुए मैदान पर आग में भुने हुए माँस खाने के लिये दावत दिया करती थी; और फिर इसको तैयार करने में बहुत काम करना पड़ेगा कहकर मैं कुड़कुड़ाने और शिकायत करने में समय गंवाया करती थी। एक बार मैने ऐसे ही कई वादे कर डाले मगर बाद में मैं अपने आपको इससे बचाना चाहती थी क्योंकि मैं उन वायदों में बनी रहना नहीं चाहती थी।

परमेश्वर ने मुझे एक महत्वपूर्ण सच्चाई दिखलाई, जिसने मेरे जीवन को सकारात्मक ढंग से बहुतायत से प्रभावित किया है। उसने कहा, "जॉयस, यदि तुम मेरे अभिषेक और सामर्थ को लेकर चलना चाहती हो, तो तुम्हें अपने शब्द में बने रहना चाहिये। इससे पहले तुम कोई नया समर्पण करो तुम्हें इसके लिये सोचना चाहिये और प्रार्थनापूर्वक नई प्रतिज्ञा करने के लिये सीखना चाहिये।" उसने यह स्पष्ट कर दिया कि जब भी कभी मैं कोई समर्पण करूँ, तो वह मुझसे यह अपेक्षा करता है कि मैं उसमें बनी रहूँ और अच्छे मन के साथ अनुसरण करूँ।

सभोपदेशक ५:४-७ में द लिविंग बाइबल के अनुवाद के अनुसार परमेश्वर को खोजने की गंभीरता तथा मन्नत मानने के पहले निर्देश दिये गये हैं:

> जब तू परमेश्वर के लिये मन्नत माने, तब उसके पूरा करने में विलंब न करना; क्योंकि वह मुर्खो से प्रसन्न नहीं होता। जो मन्नत तूने मानी हो उसे पूरी करना। मन्नत मानकर पूरी न करने से मन्नत का न मानना ही अच्छा है। कोई वचन कहकर अपने को पाप में न फँसाना, और न ईश्वर के दूत के सामने करना कि यह भूल (मन्नत मानने के लिये) से हुआ; परमेश्वर क्यों तेरा बोल सुनकर अप्रसन्न हो, और तेरे हाथ के कार्यों को नष्ट करे? क्योंकि स्वप्नों की अधिकता से व्यर्थ बातों की बहुतायत होती है; परन्तू तू परमेश्वर का भय मानना।

इसलिये मैं खुलकर कहती हूँ कि जब हम डॉक्टर के दवाखाने में और दवाई दुकान में दवा की पर्ची लेकर बेसब्री से प्रतीक्षा कर सकते हैं तो फिर हम परमेश्वर की प्रतीक्षा क्यों नहीं कर सकते? वह सबसे बेहतरीन वैद्य है, उसके

मुकाब्ले में और कोई भी नहीं है। उससे समय ले ले और जरूर उसे मिलें। उसकी उपस्थिति में ठहरें, और तब आप उसकी बाट जोहने की कीमत के परिणाम को समझ सकेंगे। एक वचन पमरेश्वर की ओर से आपके विश्वास को बलवंत कर देगा एवं आपको ऐसा साहसी बना देगा कि आप असंभव कामों को करने लग जायेंगे।

एक बार जब मेरा ऑपरेशन होने पर था, और जैसे एक गंभीर शल्य क्रिया होने के पहले होता है मेरे अन्दर के सारे डर, संदेह को खत्म किया जा रहा था। स्वभाविक तौर से मेरे परिवार के सारे लोग मुझसे कह रहे थे कि सिर्फ परमेश्वर पर भरोसा रखो। मैं भरोसा रखना चाहती थी, परन्तु मेरे लिये मुश्किल सा मालुम पड़ रहा था। कुछ समय के लिये मैं सुरक्षित महसुस करती थी, परन्तु तुरन्त भय की आत्मा मुझ में समा जाती थी और फिर मैं भयभीत हो जाती थी।

यह सब कुछ सुबह के पाँच बजे तक चलता रहा और मैं बिल्कुल भी सो नही पाई। प्रभु की आवाज मेरे हृदय में आई, "जॉयस, मुझ पर भरोसा रख, मैं तेरी देखभाल करूँगा।" उसके बाद से मेरे अंदर से डर गायब हो गया, क्योंकि जब परमेश्वर हमसे व्यक्तिगत रूप (जब वह हमें *रेमा* रूपी वचन देता है) में बातें करता है तब विश्वास उत्पन्न होता है, जैसा वह कहता है (देखें रोमियों १०:१७)।

यदि हम ये विश्वास करते हैं कि यदि हम डॉक्टर के पास जायेंगे जो वह हमें दवाई की पर्ची देगा जिससे हम दवा की पुड़िया खरीदेंगे और जब जब हम कमजोरी महसुस करेंगे तब तब हम दवा लेंगे तो शायद हमें बल मिल जायेगा, शायद हम ऐसा करने से नहीं हिचकिचाएँगे। मैं पवित्र शास्त्र के अनुसार कह रही हूँ कि इस प्रकार का बल पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा से उपलब्ध है।

आज पवित्र आत्मा के बारे में बहुत कुछ सीखने के लिये बाकी है जो उपलब्ध है क्योंकि हम इन बातों में चूक गये हैं चूँकि हमें उसके बारे में सही शिक्षा नहीं मिल सकी है आज के उसके वर्तमान समय की अद्‌भुत सेवकाई के बारे में। हम अक्सर यीशु के बारे में बातें करते है कि उसने क्या किया, कब कहाँ पर रहा, लेकिन उसके बारे में क्या जबकि वह पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा से अभी काम कर रहा है? आइये हम भूतकाल में न जीयें, लेकिन वर्तमान काल की तमाम उन बातों को पूरी तरह से पकड़ लें जो हमारे लिये धरा है।

आइये हम मूसा और इस्राएलियों के समान बनें जिन्होंने अपने बलमूल को जाना, जैसे हम निर्गमन १५:१-२ में देखते हैं :

> तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिये यह गीत गाया। उन्होंने कहा, मैं यहोवा का गीत गाऊँगा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में डाल दिया है। यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है, और वही मेरा उद्धार भी ठहरा है, मेरा ईश्वर वही है, मैं उसी की स्तुति करूँगा, (मैं उसके लिये निवासस्थान बनाऊँगा), मेरे पूर्वजों का परमेश्वर वही है, मैं उसको सराहूँगा।

वास्तव में, परमेश्वर हमको ऐसे ही बल देना नहीं चाहता है, बल्कि वह हमारा बल बनना चाहता है। १ शमूएल १५:२९ में उसको इस्राएल का बलमूल कहा गया है। एक समय था कि इस्राएली लोग ये जानते थे कि परमेश्वर उनका बलमूल था। परन्तु जब वे उसे भूल गये, तब वे हमेशा पराजित होते चले गये, और उनका विनाश होने लगा।

दूसरे शमूएल २२:३३-३४ में दाऊद ने लिखा, "यह वही ईश्वर है, जो मेरा अति दृढ़ किला है, वह खरे मनुष्य को अपने मार्ग में लिए चलता है। वह मेरे पैरों को हरणियों के समान बना देता है, और मुझे ऊँचे स्थानों पर खड़ा करता है।" दाऊद के बहुत शत्रु थे, और प्राय: उसके सभी भजन संहिता में उसने परमेश्वर के बल के बारे में बताया है कि वह किस प्रकार से उससे बल को प्राप्त करता था।

बाइबल में हम पढ़ते है कि बहुत सी स्त्री और पुरुषों ने जाना कि परमेश्वर ही उनका बल था। क्या वे लोग इसको नहीं जानते थे, शायद अगर वे लोग यह भूल जाते जैसे कि कितने लोग भूल जाते हैं तो आज वे लोग हमारे प्रोत्साहन के लिये दृष्टान्त नहीं ठहरते।

प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर के इस अद्‌भुत बल को २ कुरिन्थियों १२:९-१० में खोज लिया और उसने कहा कि वह अपनी निर्बलताओं में घमंड करेगा, यह जानते हुए कि जब वह निर्बल होता है, तभी परमेश्वर की सामर्थ उस पर छाया करती है और उसकी निर्बलताओं को दूर करेगी। आज की तारीख के अनुसार हमारी भाषा में इसका मतलब निकलता है कि, पौलुस यह कह रहा था कि वह अपनी निर्बलताओं में आनंदित होता है क्योंकि तब वह परमेश्वर के बल को पाने का अनुभव करता है।

हम परमेश्वर के बल को कैसे प्राप्त करते हैं? विश्वास के द्वारा से। इब्रानियों ११:११ यह शिक्षा देती है कि विश्वास से सारा ने आप बुढ़ी होने पर भी गर्भधारण करने की सामर्थ पाई।

विश्वास से परमेश्वर की सामर्थ ग्रहण करना आरंभ कर दें। यह आपके शरीर, आत्मा और प्राण को तरोताज़ा कर देगी। उदाहरण के लिये, यदि आपका पीठ निर्बल है, तो यह इसको बलवन्त कर देगा। हमारे कॉनफ्रेंन्सों में जितनों ने परमेश्वर से बल माँगा, जब हमने उनके लिये प्रार्थना किया तब पवित्र आत्मा ने निर्बल घुटनों, टखनों एवं पीठ में दर्द वालों को बलवन्त कर दिया। जब हम उसकी उपस्थिति में ठहरे थे तब उसकी चंगाई करने वाली सामर्थ ले हर एक को चंगा कर दिया।

विश्वास के द्वारा से आपको बल मिलेगा कि आप अपने कठिन विवाहित जीवन में बने रहें, एक उदंडी बच्चे का पालन पोषण करते रहें एवं एक कठोर मालिक के आधीन रहकर नौकरी करते रहें। आप बड़े बड़े काम करने के लिये बल प्राप्त कर सकते हैं यद्यपि आपकी शारीरिक हालत क्षीण क्यों न हो।

परमेश्वर का बल सचमुच में कितना अनोखा। दाऊद ने भजन संहिता १८:२९ में लिखा, "क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूँ; और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लांघ जाता हूँ।" १ राजा १९:४-८ में जब एलिय्याह जो कि थका हुआ और निराश था उसके पास एक स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा टहल की और वह खाया पीया और उससे बल पाकर चालीस दिन और रात तक यात्रा की।

क्या आप खुद अकेले कठिनाईयों को पार करने की कोशिश कर रहे हैं? अगर ऐसा है तो, इसी समय आप एक बदलाव लायें। आप अपने अन्तरआत्मा की गहराई से जहाँ पवित्र आत्मा निवास करता है वहाँ से बल प्राप्त करना आरंभ कर दें। और अगर वह अलौकिक बल आपके अन्दर अभी तक निवास नहीं करता है, तो आपको अपने पापों को स्वीकार करने की जरूरत हैऔर उससे पश्चाताप करें, और यीशु को अपना व्यक्तिगत मुक्तिदाता और प्रभु स्वीकार कर लें। अपने जीवन को समर्पण कर दें, यथा संभव जो कुछ आप उसके लिये हैं और नहीं हैं। उससे कहें कि वह आपको पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दे और पवित्र आत्मा की सामर्थ की भरपूरी बहुतायत से देता जाये। यह पुस्तक आपको सीखने में सहायता करेगी कि किस प्रकार से आत्मा में चलने की शुरूआत करें एवं एक पराजय के जीवन से एक जयवन्त जीवन कैसे जीयें।

पौलुस ने इफिसियों के लिये प्रार्थना की कि वे पवित्र आत्मा के द्वारा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त बनें। पवित्र शास्त्र के इस खास भाग इफिसियों ३:१६ के द्वारा से मैंने मेरे जीवन के इतने वर्षों में बहुतायत की

आशीषों को पाई है। परमेश्वर का धन्यवाद हो, यद्यपि मैं मन से, भावना से, शरीर से, और आत्मा से कमजोरी और थकान महसुस करती हूँ फिर भी मैं ऐसे ही हार नहीं मानती हूँ। मैं परमेश्वर को पुकार सकती हूँ कि मुझे पवित्र आत्मा की सामर्थ से जो मेरे अन्दर निवास करता है उससे बलवन्त करे - और आप भी यही काम कर सकते हैं।

पवित्र आत्मा हमारा मध्यस्थता करने वाला है

परन्तु आत्मा आप ही हमारे लिये विनती करता है। (रोमियों ८:२६)

हम क्यों अपने आप से विनती नहीं कर सकते? हमें इस क्षेत्र में पवित्र आत्मा की जरूरत क्यों पड़ती है? इसका उत्तर १ कुरिन्थियों २:११ में मिलता है; "मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें नहीं जानता (गोचर होना एवं समझना) है केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है? वैसी ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता (गोचर होना एवं पूरी तरह से समझ लेना), केवल परमेश्वर की आत्मा।" हमें पवित्र आत्मा की सहायता की जरूरत है क्योंकि वही केवल है जो परमेश्वर के विचारों को स्पष्ट रूप से जान लेता है।

यदि आपको और मुझको परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करना है तो हमें यह जानने की जरूरत है परमेश्वर क्या सोच रहा है और उसकी इच्छा क्या है। रोमियों ८:२६-२८ हमसे यह कहती है कि हमें जैसी प्रार्थना करनी चाहिये वैसी हमें नहीं आती है, इसलिये पवित्र आत्मा हमारी सहायता करता है;

> *इसी रीति से (पवित्र) आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करती है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिये; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती करती है।* और मनों का जांचनेवाला जानता है, कि (पवित्र) आत्मा की मनसा (उसकी प्रबल इच्छा) क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती (परमेश्वर के सामने) करता है। और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, (परमेश्वर उनके परिश्रम में साझी है) के लिये सब बातें मिलकर (योजना बद्ध तरीके से) भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

यदि हम पवित्र आत्मा के द्वारा से प्रार्थना करते हैं, तो हम यह निश्चय जाने कि सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करेंगी। परमेश्वर अति महान और सर्वशक्तिमान है। और जब हम उससे प्रार्थना करके भरोसा रखते हैं तो ऐसी कोई भी परिस्थिति नहीं है जहां वह भलाई उत्पन्न न कर सके। हमें पवित्र आत्मा की अगुवाई में प्रार्थना करनी चाहिये न कि हम अपने तरीकों से प्रार्थना करते चले जायें। आत्मा से भरकर की गई प्रार्थना का जवाब परमेश्वर केवल हाँ और आमीन में देता है (देखें २ कुरिन्थियों १:२०)।

पवित्र आत्मा हमारा वकील है

> परमेश्वर के चुने हुओं पर (यह कब) दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहराने वाला है (वह है,जो हमारा उसके साथ उचित रिश्ता कायम करवाता? कौन सामने आयेगा और दोष लगायेगा और कौन या इल्जाम लगायेगा जिन्हें परमेश्वर ने चुना है? क्या परमेश्वर ऐसा करेगा, जो हमें दोष मुक्त करता है? (रोमियो ८:३३)

वाईनस् कमप्लीट एक्सपोसीटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेन्ट वर्डस में यूनानी शब्द *पैराक्लेटोस* का अनुवाद *वकील* किया गया है, तथा सहायक शीर्षक के अर्न्तगत इसको परिभाषित किया गया है। वाईन के अनुसार, इसका अर्थ है, "एक तरफ का पक्ष लेने के लिये बुलाया जाना," इसका तात्पर्य, "एक की सेवा टहल करने के लिये।" वाईन और आगे कहते हैं, "इसका इस्तेमाल एक न्यायालय में कानूनी सहायता के लिये एवं रक्षात्मक सलाह के रूप में निर्दिष्ट किया गया था... वह जो दूसरे के मुकद्दमें के लिये विनम्रतापूर्वक पक्ष रखता हो, एक मध्यस्थता करने वाला।"

इससे हम बहुत कुछ सोच सकते हैं। पवित्र आत्मा हमेशा हमारे पक्ष में और हमेशा हमारी हर तरीके से सेवा टहल करने के लिये मौजूद है। जब हमें सुरक्षा की जरूरत पड़ती है, तब वह हमें बचाता है, मानों वह कानूनी सलाहकार के रूप में एक वक्किल को बचा रहा हो। यह जानना एक अच्छी बात है कि हम पर जब किसी बात के लिये आरोप लगाये जाते हैं तो हमें बदला करने की आवश्यकता नहीं है; बल्कि हमें उस पवित्र से सहायता के लिये पुकारना चाहिये और उम्मीद करके ग्रहण कर लेना चाहिये। वह हमारा वकील है। जब हम उसके बारे में सोचते ही रहते हैं तभी वह हमें शांति दे देता है।

बहुत सारे लोग अपने जीवन को सुरक्षित रखने में अपना नाम, पद, चाल-चलन, वचन और निर्णय को बचाने की कोशिश करते हुए अपने जीवन का बहुत समय और ऊर्जा को यू ही बर्बाद कर देते हैं। हम सचमुच में अपने समय को बर्बाद कर रहे हैं। जब दूसरे लोग हम पर दोषारोपण करते रहते हैं तो हमें भी बड़े प्रयत्न के साथ उन्हें कायल करना चाहिये कि हम बिल्कुल साफ हैं। लेकिन समस्या वहाँ पर आ खड़ी होती है जब लोग स्वयं दोष लगाने के स्वभाव से ग्रसित होते हैं, और फिर दोष लगाने के लिये और दूसरा कारण जल्दी ही ढूँढ़ लेते हैं। यह सबसे उत्तम तरीका है कि हम इसके लिये प्रार्थना करें ताकि परमेश्वर हमारी ओर से प्रतीकार करें।

हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं कि बुनियादी तौर से यीशु ने कभी भी अपना बचाव नहीं किया। फिलिप्पियों २:७ कहती है कि वह "अपने आप को ऐसा शुन्य कर दिया।" उसने अपने आप को एक बनाने की कोशिश नहीं की, इसलिये उसे इस बात के लिये तनिक भी चिंता करने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

बहुत वर्षों तक मैंने अच्छी बनने के लिये कोशिश की और सोचा भी, तब मैंने यह खोज लिया कि इस पृथ्वी पह हमारी प्रतिष्ठा होने के बजाय बेहतर यह होगा कि स्वर्ग में हमारा अत्यधिक प्रतिष्ठा बनी रहे, और इसी आशा में और उसी तरीके से मैं जीवन बिताती हूँ परन्तु मैं उसके विषय में किसी भी प्रकार से चिंता नहीं करती हूँ। मैं बेहतर करती हूँ और बाकी को परमेश्वर के हाथों में छोड़ती हूँ।

रोमियों ८:३३ कहती है कि यह परमेश्वर ही है जो हमें धर्मी ठहराता है; हमें अपने आपको धर्मी नहीं ठहराना है, यहाँ तक कि परमेश्वर पिता के सामने भी नहीं। हम लोगों के सामने अपने आप को धर्मी ठहराने की कोशिश क्यों करें? अगर हम समझते हैं कि पवित्र आत्मा हमारा वकील है तो हमें बिल्कुल ऐसा करने की जरूरत है ही नहीं।

७
परमेश्वर की सात आत्मा

> यूहन्ना की ओर से एशिया की सात कलीसियाओं के नाम: उसकी ओर से जो है, और जो था, और जो आने वाला है; और उन सात आत्माओं की ओर से, जो उसके सिंहासन के सामने हैं। (प्रकाशित वाक्य १:४)

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सात आत्माओं के बारे में जो परमेश्वर के सिंहासन के सामने रहते हैं कहती है। प्रकाशित वाक्य ३:१ और ४:५ में, "परमेश्वर की सात आत्माओं" के बारें में लिखा है। हम जानते हैं कि केवल एक ही पवित्र आत्मा है, लेकिन जब हम अलग अलग जगह में सात आत्माओं के बारे में प्रकट किया और व्यक्त किया हुआ देखते हैं ताकि उसकी भरपूरी लोगों के जीवन में आ जाये। जैसे कि त्रिएक परमेश्वर में तीन व्यक्ति है, वैसे ही पवित्र आत्मा एक आत्मा है और उसके भिन्न भिन्न कार्य एवं सेवा उद्देश्य की अभिव्यक्ति होती है।

इस अध्याय में हम उन सात तरीकों को वचन के द्वारा से देखेंगे जिसके द्वारा से पवित्र आत्मा अपने आपको प्रकट करता है या अपनी अभिव्यक्ति हमारे प्रतिदिन के जीवन में करता है। वह भिन्न भिन्न तरीके से जैसे उद्देश्य की पूर्ति की जरूरत होती है वैसे वैसे जरूरत के अनुसार काम करता है जबकि वही हमारे जीवन का सार और सम्पूर्ण जरूरत है। चूँकि इस पुस्तक में परमेश्वर की घनिष्ठता के विषय में लिखा गया है, और ऐसा लगता है कि जब पवित्र आत्मा हमारे जीवन में और हमारे द्वारा से भिन्न तरीके से काम करता है तो हमें इसकी कीमत को समझना चाहिये एवं उसके प्रति सजग रहना चाहिये।

अनुग्रह की आत्मा

इब्रानियों १०:२९ हमसे कहती है, कि, "अनुग्रह की (परमेश्वर के उपकार और आशीष के लायक हम नहीं थे) (पवित्र) आत्मा (जो भाग देता है)" अन्य और अनुवाद में पवित्र आत्मा के लिये, "अनुग्रह की आत्मा", शब्द काम में लाया गया है।

अनुग्रह पवित्र आत्मा की वह सामर्थ है जो हमारे लिये उपलब्ध है ताकि हम बिना कोई डाह से सरलतापूर्वक उसके काम करें। परन्तु पहले, यह पवित्र आत्मा की सामर्थ जिसके द्वारा से हमें शक्ति मिलती है कि हम परमेश्वर के साथ सही रहें ताकि हम उसके निवासी बन जायें, अर्थात् पवित्र आत्मा का निवास। पवित्र आत्मा की सामर्थ हमारे अंदर रहने के कारण से हमें अनुग्रह के आत्मा की सामर्थ अधिक मिलती है ताकि हम अपनी डाह से बढ़कर काम कर सक ते हैं।

उदाहरण के लिये, मुझे अपने आप को बदलने मे बहुत वर्ष लग गये। क्योंकि मैंने अपने स्वभाव के अंदर बहुत ही त्रुटियाँ पाईं। प्राय: मैं हमेशा हार महसूस करती थी क्योंकि जितनी भी मेरी मेहनत और कठिन परिश्रम का कोई अच्छा अंजाम नहीं मिलता था। यदि मैं गलती न करूँ तो मैं बहुत ही बेवकूफी भरी बातें किया करती थी जिन्हें मुझे करना नहीं चाहिये था। मैं हमेशा चुपचाप रहने के लिये निर्णय भी लिया करती थी। लेकिन इन सब बातों से मुझे ऐसा करना नहीं चाहिये था। मैं हमेशा चुपचाप रहने के लिये निर्णय भी लिया करती थी। लेकिन इन सब बातों से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता था, मैं बदल नहीं सकती थी, और तो और मैं दिन प्रतिदिन बुराई में धंसती जा रही थी।

अंत में मैं परमेश्वर को पुकार उठी और मैंने यह मान लिया कि अब और मैं बिल्कुल बदल ही नहीं सकती। और उसी समय मैंने परमेश्वर को मेरे हृदय में से बातचीत करते सुना, "बहुत ही अच्छा, अभी मैं तुम्हारे जीवन के अंदर कुछ कर सकता हूँ।"

प्रेरित पौलुस गलतियों ३:३ की पत्री में एक प्रश्न करता है: "कि (पवित्र) आत्मा की रीति पर आरंभ करके (अपना आत्मिक नया जीवन) अब शरीर की रीति पर (आश्रित होकर) अन्त करोगे?" पवित्र आत्मा में चलना सिद्धता में चलने के लिये सिर्फ एक मात्र तरीका है। उसकी उपस्थिति में चलने के लिये सीखना अति महत्वपूर्ण है जिससे उसके अनुग्रह के कार्य को समझ जायें।

जब परमेश्वर बदलाव है, तब परमेश्वर को महिमा मिलती है; इसलिये वह नहीं चाहता है कि हम अपने आप से बदलें। जब हम अपने आप से बदलने या

अच्छा बनने की कोशिश करते हैं, परमेश्वर पर बिना आश्रित हुए तब हम "उसके गाँठ से छूट जाते हैं।" हम अपने आप को बदलने की कोशिश करने के बदले में हम उससे कहें कि हमें बदल दे तब फिर उसके अनुग्रह की आत्मा हममें काम करेगा।

बहुत से लोग ये महसुस करते हैं कि यदि वे भले काम करते हुए अपना जीवन बितायेंगे तो वे परमेश्वर को प्रसन्न कर सकेंगे। यह बिल्कुल सच नहीं है। जब हम यीशु मसीह को विश्वास के द्वारा से परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा से मुक्तिदाता ग्रहण करते हैं तब हमारा उसके साथ संबंध जुड़ जाता है जो कि हमें सेंतमेंत में दिया जाता है। बिना यीशु को जाने यह किसी के लिये संभव नहीं कि कोई परमेश्वर के साथ सही हो।

अनुग्रह एक अद्‌भुत बात है। यह वह सामर्थ है जिसके द्वारा से मनुष्य यीशु मसीह पर विश्वास करके उद्धार प्राप्त कर सकते हैं, जैसे पौलुस हमसे इफिसियों २:८ में कहता है :

> क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से (परमेश्वर के उपकार जिसके लायक हम नहीं थे) तुम्हारा उद्धार (न्याय से छुड़ाये गये एवं मसीह के संग उद्धार में संगी वारिस) हुआ है, और यह (उद्धार) तुम्हारी ओर से नहीं (तुम्हारे कार्यों से नहीं, तुम्हारे प्रयत्न के द्वारा से नहीं मिला), वरन परमेश्वर का दान है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर पिता से हमको अनुग्रह दिलाती है। अनुग्रह वास्तव में पवित्र आत्मा की सामर्थ है जो परमेश्वर के सिंहासन से बहती रहती है ताकि लोग उसके द्वारा से उद्धार प्राप्त करें एवं उन्हें पवित्र जीवन जीने के लिये शक्ति दे तथा परमेश्वर की इच्छा को भी पूरी करें।

अक्सर मैं सुना करती थी कि अनुग्रह परमेश्वर का वह दान है जिसके लायक मनुष्य कदापि नहीं होता; लेकिन; यह कैसे भी, उससे भी अधिक है। जब मैंने यह सीखा कि अनुग्रह पवित्र आत्मा की वह सामर्थ है जो मेरे लिये उपलब्ध है ताकि मैं जो काम बड़े प्रयत्न के द्वारा से नहीं कर सका वह काम आसानी से कर सकता हूँ, मैं अनुग्रह के प्रति बहुत ही उत्तेजना से भर गई। मैं अब परमेश्वर को पुकारना आरम्भ कर दी मुझे अनुग्रह, अनुग्रह और अधिक अनुग्रह चाहिये।

जकर्याह अध्याय ४ में हम एक जन समूह के बारे में पढ़ते हैं जो कि मंदिर को फिर से बनाने के लिये कोशिश कर रहे थे लेकिन उन्हें इस काम के लिये

विरोध का सामना करना पड़ा। शैतान हमेशा परमेश्वर के कामों का विरोध करता है। पद ६ और में यहोवा के दूत ने नबी से कहा कि जो काम निर्दिष्ट किया गया है वह अवश्य पूरा होगा, "न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।" लोगों से यह प्रतिज्ञा की गई थी कि परमेश्वर का अनुग्रह उनके पहाड़ को मैदान में बदल देगा और वे लोग मंदिर का निर्माण करना पूर्ण कर सकेंगे यह पुकारते हुए कि, "उस पर अनुग्रह हो, अनुग्रह।"

हम अक्सर अपने रास्तों से पहाड़ को अपनी शक्ति से हटाना चाहते हैं जबकि हमें इसके लिये अनुग्रह की आत्मा को पुकारना चाहिये कि आसान हो जाये।

पवित्र आत्मा का एक रूपक है तेल (देखें जकर्याह ४:६)। जब मैं तेल के बारे में सोचती हूँ तब मैं सरलता के बारे में सोचती हूँ। तेल किसी भी वस्तु को सरलता से बहने में मदद करती है; वास्तव में वे आसानी से नीचे बह जाते हैं। कुछ लोगों को अपने जीवन में थोड़े से तेल लगाने की आवश्यकता होती है; फिर उसके बाद सब कठिनाईयाँ सामान्य हो जाती है। अगर आप उन लोगों में से हैं तो मैं आपको प्रोत्साहित करूँगी कि आप परमेश्वर के पास जायें और उससे कहें कि मैं "तेल के लगाने के कारोबार के लिये" आया हूँ।

अनुग्रह बिना जीवन में कोई आनन्द नहीं होता है। परमेश्वर के अनुग्रह के कारण से, हमारे जीवन का परिश्रम आसान हो जाता है जिसके कारण से भरपूर शांति और आनंद मिलता है।

रोमियों ५:२ में हम पढ़ते हैं: "जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह (परमेश्वर के उपकार करने की अवस्था) तक, जिसमें हम बने (दृढ़ता और सुरक्षित) हैं, हमारी पहुँच (प्रवेश, परिचय) भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमंड करें।" हम परमेश्वर के अनुग्रह के अन्दर विश्वास के द्वारा से प्रवेश करते हैं - उसी तरीके से हम और सारी आशीषों को प्रभु से प्राप्त करते हैं। यह अनुग्रह परमेश्वर की महिमा में आनंदित रहने एवं आशा का अनुभव करने में सहायक है।

महिमा परमेश्वर की सच्चाई और भलाई का प्रकटीकरण है। हम सभी को महिमा चाहिये, लेकिन हमें इसका अनुभव करने के लिये आशान्वित रखना चाहिये क्योंकि अनुग्रह की आत्मा हमारे भीतर रहता है जैसे हम यीशु मसीह में विश्वासी हैं। इसलिये कुलुस्सियों १:२७ में पौलुस इसके विषय में बातें करता

है, "जिन पर परमेश्वर ने प्रकट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है? और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा (एहसास करना) है तुम में रहता है।"

मसीह हमारे अन्दर रहना चाहिये; अन्यथा हमारे लिये कोई आशा नहीं कि हम परमेश्वर की महिमा का अनुभव कभी करने पाएँ। परन्तु चूँकि वह हमारे अन्दर जो विश्वास करते हैं, इसलिये वह निरंतर उनको जो उसे जानते हैं और माँगते हैं अपना अनुग्रह बहुतायत से देता है ताकि उसे ग्रहण भी करें, इसलिये हम आगे एक नये महिमामय राज्य को उसी आधार पर देख सकते हैं।

जब पौलुस और अन्य प्रेरित अपने समय की कलीसियाओं का अभिवादन इस प्रकार किया, "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब के साथ होता रहे", वे लोग यह प्रार्थना करते रहे कि अनुग्रह की आत्मा - जो पवित्र आत्मा परमेश्वर पिता की है और यीशु मसीह पुत्र की - वह लोगों के साथ रहे, उनकी सहायता करे तथा उन्हें सामर्थ देकर जो उनके प्रतिदिन के लिये जरूरी है उनकी सेवकाई करे।

मैं दृढ़तापूर्वक विश्वास करती हूँ कि हम उसकी सच्चाई का एहसास न करके भूल गये हैं कि न केवल हमें मुश्किलों और तत्कालिक समय में परमेश्वर की सामर्थ की जरूरत है, बल्कि हमारे सामान्य जन जीवन में - जैसे सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार के जीवन में जरूरत है।

क्यों न हमें परमेश्वर के अनुग्रह की आत्मा का स्वागत अपने जीवन में इसी समय करें? आपके सामान्य और प्रतिदिन के जीवन में उसके सामर्थ के द्वारा धावा के लिये उसे आमंत्रित करें, जो कि पवित्र आत्मा की सामर्थ है जो आपके भीतर निवास करता है। आपको और मुझको पवित्र आत्मा के द्वारा धावा की जरूरत है।

क्योंकि अनुग्रह सामर्थ है, पौलुस ने विश्वासियों को प्रोत्साहित किया कि परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ न ले लो (देखों २ कुरिन्थियों ६:१)। दूसरे शब्दों में, पौलुस कह रहा था, "उसके अनुग्रह की आत्मा को एक उद्देश्य के साथ अपने जीवन में ग्रहण करें - ताकि आपको एक पवित्र जीवन जीने में सहायता करेंगी, ताकि आपके जीवन में उसकी इच्छा पूरी हो सके, और आपको शक्ति दे कि आप परमेश्वर की महिमा के लिये जी सकें।"

बिना परमेश्वर के अनुग्रह के हम उस काम को नहीं कर सकते। परमेश्वर के राज्य की आत्मिक व्यवस्था है कि, "उपयोग करें या खो दें।" परमेश्वर

हमसे अपेक्षा करता है कि जो कुछ उसने हमें दिया है उसका हम उपयोग करें। जब हम उसके दिए हुए अनुग्रह का उपयोग करते हैं, तब अनुग्रह अधिक और अत्याधिक रूप से उपलब्ध होते जाता है। स्वर्ग में हमारे लिये सामर्थ की कमी नहीं है, लेकिन कभी कभी हम उससे जुड़े नहीं रह जाते हैं।

गलतियों में २:२१ में पौलुस ने कहा, "मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता।" उससे उसका क्या मतलब था? इसको जानने के लिये आइये हम उसके पिछले पद को देखें कि उसने क्या कहा एम्पलीफाइड बाइबल के अनुसार : "और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है : और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ (लगाव और आश्रय के द्वारा सम्पूर्ण भरोसा जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।" वह अपने वक्त के साथ चला और परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराया। आप देखें, अगर पौलुस अपने तरीके से जीने की कोशिश किया रहता तो वह पमरेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ ठहरा देता, मगर उसने मसीह की सामर्थ के अनुसार जीना सीख लिया था जो कि इसने देखा कि वह पवित्र आत्मा है।

मैं निश्चयता के साथ कहती हूँ कि प्राय: हम सब लोग यह जानते हैं कि यह कितना दु:खदाई होता है कि यद्यपि कोई हमें धिक्कारते रहता है फिर भी हम उसकी सहायता करना चाहते हैं। कल्पना कीजिये कि एक व्यक्ति डूब रहा हो और पागलों की तरह जो शरीर रक्षक उसे बचाने की कोशिश कर रहा हो उसके विरूद्ध में वह जोरदार हाथ पाँव मार रहा हो और प्रतिकार भी कर रहा हो। सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि वह व्यक्ति शांत हो जाये और शरीर रक्षक को काम करने दे तब वह उसे सही सलामत बचा पायेगा; अन्यथा दोनों के दोनों डूब जायेंगे।

आप और मैं भी कुछ इसी डूबने वाले तैराक के समान हैं। पवित्र आत्मा हमारे भीतर रहता है। अनुग्रह की आत्मा के रूप में, वह हमारे जीवन में हमारी सेवा टहल करके सब कुछ आसान बनाना चाहता है, परन्तु हम पागलों की तरह यहाँ वहाँ हाथ मारते रहते हैं अपने आप को बचाते हुए एवं स्वतंत्र रखते हुए।

इफिसियों ३:२ के अनुसार हम, "परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबंध" में रह रहे हैं। यह उस समय की ओर दर्शाता है जब पवित्र आत्मा उंडेला गया और सब मनुष्यों के लिये अभी उपलब्ध है। लेकिन यीशु मसीह के द्वितीय आगमन के समय में अनुग्रह के युग का समापन हो जायेगा और पवित्र आत्मा शैतान के अधार्मिकता को फिर कभी रोके नहीं रहेगा। (देखें २ थिस्सलुनीकियों २:६-७)

हम बाइबल के अनुसार यह जानते हैं कि यहोवा की आत्मा मनुष्य के साथ सदा विवाद करता न रहेगा (देखें उत्पत्ति ६:३)। इसलिये हम इस बड़े अनुग्रह के युग के समय में जो कुछ हमें दिया गया है उसका बहुतायत से फायदा उठा लें। इसलिये हम पवित्र आत्मा का हमारे जीवन में स्वागत करें। ऐसा करने से हम उसे ज्ञात कराते हैं कि हमें उसकी बहुत ही जरूरत है, और बहुत आनंदित हैं कि उसने हमें अपना निवास करके चुना है।

महिमा की आत्मा

> फिर यदि मसीह के नाम के लिये तुम्हारी निन्दा (क्योंकि तुम सहते हो) की जाती है, तो धन्य (क्या आप-खुश, सौभाग्यशाली, जलन से, जीवन में - आनन्दित, परमेश्वर के उपकार और उद्धार में संतुष्ट, बिना अपने बाहरी अवस्था की परवाह किए हुए) हो; क्योंकि महिमी का आत्मा, जो परमेश्वर की आत्मा है, तुम पर छाया करती है। (१ पतरस ४:१४)

पतरस कहता है कि परमेश्वर की आत्मा, जो महिमा की आत्मा है, हम पर छाया करती है जब मसीह के नाम में हमारी निन्दा की जाती है। कल्पना कीजिये कि जब हम सोचते हैं कि यह कितनी भयानक बात है कि लोग हमसे बुरा बर्ताव करते हैं इसलिये कि हम मसीही हैं, परन्तु परमेश्वर इसको सम्पूर्ण रीति से दूसरे प्रकाश से देखता है। परमेश्वर कभी नहीं चाहता है कि हम उसके लिये बिना उसकी सहायता के दु:ख उठायें। इसलिये हम दृढ़ता के साथ विश्वास करते हैं कि मसीह में जो हमारा विश्वास है उसके लिये कभी भी हमारी निन्दा की जाती थी और बुरा बर्त्ताव किया जाता है, तब परमेश्वर हमें उसे प्रत्युत्तर आत्मा की भरपुरी से देता है, ताकि हम सन्तुलित रहें।

पवित्र आत्मा अक्सर शॉक एबसॉर्बर के समान काम करती है। ऑटोमोबाइल्स के पास शॉक एबसॉर्बर रहता है ताकि सड़कों पर जो गड़ढ़े रहते हैं जिनके द्वारा से अचानक झटके मिलते हैं उनको वह अनुकूल करके बचाता है। जीवन के मार्ग में भी गड़ढे पाये जाते हैं, और मैं ईमानदारी से बिना संदेह के साथ कह सकती हूँ कि यदि परमेश्वर न बचाये तो हमें बिल्कुल जीवन दान नहीं मिल सकता है।

बहुत से लोग ऐसे हैं जो परमेश्वर की सेवा नहीं करते और न उस पर भरोसा रखते हैं जिससे उनकी जरूरत पूरी हो सके मैं प्रमाण के साथ विश्वास से कहती हूँ कि वे ऐसे लगते हैं जैसा कि उनका बहुत बुरा हाल है। मेरा

मतलब यह है कि, वे टूटे हुए लगते हैं और समय से पहले वे बुढ़े नज़र आने लगते हैं। उनके चेहरों पर की रेखाएँ ये दर्शाती हैं कि उन्होंने वर्षों तक बिना पवित्र आत्मा की सहायता और सुरक्षा के जीवन व्यतीत किया है। उनका स्वभाव विरोध के कारण कड़वाहट से भर जाता है। वे अक्सर कड़वाहट से इसलिये भरे रहते हैं क्योंकि उनके लिये जीवन असुन्दर लगता है। वे लोग यह बिल्कुल महसुस करना चाहते कि यदि वे परमेश्वर की सेवा कर रहे होते तो उनका जीवन भिन्न होता और उसकी आत्मा पर आश्रित रहने से उनकी अगुवाई करता और उनकी रक्षा करता।

जब हमारे जीवन में परमेश्वर की आत्मा रहती है, तब हम शद्रक, मेशक, अबेदनगो के समान दानिय्येल ३:२०-२७ के अनुसार कठिन परिस्थितियों में हम शांति और आनंद के साथ आग की भट्ठी में भी जा सकते हैं (समस्या और संघर्षो के बीच में) और बिना कोई धुँए की गंध और आग की आंच के प्रभाव के बिना बाहर भी आ सकते हैं।

मेरी याददाश्त गलत न हो तो मेरा यौन शोषण मेरी अठारह वर्ष की आयु तक होता रहा। फिर उसके पश्चात् जिस पहले आदमी से मेरी शादी हुई उसने मुझमें थोड़ी बहुत दिलचस्पी दिखाई क्योंकि मैंने यह महसुस किया कि शायद ही अब मुझे कोई और कभी पसंद करेगा। और फिर यह शादी तलाक के साथ टूट गई और छोड़ दिये जाने के बाद मैं पाँच वर्ष तक मानसिक तनाव से गुज़रती रही यहाँ तक कि मैं व्यभिचार में भी फँस गई थी। मेरे जीवन के इन वर्षों के दर्मियान मुझे मेरी कई शारीरिक व्याधियों से यहाँ तक कि स्तर कैंस से छुटकारा मिला है। संक्षिप्त में जो मैं कहने की कोशिश कर रही हूँ, वह यह है कि मेरे जीवन का हर दौर स्पष्ट शब्दों में बहुत ही बेकार था, यद्यपि मैं शारीरिक तौर से ठीक हूँ। मैं दूसरे व्यक्ति के समान नहीं दिखती हूँ जो समस्याओं की गहराई में जी रही हो। क्यों? क्योंकि मैंने पवित्र आत्मा पर जो मेरे अन्दर रहता है आश्रित रहना सीख लिया है।

मेरा नया जन्म नौ वर्ष की आयु में हो गया था, और यद्यपि तुझे ये पता भी नहीं था कि सचमुच में मुझे यह मिल गया है, और परमेश्वर मेरे साथ और मेरे अन्दर उसी समय से रहने लगा। मैं बहुत वर्षों तक संघर्ष करती रही, और आखिरकार मैंने यह सीख लिया कि पवित्र आत्मा की सामर्थ मेरे लिये हमेशा उपलब्ध है। मैं परमेश्वर की घनिष्ठ संगति का आनंद वर्षों तक उठाया है, और उसने मुझे यह सिखाया है कि मैं कैसे उसके मार्गों में बनी रहूँ, और उसकी सेवा करूँ। दूसरों की तरह मैं भी, अभी भी गलतियाँ करती रहती हूँ, परन्तु वह धीरज धरता है और उसने मुझे नहीं छोड़ा है।

एक सांसारिक आनंदमय जीवन से बढ़कर, मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर ने मेरा सब कुछ लौटाया है और सचमुच में मुझे बेहतरीन स्थिति में रखा है। शैतान जितना मुझसे छीनने की कोशिश की उससे कहीं बढ़कर परमेश्वर ने दुगुना अपनी महिमा के साथ मुझे वापस भरपूर किया है, और वह उन सब के लिये भी वैसा ही करेगा जो हमेशा उस पर लगातार भरोसा रखते हैं और उसके मार्गों पर चलते रहते हैं।

मैंने बहुत अपने जीवन में मसीह के नाम के कारण से निन्दा सही, परन्तु अभी मैं ये जानती हूँ कि महिमा का आत्मा हमेशा मुझ पर छाया करता था। ठीक आक्रमण और विरोध के मध्य में, परमेश्वर मेरे जीवन को बेहतर से बेहतरीन स्थिति में लाता गया। परमेश्वर चाहता है कि आपकी रोटी में से कुछ महिमामय बातों को निकाले।

यदि आप उससे ऐसा करने के लिये करेंगे, तब वह आपकी रोटी को लेकर उसको आपकी सेवकाई में बदल देगा। आप उनकी भी सहायता कर सकते हैं जो इस प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं। जिस पर परमेश्वर ने आपको विजयी किया है। आपका बोझ आपके लिये बरकत, और आपकी कमजोरी आपके लिये हथियार बन सकती है।

जब परमेश्वर की महिमा आपके जीवन में प्रकट होती है, तब दूसरे लोग देखकर के यह कहेंगे, "ओह, कितना महान परमेश्वर है जिसकी आप सेवा करते हैं।" इसलिये कि उसकी भलाई की सामर्थ जो आपके जीवन में हुई वह उनके लिये प्रत्यक्ष प्रमाण है। परमेश्वर आपको "शाबास" कहना चाहता है और उससे भी अधिक कहना चाहता है!

वाईन के शब्दकोश के अनुसार शब्द महिमा करना इब्रानी और यूनानी में जो इसकी परिभाषा की गई है वह इस प्रकार है "परमेश्वर की महिमा का प्रकाशन और प्रगटीकरण कि वह जो कुछ उसका है और वह जो है।" इस कारण जब परमेश्वर की महिमा आपके जीवन में उतरती है, आपके जीवन में तब उसका सुन्दर स्वभाव और महिमा की आत्मा का स्वागत करें और उत्साहित रहें ताकि आप अपने ऊपर परमेश्वर की महिमा को उदय होते हुए देख सकें।

जीवन की आत्मा

और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम जीवता प्राणी बन गया। (उत्पत्ति २:७)

जब परमेश्वर ने आदम को बनाया वह भूमि पर जीवन बिना पड़ा था और जब परमेश्वर ने उसमें जीवन का श्वांस फूँक दिया तब वह जीवित आत्मा बन गया। १ कुरिन्थियों १५:४५ में प्रेरित पौलुस कहता है, "कि प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम जीविता प्राणी बना। (स्वतंत्र व्यक्ति)।" आदम परमेश्वर के साथ साथ चलता था, उससे बातचीत करता था और उस पर विश्वास करता था। पवित्र शास्त्र कहती है कि आदम के पास स्वभाविक दिमाग होने के कारण उसने अदन की बारी में एक गलत निर्णय लिया जब उसकी परीक्षा हुई।

१ कुरिन्थियों १५:४५ पद में पौलुस और आगे समझाता है कि, "अंतिम आदम (मसीह) जीवन दायक आत्मा बने (मृत्तकों को जीवन में पुनः लाना)" और पद ४६ में वह इस वृतांत के बारे में समझाता है कि परमेश्वर पहले शारीरिक जीवन देता है, और उसके पश्चात् आत्मिक जीवन; "परन्तु पहले आत्मिक न था, पर स्वाभाविक था, इसके बाद आत्मिक हुआ।" यह आत्मिक नया जन्म उन सबका होता है जो लोग परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, यह विश्वास करते हुए कि उनके पापों के खातिर यीशु ने कीमत चुकाई है और उनके लिये मरा तथा जो लोग अपने पापों के लिये सच्चे मन से पश्चाताप करते हैं और अपने मन को बदलते हैं तथा अपने मार्गों को भी बदल देते हैं। हम सभी का स्वाभाविक जन्म आदम के समान होता है परन्तु मसीह के द्वारा से हम स्वर्गीय हो जाते हैं।

> प्रथम मनुष्य धरती से (था) अर्थात् मिट्टी (स्वाभाविक) का था; दूसरा मनुष्य (प्रभु) स्वर्गीय है। जैसा वह मिट्टी (स्वभाविक) का था, वैसे ही और मिट्टी के हैं; और जैसा वह (मनुष्य) स्वर्गीय है, वैसे ही और (लोग) भी स्वर्गीय हैं। और जैसे हमने उस (मनुष्य) का रूप जो मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस स्वर्गीय (मनुष्य) का रूप धारण करेंगे। (१ कुरिन्थियों १५:४७-४९)

यीशु मनुष्य के रूप में होकर हर परीक्षाओं को सहा और परमेश्वर की व्यवस्था को पूरी किया ताकि मनुष्य उसके सृष्टिकर्त्ता की दृष्टि में धर्मी ठहर सके। तो मसीह का लहू जिसने अपने आपको सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवित परमेश्वर की सेवा करो। (देखें इब्रानियों ९:१४)।

क्योंकि परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार पापों की क्षमा के लिये लहू का बहाया जाना जरूरी था, और मनुष्य अपने पाप के प्रायश्चित के लिये बकरों

और बछड़ों के लहू का बलिदान चढ़ाया करते थे; लेकिन मसीह हमारे पापों के खातिर और परमेश्वर से मेल कराने के लिये हमारे बदले में एक ही बार में हमेशा के लिये परमपवित्र स्थान में प्रवेश किया।

क्योंकि यीशु को छोड़ और कोई भी सिद्ध बलिदान नहीं हो सकता था, क्योंकि उस दृष्टिकोण से कोई और दूसरा बलिदान परमेश्वर को ग्रहण योग्य नहीं हो सकता था। हमारे भले काम हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये ग्रहण योग्य नहीं हो सकते। हमारी भेंट और बलिदान यीशु के लहू से सर्वसिद्ध नहीं हो सकते। इसलिये हमारे भले काम हमारा उद्धार नहीं कर सकते। केवल एक मात्र ग्रहणयोग्य प्रायश्चित जो परमेश्वर के साथ हमारा मेलमिलाप कराती वह यह था कि वह जो सिद्ध है उसके बलिदान पर भरोसा रखें। परमेश्वर के साथ हमारी सहमति के द्वारा से यीशु को छोड़ और कोई सर्वसिद्ध बलिदान नहीं है इसलिये कि उस पर भरोसा रखने से हमें मृत्यु से पुनः जीवन में लाया है।

इब्रानियों ९:२२-२८ हमें समझाती है :

> और व्यवस्था के अनुसार प्रायः सब वस्तुएँ लहू के द्वारा शुद्ध की जाती है; और बिना लहू बहाए क्षमा नहीं होती। यह इसलिये अवश्य है, कि स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप इन के द्वारा शुद्ध किये जाएँ; पर स्वर्ग में की वस्तुएँ आप इनके उत्तम बलिदानों के द्वारा। क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना है, प्रवेश नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया, ताकि हमारे लिये अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे। यह नहीं कि वह अपने आप को बार बार चढ़ाए, जैसा कि महायाजक प्रति वर्ष दूसरे का लहू लिए पवित्र स्थान में प्रवेश किया करता है। नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उसको बार बार दुःख उठाना पड़ता; पर अब युग के अंत में वह एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे। और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उसकी बाट जोहते हैं, उनके उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा।

इसी कारण मसीह जगत में आते समय कहता है कि परमेश्वर पापबलियों से प्रसन्न नहीं हुआ (देखें इब्रानियों १०:५-६)। परमेश्वर तभी प्रसन्न होता है जब हम उसकी पवित्र उपस्थिति की संगति में उसके सामने खड़े रहते हैं। यीशु ने व्यवस्था को पूरी की ताकि नई वाचा को स्थापित करे जिसके द्वारा से हम पिता के सम्मुख फिर से जीवन का आनंद उठा सकें।

यीशु ने पिता से कहा, "देख, मैं आ गया हूँ, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूँ; निदान, वह (इस प्रकार से) पहले (वाचा) को उठा देता है, ताकि दूसरे (वाचा) को नियुक्त करे। उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं।" (इब्रानियों १०:९-१०)

यूहन्ना १०:१० में यीशु ने कहा, "चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत (भरपूरी तक, जब तक छलकने न लग जाये)।"

जब यीशु ये कह रहा था, तो वह मरे हुए लोगों से नहीं कह रहा था। वह जीवित लोगों से ही कह रहा था। तब उसका क्या मतलब था जब उसने कहा कि वह उन्हें जीवन देने आया है? क्या वह परमेश्वर की आत्मा से, भरा हुआ जीवन के बारे में बोल रहा था एक स्वर्गीय जीवन जिसे उसने जीया उसके बारे में, जो कि सचमुच में बहुत ही उच्च कोटि का जीवन था हमारे उस स्वाभाविक जीवन से बढ़कर जब हमें शारीरिक जन्म के द्वारा से प्राप्त होता है। वह उस उच्च कोटि के जीवन के बारे में कह रहा होगा जो कि आत्मा के द्वारा से नया जन्म प्राप्त करने के बाद से ही आता है।

यूहन्ना १:१२-१३ में इस दूसरे जन्म को परमेश्वर के द्वारा जन्म लेने के विषय में समझाया गया है: "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।" रोमियों ८:८-११ हमें समझाती है कि क्यों यीशु हमें अपनी आत्मा से भरना चाहता है:

> और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। परन्तु जबकि परमेश्वर की आत्मा तुम में बसती है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह की आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं। और यदि मसीह तुम में है,तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है। और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुममें बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपनी आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा।

हम जितने आत्मा के द्वारा नया जन्म पाते हैं उनके साथ ठीक ऐसा ही होता है। जब हम मसीह को अपना मुक्तिदाता ग्रहण करते हैं, तब जीवन की

आत्मा हमारे अन्दर निवास करती है, और हम जिलाए जाते हैं तथा आत्मा में जीवित हो जाते हैं। हम ऐसे ही साँस नहीं ले रहे हैं; हम वास्तव में तैयार किये जा रहे हैं और सचमुच में वैसा जीवन जीयें जैसा हमें जीना चाहिये था।

यूहन्ना १:४ में यीशु ने कहा, "उसमें जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।" यीशु में क्या था? उसके अन्दर पवित्र आत्मा थी; पवित्र आत्मा उसके ऊपर सामर्थ के साथ आयी जिस दिन वह पानी का बपतिस्मा लिया। उसने हमें एक आत्मा से भरा हुआ मनुष्य का जीवन जीकर पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा से दिखा और वह उसी जीवन को जो उसके पास था हमें देने के लिये आया। हमें निर्देश दिया गया है कि हम उसका अनुसरण करें और उसके पद चिन्हों पर चलें, ताकि जो उसने किया वैसा हम भी करें और उसकी धार्मिकता को ग्रहण करें।

स्मरण करें कि यूहन्ना बपतिस्मादाता किस प्रकार से आश्चर्यचकित हो गया जब उसने यीशु को बपतिस्मा लेने के लिये उसकी ओर आते देखा?

> परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, "कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?" यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उसने उसकी बात मान ली। और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा। (मत्ती ३:१३-१४)

यीशु पानी का बपतिस्मा लिया ताकि हम भी पानी का बपतीस्मा लेने की जरूरत को समझ सकें। यीशु के बपतिस्मा के समय यूहन्ना ने यीशु के ऊपर पवित्र आत्मा को सामर्थ के साथ उतरते देखा जिसके द्वारा से वह पृथ्वी पर कुछ वर्षों तक सेवकाई कर सका। यही सामर्थ हमारे जीवन के लिये भी उपलब्ध है।

दूसरे दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत का पाप उठा ले जाता है।" (यूहन्ना १:२९-३०)। दूसरा कुरिन्थियों ३:६ में मेरा एक बहुत पसंदीदा वचन है: "(वही है) जिसने हमें नई वाचा (मसीह के द्वारा उद्धार) के सेवक होने के योग्य (हमें सही, लायक और पर्याप्त) भी किया, शब्द (व्यवस्था के लेख) के सेवक नहीं वरन आत्मा के; क्योंकि शब्द (व्यवस्था को) मारता है, पर (पवित्र) आत्मा जिलाता है।" *द किंग जेम्स वर्सन* भी कहती है आत्मा जीवन देता है।

दूसरा कुरिन्थियों ३:१७ कहती है कि, "और जहाँ कहीं प्रभु की आत्मा है वहाँ स्वतंत्रता (बन्धन से मुक्ति, आज़ादी) है।" यहाँ की तस्वीर को समझने में कठिनाई नहीं है। जहाँ कहीं परमेश्वर की आत्मा रहती है, वहाँ सब कुछ स्वतंत्र व सजीव होता है। उसके बिना, हर चीज़ें (चाहे चर्च भी) मृत और बंधन से जकड़ी हुई होती है।

मैं अपने जीवन काल में कई मृत कलीसियाओं की सभा में भाग ले चुकी हूँ। मुझे सौभाग्य मिला कि मैं ऐसी सभाओं में भी गई और अब भी जाती हूँ जहाँ पर परमेश्वर का जीवन है ऐसी कलीसियाओं की सभा में अक्सर अगुवाई करती रहती हूँ। मेरा विश्वास कीजिये कि एक बार जब आप इन दोनों का अनुभव कर लेंगे, तब आप सचमुच में इसके अन्तर को समझ लेंगे।

जब हम पुरानी वाचा के आधीन जीते हैं - परम्परा, विधि-विधान या व्यवस्था के अर्न्तगत (देखे २ कुरिन्थयो ३:६), तब हम जीवन का सच्चा आनंद या इसके संदर्भ में किसी भी बात का भी आनंद नहीं उठा सकते हैं। जब हम अनुग्रह के आधीन जीते हैं, तब हम जीवन के बारे में उत्साहित रहते हैं, महिमा की अपेक्षा करते हैं और पवित्र आत्मा से भरे रहते हैं। हम पवित्र अपेक्षाओं से भरपूर होते जाते हैं जो कि हमें भोर को उठने को उकसाती है तथा हम खुशी खुशी से नये दिन का स्वागत करते हैं। हर चीज़ें हमें हरी भरी लगती हैं - और जीवन को बेहतरीन, आसान और अत्याधिक आनंदित करती हैं।

पहली यूहन्ना ५:१२ कहती है जिसके पास मसीह नहीं, उसके पास जीवन नहीं। फिर से, इस वक्तव्य ने लोगों को चलने फिरने, वार्तालाप करने एवं सांस लेने के लिये विवश कर दिया। वे लोग साधारण माप में जिलाये गये, परन्तु परमेश्वर के स्तर से नहीं। परमेश्वर चाहता है कि हम सचमुच में जीवित हों - मसीह में जीवित और जीवन की आत्मा से भरपूर रहें।

रोमियों ८:२ में पौलुस ने लिखा; "क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।"

यदि हम शब्द या व्यवस्था की सेवा परमेश्वर की अधीनता में रहकर करने की कोशिश कर रहे हैं जिसके द्वारा से मृत्यु आती है तो हमें इससे सिर्फ यीशु मसीह में जीवन की आत्मा दी है वही छुटकारा देता है। जब यीशु हमारे अन्दर रहने के लिये आता है, तब वह जीवन की आत्मा को भी अपने साथ लाता है। "यीशु ने उत्तर दिया, यदि कोई (सचमुच में) मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा (मेरी शिक्षाओं को मानेगा); और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे, और उसके साथ वास (ठहर जाना, विशेष निवास

स्थान) करेंगे।" (यूहन्ना १४:२३)। जब ऐसी बातें होने लगती है, तब सब वस्तुएँ बदलने लगती हैं - कम से कम जब हम ये समझने लग जाते हैं कि जो कुछ हमारे पास है तो उसे हम बढ़ाते भी जायें।

यहाँ पर हम वचन की शिक्षा के महत्व को जान सकते हैं। जिन्होंने परमेश्वर का अनुभव किया है, और उसके वचन को बाँटने का दान पाया है, उन्हें चाहिये कि उन कमजोर विश्वासियों को जो जीवन में संघर्ष कर रहे हैं और यद्यपि उद्धार भी पाये है और अगर उनमें ज्ञान की कमी है तो उन्हें शिक्षा दें। होशे ४:६ में परमेश्वर ने कहा है, "मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नाश हो गई।" मसीह में हम विश्वासी, उनके संग सगी वारिस हैं। हमारे पास विरासत है, और अगर हम नहीं जानते हैं कि हमारा क्या कुछ है, तो हम उसका उपयोग भी नहीं कर सकेंगे। परमेश्वर के वचन को सीखना अति महत्वपूर्ण है ताकि जैसा यीशु चाहता है वैसा आनंद हम जीवन में उठा सकें।

जीवन की आत्मा न केवल हमें आत्मिक तौर से प्रभावित करता है, बल्कि हमारे प्राण और शरीर को भी प्रभावित करता है, अगर हम उसे ऐसा करने दें तो। कैसे हम उसे ऐसा करने दे सकते हैं? विश्वास करने के द्वारा से! पौलुस ने इस सच्चाई को रोमियों ८:११ में समझाया जब उसने कहा, "और यदि उसी की आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार (अल्प-आयु, नाशमान) देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।"

कल्पना कीजिये, कि वही आत्मा जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया हमारे अन्दर वास करता है। अगर हम विश्वासी हैं तो। मुझे फिर से कहना होगा: "वही आत्मा जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया तुम्हारे अन्दर वास करता है।" क्या यही वास्तविकता है? जी हाँ, क्योंकि पवित्र शास्त्र ऐसा कहती है, जो कि परमेश्वर के द्वारा से प्रेरित किया गया था। (देखें २ तीमुथियुस ३:१६)।

जब हम सच्चाई की वास्तविकता में विश्वास के द्वारा से प्रवेश करते हैं, तब हम न केवल आत्मा और प्राण में जिलाये या जीवित किये जाते हैं बल्कि शरीर में भी किये जाते हैं। पवित्र आत्मा चंगाई की सेवा हमको देता है और हमारे द्वारा दूसरों को देता है। चंगाई पवित्र आत्मा का एक वरदान है जिसके बारे में हम आगे और चर्चा करेंगे।

पवित्र आत्मा हमारे जीवन में तब तक पूरी सेवकाई नहीं देगा जब तक हमें उसे जीवन की आत्मा के रूप में ग्रहण नहीं कर लेते। परमेश्वर के जीवन का

स्वागत करें एक निवास स्थान के रूप में, और मृत्यु जीवन के द्वारा निगल लिया जायेगा, जिस प्रकार से अंधकार भी ज्योति के द्वारा से निगल लिया गया। (देखें १ कुरिन्थयों १५:५४; २ कुरिन्थियों ५:४)। जरा सोचें कि जब आप एक अन्धेरे कमरे में जाकर शीघ्रता से वहाँ की बत्ती को जलायेगें तो आप पायेंगे कि ज्योति अंधकार को निगल जाती है। यीशु जगत की ज्योति है, और उसकी आत्मा जीवन की आत्मा है जो मृत्यु को निगल जाता है और उन सब बातों को भी जो हमें पराजित करने की कोशिश करती हैं (देखें यूहन्ना ८:१२)।

सत्य की आत्मा

> परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा (सत्यता - देने वाली आत्मा) आएगी, तो तुम्हें सब सत्य (सम्पूर्ण, सत्यता की भरपूरी) का मार्ग बताएगा। (यूहन्ना १६:१३)

इस परिच्छेद में यीशु ने पवित्र आत्मा को सत्य का आत्मा कहा है। जबकि यीशु ने स्वयं अपने बारे में कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ।" (यूहन्ना १४:६)। यदि पवित्र आत्मा और यीशु दोनो सत्य हैं, तब तो दोनों एक हैं।

पवित्र आत्मा इसलिये भेजा गया ताकि हमें सत्य का मार्ग बताए। यीशु के स्वर्गारोहण के पहले उसके मारे जाने, गाड़े जाने और जिलाये जाने के बाद, उसने अपने चेलों से कहा था कि उन्हें बहुत सी बातें कहनी थी जिसे वे सुनने के लिये तैयार नहीं थे। यूहन्ना १६:१२ में उसने कहा, "मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।" और पद १३ से लेकर १५ तक में उसमें उन्हें कहा है कि पवित्र आत्मा उन पर सब बातें प्रगट करती रहेगी अगर वे उसे ग्रहण करने के लिए तैयार रहेंगे।

इसी रीती से पवित्र आत्मा हम सब के जीवन में कार्य करती है। यह धिरे से हमारे जीवन में करती है, हमे यह दिखाते हुए कि हम उस समय में कैसे बर्ताव करे।

सत्य अद्‌भुत है। अर्थात यीशु के अनुसार यूहन्ना ८:३१-३२ में यीशु ने कहा कि सत्य ही हमें आजाद करत है परंतु जिस तरह से सत्य सुंदर है उसी तरह से हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए इसको सहने के लिए। सत्य हमेशा कड़वा होता है यह हमें आश्चर्यचकित करता है जब हम इसके लिए तैयार नहीं होते है।

पवित्र आत्मा मुझ पर भारी सत्य को प्रगट करना आरंभ कर दिया, क्योंकि वह हमें परिपूर्णता में लाने के लिये उसका यही तरीका है। हम में से बहुत से

लोग अपनी कल्पनिक दुनियाँ में जीते हैं जिसे हमने अपने बचाव के लिये बना लिया है।

उदाहरण के लिये, मेरे जीवन में बहुत सारी समस्याएँ थीं, परन्तु मैं उसके लिये दूसरों की और मेरी परिस्थितियों पर दोष लगाया करती थी। मेरे लिये यह बड़ा कठिन समय था कि मैं लोगों के साथ अच्छा रिश्ता बनाये रखती, और तब मैं कायल हो गई कि सभी लोगों को बदलने की जरूरत है ताकि हम सब एक साथ जा सकें।

एक दिन मैं प्रार्थना कर रही थी कि मेरा पति बदल जाये, तब पवित्र आत्मा मेरे हृदय से बातें करना आरंभ किया। उसने मुझे महसुस कराया कि मेरे पति में नहीं, बल्कि समस्या मुझमें थी। ऐसा करने से, पवित्र आत्मा ने मेरे अन्दर सच्चाई का एक बम डाल दिया जिससे मैं मानसिक रूप से तीन दिन तक चकनाचूर रही। मुझे सदमा लग गया और मैं डर गई जैसे ही उसने मेरे ऊपर से धोखे के परदा को कोमलता से उठाया चूँकि मैं यह विश्वास करती थी कि मुझे छोड़ बाकी सभी लोग समस्या के कारण हैं। और लगातार तीन दिन तक पवित्र आत्मा मुझे ये दिखाता रहा कि मेरे परिवार के सदस्यों को मेरे साथ रहना था वह आगे कैसे होगा। उसने मुझ पर ये प्रगट किया कि मैं बहुत ही कठोर हूँ साथ रहने के लिये, खुश रखने के लिये मुश्किल, आलोचनात्मक, स्वार्थी, नीचा दिखाने वाली, नियंत्रण करने वाली, अर्थ का अनर्थ करने वाली, नकारात्मक, और दोष लगाने वाली और फिर यह तो सूची का आरंभ था।

मेरे लिये यह बहुत ही कठिन था कि मैं इस सच्चाई का सामना कर सकूँ, लेकिन पवित्र आत्मा ने मुझे ऐसा करने के लिये अनुग्रह दिया, यह मेरी जिन्दगी की शिफा और आज़ादी के शुरूआती दौर थे। जिस सच्चाई को सत्य की आत्मा ने मुझे मेरे प्रारंभिक दौर में १९७६ के दर्मियान सिखाया था, उसी को मैं आज लोगों को सिखाया करती हूँ। तब से मेरी जिंदगी एक नई आज़ादी की कड़ी में बंधी है, तथा सच्चाई की नवीनता की ओर बढ़ती है।

जी हाँ, पवित्र आत्मा सत्य की आत्मा है, और वह हमें सब सत्य का मार्ग बताएगा।

आज आप और मैं जिस संसार में जी रहे हैं यह झूठे लोगों से है, दिखाने का नकाब पहने हुए तथा अपने आपको छिपाने वाले लोगों से भरा पड़ा है। यह गलत है; और बहुत ही गलत है। परन्तु यह इस कारण से होता है क्योंकि लोगों को सच्चाई पर चलने के लिये नहीं सिखाया गया होता है। और कलीसिया में भी हम लोग इन्हीं कारणों से असफल रहे हैं - क्योंकि जैसे

इफिसियों ४:१५ के अनुसार करने के लिये कहा गया है वैसे ही करने के लिये हम अब तक नही सीखे हैं, "वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए (सब बातों में, सत्य कहते हुए, सत्यता से व्यवहार करते हुए, सच्चाई से जीते हुए)" पवित्र शास्त्र इसमें सब कुछ कह देता है। जितने लोग सत्य की आत्मा से भर चुके हैं उन्हें सत्यता का जीवन जीना चाहिये।

आज बहुत से लोग पूछते हैं कि "सत्य क्या है?" मैं धन्य हूँ इसलिये कि मैंने सत्य को खोज लिया है; मैं अपने प्रतिदिन के जीवन में सत्य का स्वागत् करती हूँ। मैं एक धोखे का जीवन जीना नहीं चाहती हूँ।

कभी-कभी शैतान हमें धोखा देता है, लेकिन दूसरे समय में हम खुद अपने आपको धोखा देते हैं। दूसरे शब्दों में, हम जीवन की सच्चाई का सामना करने एवं पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा से मुद्दों पर विचार करने के बदले में हमें जालसाजी का जीवन अच्छा लगता है।

पवित्र आत्मा कई मुद्दों को मेरे जीवन में हमेशा सामने लाता है, और उसने मुझे सिखाया है कि मैं उनका सामना करूँ, न कि डरपोक बनूँ। डरपोक सच्चाई से छिपते हैं, और वे उससे डरते हैं।

यदि आप अपने दिल के हर कोने में सत्य की आत्मा का स्वागत करने के लिये अति साहसी और बुद्धिमान है (मैं आपके व्यक्तिगत जीवन के बारे में कह रही हूँ, आपके घर के बारे में नहीं) तो आप एक ऐसी यात्रा में हैं जो कभी भुलाया नहीं जा सकता।

यदि मेरे लिये सचमुच में चकित करने वाली बातें है कि इतने वर्षों में जितना मैं झूठ पर विश्वास करती गई उतना मैं वास्तव में बन्धनों से जकड़ी गई। मैं सच्चाई से डरती थी, और जबकि मुझे केवल इसी से ही छुटकारा मिल सकता था।

मेरे पिताजी ने बचपन से मेरा यौन शोषण किया। जब मैं बड़ी हुई तब मैं घर से निकल गई और जो कुछ मेरे साथ हुआ था उसके बारे में जरा भी सोचती और बात करना भी नहीं चाहती थी। मैं सोचती थी कि मेरा यौन शोषण अब बंद हो गया है क्योंकि अब मैं शारीरिक रीति से दूर हूँ। परन्तु मैं यह महसुस करना भूल गयी कि इसका असर मेरे प्राण (मेरे मन में इच्छा और भावना में पड़ा) और मेरे शरीर में अब तक बना है। जिस खिंचाव से मैं बचपन मे रही थी अर्थात् मेरे शरीर के भ्रष्ट होने के कारण मुझे उसे मरम्मत करने की आवश्यकता थी। मैं अपने आप बीती को छिपाना चाहती थी, परन्तु ऐसा नहीं कर सकती थी। और जितना मैं इसको नकारना चाहती थी, यह उतना अधिक मेरे अन्दर नासुर के समान घर करने लगा।

जब पवित्र आत्मा मेरे अन्दर काम करना आरंभ कर दिया, उसने मेरे हाथ में एक ऐसी पुस्तक थमा दी जिसे एक ऐसी महिला ने लिखा था जिसके साथ उसके पिता ने भी उसका यौन शोषण किया था। जब मैं इस पुस्तक को पढ़ना आरंभ कर दी तब मैं यह महसुस की कि जिस महिला ने यह लिखा है वह मेरे समान के अनुभव से गुज़री है, और फिर से मेरे पुराने दर्द मेरे मन में ताजे हो गये। मैं इस पुस्तक को जमीन में पटक दी और जोर से चिल्ला उठी, "मैं इस पुस्तक को नहीं पढ़ूँगी।" और जबकि मैं वहाँ इसलिये बैठी थी कि पवित्र आत्मा ही मुझे उस स्थान में ले गया था और मैं इस बात को अन्दर से जानती थीऔर मुझे चाहिये था कि मैं उसके हाथ पकड़कर उसके साथ चलू।

किसी भी बात से जो हमने भूतकाल में अनुभव किया है और अगर हम छुटकारा पाना चाहते हैं तो केवल एक ही तरीका है हम परमेश्वर से आमने सामने करे और हमें उसे निकालने के लिये कहें। मैं अक्सर कहा करती हूँ कि "बच निकलने के लिये केवल एक ही तरीका है कि उसी के द्वारा।" हम दूसरा तरीका अपनाना चाहते हैं, परन्तु यह परमेश्वर का तरीका नहीं होता है।

जब डेव और मैं अपने ऑटोमोबाइल के द्वारा सफर करते हैं और सेवा के लिये किसी शहर में जाना चाहते हैं, तो हम शहर के बायपास मार्ग से होकर जाना अक्सर पसंद करते हैं ताकि हम भीड़ से बच सकें। यह तरीका रोड यात्रा के लिये अच्छा है मगर जीवन यात्रा के लिये लागू नहीं किया जा सकता। जीवन उद्देश्य के लिये सबसे उत्तम तरीका है सादगी, सीधा सच - सब कुछ का आमना सामना करना और किसी बात को दर किनार नहीं करना।

आपको सत्य से डरने की जरूरत नहीं है। यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे बहुत सारी बातों के लिये तैयार नहीं थे, इस कारण उसने उन पर उन बातों को उस समय प्रगट करने की कोशिश परमेश्वर कभी भी आपको अपनी आत्मा के द्वारा से प्रकाशन नहीं देगा क्योंकि वह जानता है कि आप तैयार नहीं हैं। वह तब प्रकाशन लाता है, जब आप विश्वास करने लग जाते हैं और तैयारी करने लग जाते हैं, यद्यपि आप पसंद करें या न करें। हमें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिये, अपनी भावनाओं के ऊपर नहीं।

प्रार्थना सिखाने वाली आत्मा

और मैं दाऊद के घराने और यरूशलेम के निवासियों पर अपना अनुग्रह करने वाली और प्रार्थना सिखानेवाली आत्मा उंडेलूँगा। (जकर्याह १२:१०)

इस पद के अनुसार, पवित्र आत्मा प्रार्थना सिखाने वाली आत्मा है। इसका मतलब वह प्रार्थना की आत्मा है। हर समय हमें प्रार्थना करने के लिये इच्छा होती है, यह इच्छा हमें पवित्र आत्मा की ओर से मिलती है। हम लोग यह महसुस नहीं करते होंगे कि कितनी ही बार पवित्र आत्मा हमें प्रार्थना करने के लिये अगुवाई करता है। हम लोग ऐसे ही कई बार सोचते हैं कि कोई व्यक्ति या परिस्थिति हमारे दिमाग में बार बार क्यों आ रही है। हम लगातार उस व्यक्ति के लिये प्रार्थना करने के बजाय उसके विषय में सोचते ही रहते हैं।

अक्सर सबक को जानने और सीखने के लिये बड़ा लंबा समय लगता है कि जब पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई करता है कि तब हम प्रार्थना करें। हम परमेश्वर की आत्मा के द्वारा से अगुवाई पाने के लिये महसुस करने के बदले में हम बहुत सारी बातों को अक्सर संयोग से करके मान लेते हैं। यहाँ तक एक उदाहरण है जो कि हमारे इस बिन्दु को समझने में सहायक होगी।

एक सोमवार के दिन मैं अपने पास्टर के बारे में सोचने लगी। उनके बारे में मेरे लिये सोचना एक साधारण सी बात नहीं रहती है क्योंकि मैं उनसे प्रेम करती हूँ और उनकी सेवकाई की मैं बहुत तारीफ करती हूँ। परन्तु लगातार तीन दिन तक वे मेरे दिमाग में आते रहे, और मैं उनसे बात करने के विषय में सोच रही थी। चूँकि मैं व्यस्त रहने के कारण से उनसे बात करने के लिये बार बार चूक जा रही थी (क्या यह शिष्टाचार का तरीका है?)।

और बुधवार के दिन जब मैं अपने व्यवसाय के सिलसिले में मेरी नियुक्ति के स्थान में जा रही थी और जैसे ही मैं अन्दर जा रही थी, मैंने अपने पास्टर की सेक्रेटरी को देखा। तुरन्त उनके बारे में पूछा कि वे कैसे थे। मैंने जाना कि वे बीमार चल रहे थे और डाक्टर के पास इलाज के लिये गये हुए थे और लौटने के समय उन्हें टेलीफोन के द्वारा सूचना मिली कि उनके पिता को कैंसर हो गया है और सारे शरीर में यह फैल रहा था।

मैंने तुरन्त यह एहसास किया कि क्यों उस सप्ताह मेरे दिमाग में मेरे पास्टर का ख्याल आ रहा था। मुझे ये बिल्कुल मानना होगा कि मैं उनके लिये समय निकालकर प्रार्थना नहीं की। मैंने जरूर उनके बारे में *सोचा*, मगर मैंने उनको न तो कभी बुलाया और न उनके लिये प्रार्थना की।

सचमुच में मैं बहुत ही खेदित थी इसलिये कि मैंने पवित्र आत्मा की अगुवाई को नज़रअन्दाज़ किया। मैं निश्चित तौर से कह सकती हूँ कि परमेश्वर ने किसी और के द्वारा से मेरे पास्टर के जीवन में काम किया कि वे उस सप्ताह सब कुछ सह सकें। मगर क्या मैंने सोमवार को उनके लिये प्रार्थना की, या

उनसे टेलीफोन से सम्पर्क किया, यह मेरा सौभाग्य हो सकता था परमेश्वर की ओर से कि मैं अपने पास्टर के लिये प्रोत्साहन का कारण बन पाती जब मैंने पहले से आत्मा में जान लिया कि उनके ऊपर समस्याएँ आ रही हैं।

परमेश्वर हमें अपने सेवक और प्रतिनिधि के रूप में इस्तेमाल करना चाहता है, परन्तु हमें प्रार्थना सीखाने वाली आत्मा की संवेदनशीलता के प्रति और सीखने की आवश्यकता है। हम में से प्रत्येक को ऐसा अनुभव होता है जिसका मैंने वर्णन किया है; सच है कि इसमें कोई दोष नहीं, परन्तु हमें अपनी गलतियों से सीखने की आवश्यकता है।

पवित्र आत्मा न केवल हमें प्रार्थना करने के लिये सिखलाता है परन्तु वह प्रार्थना करने में सहायता करता है। वह दिखाता है कि हम कैसे प्रार्थना करें जबकि हमें यह पता नहीं रहता है कि क्या प्रार्थना करें। (देखें रोमियों ८:२६-२७)।

प्रार्थना सीखाने वाली आत्मा का अपने जीवन में स्वागत करें, जिससे प्रार्थना की सेवकाई आपके जीवन के द्वारा से पूरी की जाए। प्रार्थना के द्वारा से आश्चर्यचकित करने वाली बातें होती हैं यह देखना सचमुच में अद्‌भुत है।

लेपालकपन की आत्मा

> क्योंकि (आत्मा जिसको) तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हों परन्तु लेपालकपन की आत्मा (आत्मा जिसके द्वारा से पुत्रत्व) मिली है, जिससे हम हे अब्बा (पिता)! कहकर पुकारते हैं। (रोमियों ८:१५)।

यह पद हमें सिखाता है कि पवित्र आत्मा ही लेपालकपन की आत्मता है। यहाँ पर जो शब्द लेपालकपन का अर्थ है परमेश्वर के घर में लाया जाना है, जबकि हम पहले बाहरी थे और परमेश्वर के साथ किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं था। हम पापी थे और शैतान की सेवा करते थे, परन्तु परमेश्वर अपनी बड़ी दया के कारण हमें छुटकारा दिया और अपने पुत्र यीशु के लहू के द्वारा से हमें खरीद लिया है:

> परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिससे उसने हमसे प्रेम किया। जब हम (अपने) अपराधों के कारण मरे (काटे) हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ।) (इफिसियो २:४-५)

हम स्वाभाविक तौर से लेपालकपन के मतलब को समझते है। हम जानते हैं कि कुछ बच्चों के जिनके माता - पिता नहीं होते हैं उन्हें लोग चुनकर गोद लेकर अपना लेते हैं। यह तो किसी परिवार में जन्म लेने से बेहतर है। जब किसी बच्चे का किसी परिवार में जन्म होता है, और जब पिता माता के इच्छानुसार नहीं होता है, इसलिये कभी कभी ऐसी बातें होती हैं। जब बच्चे गोद लिये जाते हैं तो यह खास तौर से या किसी कारणवश या मजबूरी से होता है।

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जिनको गोद लिया जाता है उन्हें तिरस्कार की भावना के कारण से बहुत ही तकलीफ उठानी पड़ती है। ऐसी परिस्थिति में उन्हें सकारात्मतक बातों को देखने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये न कि नकारात्मक बातों के लिये। यह कितनी सौभाग्य की बात होगी उनके लिये जो इस वज़ह से चुन लिये जाते हैं ताकि वे उनको बहुत प्यार दे सकें।

निम्नलिखित परमेश्वर का वचन हमारे लिये उस भाव को व्यक्त करता है; जैसा (अपने प्रेम में)

> उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन (वास्तव में हमें अपने लिये अलग किया) लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र (शुद्ध किये और उसके लिये अलग किये गये) और निर्दोष हों और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया (हमारे लिये अंतिम मंजिल, अपने प्रेम में हमारे लिये योजना), कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक (प्रगट किया गया) पुत्र हों। (इफिसियो १:४-५)

मैंने पवित्रशास्त्र के इस विषय पर अक्सर मनन किया है और प्रकाशन ढूँढ़ा है कि परमेश्वर के द्वारा लेपालक होना कितनी अद्‌भुत बात है।

भजन संहिता २७:१० में इस अद्‌भुत विषय के सिलसिले में दाऊद कहता है "मेरे माता-पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा। (अपने बच्चे की तरह मुझे गोद ले लेगा)" मैं पवित्र शास्त्र के इस पद पर अक्सर उन सभी लोगों के प्रोत्साहन के लिये इस्तेमाल करती हूँ, जो लोग महसुस करते हैं कि उनसे कोई प्यार नहीं करता है, और अपने माता पिता के द्वारा से तिरस्कार सहते हैं। यह उन्हें शांति देने में कभी भी असफल नहीं होती है।

जब मेरी मुलाकात मेरे पति डेव से हुई, उस समय मेरी उम्र तेइस वर्ष थी और पहले से मेरा नौ महीने का बच्चा मेरे पास था और चूँकि मैं अठाहर वर्ष में ही शादी कर चुकी थी। जैसे मैं पहले भी बता चुकी हूँ कि मेरी शादी मेरे पहले

पति के व्यभिचार करने और छोड़ने के कारण टूटी। जब डेव ने मुझसे शादी करने के बारे में पूछा तब मैंने इन शब्दों के द्वारा से उत्तर दिया, "ठीक है, आप जानते हैं कि मेरा एक बेटा है, और अगर आप मुझे पा गये, तब तो आप उसे भी पा गये।"

डेव ने मुझसे एक अद्‌भुत बात कही: "मैं तुम्हारे बेटे को नहीं जानता, मगर मैं यह जानता हूँ कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ और जो कुछ भी तुम्हारा है और जो भी लोग तुम्हारे हैं उनसे भी मैं प्यार करूँगा।"

डेव ने मेरे बेटे को गोद ले लिया जिसका मैंने पहले से डेविड नाम रखा था यह बिना जानते हुए कि भविष्य में मेरी शादी उस पुरूष से होगी जिसका नाम भी डेविड होगा। परमेश्वर बहुत सारी बातों को जानता है जिसे हम नहीं जानते हैं, और वह समय से पहले सब बातों का प्रबंध करता है।

इस घटना का सीधा तालुकात परमेश्वर के गोद लेने से है। मसीह में विश्वासी होने के कारण से, हम उसके अंश हैं - परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ति से ठहराया है कि जो कोई मसीह से प्रेम रखेगा परमेश्वर उससे प्रेम रखेगा और उसको ग्रहण करेगा। उसने यह ठहरा दिया कि जो कोई मसीह को अपना मुक्तिदाता ग्रहण करेगा उसे वह गोद ले लेगा (देखें इफिसियों १:३-६)।

नये जन्म के द्वारा, हम परमेश्वर के घराने के हो जाते हैं। परमेश्वर हमारा पिता बन जाता है। हम परमेश्वर के वारिस और यीशु मसीह के संगी वारिस बन जाते हैं। (देखें रोमियों ८:१६-१७)। उसकी आत्मा हममें बसती है, जिस प्रकार से मेयर की आत्मा (मेरे शरीर का रंगरूप और मेरे सोचने का तरीका) मेरे बच्चों में बसता है, जिस प्रकार से आपकी आत्मा आपके बच्चों के अन्दर बसती है, अगर आप बच्चे हैं तो। उन्होंने आपके स्वभाव को पाया है। आपका खून उनके नसों में दौड़ रहा है। वे लोग आपके समान दिख सकते हैं, उनका शारीरिक रूप आपके शरीर के समान हो सकता है, अथवा आपका स्वभाव उनमें पाया जाता है।

मेरी एक बेटी पूरी तरह मेरे ही समान दिखती है। मेरी दोनों बेटियों के पैर मेरे पैर जैसे ही हैं, और मेरे पैर मेरी माँ के जैसे है। मेरे पैर के अँगूठे के नाखून का रूप ठीक नहीं है, ठीक मेरे बेटे का इसी तरह है। उसका डील-डौल मेरे जैसा है। जो बेटी मेरे जैसी दिखती है उसका डील डौल उसके पिता जैसा है।

यह सचमुच में दिलचस्प बातें हैं जब हम इन बिन्दुओं पर सोचने लग जाते हैं। आप इन स्वाभाविक उदाहरणों को लेकर परमेश्वर के साथ संबंध और आत्मिक समानताओं को देखें, तब आप उत्साहित हो जायेंगे।

हमें परमेश्वर के जैसा तरीका और स्वभाव होना चाहिये। उसके स्वभाव की नकल हममें होनी चाहिये - जो उसके बेटा और बेटी हैं। यूहन्ना १४:९ में यीशु ने कहा, "जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है।" क्या हम इसी बात को अपने लिये नहीं कर सकते हैं?

हो सकता है कि आरम्भ में एक गोद लिया हुआ बालक अपने गोद लिये पिता माता के समान न दिखाई दें जिस प्रकार से हम भी आरम्भ में परमेश्वर के द्वारा से जब गोद लिये जाते हैं तो किसी भी प्रकार से उसके समान दिखाई नहीं देते हैं। फिर भी गोद लिया गया बालक धीरे धीरे अपने पिता माता के स्वभाव को अपनाने लग जाता है।

लोग सचमुच में चकित हो जाते हैं जब वे यह जान जाते हैं कि हमारा बड़ा बेटा डेविड, डेव के द्वारा से गोद लिया गया है। लोग लगातार यह कहते रहते हैं कि वह कैसा अपने पिता समान दिखता है, जबकि यह बिल्कुल असंभव बात है क्योंकि वह न तो डेव के वंश का है और न उसमें उसका खून है।

जब मैं परमेश्वर के घराने में गोद ली गई तो मुझमें स्वर्गीय पिता की कोई चाल नहीं थी, परन्तु इन वर्षों के दर्मियान में बदल चुकी हूँ, और आशा करती हूँ हाँ, इससे भी और अधिक, कि अब लोग उसको मुझमें देख सकते हैं। मैं प्रार्थना करती हूँ कि मैं बहुत से तरीकों से उसके समान चाल चलु।

लेपालकपन की आत्मा, जो अद्‌भुत पवित्र आत्मा है, मुझे परमेश्वर के घराने में लाने के लिये मेरे जीवन में धैर्यतापूर्वक काम करता चला गया। यह वही है जिसने मेरे हृदय में काम किया, आखिरकार मुझे कायल कर दिया कि मैं परमेश्वर की एक बेटी थी, मसीह के संग संगी वारिस। इस घराने के रिश्ते के बारे में ज्ञान रखना हमें परमेश्वर के सिंहासन के सामने जाने के लिये हियाव प्रदान करता है और तब हमारी विनती उसके सम्मुख उपस्थिति किये जायें (देखें इब्रानियों ४:१६; फिलिप्पियों ४:६)। लेपालकपन की आत्मा यही पवित्र आत्मा है जो आपको परमेश्वर के घराने में लाने में आपके हृदय में काम किया, और शायद जब आप इसी समय उसके वचन को पढ़ रहे हैं तो आपके हृदय में काम कर रहा है।

मुझ पर विश्वास करें, मेरे बच्चे उनके पिता और मुझसे निवेदन करने में कभी भी नहीं हिचकिचाते हैं। यह इसलिये होता है कि वे यह अच्छी रीति से जानते हैं कि वे जिस घराने के हैं उसमें उनको बहुत प्यार मिलता है। यह ज्ञान उनके लिये होना हम तक पहुँचने के लिये हिम्मत देता है। हमे भी अपने स्वर्गीय पिता और पवित्र आत्मा से इसी प्रकार से विनती यदि हम उसको ऐसा

करने के लिये देंगे, तो लेपालकपन की आत्मा इस सच्चाई को धीरे से हमारे हृदय में काम करने देता है।

पवित्रता की आत्मा

> और (जैसा उसका ईश्वरीय स्वभाव) पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है। (रोमियों १:४)

पवित्र आत्मा को यह इसलिये कहा जाता है क्योंकि वह परमेश्वर की पवित्रता है और यह उसी का ही काम य यीशु मसीह पर विश्वास करके उसको अपना मुक्तिदाता ग्रहण करते हैं उनके जीवन में पवित्रता लाये।

१ पतरस १:१५:१६ में हमसे कहा गया है: "पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र बनों। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"

परमेश्वर कभी भी हमें पवित्र बनने के लिये नहीं कहेगा जब तक वह उसी तरीके से वह हमारी सहायता न कर ले। अपवित्र आत्मा हमें कभी भी पवित्र नहीं बना सकती है। इसलिये परमेश्वर हमारे हृदय में पवित्र आत्मा भेजता है ताकि वह हममें एकदम सम्पूर्ण काम करे।

फिलिप्पियों १:६ में प्रेरित पौलुस हमसे कहता है कि जिसने तुममें अच्छा काम आरंभ किया है, वही उसे पूरा करेगा। पवित्र आत्मा हमारे जीवन में तब तक काम करता रहेगा जब तक हम इस पृथ्वी में हैं। परमेश्वर पाप से घृणा करता है, और जब तक किसी भी समय वह हममें यह पाता है, तो वह शीघ्र ही हमें शुद्ध करने के लिये काम करता है।

इस वास्तविकता से हम केवल यह समझ सकते हैं कि हमारे अन्दर पवित्र आत्मा को क्यों रहने की आवश्यकता है। वह न केवल हमें इस जीवन में सिखाने और अगुवाई करने के लिये है, बल्कि जो कुछ हमारे जीवन में अप्रिय बातें हैं जो परमेश्वर को अप्रसन्न करती है उनको हटायें और तुरन्त परमेश्वर की सहभागिता में काम करें।

पवित्र आत्मा निरंतर यीशु की महिमा करने के लिये खोजती रहती है, और वह हमको तैयार करती है कि हम भी वही काम करें। यूहन्ना १४:२-३ में यीशु ने कहा, "मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।" यह ऐसा लग रहा है मानो पवित्र आत्मा उससे कह रही हो, "मैं जाकर उनके लिये जगह तैयार करूंगा।"

यीशु स्वर्ग में हमारे लिये जगह तैयार कर रहा है, और उसकी पवित्र आत्मा हमें उस जगह के लिये तैयार कर रही है।

यशायाह ४:४ में हम पवित्र आत्मा को न्याय करने वाली आत्मा और भस्म करने वाली आत्मा के रूप में देखते हैं: "यह तब होगा, जब प्रभु न्याय करने वाली और भस्म करने वाली आत्मा के द्वारा सिय्योन की स्त्रीयों के मल को धो चुकेगा और यरूशलेम के खून को दूर कर चुकेगा।"

पवित्र आत्मा को न्याय करने वाली आत्मा और भस्म करने वाली आत्मा दर्शाया गया है जिसका संदर्भ उसकी पवित्रता की आत्मा से है, वह हमारे अन्दर पाप का न्याय करके उसको भस्म कर देता है। जहाँ पर हमारे सोच विचार है, काम करते हैं, वहाँ पर काम नहीं होता है, फिर भी परमेश्वर हमें उस अवस्था में ले आता है कि हम उसकी महिमा करें।

क्या आप परमेश्वर के उस पवित्र आत्मा को अनुमति दे रहे हैं कि वह आपके भीतर काम करें, और वह सब कुछ जो उसे अप्रिय है भस्म कर डाले? इब्रानियों १२:१० कहता है कि परमेश्वर हमारे लाभ के लिये हमारी ताड़ना करता है कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ। आप एक समझौता वादी मसीही न बनें जिसका एक पाँव संसार में और दूसरा पाँव परमेश्वर के राज्य में हो। आप गुनगुने न रहें, बल्कि परमेश्वर के लिये आग से जलते रहें, और उसके आग को प्रतिदिन जलने दें। परमेश्वर की ताड़ना का स्वागत करें, यह जानकर कि यह उसके प्रेम और पुत्रत्व का चिन्ह है:

> क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है। तुम दुख (सुधार) को ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हे पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्त्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? (इब्रानियो १२:६-७)

कुंवारी मरियम पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा से गर्भवती हुई। और जब स्वर्गदूत उसके पास आकर उसे दिखाई दिया, और उससे कहा कि वह पुत्र जनेगी और उसका नाम यीशु रखना और वह परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा, "मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह कैसे होगा? मैं तो (किसी मनुष्य के साथ घनिष्ठता) पुरूष को जानती ही नहीं।" स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया; कि पवित्र आत्मा तुझ पर छाया करेगा और यह कहते हुए, "इसलिये वह पवित्र (शुद्ध, पाप रहित) जो (संतान) उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।" लूका १:३४-३५)।

पवित्र आत्मा मरियम पर उतरा और उसके गर्भ में "जो पवित्र है" उसे रोप दिया। मरियम में पवित्रता की आत्मा के बीज का रोपण किया गया। और उसके गर्भ में वह मनुष्य के पुत्र और पमरेश्वर के पुत्र के रूप में बढ़ता गया जो कि लोगों को उनके पापों से छुटकारा देने के लिये आवश्यक था।

जब हमारा नया जन्म होता है, यह सब कुछ हममें होता है। "जो पवित्र है" पवित्रता की आत्मा, हममें एक बीज के समान रोपण करती है। जब हम इस बीज को परमेश्वर के वचन के द्वारा से सिचाईं करते है और "सासांरिक जंगली पौधों" से इसको दबाने से बचाते हैं, तब यह एक विशाल धार्मिकता के वृक्ष के रूप में बढ़ेगा, "और यहोवा के लगाए हुए कहलाएँ और जिससे उसकी महिमा प्रगट हो।" (यशायाह ६१:३)।

हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा से यह सिखाया गया है कि "पवित्रता का अनुसरण करें" (इब्रानियो १२:१४)। जितने सब अपना हृदय इस महान अनुसरण की ओर लगाते हैं पवित्रता की आत्मा उनकी सेवाटहल और सहायता करता है।

हम जितने पवित्रता की इच्छा करते हैं हमें सम्पूर्ण रीति से पवित्र आत्मा से भरपूर होने की आवश्यकता है। ऐसा होने के लिये, हमें उसको हमारे घर के हर कोने में आने के लिये बहुतायत से इजाजत मिलनी चाहिये। अक्सर हम अपने जीवन के कुछ हिस्सों को परमेश्वर के लिये बंद रखते हैं, जिस प्रकार से हम अपने घर के किसी कमरे में कुछ सामान बंद करके रख देते हैं जिससे कोई दूसरा उसको न देख सके।

हमारे घर में, मेरे पति और मेरा एक पैकिंग कमरा है। जिसमें हम अपने रोड ट्रीप्स के समान पैक भी करते हैं और खोलते भी हैं। यह कमरा सूटकेसेस और ट्रेव्ल बैग्स और अन्य जरूरत सामग्रीयों से जिसे हम रोड ट्रीप्स में लेकर जाते हैं उससे भरा पड़ा है। यह कमरा ऐसा नहीं है जिसे सुन्दर तरीके से सजाया गया हो और मैं नहीं चाहती हूँ कि लोग आकर उसे देखें, इसलिये, हम उस कमरे का दरवाजा बंद रखते हैं।

मेरे जीवन के बहुत वर्षो तक, यद्यपि मैं एक लगातार चर्च जाने वाली मसीही थी, फिर भी मैंने मेरे हृदय के कई कमरों को एवं जीवन के कई क्षेत्रों को पवित्र आत्मा के लिये बंद रखा। मैं अक्सर कहा करती हूँ कि मेरे पास यीशु का पर्याप्त है जिससे मैं नरक से बच सकती हूँ, लेकिन जयवन्त होकर चलने के लिये पर्याप्त नहीं। तब १९७६ में परमेश्वर के साथ एक अनोखा अनुभव मिला और बाद में मैंने खोज लिया कि यह पवित्र आत्मा में बपतिस्मा

है। इस अनुभव के आरम्भ में, चूँकि मैं नया जन्म पायी हुई थी इसलिये पवित्र आत्मा मेरे पास थी, परन्तु सचमुच में वह मुझे नहीं पाया था। मैं उसे केवल वहाँ काम करने देती थी जहाँ मैं चाहती थी और जब भी चाहती थी। मैं मसीहियत और सामान्य जीवन से कतई खुश नहीं थी और वास्तव में बहुत निराश थी। जिस प्रकार से मैंने अध्याय २ में इसका वर्णन किया है कि एक दिन मैंने अपने ऑटोमोबाईल में परमेश्वर को जोर से पुकारा। उसकी मुलाकात मुझसे हो गई जहाँ पर मैं थी, मुझे झलकते तक भर दिया, और मैं पहले के जैसा अब नहीं रह गई।

प्रेरितों के काम १०:३४ कहता है कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता है इसका मतलब यह है कि जिसने मेरे लिये किया वह आपके लिये भी वही करेगा अगर आप उसे ऐसा करने देंगे तो।

८

अलौकिक राज्य

मुझे यह सिखाया गया था कि पवित्र आत्मा में बपतिस्मा, अन्य भाषा में बातें करना (जिसकी चर्चा हम बाद में करेंगे), और चिन्ह और आश्चर्य कर्म पहली शताब्दी की कलीसिया के साथ समाप्त हो चुके हैं। अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि यह वक्तव्य एकदम सही है, परन्तु यह परमेश्वर की कभी भी इच्छा नहीं थी और न उसके इरादे थे। उसके पास हमेशा पृथ्वी पर कुछ लोग जो कहीं न कहीं पर बाकी थे जो पूरे सुसमाचार पर या बाइबल जो सम्पूर्ण सिखाती है उस पर अब तक विश्वास करते हैं और इसलिये उसने बाकी उन लोगों के द्वारा से सच्चाई को जीवित रखा है।

अगर आप उन लोगों में से एक हैं जो इन बातों पर विश्वास न करते हों, या अगर आपको यह सिखाया गया हो कि यह बातें बिल्कुल सही नहीं, तो मैं आपसे यह अनुरोध करती हूँ कि इस पुस्तक का किसी प्रकार से नज़र अंदाज न करें बल्कि इसे पढ़कर जो पवित्रशास्त्र की बातों को मैं बाँट रही हूँ उसमें जरूर अपना अवलोकन करें। परमेश्वर के वचन को आपके लिये सम्पूर्ण रीति से खोजने के बाद, मैं बड़ी गंम्भीरता के साथ यह कह सकती हूँ कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मा की आवश्यकता और उसकी उपलब्धता के बारे में आप किसी प्रकार से इंकार नही कर सकते।

बहुत से लोग अगर किसी छोटी सी बात को नहीं समझ पाते हैं तो वे डर जाते हैं। हम परमेश्वर के अलौकिक राज्य को नहीं समझ सकते हैं, फिर भी हममें उसके प्रति भूखे है क्योंकि हम उसी प्रकार से बनाये गये हैं। हम सभी को उस अलौकिक में दिलचस्पी है, और अगर परमेश्वर के द्वारा से हमारी आवश्यकता पूरी नहीं की जाती है, तो शैतान हमें जाली देने की कोशिश करता है।

जैसे मैंने पहले भी कहा था, कि मैं आत्मिकता के लिये अधिक भूखी थी। जिस धार्मिक क्षेत्र में मुझे बढ़ने की जरूरत थी जिसमें मैं सम्मिलित भी होती

थी उसी प्रकार की दिशा मुझे नहीं मिल रही थी, इसलिये मैं जानती थी उतना मैं खोजती थी।

मैं एक ऐसी महिला के साथ काम कर रही थी कि ज्योतिष शास्त्र कर बड़ा ज्ञान रखती थी, और वह चाहती थी कि मैं उसमें दिलचस्पी लूँ। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि उसके लोग तारों से अगुवाई के लिये सलाह लें, चूँकि मैं बहुत भूखी थी, शैतान यह चाहता था कि मैं कुछ भी चाहे जहर भी क्यों न खा लूँ। इसी आधार पर वह महिला कहा करती थी कि उसके लिये तारे काम की हैं। चूँकि मैं कुछ भी सुन नहीं पा रही थी। अपने जीवन में, फिर भी मैं जो कुछ वह कहना चाह रही थी उसमें दिलचस्पी ले रही थी।

इसी प्रकार से शैतान बहुत से लोगों को धोखा देता है। लोग इसी प्रकार से अपने दैनिक जीवन में दिखा और निदान ढूँढते रहते रहते है, और फिर यदि कलीसिया उन्हें उनको पर्याप्त समझाईश दिए बिना छोड़ देती है, तब तो वे आसानी से शत्रु के आहार बन जाते हैं। हम तारों से जीवन में दिशा के लिए सलाह लेने के बदली में जिसने तारों को बनाया क्यों न उससे सालह लें?

परमेश्वर सब कुछ जो उत्तम है हमें देना चाहता है शैतान उन सबका नकल करता है। हमको बहुत ही बुद्धिमान होना चाहिए एवं पवित्र शास्त्र को जानना चाहिए नहीं तो हम अंतिम दिनों में धोखे मे पड़ जाऐगे। पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि जब अंतिम के दिनों में यीशु जब इस धरती पर हमें छुड़ाने (लूका २१:८-११; २ तिमुथियुस ३:२३-२४) हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि परमेश्वर हमें धोखा खाने से बचाए।

कोई मेरे लिये प्रार्थना कर रहा था इसलिये परमेश्वर ने मेरी सहायता करके मेरी आवश्यकता को पूरी किया इससे पहले कि शैतान मुझे खींचकर अपने खोदे हुए गड़हे में मुझे डालता।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के बाद, मैंने परमेश्वर की अति घनिष्ठ संगति का अनुभव किया, इससे पहले मैंने ऐसा कभी नहीं जाना था। मैं उसकी अगुवाई को अपने जीवन में समझने लगी थी। वह मुझसे कह रहा था, और मैं जानती थी कि यह उसकी आवाज़ है। यूहन्ना १०:४-५ में यीशु ने कहा, "मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती है। परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जाएँगी।" मैं उसके शब्द को पहचानना आरंभ कर रही थी, और इससे मैं उत्साहित हो गई।

मसीही होने के नाते, हम सभी को आध्यात्मिक तौर से यह अधिकार है कि हम उत्साहित रहें। हम सभी अन्य और बातों के लिये उत्साहित रहते हैं, तो क्यों न हम परमेश्वर के साथ जो संबंध है, उसके प्रति उत्साहित न रहे?

लोग अक्सर कहा करते है कि अगर आत्मिक क्षेत्र में कुछ दृष्टिगत बातें होती हैं तो वे उसे “भावनात्मक” कह देते हैं। आखिरकार मैंने यह अहसास किया कि परमेश्वर ही है जिसने हमें भावनायुक्त बनाया है यद्यपि वह यह नहीं चाहता है कि भावना हमारे जीवन की अगुवाई करें, वह हमें एक उद्देश्य के लिये दिया है जो कि आनंद का एक हिस्सा है। यदि हम परमेश्वर में सचमुच में आनंदित हैं, तो कैसे हम उसे अपनी भावना के द्वारा से न दिखायें? क्या मसीहीयत की अभिव्यक्ति लम्बे चेहरे, दु:खी संगीत, और कलीसिया के सुलाने वाले रीति रिवाज के द्वारा से होती है। कदापि नहीं!

भजन संहिता १२२:१, में दाऊद ने कहा कि वह आनंदित हुआ जब वे उससे कहने लगे कि परमेश्वर के भवन को चलें। दाऊद परमेश्वर के सामने नाचने लगा (देखें २ शमूएल ६:१४), वीणा बजाया, और बड़ा आनन्द मनाया, यद्यपि वह पुरानी वाचा के आधीन जी रहा था। यीशु और उसके चेले नई वाचा के आधीन जीये, और उसने उनसे कहा कि वे आनंदित रहे, इसलिये कि उनके नाम मेम्ने की पुस्तक में लिखे हुए हैं, जो कि उन सभी के लिये लागू होता है जो यीशु में विश्वास करते हैं) देखें लूका १०:२०; प्रकाशित वाक्य २१:२७)। रोमियों १५:१३ कहती है कि हम जितने मसीह में विश्वास करते हैं तो आशा, आनंद और शांति की परिपूर्णता हममें पाई जाती है (नई वाचा के आधीन)। यह आनंदित और उत्साहित रहने के लिये पर्याप्त कारण है।

हमने पहले भी देखा है कि पुरानी वाचा कर्मों की वाचा है जो कि हमारी करनी पर आधारित है - संघर्ष करते हुए, प्रयत्न करते हुए, और परमेश्वर के योग्य बनने के लिये परिश्रम करते हुए। इस प्रकार की वाचा हमारे आनंद और शांति को छीन लेती है। परन्तु याद रखें कि नई वाचा अनुग्रह की वाचा है, जो कि हमारे कार्यों पर आधारित नहीं हैं बल्कि मसीह ने पहले से हमारे लिये पूरा कर दिया है। इसलिये हम विश्वास के द्वारा से धर्मी ठहरे हैं, कर्मों के द्वारा नहीं। यह कितना अद्‌भुत है, क्योंकि यह हमारे ऊपर जो दबाव रहता है उसे दूर कर देता है ताकि हम खुलकर चल सकते हैं। हम अपने तमाम बाहरी प्रयत्न को एक तरफ रखकर के परमेश्वर को उसकी पवित्र आत्मा के द्वारा से हमारे भीतर काम करने दे सकते हैं।

इसका सारांश ऐसा है: कि पुरानी वाचा के दासत्व को लाती है; परन्तु नई वाचा स्वतंत्रता को लाती है। यदि दाऊद पुरानी वाचा के आधीन रहकर आनंदित रह सकता है, तो हम जो नई वाचा के आधीन रहते हैं कितना और अधिक आनंदित रहना चाहिये?

क्या आपके जीवन से पवित्र आत्मा की सामर्थ को छिन लिया गया है?

> उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उँडेलूँगा; तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूँगा। (योएल २:२८-२९)

जी हाँ, पवित्र आत्मा की भरपूरी का अनुभव हमारे लिये सब अनुभव से अलग है। यह हमें शक्ति देता है कि हमे परमेश्वर में क्या कुछ होना चाहिये और फिर हम परमेश्वर के लिये क्या कुछ करना चाहिये।

बहुत सारे मसीही लोग इससे पहले कुछ *बन* जायें वे कुछ *करने* की कोशिश करते हैं। ऐसा करने से यह सुखा, उकतानेवाला, मन्द और निर्जीव मसीहियत को पैदा करता है। बहुत सारे प्रचारक लोग दूसरों को पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को पाने के विषय में निरूत्साहित करते हैं चूँकि उन्होंने इस अनुभव को नहीं पाया है।

अगर हमारा अनुभव किसी बात में नहीं है तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम लोगों से कहें कि वह अस्तित्व में नहीं है। इसके बदले में, हम परमेश्वर के वचन की ओर हमसे बढ़कर जिन्होंने अनुभव किया है और जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाकर अन्य भाषा में बातें की, और जिन्होंने बड़े बड़े अद्भुत चंगाई होते हुए और दुष्टात्माओं को निकलते देखा है उन बातों की ओर देखें। हमे उन सब लोगों से बात करनी चाहिये जिन्होंने परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा से अन्य लोगों के जीवन को हकीकत में बदलते देखा है।

डेव और मेरी शादी के बाद हम जिस चर्च में जाया करते थे उस पास्टर के साथ एक बार जो बातचीत हुई थी वह मुझे याद आ गई। परमेश्वर ने मुझे दर्शन दिया और इस बात के लिये मैं बहुत ही उत्साहित थी। जबकि मेरा नया जन्म नौ वर्ष की आयु में हो चुका था, और एक रात्रिकाल में जब मैं रसोईघर में बरतन साफ कर रही थी तब मेरे विश्वास में एक नयापन आया उसका अनुभव किया। तब मैंने परमेश्वर की वास्तविकता को पहिचाना, और तुरन्त यह महसुस करने लगी कि किस प्रकार से इतने वर्षों तक उसने मेरी अगुवाई की, जबकि मैंने यह सोचा कि वह बिल्कुल नहीं है - या अगर वह है, तो वह मुझे भूल गया होगा। मैं परमेश्वर की विश्वासयोग्ता को देखकर भय और आश्चर्य से भरकर आनन्द विभोर हो गई। मैं किसी ऐसे व्यक्ति से बातचीत

करना चाह रही थी, जो कि इन आत्मिक बातों को समझ सके, इसलिये मैं पास्टर के पास गई, जिसने मुझसे शान्त रहने के लिये प्रोत्साहित किया और कहा कि इस प्रकार का उत्साह ज्यादा दिन नहीं चलेगा।

उनका मतलब सही रहा होगा, लेकिन मैं विश्वास करती हूँ कि उन्होंने मुझे निरुस्ताहित किया क्योंकि जो कुछ मैं वर्णन कर रही थी उसका उन्होंने कभी नहीं अनुभव किया था; इस कारण उन्होंने इसका इंकार किया एवं मूल्यहीन जाना। मैं बहुत ही निराश हो गई और उनके कार्यालय को इस तरह छोड़ी जिस प्रकार से गुब्बारे से हवा तेजी से खुल जाती है।

यह बड़ी शर्मनाक बात होगी अगर हम किसी जोशीले विश्वासी पर जो आग से जल रहा हो उस पर पानी डालें। लोग अक्सर इस बात से डरते हैं कि कहीं वह उत्तेजित व्यक्ति उल्टा खतरनाक न बन जाये। परन्तु, जैसे एक व्यक्ति ने कहा, "मेरे पास कोई आग न होने से बेहतर यह होगा कि एक छोटी सी चिंगारी मौजूद हो।"

कुछ लोग चर्च इस प्रकार से जाते हैं मानों वे किसी पार्क में घूमने के लिये जाते हों, और इसी पड़ाव में उनके आत्मिक अनुभव का आरम्भ और अन्त हो जाता है। और इसी बात को मैंने बहुत लम्बे समय के पश्चात जाना कि अगर मुझे कहीं जाना है तो, मुझे अपनी कार को पार्क से बाहर निकालना होगा।

यदि कार पार्क में लगी हुई है तो उसे चलाना बिल्कुल असंभव बात है। आप अपने जीवन को पार्क से बाहर निकाल लें और परमेश्वर को चालक सीट पर बैठायें - तब आप भी अपनी सीट बेल्ट को अच्छी तरह से बान्ध लें और जीवन सफर के लिये तैयार हो जायें!

परमेश्वर से कहें कि वह आपके जीवन में एक नया काम करे। आप उसे आपके सीमित धार्मिक सिद्धान्तों के दायरों रखने के लिये मज़बूर न करें। बाइबल के अनुसार, परमेश्वर की सामर्थ मनुष्यों के द्वारा से बनाये गये सिद्धान्तों के द्वारा से बुझायें जाते हैं:

> (यद्यपि) वे भक्ति (सच्चा धर्म का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे (पेट भरना ही उनका मुख्य पेशा है।) ऐसो से (उनसे अलग रहो) परे (सबसे) रहना। २ तीमुथियुस ३:५

> जबकि तुम मसीह के साथ संसार की आदि शिक्षा की ओर से मर गए हो, तो फिर उनके समान जो संसार में जीवन बिताते हैं मनुष्यों की

आज्ञाओं और शिक्षानुसार (और ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो?) कि यह न छूना, उसे न चखना और उसे हाथ न लगाना। क्योंकि यह सब वस्तु काम में लाते लाते नाश हो जाएँगी। इन विधियों में अपनी इच्छा के अनुसार गढ़ी हुई भक्ति की रीति, और दीनता और शारीरिक योगाभ्यास के भाव से ज्ञान का नाम तो है, परन्तु शारीरिक लालसाओं (नीच स्वभाव) के रोकने में इन से कुछ भी लाभ नहीं होता। (इसके बदले में, वे परमेश्वर का आदर नहीं करते हैं बल्कि सिर्फ शारीरिक लालसाओं में लिप्त रहते हैं।) (कुलुसियो २:२०-२३)

मनुष्यों के द्वारा बनाये गये सिद्धांतों ने हजारों विश्वासियों के जीवन से पवित्र आत्मा की सामर्थ को छिन लिया है। परमेश्वर मनुष्यों के द्वारा बनाये गये सिद्धान्तों में दिलचस्पी नहीं लेता है; वह केवल उसके कहे हुए वचन में दिलचस्पी लेता है, और इस प्रकार दिलचस्पी हमारी भी होनी चाहिये।

फरवरी १९७६, शुक्रवार के दिन, जब परमेश्वर ने मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया उसने मुझे मेरे धार्मिक सिद्धांतों के विषय में नहीं पूछा या मेरे चर्च छोड़ने के लिये कहा गया, बल्कि एकाएक मेरे सारे मित्र मुझे छोड़ दिये। यह मेरे जीवन का बड़ा ही कठिन समय था, लेकिन इसके द्वारा से मैंने सीखा कि जो लोग परमेश्वर के साथ आगे बढ़ते रहते हैं उन्हें शैतान किस प्रकार से तिरस्कार के दर्द से भर कर अलग रखने की कोशिश करता है।

वास्तव में मेरी, परीक्षा होती रही ताकि मैं सब कुछ भूल जाऊँ और वापस जाकर एक "साधारण" मसीही बन जाऊँ। परन्तु मैं इतना जानती थी कि पमरेश्वर ने मेरे जीवन में कुछ अद्‌भुत काम कर दिया था। इसके पहले मैंने कभी भी इस प्रकार का अनुभव नहीं किया और तब मैंने निर्णय लिया कि यद्यपि मेरा कोई मित्र नहीं था, फिर भी मैं अपनी पुरानी स्थिति में वापस नहीं जा सकती थी। यह बिल्कुल संतोषप्रद नहीं था, और यह कभी भी हो सकता था।

मैं परमेश्वर के साथ किसी भी कीमत पर जीना चाहती हूँ।

मेरी यह प्रार्थना है कि इस पुस्तक को पढ़ने के बाद आप भी वैसा ही अनुभव करें। इस पुस्तक को लिखने का मेरा एक ही उद्देश्य है कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और पवित्र आत्मा की भरपूरी पाना चाहते हैं उनके जीवन में बड़ी भूख पैदा हो जाये। अगर आप उन लोगों में से एक हैं तो, मैं प्रार्थना करती हूँ कि आप अपने जीवन के हर क्षेत्र को उसके लिये खोल दें और परमेश्वर को नियंत्रण करने दें। याद रखें कि यीशु आपके लिये इसलिये

नहीं मरा कि आप धार्मिक बन जायें बल्कि परमेश्वर के साथ आपका गहरा, घनिष्ठ और व्यक्तिगत संबंध हो जाये, और उसी के द्वारा से पवित्र आत्मा की भरपूरी के आनंद को जानें।

चर्च में बैठने से एक व्यक्ति मसीही नहीं बन जाता है जिस प्रकार से गैरेज में बैठने से कार नहीं बन जाती। हमारे चर्च की सभा में उपस्थिति से बढ़कर हमारा परमेश्वर के साथ का अनुभव बढ़कर होना चाहिये। अक्सर मुझे दुःख होता है जब मैं लोगों से पूछती हूँ कि क्या वे मसीही हैं, और फिर वे कहते हैं कि अमुक चर्च में जाते हैं - इसका मतलब यह होता है कि वे चर्च तो जाते हैं मगर प्रभु को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते हैं।

घर के हर द्वार को खुला छोडिए

देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आऊँगा। (प्रकाशितवाक्य ३:२०)

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के बाद, मैंने परमेश्वर को मेरे जीवन के हर क्षेत्र में देखा जिसका पहिले कभी भी मैंने स्वागत नहीं किया था। वह मेरे जीवन के हर क्षेत्र में देखा जिसका पहले कभी भी मैंने स्वागत नहीं किया था। वह मेरे जीवन के हर क्षेत्र से व्यवहार किया और ऐसी कोई बात नहीं थी जिसमें वह शामिल न हो। मैं इसे पसन्द करती थी और नहीं भी करती थी, अगर आप मेरे मतलब को समझ जायें। यह उत्साहवर्धक था परन्तु डरावना भी था।

मैं जब लोगों के साथ किस प्रकार से उनके विषय में बातचीत करती थी उन सब में परमेश्वर शामिल रहता था। मैं किस प्रकार से रूपये खर्च करती थी, कैसे मेरे परिधान थे, कौन कौन मेरे मित्र थे, और मेरे मनोरंजन के क्या क्या साधन थे उन सब बातों में वह शामिल था। वह मेरे विचारों में और स्वभाव में शामिल था। मैंने एहसास किया कि वह मेरे हृदय की गहराईयों को जानता था और कुछ उससे छिपा हुआ नहीं था। उसका स्थान मेरे जीवन में सिर्फ "रविवार की सुबह" में अब नहीं रह गया था, बल्कि ऐसा लग रहा था कि अब वह सारे घर का प्रबंध कर रहा था। उसके हाथ में मेरे सारे कमरे की चाबी थी - और वह बिना बताये - साथ में मैं और जोड़ना चाहूँगी कि वह बिना खटखटाये और बिना घण्टी बजाये प्रवेश किया करता था। दूसरे शब्दों में, मैं कभी भी यह नहीं जान सकती थी कि वह कब और कैसे किसी मुद्दे पर बात छेड़ देगा, परन्तु ऐसा लगता था कि बहुत कुछ होते जा रहा था। जैसे मैंने कहा

था कि, यह उत्साहवर्धक है, परन्तु मैंने तुरन्त यह एहसास किया कि बहुत कुछ परिवर्तन होने जा रहा है।

हम सभी परिवर्तन चाहते हैं, परन्तु यह कब आता है, यह डरावना होता है। हम सभी चाहते हैं कि हमारा जीवन बदल जाये, मगर हम अपने जीवन शैली को बदलना नहीं चाहते हैं। हो सकता है कि जो कुछ हमारे पास हो उसे हम पसंद न करते हों, परन्तु अगर कुछ और मिल जाये तो और अधिक पसंद कर सकते हैं? यह तो एक उदाहरण है अर्थात् एक प्रकार का प्रश्न जिसे हम सब अपने आप से करते हैं। यह हमारे लिये डरावना हो सकता है जब हम नियंत्रण के बाहर हों या और किसी दूसरे के हाथ में हों।

पवित्र आत्मा से भरने का मतलब है कि हम अपने जीवन को परमेश्वर की महिमा और आदर के लिये जीयें न कि अपने आपके लिये। इसका मतलब यह है कि हम अपने जीवन को जो हमने सुनियोजित किया उसे दरकिनार करें और उसकी योजना की खोज करके उसका अनुसरण करें।

और अभी मैं यह जानती हूँ कि मुझे अक्सर परमेश्वर के वचन की शिक्षिका के रूप में बुलाया जाता है। मैं अपने पिछले जीवन की ओर जब देखती हूँ तो यह पाती हूँ कि कितने किस्से इसमें भरे पड़े थे। मैं सोचती थी कि मैं एक व्यवसायिक महिला थी। मेरे जीवन के लिये मेरी योजना थी, परन्तु तुरन्त परमेश्वर ने उस दिन शुक्रवार, फरवरी १९७६ को मेरी योजना में रोक लगा दी।

जैसे हमने देखा है कि नीतिवचन १६:९ कहती है कि मनुष्य मन में अपने मार्ग पर विचार करता है, परन्तु यहोवा ही उसके पैरों को स्थिर करता है। पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के तीन सप्ताह के अन्तराल में, परमेश्वर के आदेशानुसार मैं एक बाइबल अध्ययन शिक्षा सत्र की योजना बना रही थी, और तब से मैं बस एक वर्ष की छोड़ कर अब तक लगातार परमेश्वर के वचन की शिक्षा दे रही हूँ।

जब हम परमेश्वर को अपने जीवन गाड़ी को चालक बना देते हैं तब, सब बातें शीघ्रता से बदलने लग जाती हैं। इस कारण हमें सबसे पहले प्रार्थना करने के लिये सीखना चाहिये, उसके बाद योजना बनानी चाहिये।

मैंने अपने जीवन काल में बहुत समय योजना बनाने में व्यतीत की, फिर उसके बाद परमेश्वर से प्रार्थना की कि उसे सफलता में बदल दे। *मेरी* इन योजनाओं के खातिर, मैंने अपने जीवन इन्हें अन्जाम देने के लिये हर हाल में कोशिश किया - और जब सफल नहीं हुई तब असंमजस में पड़ गई और निराश हो गई।

क्या आप परमेश्वर की आत्मा को अपना घर चलाने के लिये देंगे? क्या आप उसका अपने सम्पूर्ण जीवन में स्वागत करेंगे जिससे वह अपनापन महसुस कर सके? मेरी यह प्रार्थना है कि आप ऐसा करें, क्योंकि मैं यह जानती हूँ कि जब तक आप ऐसा नहीं करेंगे तब तक आप कभी भी भरपूर नहीं होंगे। चाहे आपको विरोध का सामना क्यों न करना पड़े, क्योंकि हर एक ऐसे अवसरों पर विरोध आ ही जाता है। हो सकता है इसकी कीमत बहुत हो, लेकिन इसका फायदा भी निश्चय बहुत है। आप परमेश्वर के घर मे होने के लिये बनाये गये थे। क्या आप उसे खुलकर अपने जीवन में आने जाने देंगे?

पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का प्रमाण

> तब यहोवा का आत्मा तुझ पर बल से उतरेगा, और तू उनके साथ होकर नबूवत करने लगेगा, और तू परिवर्तित होकर अलग ही मनुष्य हो जाएगा। (१ शमूएल १०:६)

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रमाण यह है कि अचानक स्वभाव यूँ ही परिविर्तित हो जाता है और जिस प्रकार से गलतियों ५:२२-२३ में आत्मा का फल के विषय में लिखा है वो सब जीवन में दिखाई देने लगता है। परमेश्वर लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा इसलिये देता है ताकि उस शक्ति से वे उसके लिये जी सकें। अगर वो लोग ऐसा नहीं कर सक रहे हैं, तब तो वे लोग पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का प्रमाण नहीं दिखा पा रहे हैं। पेन्तिकुस्त के दिन में जब पवित्र आत्मा उण्डेला गया था तब अन्य भाषा में बातें करना भी उनमें से एक प्रमाण है, परन्तु सदियों से जो अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रमाण रहा है और हमेशा रहेगा, वह यह है कि इसने स्त्रीयों और पुरुषों के जीवन को परिवर्तित कर दिया है।

जब यीशु को पकड़वाया गया, तब पतरस ने यहूदियों के डर के मारे मसीह का तीन बार इंकार किया (देखें लूका २२:५६-६२); परन्तु पेन्तिकुस्त के दिन में जब पवित्र आत्मा से भर गया, तब वह खड़े होकर जोरदार प्रचार किया। उस दिन पतरस के प्रचार के द्वारा से परमेश्वर के राज्य में तीन हजार आत्माएँ बचगई (देखें प्रेरितों के काम २:१४-४१)। पवित्र आत्मा के बपतिस्मा ने पतरस को परिवर्तित कर दिया; इसने उसको और ही मनुष्य बना दिया। उसका डर तुरन्त गायब हो गया, और वह बुलन्द हो गया।

ये दुनियाँ ऐसे लोगों से भरी पड़ी है जो प्रतिदिन यातना के डर से जीते हैं। दुःख की बात यह है कि वे यह महसुस करना भी नहीं चाहते हैं कि पवित्र आत्मा की भरपुरी के द्वारा से उनके लिये सहायता उपलब्ध है।

वास्तविकता तो यह है कि उस दिन पतरस अपने आप से ऐसे ही बुलन्द होकर खड़ा नहीं हो गया। और बाकी सभी ग्यारह प्रेरितों ने भी ऐसा ही किया। वे सभी लोग यहूदियों के डर के मारे दरवाज़ा बन्द कर दिया जब यीशु आया (यूहन्ना २०:१९-२२)

पवित्र आत्मा के बपतिस्मा ने शऊल को बदल दिया उसने पतरस को बदल दिया और इसने मुझे भी बदल दिया अचानक जब वे पवित्र आत्मा से भर गए तब वे अत्यधिक मजबूत और हिम्मत वाले बन गऐ। इसने मुझे भी परिवर्तित कर दिया; और यह दुनिया भर के खोजियों को निरंतर परिवर्तित करते जा रहा है। जी हाँ, परिवर्तित स्त्री और पुरुष ही इसके अत्यंत महत्वपूर्ण प्रमाण हैं। परंतु यह केवल मात्र कारण नहीं है। जिसकी हम अपेक्षा करें एवं खोजें। अन्य भाषा में बातें करना भी एक प्रमाण है, और यह एक बहुत ही कीमती वरदान है।

अन्य भाषाओ में बातें करने का प्रमाण

> जब पेन्तिकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठ थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया। और उन्हें आग सी जीभें फटती हुई दिखाई दी; और उन में हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर (आत्मा में विस्तार पाये) गये, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य (विभिन्न, विदेशी) भाषा (अन्य भाषा) बोलने लगे। (प्रेरितों के काम २:१-४)

कुछ लोग कहते हैं कि अन्य भाषा में बातें करना सिर्फ कुछ लोगों के लिये ही है, सब लोगों के लिये नहीं। यह सच है कि सभी विश्वासी लोग अन्य भाषा में बातें नहीं करते हैं, परन्तु मैं विश्वास करती हू कि यह सभी कर सकते हैं अगर वे उसके लिये प्रयास करें तो।

इस परिच्छेद में बाइबल कहती है कि पेन्तिकुस्त के दिन में सब चेले उपरौठी कोठरी में अन्य भाषा में बातें किये। मैं विश्वास करती हूँ कि पवित्र आत्मा के पहले उंडेले जाने के प्रथम चरण के इस नमूने को कलीसिया को अनुसरण करना चाहिये। क्या परमेश्वर की केवल यही इच्छा थी कि कुछ

विश्वासी लोग ही अन्य अन्य भाषा में बातें करें और कुछ लोग न करें, परन्तु निश्चय बाइबल कहती है १२० चेले पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के लिये उपरौठी कोठरी पर ठहरे रहे, और एकाएक उन्होंने आंधी की सी सनसनाहट सुनी और आग की सी जीभें उनके ऊपर आ ठहरी, और वे सब अन्य भाषा में बोलने लगे। पवित्र शास्त्र में वहाँ पर क्यों पद ४ में कहती है कि वे *सब अन्य भाषा बोलने* लगे अगर अन्य भाषा में बातें करना सबके लिये नहीं था तो?

मैं विश्वास करती हूँ कि बहुत सारे लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला है मगर वे लोग अन्य भाषा में बातें नहीं करते हैं, परन्तु मैं यह विश्वास नहीं करती हूँ क्योंकि वे प्रयास नहीं करते है। मैं व्यक्तिगत रुप से विश्वास करती हूँ क्योंकि वे ऐसा करने से डरते हैं, क्योंकि उनके चर्च सिद्धांत में ऐसा करने के लिये मना करते हैं, या शायद इसलिये भी कि जो लोग अन्य बोलते हैं उनके जीवन में जो कलंक लगा हो और जिनके साथ उनका ठीक संबंध भी हो मगर इसी कारण से वे लोग अन्य भाषा न बोलते हों।

फिर भी कुछ लोग परमेश्वर से अन्य भाषा का वरदान माँगते हैं, और फिर उसे हृदय में ग्रहण करने के लिये डरते हैं। परन्तु असाधारण बात यह है कि बाइबल में बहुत सारे वरदानों में से इसी अन्य भाषा में बातें करने का विवरण है तो जरूर इसका बहुत ही मूल्य होगा जिसे मैं भी कहती हूँ, अन्यथा, शैतान इतनी कड़ी मेहनत नहीं करता ताकि इसके ऊपर से विश्वास उठ जाये।

जरा इसके विषय में सोचें। लोगों को इसकी कोई परवाह नहीं कि हमारे पास पवित्र आत्मा के द्वारा से बुद्धि, ज्ञान, परख, विश्वास या और कोई वरदान है, परन्तु उन्हें तकलीफ होती है जब हम अन्य भाषा में बातें करते हैं। जबकि ये सारे वरदानों की सूची १ कुरिन्थियों १२ में दी गई है।

मैं ऐसे अनोखे मसीही लोगों को जानती हूँ और जिन्हें मैं विश्वास करती हूँ कि उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिल गया है, फिर भी वे लोग अन्य अन्य भाषा में बातें नहीं करते हैं। उनके जीवन में अद्‌भुत फल था, और जो लोग अन्य भाषा में बातें करते थे, और जिन्हें मैं जानती थी उनसे बहुत बातों में बढ़कर थे। प्राय: पेन्तिकुस्त का अनुभव पाये हुए लोग ज्यादा अन्य भाषा में बातें करते हैं। वे लोग सोचते हैं कि एक व्यक्ति को आत्मिक बनने के लिये यही एक मात्र तरीका है, जबकि, वास्तविकता यही है कि ऐसा नहीं है।

जैसे मैंने कहा है कि, जी हाँ, मैं विश्वास करती हूँ कि एक व्यक्ति पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाकर अन्य भाषा में बातें नहीं करता है, परन्तु मैं विश्वास नहीं कर सकती हूँ कि यह मामला सभी के साथ हो। मैं हर एक को

जो पवित्र आत्मा से भरना एवं अन्य भाषा में बातें करना चाहते हैं, प्रोत्साहित करना चाहती हूँ ताकि विश्वास से अपना मुँह खोलें और पेन्तिकुस्त के दिन में १२० लोगों ने जो किया वही करें - अर्थात् जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी; अन्य भाषा में बातें करना आरंभ कर दें। (देखें प्रेरितों के काम २:४)।

मैं यह कदापि विश्वास नहीं करती हूँ कि उद्धार पाने एवं स्वर्ग जाने के लिये हमें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाना चाहिये, परन्तु मैं यह विश्वास करती हूँ कि हमें पवित्र आत्मा के बपतिस्मा और सामर्थ की आवश्यकता है ताकि इसके द्वारा से हम अपने प्रतिदिन के जीवन में जय प्राप्त करते जायें। हमें शरीर के ऊपर प्रतिदिन जय पाने के लिये परमेश्वर की सामर्थ की आवश्यकता है जिस प्रकार से यीशु ने कलवरी पर शत्रु पर जय और अधिकार पाई।

मैं उस प्रकार की व्यक्ति हूँ कि वह सब जो परमेश्वर मुझे देना चाहता है मैं उसे ले लूँ। मैं अक्सर कहा करती हूँ कि मैं एक "आत्मिक शूकर" हूँ। जबकि मैं बिना पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के स्वर्ग जा सकती हूँ, मगर मैं जानबूझकर ऐसा क्यों करूँ? मैं पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाकर अन्य भाषा में बातें नहीं कर सकती हूँ, मगर मैं ऐसा क्यों करने लगूँ?

परमेश्वर ने इन सब बातों को हमारे लिये ही भेजा है और उपलब्ध कराया है इसलिये कि वह चाहता है कि हम उन्हें प्राप्त करें, और जबसे उसने भेजा है, मेरा इरादा है कि मैं उन्हें भरपूरी से ग्रहण करूँ। *मैं परमेश्वर के बिना कुछ भी करने का इरादा नहीं करती हूँ जिससे लोगों को शांत करने के लिये कुछ दिया जाए।* यदि परमेश्वर चाहता है कि मुझे कुछ हो जाये, मैं इसे सहर्ष खुलकर स्वीकार करने के लिये तैयार हूँ।

अन्य भाषा में बात करने का मूल्य

क्योंकि जो अन्य (अज्ञात) भाषा में बातें करता है; वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिये कि उसको कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें (समझने के लिये स्पष्ट नहीं) (पवित्र) आत्मा में होकर बोलता है।

इसलिये यदि मैं अन्य (अज्ञात) भाषा में प्रार्थना करूँ, तो मेरी आत्मा (पवित्र आत्मा के द्वारा से मुझमें) प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती (यह कोई फल नहीं लाती किसी की मदद नहीं करती है)।

> सो क्या करना चाहिये? मैं आत्मा से प्रार्थना करूँगा (पवित्र आत्मा के द्वारा से जो मेरे भीतर है।) और बुद्धि (बुद्धिमानी) से भी प्रार्थना करूँगा; मैं आत्मा से गाऊँगा (पवित्र आत्मा के द्वारा से जो मेरे भीतर है।) और बुद्धि (बुद्धिमानी) से भी गाऊँगा। (१ कुरिन्थियों १४:२,१४-१५)

जब हम अन्य भाषा में बातें करते हैं, तो हम परमेश्वर से गुप्त और भेद की बातें करते हैं। हम एक आत्मिक भाषा में बातें करते हैं जिसे शैतान नहीं समझ सकता है। जबकि हम भी इसे नहीं समझ सकते हैं। इस परिच्छेद के पद १४ में पौलुस ने कहा कि जब हम आत्मा में प्रार्थना करते हैं, तब हमारी समझ या हमारी बुद्धि काम नहीं देती है। दूसरे शब्दों में, हमारा मन नहीं समझता है, परन्तु हमारी आत्मा की उन्नति होती है, एवं बढ़ती होती है। यहूदा पद २० कहती है कि जब हम पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हैं तब हमारी उन्नति होती जाती है और फिर हम अपने अति पवित्र विश्वास में बढ़ते जाते हैं।

बहुत बार मैंने निराशा और शारीरिक थकान का अनुभव किया और तब भी मुझे काम करना पड़ा। अक्सर मुझे मेरे कानफ्रेन्स में एक शिक्षा सत्र लेने की जरूरत पड़ती है, और उस समय मैं निश्चय अपने आप में एक विश्वास की महिला के रूप में जिसका परमेश्वर ने अभिषेक किया हो या सामर्थ से भरा हो, और जो दूसरो की सेवा करती हो, ऐसा महसुस नहीं करती हूँ। ऐसे समय में मैंने पवित्र आत्मा में प्रार्थना करना सीखा है, या मैं अन्य भाषा में बोलती हूँ। जब मैं ऐसा करने लग जाती हूँ, तब मैं अक्षरस जीवन को महसुस करती हूँ और परमेश्वर की सामर्थ मुझे मेरे "भीतरी मनुष्यत्व" से ऊपर उठाता है और मुझको सेवकाई करने के लिये शक्ति देता है (देखे इफिसियों ३:१६)।

यूहन्ना ७:३८-३९ में यीशु ने कहा, "जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।" उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे। इस परिच्छेद से हमें यह इशारा मिलता है कि, यीशु पवित्र आत्मा के विषय में कह रहा था, जो उंडेले जाने पर था। मैं विश्वास करती हूँ कि अन्य भाषा में बातें करना मतलब बहती नालियों से आवाज़ होने के जैसा है अर्थात् जो लोग आत्मा से भरे रहते हैं उनमें जीवन के जल की नदियाँ बहती है।

जब हम अन्य भाषा में बातें करते हैं, तब हम अक्सर अपने जीवन के लिये बड़ी बड़ी बातें भविष्यद्वाणी करते हैं। अगर हम जान जाएंगे जो कुछ हम कर रहे थे, यह भेद हमें इतना बड़ा लगेगा, जिसका हम कभी विश्वास नहीं कर सकते; इस कारण, अन्य भाषा में बातें करना एक बहुत बड़ा तरीका है कि

"जो बातें हैं ही नही, उनका नाम ऐसा लेता है। (रोमियो ४:९७), कि मानों वे हैं, और मैं विश्वास करती हूँ कि हमें उसके पद चिन्हों का अनुसरण करना चाहिये।"

अन्य भाषा में प्रार्थना करने का तरीका सही तरीका है जबकि हम नहीं जानते हैं कि "प्रार्थना किसी रीति से करना चाहिये" (रोमियों ८:२६)। अक्सर ऐसी प्रार्थनाएँ हमें अस्पष्ट लग सकती हैं, जैसे आहें मारना एवं चिल्लाना। *एमप्लीफाइड बाइबल वर्शन* रोमियों ८:२६ में कहती है कि पवित्र आत्मा हमारे अन्दर से प्रार्थना करता है, "परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिये बिनती करता है।"

मैं ईमानदारी के साथ कहना चाहती हूँ कि ये बातें उनको समझाने के लिये कठिन है जिन्होंने इसका अनुभव नहीं किया है, परन्तु एक बार किसी व्यक्ति ने इसका अनुभव कर लिया हो, तब तो इस अदभुत आत्मा की भाषा की सच्चाई से इंकार नहीं किया जा सकता है।

हर एक की प्रार्थना की भाषा थोड़ी सी भिन्न होती है, और आरंभ से शैतान प्राय: सभी को यह निश्चित तौर से कह देगा कि उनकी जो खास भाषा है वह तो बिल्कुल ही तेज और स्पष्ट है।

जिस दिन मैं पवित्र आत्मा से भर गयी थी, उसी दिन मुझे मेरी आत्मिक भाषा नहीं मिली। परन्तु कुछ समय के बाद, जब मैं पैंट बून के द्वारा से लिखी गयी पुस्तक *ए न्यू सांग* को पढ़ रही थी, तब मुझे प्रेरणा मिली कि मैं अन्य भाषा में बोलने की कोशिश करूँ। पैट यह वर्णन कर रहे थे कि उनके साथ क्या कुछ हुआ था जब उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला और अन्य भाषा बोलना शुरू किये थे। और बुलन्द किस्म का व्यक्ति होने के कारण, मैंने सामान्य तौर से अपना मुँह खोलकर उन विदेशी शब्द को बोलना आरंभ कर दिया जो मेरे हृदय में आते गया। मुझे केवल चार शब्द मिला। शैतान को अच्छी फुसफुसाहट जो कि सचमुच में झूठ था, मैं कायल हो गई कि मुझे चार शब्द मिले हैं। इस कारण मैं ऐसे ही उसे वरदान को एक तरफ रख दी और अपने कारोबार में लग गई।

जब हम शैतान के झूठ पर विश्वास करते हैं, तब तो हम धोखा खाते हैं। मैं भी घोखा खा गई जब मैं ये विश्वास करने लगी कि जो कुछ मैंने परमेश्वर से प्राप्त किया है वह सच नहीं है।

बहुत दिनों के पश्चात् जब मैं अपनी बेटी की मदद के लिये असाइनमेन्ट होम वर्क के लिये शब्दकोष में कुछ खोज रही थी, तब मैं कुछ लैटिन शब्द के

बारे में जान पायी जो कि मुझे जिस दिन मैं अन्य भाषा में बातें की परमेश्वर ने उन्हें दिया था। शब्द कोष से जिन शब्दों के अर्थ को मैंने सीखा था उसका मतलब यह था, "सर्वशक्तिमान स्वर्गीय पिता।" मै उन बातों में चिपकी न रही। मैं जान गयी कि परमेश्वर मुझसे उस शब्दकोष के द्वारा से बातें कर रहा है, और सबसे बढ़कर, और मेरे सन्देह करने से परे उसने मुझे दिखाया कि ये मेरे साधारण शब्द नहीं हो सकते। और जबकि मैं किसी भी प्रकार से लैटिन भी नहीं जानती थी और यह भी नहीं जानती थी कि कैसे उन शब्दों को जमाकर एक वक्तव्य की तरह लाना है। ये कोई संयोगवश वाली बात नहीं थी - परन्तु पवित्र आत्मा ने मुझे यह भाषा दी थी और मुझे उस नई खोज की ओर ले जा रहा था जिसके द्वारा से मेरे विश्वास में बढ़ोतरी होती और जो कुछ परमेश्वर ने मुझे अनुग्रह करके दिया था उसे शैतान मुझसे चुरा न पाये उससे बचाता था।

शैतान हमें धोखा न दे सके, उसको रोकने का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तरीका यह है कि हम विश्वास के द्वारा से जीयें। विश्वास जो कुछ हम देखते और महसुस करते हैं उससे कहीं परे है इसका रिशता हम जितना हृदय की गहराई से जानते हैं, वहाँ से है।

जब मैंने एहसास किया कि जो कुछ मेरे साथ हुआ है, तब मैं बहुत उत्तेजित हो गई। मेरा हृदय विश्वास से भर गया इसलिये कि मैंने उस खास विषय में परमेश्वर से सुनी थी। और उस निश्चित समय से, शैतान मुझसे कभी भी दुबारा वरदान को चुरा नहीं सका।

और मैं बड़ी कोमलता से उन चार थोड़े शब्दों को जिनको मैंने पाया था इस्तेमाल करने लगी, और फिर तुरन्त परमेश्वर ने मेरी आत्मिक प्रार्थना भाषा और अधिक शब्दों को जोड़ दिया। और अभी मैं अन्य भाषा में नियमित रूप से प्रार्थना करती हूँ। यह मेरे प्रतिदिन के जीवन का हिस्सा है। मैं परमेश्वर से पवित्र आत्मा के द्वारा से बातचीत करती हूँ और मैं अपने सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करती हूँ कि जो कुछ मैं प्रार्थना करती हूँ वह एक सिद्ध प्रार्थना है जिसे हम सभी को प्रार्थना करने की जरूरत है।

विश्वास ही वह एक मात्र तरीका है जो हमें परमेश्वर के विश्राम में लाता है (इब्रानियों ४:३)। यह सारे प्रश्नों का उत्तर देता है और जीवन की दुविधा को दूर करता है। हम सामान्य तौर से भरोसा करते है; और जीवन यूँ ही अदभुत होता जाता है। यद्यपि हमारे पास समस्याएँ है, फिर भी जीवन अदभुत होता है क्योंकि हम आशा से भरपूर रहते हैं, यह विश्वास करते हुए कि हमसे भी बढ़कर कोई हमारी ओर है (रोमियों ८:३१; १ यूहन्ना ४:४)।

१ कुरिन्थियों १४:१३ में हमसे कहा गया है कि हमको प्रार्थना में अन्य भाषा का अनुवाद करने आना चाहिये, और मैं विश्वास करती हूँ कि हम अनुवाद करते हैं, परन्तु अक्सर जब हम प्रार्थना करते हैं उस समय नहीं होता है। उदाहरण के लिये, जब मैं सेवकाई कर रही होती हूँ, तब मैं उन दिनों में मैं बहुत अन्य भाषा में प्रार्थना किया करती हूँ। मैं विश्वास करती हूँ कि जिस तरीके से मैं कान्फ्रेन्सों में अगुवाई पाती हूँ, और जो जो बातें मैं करती और प्रचार करती हूँ तो ऐसा लगता है कि सचमुच में लोगों की जरूरतें उस अनुवाद के द्वारा से पूरी हो जाती है दिन भर आत्मा में प्रार्थना करने के द्वारा से।

प्राय: अक्सर लोग मुझसे कहा करते हैं कि उन्हें ऐसा लगता है कि मानों मैं उनकी समस्याओं को जान जाती हूँ और सीधा उनसे बातचीत करती रहती हूँ। वे कहते हैं, "ऐसा लगता है कि आप हमारे घर में रहते हैं।" यह सच है कि मैं उनके घर में नहीं रह रही थी, मगर पवित्र आत्मा उनके साथ रहता रहा। वह मेरे द्वारा से उनकी सेवकाई कर रहा है। क्योंकि वह जानता है कि उनकी समस्या क्या क्या हैं, इसलिये वह उनसे सीधी बातचीत कर सकता है।

आत्मा में निरंतर प्रार्थना करना मुझे लोगों की सेवकाई करने के लिये मदद करता है। जो कुछ मैं उनसे कहती हूँ मुझे सामान्य सी लगती हैं,लेकिन उस समय उनके लिये ये बातें एकदम अलौकिक लगती हैं।

मैं दृढ़ता से विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर हमारी अगुवाई अलौकिक रूप में स्वाभाविक तौर से कर सकता है। वह सब जो कि अलौकिक है "शैतानी" या "हैवानी" नहीं हो सकती है। हम एक ठोस नागरिक हो सकते हैं और तब भी पवित्र आत्मा से भरे रह सकते हैं। हमे "ढीले" होने की जरूरत ही नहीं है और "बादल के साथ इधर उधर बहने की" थोड़ी भी जरूरत नहीं है।

अनजान से न डरें

> सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के बालों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने माँगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा (लूका ११:१३)।

यदि आपने पवित्र आत्मा और उसके वरदानों का अनुभव नहीं किया है तो मेरी आपसे गुज़ारिश है कि आप उससे न डरें। परमेश्वर कभी भी आपको अच्छे वरदान के बदले में बुरा वरदान नहीं देगा जिसे आप माँगते हों।

कुरिन्थ की कलीसिया की पत्री में पौलुस ने उन्हें लिखा, "क्या सबको चंगा करने का वरदान मिला है? क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं? क्या सब अनुवाद करते हैं।" (१ कुरिन्थियों १२:३०)। इसका सही जवाब है नहीं। यह पवित्र शास्त्र का एक संदर्भ है जो उन लोगों के द्वारा से लिया गया है जो अन्य भाषा बोलने के खिलाफ में मुद्दे खड़े करते हैं। वे अपने आपको दिलासा देते रहते हैं कि पौलुस ने स्पष्ट कहा है कि सभी अन्य भाषा में बातें नहीं कर सकते हैं। यह बात सच थी कि पौलुस ऐसा कह रहा था कि जब यह सभा में बोली जाये तो इसके अनुवाद की क्या आवश्यकता है। वह उन सभी नया जन्म पाये हुए विश्वासी लोग जिन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था और अन्य भाषा के साथ परमेश्वर के गुप्त भेद की बातें कहते थे उनके बारे में नहीं कह रहा था। सभी विश्वासियों को "चंगाई का वरदान", नहीं दिया जाता है फिर भी बाइबल कहती है कि सभी विश्वासी लोग बीमारों पर हाथ रख सकते हैं ताकि वे सब चंगे हो जाये।

यह चिन्ह केवल उनके लिए है जो विश्वाह करते है

> जो विश्वास करते हैं उनके साथ ये चिन्ह होगे ये कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई भाषा बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और (यद्यपि) यदि वे नाशक वस्तु पी भी जाएँ तौभी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे। (मरकुस १६:१७-१८)

मरकुस की पुस्तक में, यीशु के स्वर्ग उठा लिये जाने के पहले उसकी ये संकलित अंतिम बातें हैं। अगर ये उसके अंतिम वचन हैं, तो ये बहुत महत्वपूर्ण होंगे।

मरकुस १६:१५ में जो उल्लेख आया है जिसे हम महान आदेश कहते हैं: "और उसने उनसे कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि (सारे मानव जाति) के लोगों को सुसमाचार (प्रेम संदेश) प्रचार करो।" हर चर्च से लोग इस पद के अनुसार काम करने का प्रयास करते हैं। फिर भी इन आखरी पदों में अर्थात् १७ एवं १८ में यीशु ने कहा कि विश्वासी लोग दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई भाषा बोलेंगे, और बीमारों पर हाथ रखेंगे। कुछ कलीसियाएँ इस शिक्षा का अभ्यास नहीं करती हैं बल्कि वे इसके विरुद्ध शिक्षा दिया करते हैं।

मैं ईमानदारी से कहना चाहती हूँ कि एक पल जरा सोचें कि अगर मरकुस १६:१५ में यीशु ने कहा है कि हम उसका अभ्यास करें, तब तो आप अपनी

आत्मा में यह भी जान लेंगे कि पद १७ एवं १८ को भी उसने अभ्यास करने के लिये कहा होगा। हमारे लिये यह बहुत खतरनाक बात है कि हम पवित्रशास्त्र के बीच में चुनाव करें। हम कुछ एक वचन को जो हमारे लिये उपयुक्त होता है उसे केवल ग्रहण न करें और बाकी को छोड़ न दें - कम से कम हम जो पूरे सुसमाचार को मानते हैं ऐसा न करें। हमें परमेश्वर के वचन की सम्पूर्ण परामर्श की जरुरत है, सिर्फ उसके टुकड़ों के नहीं।

शैतान सुसमाचार की सामर्थ को बहुत से कलीसियाओं और विश्वासियों के जीवन से हटाने में बहुत सफल रहा है। वह नहीं चाहता है कि कोई भी उद्धार पाये या उसको जाने और उसकी सामर्थ को जीवन को प्रदर्शित करे। वह यह जानता है कि अगर विश्वासी के जीवन में परमेश्वर की सामर्थ प्रगट हो जाती है और निश्चय है कि वे लोग अपने जीवन से दूसरों को प्रभावित करेंगे और परमेश्वर के द्वारा से इस्तेमाल किये जायेंगे ताकि उसके राज्य से बहुत सारे लोग बचाये जायें।

जी हाँ, पौलुस का संकेत इस ओर है कि सभी को चंगाई का वरदान नहीं मिलता है, और न सभी को अन्य भाषा के अनुवार का वरदान दिया जाता है। परन्तु मैं फिर से ज़ोर देना चाहती हूँ कि पौलुस विश्वासियों के ऊपर पवित्र आत्मा के द्वारा प्रगटीकरण के उपलब्धि के बारे में नहीं कह रहा था; वह उस अलौकिक सामर्थ के बारे में कह रहा था जो कि विश्वासियों का विशेष समय में जन समूह के मध्य में सेवा करने एवं भलाई और सबको उन्नति के लिये दिया जाता है।

इस पुस्तक में आगे मैंने पवित्र आत्मा के वरदान के बारे में विस्तृत रूप में समझाने की कोशिश की है, जो कि सब विश्वसियों की सहायता के लिये होता है जिसे वह विश्वासियों को बाँट देता है ताकि उनका जीवन सरल एवं अत्यधिक प्रभावशाली हो। हमें बड़ी वरदानों के "धुन में रहना" (बड़ी चाह)है (देखें १ कुरिन्थियों १२:३१)। और पवित्र आत्मा हममें से प्रत्येक से जैसी जरुरत है उसी समय के अनुसार बहने देगा।

पौलुस अन्य भाषा में बोलता था

मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करती हूँ, कि मैं तुम सबसे अधिक अन्याय (अनजान)भाषा में बोलती हूँ। (१ कुरिन्थियों १४:१८)।

पौलुस बड़ा सौभाग्यशाली था कि वह इस योग्यता कि दूसरी भाषा में बातें कर सकता था, इसके बावजूद वह पवित्रशास्त्र के अनुसार परख सकता था कि जिसका वह बार बार अभ्यास कर सकता था।

एक बार जब हमारा पवित्र आत्मा के द्वारा से बपतिस्मा हो जाता है, हम जब भी चाहते हैं अन्य भाषा में बातें कर सकते हैं। उस समय हमें और कोई खास अनुभव के लिये ठहरने की जरुरत नहीं जिससे हम ऐसा करें। जैसे हम अपनी मातृभाषा में प्रार्थना करते हैं जब भी हम चाहते हैं, वैसे ही हम अन्य भाषा में प्रार्थना कर सकते हैं जब हम चाहते हैं।

पौलुस ने साफ मना किया कि किसी को अन्य भाषा में बोलने से मना न करो: "सो (अन्त में), हे भाइयों, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो (प्रेरित होकर, प्रचार करने, सिखाने और परमेश्वर की मनसा और योजना का अनुवाद करने), और भाषा (अनजान) अन्य भाषा बोलने से मना न करो।" (१ कुरिन्थयों १४:३९)।

यद्यपि पौलुस ने विशेषकर किसी को अन्य भाषा में बोलने से मना नहीं किया है, किन्तु आज के जो आत्मिक अगुवे हैं वे अपने अधिकार के कारण लोगों को अन्य भाषा बोलने से मना करते हैं। किस प्रकार से एक व्यक्ति जान सकता है कि वह वचन के अनुसार जीवन व्यतीत कर रहा है? जैसा मैंने देखा है, और मैं विश्वास करती हूँ कि बहुत सारे लोग जो अनुभव उन्होनें नहीं किया उसे दूसरे लोगों को पाने से ऐसा ही मना करते हैं। यह बिल्कुल गलत है, बल्कि जो कोई इस प्रकार के अधिकार में हैं उन्हें ऐसी बातों को बड़े आदरपूर्वक और बुलन्द होकर सामना करना चाहिये, जिससे पवित्र शास्त्र के अनुसार उनके विश्वास का मत दृढ़ होना चाहिये जब समझाईश दी जाती है।

पौलुस ने इस बात को भी स्पष्ट किया है कि आत्मा में प्रार्थना करना (पवित्र आत्मा के द्वारा से) यह बुद्धि से प्रार्थना करने के समान नहीं है, क्योंकि १ कुरिन्थियों १४:१४-१५ में उसने कहा है कि वह दोनों को किया करता था, "इसलिये यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूँ, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। सो क्या करना चाहिये? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूँगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा, मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा।"

मैं यह नहीं कह रही हूँ कि कोई अपनी मातृभाषा में आत्मा के द्वारा से प्रार्थना नहीं कर सकता है। यह, सचमुच में, एक कीमती बात है करने के लिये। परन्तु पौलुस इस परिच्छेद में इसके विषय में नहीं कह रहा था। जब पौलुसने आत्मा में प्रार्थना करने के विषय में कहा, उसका मतलब यह था कि वह अन्य भाषा में प्रार्थना कर रहा था।

क्या अन्य भाषा पहली शताब्दी की कलीसिया के साथ लुप्त हो गई?

अगर पहली शताब्दी के साथ अन्य भाषा लुप्त हो गई है, जैसे कितने लोग दावा करते हैं, तब तो इस पृथ्वी पर करोड़ों ऐसे लोग हैं जो आज भी इसका नियमित रूप से अभ्यास करते हैं, जैसे उनके बाप - दादा उनके पहले ऐसा ही अभ्यास किया करते थे जो उनके लिये कभी था ही नहीं। मैं सन्देह करती हूँ कितने लोग ऐसे हैं जो तुतलाती भाषा में बातें करते हुए अपना समय व्यतीत करते हैं, वे यह सोचकर की हम अन्य भाषा में बातें करते हैं।

मैं एक व्यवहारिक व्यक्ति हूँ। जैसे कि, मैं उस प्रवृति की नहीं हूँ जो फिज़ूल बातों में अपना समय गंवाने एक आदरणीय महिला हूँ यश के साथ। मेरा पति है, चार बड़े बच्चे, आठ नाती पोती और बहुत सारे बन्धु हैं - और फिर मैं अपने प्रतिदिन के जीवन में अन्य भाषा में बोलती हूँ। दूसरे शब्दों में, मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ, मगर मैं नियमित रूप से असाधारण कार्य को करती हूँ।

अन्य भाषा पहली शताब्दी की कलीसिया के साथ लुप्त नहीं हो गई है। वास्तविकता तो यह है कि यह लुप्त नहीं हुआ है; बल्कि कहीं न कहीं कोई न कोई इस आग को ज्वलंत रखा है। पहली शताब्दी से लेकर अब तक बहुतों ने अन्य भाषा को अलग करने की कोशिश की, परन्तु वे इस कार्य में हमेशा से असफल रहे।

कभी कभी हमसे लोग जो कुछ कहते हैं उस पर बिना सोचे समझे जाँचे विश्वास कर लेते हैं। मैं भी वैसा ही कुछ विश्वास किया करती थी कि अन्य भाषा और आत्मा के दूसरे वरदान वर्तमान समय के लिये नहीं है - जब तक मैं पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं पाई तब तक वैसे थी। एक बार जब लोग आत्मा में डूब जाते हैं, तब उन्हें कायल करना मुश्किल हो जाता है कि वे आत्मा से भरे नहीं हैं और अन्य भाषा और आत्मा के दूसरे वरदान आज के लिये नही हैं।

परमेश्वर के पीछे चलने में मुझे कीमत चुकानी पड़ी, जैसे कि यीशु ने कहा है वैसे ही। मत्ती १६:२५-२६ में उसने कहा कि अगर हम इस पृथ्वी पर अपने जीवन को बचायेंगे, तो हम अपना स्वर्गीय जीवन को खो सकते हैं। मैं मित्रों को खो सकती हूँ परन्तु परमेश्वर के साथ संबंध को नहीं। मैं पवित्र शास्त्र पर विश्वास करूँगी लोगों पर नहीं।

जो लोग अन्य भाषा बोलने के खिलाफ में रहते हैं वे लोग हमेशा अपने तर्क को दृढ़ रखने के लिये इन पदों का सहारा लेते हैं:

> प्रेम कभी टलता नहीं (कभी मुरझाता नहीं या बेकार नहीं होता या उसका अंत नहीं होता)। भविष्यद्वाणियाँ हों (ईश्वरीय इच्छा और उद्देश्य के अनुवाद करने का वरदान), तो समाप्त हो जाएँगी; भाषाएँ हों तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा (इसकी कीमत घट जाएगी और सच्चाई उसका स्थान ले लेगी)। क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, (अपूर्ण व सिद्ध नहीं), और हमारी भविष्यद्वाणी (हमारी शिक्षा) अधूरी (अपूर्ण व सिद्ध नहीं)। परन्तु जब सर्वसिद्ध (सर्वांग) आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा (प्राचीन होना, सुनसान होना और जगह ले लेना)। १ कुरिन्थियों १३:८-१०)।

इस वचन के अनुसार, एक ऐसा समय आ रहा है, जहाँ पर ज्ञान मिट जाएगा और भाषाएँ जाती रहेंगी। मैंने अभी तक नहीं सुना है कि कोई यह विश्वास करता हो कि ज्ञान मिट गया है; वास्तविकता तो यह है कि इस दुनियां में ज्ञान तेजी से बढ़ रहा है। फिर भी इन्हीं में से कुछ ऐसे लोग हैं जो यह विश्वास करते हैं कि ज्ञान नहीं मिटा है तो वे लोग यह भी विश्वास करते शिक्षा देते हैं कि भाषाएँ जाती रही हैं। क्यों एक वरदान रहेगा और दूसरा चला जाएगा जबकि दोनों पवित्र शास्त्र पर आधारित है तो?

यीशु को इस वचन के अनुसार "सर्वसिद्ध" कहा गया है। एक ठहराए हुए समय में वह अपने राज्य को स्थापित करने के लिये लौटेगा, एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी/और इस समय हम सब एक अपूर्ण संसार में रहते हैं, जहां पर हमें एक दूसरे की सहायता की जरूरत होती है। पवित्र आत्मा और उसके सब वरदान हमारे लिये परमेश्वर पिता और पुत्र यीशु की ओर से भेजे गये हैं ताकि हमारी सहायता हो।

प्राय: लोग हमें उन सब बातों को समझाना चाहते हैं जिन बातों से उन्हें आराम न मिला हो और जिन बातों से वे उकते गये हो, और अगर हम उनके मुद्दों पर ध्यान से विचार करेंगे तो हम पायेंगे कि उनकी बातों में कोई सच्चाई नहीं पायेंगे।

अन्य भाषा का सही इस्तेमाल

अन्य भाषा बोलने के विरुद्ध में दूसरा तर्क स्पष्ट रुप में सामने आता है कि लोग इसका गलत इस्तेमाल करते हैं। वे सभ्यता और क्रम से हटकर, अनुचित समय और अनुचित लोगों के सामने बोलना आरंभ कर देते हैं। कुरिन्थ के लोग भी ठीक यही काम किया करते थे, इसलिये पौलुस ने उन्हें निर्देश देते हुए पत्री लिखी कि अन्य

भाषा का सही इस्तेमाल हो एवं आत्मा के वरदानों का भी सही अभ्यास हो, जिस प्रकार से १ कुरिन्थियों १४:४० में वर्णन किया गया है, कि "सभ्यता और क्रमानुसार की जाएँ।"

इसी अध्याय के २२ और ३२ पद में पौलुस ने उनसे कहा कि जब वे इकट्ठे होते हैं तब किस प्रकार से अन्य भाषा में बातें करना है, यह निर्देश देते हुए कि जब अन्य भाषा बोला जाय तो इसका अनुवाद भी किया जाय जिससे सबको समझ में आ जाय। उसने कहा कि यदि कोई अन्य भाषा बोल रहा है और दूसरा अन्य व्यक्ति सुनेगा तब तो उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे और तब वह मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा। उसने कहा कि जब लोग अन्य भाषा बोलते हैं तब वे अपनी आत्मा को वश में भी रखते हैं और आवश्यकतानुसार चुप भी रहते हैं। उसने कहा कि अन्य भाषा अविश्वासियों के लिये चिन्ह है, विश्वासियों के लिये नहीं, इस कारण उनके साथ सावधानी के साथ बर्ताव किया जाय जिससे वे भटक न जायें।

जी हाँ, पौलुस ने अन्य भाषा के वरदान की अधिकता को खोज लिया एवं उसका समाधान भी ढूँढ़ लिया। परन्तु उसने यह आज्ञा कभी नहीं दिया कि इसकी अधिकता के कारण अन्य भाषा को दूर किया जाए।

हम एक बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं कि हम परमेश्वर के वरदानों को रखे हुए हैं इसके बदले में हमें यह सीखना चाहिये कि हम उसका सही इस्तेमाल कैसे कर सकें।

और एक दूसरा कारण है जिसकी वजह से कुछ लोग अन्य भाषा बोलने के विरूद्ध में है वह यह है कि उन्होनें यह अनुभव किया है कि जो लोग अन्य भाषा बोलते हैं उनका स्वभाव बहुत बुरा होता है, वे कहते हैं "मैं तुमसे बेहतर हूँ, मैं तुमसे बहुत आत्मिक हूँ।" यह बिल्कुल गलत है और यह परमेश्वर का हृदय नहीं है। परमेश्वर हम सभी से समान प्रेम करता है, और अन्य भाषा में बोलना किसी को बेहतर या उनसे अधिक पंसदीदा नहीं बनाता जो अन्य भाषा में नहीं बोलते हैं। मैं यह विश्वास करती हूँ कि कैसे भी, अन्य भाषा में बातें करना अलौकिक संसार का द्वार खोलता है जो कि सब विश्वासियों के लिये उपलब्ध है।

९
पवित्र आत्मा की भरपूरी को पाना

और मसीह के उस प्रेम को (यह कि तुम सचमुच में) जान सको (अभ्यास से, अपने अनुभव द्वारा), जो ज्ञान से परे है (बिना अनुभव के); कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी (परमेश्वर की अलौकिक उपस्थिति का नाप घनापन होना, पूर्णत: एक देह होकर भर जायें, और परमेश्वर के साथ बाढ़ की नाईं) तक परिपूर्ण (सदेह द्वारा पूर्ण) हो जाओ। (इफिसियों ३:१९)

पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बारे में ये सभी सूचनाएँ हमारे लिये बहुत ही कम महत्व की होंगी जब तक हम अपने जीवन में पवित्र आत्मा की भरपूरी को न पा लें, जिस प्रकार से इफिसियों ३:१९ में हमें निर्देश दिया गया है।

हमे सबसे पहिले भरना चाहिये उसके बाद भरपूर रहना चाहिये। भरने के लिये हममें सबसे पहिले इच्छा होना चाहिये।

अगर आपको याद होगा, कि मैं जीवन के ऐसे पड़ाव में आ चुकी थी जहाँ पर मैंने यह जाना कि अगर मैं मसीही होकर जीवन बिताई तो मैं जरूर कुछ न कुछ करके ही रहूँगी। जिस दिन मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला उस दिन मैं अपने आप में बहुत ही उत्तेजित महसुस कर रही थी।

मैं व्यक्तिगत रूप से यह विश्वास करती हूँ कि कभी कभी परमेश्वर हमारी गिड़गिड़ाहट का जवाब नहीं देता है क्योंकि वह चाहता है कि हम और खुले और उत्तेजित हों ताकि हम जान सकें कि वह हमारे जीवन में क्या कुछ करना चाहता है।

बहुत समय पहले मैंने एक डूबते व्यक्ति के बारे में उदाहरण दिया था वह जीवन और मृत्यु के बीच में बड़ा संघर्ष करना जारी न रख सका। मैं भी कुछ इसी डूबते व्यक्ति के समान थी। मैं भी जीवन के साथ इतना संघर्ष करती रही

कि आखिर मुझमें 'संघर्ष' करने की फिर क्षमता न रही, लेकिन ये सारी बातें मेरे जीवन के लिये लाभदायक सिद्ध हुई। मैं तो एकदम नीचे चली गई थी बस यही था कि मैं संसार में चली गयी होती। मैं उस महान चिकित्सक की बातों को सुनने के लिये तैयार थी कि वह मेरी आवश्यकतानुसार जो कुछ कहेगा मैं सुन लूँगी।

अगर कोई व्यक्ति कोई व्याधि के मारे मर रहा हो, या भयंकर पीड़ा का अनुभव कर रहा हो और पल भर के लिये भी ठहरा नहीं जा सकता, तब तो वे लोग वही करेंगे जो कुछ उस समय डाक्टर बोलेगा और बिना प्रश्न किये हुए वैसा ही करेंगे। हमें भी अपने जीवन में उसी खास पड़ाव में परमेश्वर के साथ चलते हुए आने की आवश्यकता है। वह हमारी आत्मा की "चिकित्सा" करना चाहता है, और हम तैयार रहें कि जो कुछ आत्मा की "चिकित्सा" करना चाहता है, और हम तैयार रहें कि जो कुछ वह हमें लिखित में परामर्श देगा उसे हम ग्रहण करेंगे।

उस समय परमेश्वर की ओर से जो परामर्श मेरे लिये था वह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के विषय में था, और उस समय से लेकर अब तक मैं आरोग्य अवस्था में हूँ।

इच्छा रखें

तू अपनी मुट्ठी खोलकर, सब प्राणियों को आहार से तृप्त करता है। (भजन संहिता १४५:१६)

यदि आप अपने जीवन में परमेश्वर के लिये अत्याधिक भूखे हैं, तब तो आप पवित्र आत्मा के बपतिस्मा पाने के काबिल हैं।

जीवन में पवित्र आत्मा की भरपूरी को पाना एक पवित्र बात है, जो कि एक अति आदरणीय, भययोग्य एवं सम्मानजनक तरीका है। परमेश्वर हमें अपनी सामर्थ से इसलिये सुसज्जित नहीं करता है ताकि हमारे साथ खेल तमाशा करे। वह उद्देश्य का परमेश्वर है। जो कुछ वह हमारे जीवन में करता है उसमें एक उद्देश्य होता है। परमेश्वर के उद्देश्य को खोजना और उसका अनुमोदन करना ताकि हम इससे लैस रहें यह हमारे जीवन का प्राथमिक खोज रहना चाहिये।

मैंने अपने जीवन में देखा है कि जब भी मैंने किसी वस्तु को पाने के लिये अपनी इच्छा शक्ति को मज़बूत रखा, तब तो मैं उसे पाकर ही रही। यह

इसलिये होता है कि हमारी सृष्टि उसी तरीके से हुई है कि जो हमारे निर्णय है उसके अनुसार से हमारी इच्छाएँ पूरी होती हैं और जो कुछ हम आवश्यकतानुसार करते हैं उससे हमारी इच्छा की मंजिल पूरी होती है।

मेरे पति, डेव, को अठारह वर्ष की आयु में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला। जिस कलीसिया में वे संगति के लिये जाया करते थे वहाँ पर ऐसी शिक्षाएँ नहीं दी जाती थीं परन्तु वे अपने जीवन में एक ऐसे पड़ाव में आ गये और जान गए कि कुछ न कुछ खो रहे हैं वह मेरे समान नहीं जानते थे कि यह क्या है। परन्तु उनकी दृढ़ इच्छा पाने की बनी रही तो इसलिये जब वे एक दिन वे विश्राम कक्ष में जाकर एक स्टॉल में बैठ गये और परमेश्वर से कहा कि वह उस स्थान से तब तक इधर उधर नहीं हिलेगा जब तक उस चीज को परमेश्वर से ना पा ले जिसकी वह खोज कर रहा है। और जैसे ही वे वहाँ बैठ गए, वहाँ उनकी परमेश्वर से मुलाकात हो गई, और वह पवित्र आत्मा से भर गये। और उसी समय उन्होंने अपनी आँखों में चंगाई प्राप्त किया। इसके पहले वे चश्मा लगाया करते थे, परन्तु परमेश्वर से इस अनुभव को पाने के पश्चात् वे कई वर्षों तक फिर पहने नहीं रहे।

डेव की दृढ़ इच्छा के बारे में परमेश्वर जानता था कि उनके लिये क्या महत्वपूर्ण थी।

हमारी इच्छाएँ हमारे बारे में बताती हैं कि सचमुच में हम कौन हैं। इसका संबंध सीधा हमारे इच्छा केन्द्र के साथ होता है जो हम चाहते हैं वह हमारे स्वभाव के बारे में बताती है। अगर हमें ज्यादा पैसा चाहिये, तो इसका मतलब यह है कि हम लालची हैं। यदि हमें ज्यादा सामर्थ चाहिये, तो इसका मतलब यह हो सकता है कि हम नियत्रंण की खोज में हैं। परन्तु यदि हम परमेश्वर की चाह ज्यादा कर रहे हैं, तो इसका अभिप्राय यह है कि हम अपने हृदय के स्वभाव के विषय में ज्यादा गंभीर हैं। मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर हमेशा अपने लोगों की इच्छा को पूरी करता है जो उसकी ज्यादा चाह रखते हैं - वह हमें कभी भूखा नहीं रखेगा (देखें भजन संहिता ३७:४)।

यदि आप परमेश्वर की ज्यादा इच्छा रखना चाहते हैं, तो ईमानदारी आप यह कह सकते हैं कि आप वैसा नहीं कर सकते हैं, इसलिये परमेश्वर से कहें कि वह आपको एक इच्छा दे। उससे कहें कि मुझे इच्छा दे कि मैं और ज्यादा इच्छा कर सकूँ। मैं संदेह करती हूँकि आप बिना इच्छा के हैं। अगर आप परमेश्वर को ज्यादा नहीं खोज रहे होते तो आप कदापि इस पुस्तक को इतनी दूर तक नहीं पढ़ सकते थे।

परमेश्वर आप से वहीं मुलाकात करेगा जहाँ पर आप हैं। परमेश्वर मुझसे मेरी ऑटोमोबाइल में मुलाकात किया, और डेव से उसके कार्यस्थल के विश्राम कक्ष में मुलाकात किया। यह सुनने में एकदम अनुचित लगता है, क्या सही नहीं है? बहुतसे लोग यह सोचते हैं कि परमेश्वर केवल उनके चर्च में ही स्पर्श कर सकता है और कोई दूसरी जगह में नहीं जैसे कि हम इस पुस्तक में वर्णन कर चुके हैं। परन्तु परमेश्वर हमसे वहीं मिलता है जहाँ पर हम होते हैं। और जहाँ कहीं वह एक भूखे व्यक्ति को देखता है, उस व्यक्ति को खिलाने के लिये चले जाता है।

परमेश्वर हमसे हमारी कमी घटी और आवश्यकता के समय मुलाकात करता है, और वह अपनी पवित्र आत्मा से भरता है ताकि हमारी सहायता करे और हमें हर प्रकार से भरपूर एवं आशीषित करे। मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहती हूँ कि आप इसी समय परमेश्वर को पुकार उठें वहीं से जहाँ पर आप हैं। मैं विश्वास करती हूँ वह आपसे वहीं मिलेगा जहाँ पर आप हैं और आपकी सहायता करेगा जहाँ पर आपकी आवश्यकता है।

खुले रहें

> फिलिप्पुस ने नतनएल से मिलकर उससे कहा, कि जिसका वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हम को मिल (खोज) गया; वह यूसुफ का (कानूनन) पुत्र, यीशु नासरी है। नतनएल ने उससे कहा, (नासरत से) क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है? फिलिप्पुस ने उससे कहा, चलकर देख ले। (यूहन्ना १:४५-४६)

नतनएल के पास जो विचार था, कम से कम वह एक खुला हुआ था यद्यपि वह देखने में गलत था। मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर भी हम में से प्रत्येक से ऐसा ही चाहता है।

यदि आपके पास पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के विषय में जानकारी नहीं (या इसके विषय में नकारात्मक जानकारी आपके अन्दर भर दी गई) है, अन्य भाषा में बोलने, बीमारों को चंगा करने, और दूसरी अन्य बातें हैं जो परमेश्वर से संबंध रखती हैं, तब तो आपका जो विचार है, स्वाभाविक, एकदम छोटा है संकीर्ण और वास्तव में एकदम नकारात्मक है। इसलिये मैं आपसे कहती हूँ कि आप खुले रहें। पवित्र शास्त्र से अपने लिये खोजें और परमेश्वर से कहें कि आप पर सच्चाई को प्रकाशित करे।

इस पुस्तक में जितनी चर्चा पवित्र आत्मा के बपतिस्मा और अन्य भाषा में बोलने के विषय में की गई है वह सब आपको अनजान एवं विदेशी लग सकती हैं। हो सकता है कि यह कुछ ऐसा है जिसे आपने कभी न सुना हो। मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि इस विषय में आप परमेश्वर के वचन को पढ़े। आप अपने लिये आसमान की ओर देखिये। परमेश्वर से कहें कि उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ संगी वारिस होने के कारण जो मेरा अधिकार है वह सब मुझे दीजिये। आगे को आप आत्मिक कंगाली में जीवन न बितायें। पवित्र आत्मा मिल गया है करके बस इतने में प्रतिदिन खाली रहकर संतुष्ट न होवें। बल्कि अपने जीवन में उसकी परिपूर्णता पाने के लिये उसका स्वागत करें।

कुछ लोग अपनी कार खाली जगह देख देखकर धुँआ छोड़ते हुए चलाते हैं। इसी प्रकार के कुछ मसीही हैं जो आत्मिक हैं। उनके पास बस एक दिन के लिये परमेश्वर की सामर्थ रहती है और बाकी खाली, यह भी एक प्रकार का संघर्ष है। यह सचमुच में दुखदायी बात है जबकि बहुत अधिक सामर्थ उपलब्ध है।

यदि आपको परमेश्वर की अधिक सामर्थ की जरूरत है, तो मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि आप नतनएल के समान बनें। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि भूतकाल में आपने क्या सुना था, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आपके विचार क्या कुछ होंगे, परन्तु कम से कम आकर के तो देख लें। अपने आपको जाँच ले।

जैसे हमने प्रकाशित वाक्य ३:२० में देखा है, कि यीशु बहुतों के हृदय के द्वार पर खड़ा इसी समय खटखटा रहा है परन्तु हमें याद रखना चाहिये कि दरवाजे का मूठ हमारी ओर है। जैसे मैंने पहले भी कहा है कि पवित्र आत्मा एक कोमल व्यक्ति है; वह हमारे जीवन में कभी जबरदस्ती नहीं करेगा। हमें उसका स्वागत करना चाहिये।

पवित्रआत्मा की बातों को ग्रहण करने के लिये तत्पर रहें। अपने हृदय के द्वार को खोल दें अपने विश्वास की ओर थोड़ा बढ़ाते हुए। पतरस के समान बनें - एक ऐसा व्यक्ति जिसने समूह में रहकर भी नाव से निकलकर पानी पर चलने लगा। शायद पतरस के पेट में तितलियाँ रही होंगी, इसलिये वह नाव से निकल पड़ा और जब तक उसकी आँखें यीशु की ओर लगी रही, वह सब कुछ सही किया। (देखें मत्ती १४:२३-३०)।

मोटी कपाल के लोग संकीर्ण - दिमाग वाले होते हैं। वे कम सोचते हैं और कम समय तक जीते हैं। परमेश्वर की बड़ी और अद्‌भुत योजना आपके और मेरे जीवन के लिये है, परन्तु यदि हम हठीले होंगे जिस प्रकार से परमेश्वर ने

इस्त्राएलियों से कहा (देखें निर्गमन ३३:३)। या कठोर होंगे (जैसे आजकल हम कहते हैं)। तब तो हम सब कुछ खो देंगे जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिये रखा है। हम अपने हठीलेपन में बने रहते हैं और हम अपने आप से ये कभी पूछने की भी कोशिश नहीं करते हैं कि क्या उचित या अनुचित है।

पुराने नियम में हाग्गै की पुस्तक में, लोग बड़े अभाव जी रहे थे और बहुत सारी समस्याओं का सामना कर रहे थे, इसलिये परमेश्वर ने कहा कि अपनी अपनी चालचलन पर ध्यान करें (देखें हाग्गे १:५)। बहुधा लोग जब जीवन की भरपूरी में नहीं रहते हैं, तो वे लोग अपने आपको छोड़कर सब बातों में और सब लोगों में कुछ न कुछ कारण ढूँढ़ते रहते है। अगर आप अपने जीवन से संतुष्ट नहीं तो वैसे ही करें जिस प्रकार से परमेश्वर ने यहूदियों से कहा था: "कि अपनी अपनी चालचलन पर ध्यान करो।" ठीक मेरी तरह, आप भी यही पायेंगे कि कुछ न कुछ परिवर्तन की जरूरत है।

मैं कठोर थी, अपने मत में दृढ़, हठी, घमंडी और हर उन बातों से ग्रस्त थी जो मुझे उन्नति करने से रोकती थी। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसने मुझे बदल दिया! मैं प्रार्थना करती हूँ कि वह मुझे बदलता रहे और तब तक बदले जब तक मैं उसके समान न बन जाऊँ - और यह तब तक संभव नहीं है जब तक मैं स्वर्ग न पहुँच जाऊँ।

मैं उन सब बातों को रखना चाहती हूँ जिसे परमेश्वर चाहता है और जो कुछ उसे पसंद नहीं है उसे दूर करना चाहती हूँ। मैं उसकी हूँ, और आप भी उसके हैं। परमेश्वर आपका घर है, और आप उसके घर हैं। दो जन इससे बढ़कर और कैसे घनिष्ठ हो सकते हैं? यूहन्ना १६:७ कहती है कि पवित्र आत्मा यीशु के द्वारा से भेजा गया था जिससे विश्वासियों के साथ "घनिष्ठ संगति" करे। इस खटखटाहट को सुनकर अपने हृदय का द्वार खोलकर पवित्र आत्मा को उसकी भरपूरी के साथ आप अपने जीवन के अंदर आने दे।

मानने के लिये तैयार रहें

> यदि तुम (सचमुच) मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे (पालन करोगे)। (यूहन्ना १४:१५)

घमण्डी लोग खुले दिल के नहीं रहते हैं। वे घमण्ड से भरे रहते हैं और अपने आप को पूरी रीति से बंद रखते हैं। उनका घमण्डी स्वभाव कभी भी उन्हें उनके

विचारों से और उनके मार्गो से एक कदम भी आगे बढ़ने नहीं देता है। उन्हें किसी से भी कुछ भी सीखने के लिये बड़ी दिक्कत होती है, क्योंकि उनका घमण्ड उन्हें कभी भी अनुमति नहीं देगा बल्कि जो कुछ उनके पास है उसमें वे बने रहें।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के लिये, एक व्यक्ति पवित्र आत्मा को मानने के लिये तैयार रहना चाहिये, और अपने अंहकारमय जीवन शैली को त्यागना चाहिये। एक घमण्डी व्यक्ति के लिये ऐसा करना बहुत ही मुश्किल है। आज्ञाकारिता का समावेश तभी हो सकता है जब एक व्यक्ति अपने आपको नम्र करने के लिये तैयार हो।

मैं अच्छी रीति से याद कर सकती हूँ, कि मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलने के बाद, किस प्रकार से परमेश्वर का आत्मा मुझे सिखलाता गया कि क्रोधित न होना, और जिन्होंने चोट या ठोकर मारी थी उन्हें क्षमा करना और उन सबसे माफी माँगना जिनको मैंने चोट या ठोकर मारी थी। यह मुझे कुछ निश्चित आज्ञाकारिता की बातों को पालन करने के लिये कह रहा था। और मैं निश्चय ऐसा करना नहीं चाहती थी; मैं थोड़ा भी ऐसा करने के लिये महसुस नहीं कर रही थी या सोचती कि माफी माँगना सही होगा। उस समय, जो कुछ भी रहा होगा मेरे जीवन में, मैंने अक्सर ये सोचा कि ये दूसरे व्यक्ति का ही कसूर है।

मुझे ऐसा लगा कि मेरा शरीर पवित्र आत्मा के सारे आदेशों के खिलाफ चित्कार कर रहा है। परन्तु मैं अपने प्रभु से इतना प्यार करती थी कि मैं उसे प्रसन्न करना चाहती थी। आखिरकार मैं उस पड़ाव पर पहुँच गई जहाँ पर मैं उसे अपने आप से अधिक प्रसन्न करना चाहती थी।

जब आप पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के लिये प्रार्थना करते हैं, आपको बदलने के लिये तैयार रहना चाहिये, जो कि अक्सर आज्ञाकारिता के नये स्तर की माँग करता है। हो सकता है परमेश्वर आपको कुछ विशेष नया करने के लिये बुलाता हो जो आज्ञाकारिता की मांग करता हो। पवित्र आत्मा जिस प्रकार से आपकी अगुवाई करता है, आपको उन सब बातों से अलग करना होगा जो आपके जीवन को जहरीला बनाता हो, या आप अपने कुछ स्वभाव के तरीकों को बदलना होगा जिससे परमेश्वर की महिमा नहीं होती है।

एक बात तो निश्चित है - कि फरवरी १९७६ में उस दिन के बाद मेरा जीवन पूरी तरह से बदल गया। आरंभ के उस समय, मैंने सचमुच में कभी भी परमेश्वर की आज्ञाकारिता के बारे में ज्यादा नहीं सोचा। मैं हर रविवार को चर्च

जाया करती थी, चर्च का काम करती थी और वहाँ के सामाजिक कार्यकलाप का आनंद उठाया करती थी। परन्तु मैं ये याद करने में असमर्थ रही कि परमेश्वर मेरे अन्दर पवित्र आत्मा के द्वारा से मेरे अन्दर रहता था, और वह मुझे सिखाकर, अगुवाई करते हुए, मेरे जीवन का निर्देशन करना चाहता था। जब भी कभी कोई बात बिगड़ी तब मैंने उसे पुकारा, मैं प्रतिदिन कुछ न कुछ दुआ कर लिया करती थी, कभी कभी मैं बाइबल के कुछ अध्यायों को पढ़ लिया करती थी, और उतना ही काफी था। मैं वह सब कुछ किया करती थी जो कुछ मेरी जानकारी में थी, परन्तु मैंने यह एहसास नहीं किया कि मसीहियत उतना सब कुछ नहीं था जितना मैं किया करती थी, परन्तु वह सब कुछ था जो यीशु ने मेरे लिये किया था।

यीशु ने हमारे लिये जो किया है उसके बदले में हम रविवार को चर्च में जाकर अपना प्यार व आभार प्रगट करके बाकी सप्ताह भर अपना काम नहीं करते है। बल्कि हम अपना प्यार और आभार उसके आत्मा के नेतृत्व में आज्ञाकारिता के साथ चलने के द्वारा जो हम में सप्ताह के हर एक दिन रहता है प्रकट करते हैं।

जिस प्रकार से यीशु ने यूहन्ना १४:१५ में कहा है कि यदि हम उससे सचमुच में प्रेम करेंगे तो उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, जिस प्रकार से उसने पिता की आज्ञाओं को माना।

हमने पहले भी देखा है कि यीशु तुरन्त पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के बाद किस प्रकार से आत्मा की अगुवाई में जगंल में ले जाया गया और चालीस दिन और रात शैतान के द्वारा उसकी परीक्षा होती रही। संभवतः यह एक आनन्ददायक अनुभव नहीं था, फिर भी यीशु एकदम आज्ञाकारी रहा। उसने अपने पिता पर भरोसा रखा, यह जानकर कि अंत में इस कार्य से उसकी भलाई ही होगी।

चालीस दिन के बीतने के बाद यीशु ने अपनी सेवकाई आरंभ कर दी, जिस प्रकार से हम लूका ४:१४ में देखते हैं, “फिर यीशु (पवित्र) आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उसकी चर्चा आसपास के सारे देश में फैल गई।” यीशु न केवल सामर्थ और बड़ाई के समय पवित्र आत्मा की अगुवाई में चला बल्कि कठिन समय में और परीक्षाओं की घड़ी में भी चला।

अक्सर हम पवित्र आत्मा के पीछे इसलिये चलते रहते हैं क्योंकि हमें आशीषें मिलती रहती है, लेकिन जब वह हमसे कहता कि तुम जो कुछ माँग रहे वह नहीं मिलेगा तब हम कठोर हो जाते हैं।

उसके मन में परिवर्तन और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के बाद, आत्मा ने पौलुस से कहा कि उसको बहुत कठिनाईयों और दुखों से होकर जाना पड़ेगा (देखें प्रेरितों के काम ९:१५-१६)। यद्यपि पौलुस ने बहुत दुःख उठाया, ठीक उसी तरह से परमेश्वर ने उसको आशीष भी दिया। उसका यह सौभाग्य था कि वह पवित्र आत्मा की प्रेरणा से नये नियम का आधा से ज्यादा हिस्सा लिख दिया। पौलुस के पास आत्मिक अलौकिक अनुभव थे, जिसका वह वर्णन भी नहीं कर सकता था। वह तीसरे स्वर्ग पर उठा लिया गया था, उसने दर्शन देखा, एवं स्वर्गदूतों को देखा और इसके अलावा और और अद्‌भुत बातों को भी उसने देखा। जी हाँ, वह धन्य हो गया, मगर उसको पवित्र आत्मा की अगुवाई में चाहे उचित हो या अनुचित हो, आरामदायक हो या न हो, और लाभ हो या हानि हर हाल परिस्थिति में उसे चलना था।

फिलिप्पियों ४:११-१२ में, पौलुस ने लिखा कि वह हर दशा में चाहे बढ़ती हो या घटती हो सब दशा में संतुष्ट होना सीखा है। पद १३ में उसने कहा कि वह मसीह में जो उसे सामर्थ देता था सब कुछ कर सकता था। पौलुस ने यह सीखा था कि परमेश्वर की सामर्थ जो उसमें थी कैसे इस्तेमाल करे। वह अच्छे समय के लिये सामर्थ पाता था, और आनंदित रहकर एक अच्छा स्वभाव को उनमें रखा, और कठिन समयों में भी, ताकि धीरज के साथ अपने स्वभाव को भी उत्तम रख सके।

हमारा स्वभाव प्रभु के लिये बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह हमारे चरित्र के बारे में अधिक बतलाता है। कठिन समयों में परमेश्वर की आज्ञा पालन करने का मतलब है कि हममें से प्रत्येक में परमेश्वरीय चरित्र विकास होता है। मैं अक्सर कहा करती हूँ कि, “हम में से बहुतों को जब हम यह महसुस भी नहीं करने हैं, ऐसे समय में सही काम करने के लिये बुलाया जाता है, और बिना अंजाम को पाये हुए हम उस काम को लंबे समय तक भी करते रहते हैं।”

हम किसी प्रतिफल या आशीष पाने के लिये ऐसा ही कोई सही काम नहीं कर सकते हैं। हमें परमेश्वर की उपस्थिति का पीछा करना है, न कि उसके उपहार का। हमें सब कुछ सही करना चाहिये क्योंकि यह सही है, और चूँकि हम यीशु से प्रेम करते हैं और जानते हैं कि हमारा आज्ञाकारी होना उसका सम्मान करना है। पवित्र आत्मा हमारे अन्दर रहने के लिये भेजा गया है ताकि वह हमारी सहायता करे कि हम उसे एक निर्मल हृदय से खोजें। वह हमें खासकर हमारी कठिन व सरल दोनों परिस्थितियों के लिये दिया गया है।

आज बहुत से लोग सिर्फ अपनी ही बात हमेशा करते रहते हैं। वे जितना कर नहीं सकते हैं उससे कहीं ज्यादा बात करते हैं। वे आसानी से हार मान जाते हैं और भविष्य के लिये ज्यादा कुछ निर्णय नहीं कर पाते हैं।

बहुत समय पहले मैंने यह अहसास किया कि परमेश्वर ने मुझे अपना आत्मा दिया ताकि वह मेरी मदद करे जिससे जो रूकावाटें मेरे जीवन की उसकी योजना में आती हैं, चाहे किसी व्यक्ति, परिस्थिति, दुष्ट शक्ति, निराशा, संदेहास्पद स्थिति, या चाहे निरुत्साह का, इन सबके ऊपर मैं जय पाऊँ।

क्या आप परमेश्वर को मानने के लिये तैयार हैं? अगर ऐसा है, तब तो आप पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के लिये तैयार हैं। यदि आपके अन्दर लालसा है, तो परमेश्वर आपको अपनी आत्मा की भरपूरी देकर क्रियाशील बनाना चाहता है।

यह माँगने और विश्वास करने का समय है।

> यह इसलिये हुआ, कि अब्राहम की आशीष (प्रतिज्ञा) मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुँचे (उनके ग्रहण किये जाने), और हम विश्वास के द्वारा (सब) उस (पवित्र) आत्मा को प्राप्त करें (महसुस करें), जिसकी प्रतिज्ञा हुई है। (गलतियों ३:१४)

यदि आप इतनी दूर तक आ चुके हैं, तो यह समय है कि आप अभी माँगे। याद रहें कि पवित्र आत्मा एक सज्जन व्यक्ति है। वह आपको भर देगा, बस केवल शर्त यह है कि आप उसे आमंत्रित करें ऐसा करने के लिये। लूका ११:१३ में यीशु ने प्रतिज्ञा की है कि परमेश्वर उन हर एक को पवित्र आत्मा देगा जो उससे माँगेगा। और याकूब ४:२ कहती है कि हम माँगते नहीं इसलिये पाते नहीं।

हियाव के साथ आयें और माँगे। इस उम्मीद के साथ माँगे कि आप प्राप्त कर सकें, दुचित्ते न हों। आपके हृदय में जरा भी संदेह न आने पाये। विश्वास से माँगे। विश्वास करेंगे तो आप पायेंगे और निश्चय ही पायेंगे। परमेश्वर मनुष्य नहीं है कि झूठ बोले (देखें गिनती २३:१९)। वह अपने वचन को पूरा करने के लिये विश्वासयोग्य है, जब भी कोई विश्वास से उसमें है कदम बढ़ाता है।

गलतियों ३:१४ कहती है कि हम आत्मा की प्रतिज्ञा को विश्वास के द्वारा ग्रहण करते हैं। वरदानों के लिये किसी को जोर जबरदस्ती नहीं किया जा सकता है। दान करने वाले का प्रस्ताव होना चाहिये और सामने वाला उसे ग्रहण करने के लिये तैयार रहना चाहिये। जब परमेश्वर अपनी आत्मा के दान का प्रस्ताव रखता है तो आपको उसे आसानी से विश्वास से ग्रहण कर लेना चाहिये। या तो आप कुछ महसुस कर सकते हैं, या तो आप कुछ भी महसुस नहीं कर सकते हैं।

यह केवल भावनाओं के बारे में नहीं है

जब मुझ पर पवित्र आत्मा उँडेला गया तब मेरा एक निश्चित महुसस करने का अनुभव रहा। यद्यपि मैं उस समय ये नहीं जानती थी कि मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिल रहा है, परन्तु एक बात मैं जान रही थी कि परमेश्वर मेरे जीवन में कुछ न कुछ अद्‌भुत काम कर रहा था।

उस समय से मैंने पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बारे में हजारों लोगों के लिये अक्षरस सेवकाई की है, और मैंने लोगों को हर प्रकार से अपनी प्रतिक्रिया चिल्लाते हुए भी और पूरी रीति से शांत रहकर भी जाहिर करते हुए देखा है। आँसु बहाते हुए, उछलते कूदते, पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा गिरते हुए, और ऐसे ही बहुत कुछ जो कल्पना से परे है, देखा है।

बहुत सारे लोग जो मेरी सेवकाई के द्वारा से पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किये है, उन्होंने व्यक्त किया कि उन्हें कुछ भी महसुस नहीं किया। परन्तु उन्हीं में से कुछ लोगों से बाद में जब मैं मिली तब मैंने यह पाया कि वे लोग अद्‌भुत रूप से उस खास समय से आगे पर्यन्त के लिये बदल चुके हैं।

हमें परमेश्वर का अनुभव प्राप्त करने के लिये भावना पर नहीं विश्वास पर आधारित होना चाहिये। पवित्र आत्मा से भरने के लिये हमें ज्यादा आवेश के अनुभव में आने की आवश्यकता नहीं है। जब हम आत्मा का फल अपने जीवन में देखते हैं (देखें गलतियों ५:२२-२३), तब हम जानते हैं कि हमने प्राप्त कर लिया है।

जब आप पवित्र आत्मा से भर जायेंगे, तब आप परमेश्वर के साथ बड़ी निकटता और घनिष्ठता का अनुभव करेंगे। आप अपने जीवन में पवित्र आत्मा का सीधा एवं एक निश्चित अगुवाई को देख पायेंगे। और आप उसके सीधे अलौकिक ताड़ना का ज्यादा अनुभव कर सकेंगे। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर आपके कारोबार में सहभोजी होना आरंभ कर देगा। आपका कारोबार उसका कारोबार बन जायेग और उसका कारोबार आपका कारोबार बन जायेगा। तब आप यह महसुस कर पायेंगे कि आपके साथ भी एक सहयोगी हमेशा के लिये है, ऐसा कोई जिससे आप हमेशा किसी भी विषय में बातें कर सकते हैं।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पायें

परमेश्वर का वचन हमें सिखाता है कि पवित्र आत्मा लोगों के सिर पर हाथ रखने से मिलता था, और दूसरे समय में पवित्र आत्मा लोगों पर यूँही उँडेल

दिया गया। प्रेरितों के काम १०:४४ कहती है, "पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुनने वालों पर उतर आया।" जो विश्वासी पतरस के साथ आये थे वे लोग चकित हो गये और गवाही देने लगे कि पवित्र आत्मा का दान सेतमेंत भीड़ पर उँडेला जा रहा था, और वे लोग उन्हें अन्य भाषा में बातें करते सुना।

आप इसी समय परमेश्वर से माँग सकते हैं कि वह आपको पवित्र आत्मा से भरे एवं उसका बपतिस्मा दे, चाहे आप इस समय जहाँ कही भी हों, ऐसे ही प्रार्थना करें, यहाँ पर एक छोटी सी प्रार्थना का प्रारुप दिया गया है जिसे आप इस्तेमाल कर सकते हैं।

हे पिता, यीशु के नाम में तू मुझे अन्य भाषा चिन्ह के साथ पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दे। जैसे तूने उन्हें पेन्तिकुस्त के दिन में भर दिया वैसे ही तू मुझे हियाव दे, और जैसा तू चाहता है वैसे ही मुझे आत्मिक वरदानों से भर दे।

अभी पाप अपने विश्वास को ऐसे जोर से अंगीकार करके दृढ़ कर सकते हैं, "मैं विश्वास करता हूँ कि मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिल गया है, और आगे मैं पहले के समान नहीं रहूँगा।"

यदि आपने इस प्रार्थना को कर लिया है तो परमेश्वर के चरणों में शांति के साथ ठहर कर बाट जोहते रहें यह विश्वास करते हुए कि जो कुछ आपने माँगा वह मिल चुका है। यदि आप विश्वास नहीं करते हैं कि आपको मिल गया है, तो यद्यपि आपको मिल भी जायेगा, तब भी आपको ऐसा लगेगा कि आपके पास यह नहीं है। आप उस वस्तु पर जो आपको नहीं है वैसे विश्वास नहीं कर सकते है। मैं फिर से जोर देना चाहूँगी कि "विश्वास करके भरोसा रखना" इसके महत्व को जानना कि आप प्राप्त कर चुके हैं, और सिर्फ महसुस करने के ऊपर आपका निर्णय आधारित न हो।

मैं सोचती हूँ कि जब हम ग्रहण कर रहे होते हैं तो यह सबसे उत्तम तरीका है कि हम अपनी आँखे बंद कर लें; यह हमारे ध्यान को भंग होने से बचाता है। और अब आज अपनी आवाज को परमेश्वर की ओर बढ़ाईये। चुपचाप बैठकर, आराम से, उसकी प्रतीक्षा कीजिये। उस समय कुछ न कीजिये; परमेश्वर को अगुवाई करने दें। याद रखें कि लोग तब तक "बाट जोहते रहें" उपरौठी कोठरी में जब तक उन्हें ऊपर से सामर्थ न मिल गई।

परमेश्वर आपसे प्रेम रखता है और चाहता है कि वह आपको उत्तमता से भर दे। अन्य भाषा में बोलने के लिये, आपको अपना मुँह खोलना होगा, और जैसे आत्मा बोलने की सामर्थ देता है, और जो कुछ ऊपर से आते हुए आप सुनते हैं उसे आप बोलें। याद रखें कि जो शब्द हैं आपके दिमाग से नही, परन्तु आत्मा से निकलते हैं। मैं आपको सलाह देना चाहूँगी कि जो कुछ आपके आत्मा के अंदर घटता है उसकी ओर जरूर अपना ध्यान केन्द्रित करें; तब आप अपने जीवन में एक हिलावट को महसुस करेंगे। परमेश्वर ने कहा है कि उसके पेट में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी। (देखें यूहन्ना ७:३८)।

ये सारी बातें आपको बिल्कुल अलग से लगती है; ये सब शुरू में आपको केवल चिल्लाने के समान और बेसुरीली लग सकता है। एक छोटे से बच्चे के बारे में सोचें कि जब वह बोलने लगता है तब कितना अटपटा सा लगता है। जब आप अन्य भाषा में बोलना शुरू करते हैं तब आप भी कुछ इसी प्रकार से करते हैं। परवाह न करें कि आप कैसे कर रहे हैं या आपकी आवाज कैसे सुनाई दे रही है। प्रभु में पूरी रीति से अपने आप को समर्पित कर दीजिये एवं उस पर अटूट भरोसा रखिये।

जितना अधिक आप प्रबलता से प्रार्थना करेंगे, उतना बेहतर होगा। आपको भयभीत या अपमानित होने की जरूरत नहीं है। आप परमेश्वर के हैं। वह आपका पिता है। उसने आपको अपनी आत्मा से भरा है और वादा किया है कि वह आपको न कभी छोड़ेगा और न त्यागेगा। यदि परमेश्वर हमें आत्मा में पलने के लिये अगुवाई करता है, तो हम आत्मा में क्यों न बातें कर सकेंगे, जो कि अन्य भाषा में बोलना है।

आप किसी भी प्रकार से जल्दबाजी न करें। परमेश्वर को काम करने के लिये मौका दें। हो सकता हैं कि कोई अक्षम्य बात आपके हृदय में हो जिसके विषय में वह आपसे बात करना चाहता हो, या कोई ऐसा पाप हो जिसके लिये आपको पश्चाताप करने की जरूरत हो। जो कुछ वह आपसे कहता है, उसे करें।

जैसे ही आप अपनी आत्मा की गहराई में एक उबाल महसुस करते हैं, हो सकता है कि आपको रोने या आनंद करने के समान महसुस हो, या शांति, आराम की गहराई महसुस करें मानों कोई बोझ आपका हट गया हो। तब आप अपने आप में एकदम अच्छा महसुस करें!

आप अपने अनुभव की तुलना किसी दूसरे से न करें। हम सभी निराले हैं, और परमेश्वर हम सभी की देखभाल उसी प्रकार से करता है। यह जानें कि वह

हममें से प्रत्येक की आवश्यकता को बेहतरीन तरीके से पूरी करेगा। यदि आप इस समय अन्य भाषा में बातें नहीं करते हैं, तो आप निराश न हों। विश्वास में बने रहें और अंगीकार करते रहें कि परमेश्वर ने आपको पवित्र आत्मा से भर दिया है, क्योंकि आपने उससे माँगा है, और फिर आप अपनी प्रार्थना की भाषा को प्राप्त कर सकेंगे।

अब हमेशा पवित्र शस्त्र के इन अदभुत वचनों को वचनों को याद रखे :

> और मैं तुम से कहती हूँ; कि माँगो और मांगते ही रहो तो तुम्हें दिया जायेगा; ढूँढ़ों और ढूँढ़ते ही रहो तो तुम पाओगे; खटखटाओ और खटखटाते ही रहो तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई माँगता है और माँगते ही रहता है, उसे मिलता है, और जो ढूँढ़ता है, और ढूँढ़ते ही रहता है, वह पाता है, और जो खटखटाता है और खटखटाते ही रहता है, उसके लिये खोला जाएगा। तुम में से ऐसा कौन पिता होगा, कि जब उसका पुत्र रोटी माँगे तो उसे पत्थर दे; या मछली माँगे, तो मछली के बदले साँप दे? या अंडा माँगे तो उसे बिच्छू दे? सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के को अच्छी वस्तुएँ देना चाहते हो (अच्छी वस्तुएँ उनके फायदे के लिये), तो स्वर्गीय पिता अपने माँगने वालों को और जो माँगते ही रहते हैं उन्हें पवित्र आत्मा क्यों न देगा। लूका ११:९-१३)

अब और आगे क्या?

हे प्रभु, तू क्या चाहता है कि मैं करूँ? (प्रेरितों के काम ९:६)

एक बार जब आप पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लेते हैं, तब आपको क्या करना चाहिये? बहुत सारे लोग ये गलती करते हैं और सभी से कहने की कोशिश करते हैं कि उनके साथ क्या कुछ हुआ है। यह होना सचमुच में एक स्वभाविक बात है कि आप अपने उत्साह और भावना को दूसरों के साथ बाँटे। ऐसा करना कैसे भी, यह बुद्धिमानी नहीं है, क्योंकि सभी लोग आपकी बातों को सुनकर उत्साहित नहीं होंगे। और ऐसा होने से आप किसी को रोक भी नहीं सकेंगे।

पहली बात, कि दूसरे लोग आपके उत्साह को बिल्कुल समझ नहीं पायेंगे। दूसरी बात, कि जब आप इस प्रभाव के बारे में लोगों से कहना शुरू करेंगे कि आपको भी इसको पाने के लिये कोशिश करनी चाहिये तो हो सकता है कि

लोग डर जायें। हो सकता है कि आप ठीक समझ रहे हों, किन्तु जब जोर जबरदस्ती वाली बातें आती हैं तो लोग या तो डर जाते हैं या तो ठोकर खाते हैं। यदि आप परमेश्वर की आत्मा के द्वारा से अगुवाई प्राप्त करने जैसा महसुस करते हैं कि किसी के साथ बाँटें, तब तो आप इस पुस्तक की एक प्रति उन्हें दे सकते हैं ताकि वे लो परमेश्वर की ओर से सारी समझ को प्राप्त कर सकें।

मेरे पति और मुझे जब पवित्रआत्मा का बपतिस्मा मिला तब तो हमसे मित्रों और रिश्तेदारों के साथ बहुत बड़ी गलतियाँ हुई। मैं ईमानदारी के साथ कहना चाहूँगी कि हमारे टूटे संबंध को फिर से जुड़ने में कई साल लगे। यह सचमुच में हमारी ही गलती थी, परन्तु अगर हम शुरूआती दौर में बुद्धिमानी के साथ चले होते तो सब कुछ और बेहतरीन हुआ होता।

कभी कभी कम बोलना और ज्यादा करना बेहतरीन होता है। प्रतीक्षा करें और लोगों को आपके अन्दर परिवर्तन को देखने दें, और वे लोग पूछने लगेंगे कि क्या कुछ आपके साथ हुआ है। जब वे लोग ऐसा करने लगेंगे, तब उनका हृदय अपने आप ग्रहण करने के लिये खुल जायेगा। लोगों को जोर जबरदस्ती सुनने के मजबूर करने से जबकि वे सुनना नहीं चाहते तो यह तरीका अच्छा होता है।

हम मसीही लोग लगातार ज्यादातर प्रचार प्रसार करना चाहते हैं, परन्तु हमें स्कूल के उन नन्हें बच्चों के समान होने की आवश्यकता नहीं है जो "दिखाओ और बोलो" कार्यक्रम में भाग लेते हैं। इस कार्यक्रम के दौरान वे लोग पहले कुछ विशेष वस्तु दिखाते हैं और फिर उसके बाद उसके विषय में बोलते हैं। वे पहिले ही सब कुछ बोलकर कुछ भी नहीं दिखाते हैं। खाली शब्दों से बढ़कर जिन्दादिली गवाही बेहतरीन होता है।

जैसे मैंने पहिले कहा है, कि मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक शुक्रवार के दोपहर के समय मिला। जब डेव और मैं लीग में हर शुक्रवार खेलते थे, और उस शाम के समय में एकदम एक अलग अंदाज में नज़र आ रही थी, जबकि इस बात से मैं बिलकुल ही अनजान थी। और मैं यह नहीं जान सकती थी कि जो कुछ मेरे साथ हो रहा है उसे कैसे समझाऊँ, और इसी वजह से मैं किसी को इसके बारे में बता नहीं पा रही थी। जैसे ही शाम होती चली गई, एक व्यक्ति जिसके साथ हम अक्सर खेला करते थे उसने मेरी ओर देखकर कहा, "मेयर, आज की शाम कुछ गड़बड़ सा लग रहा है? आपको देखने से ऐसा लग रहा है कि आप इस धरती पर नहीं हैं।"

वास्तविकता तो यह थी कि मैं परमेश्वर के प्रेम में डूब चुकी थी। "डूबने" का मेरा मतलब ये था कि मैं परमेश्वर से भर गई थी और जो भी मैं कर रही थी वह प्रभावशाली होता जा रहा था। मैं शांति से भरपूर हो गई। और फिर मैं किसी बात के लिये परवाह नहीं की। वास्तव में, अब सब बातें मेरे लिये अदभुत लगने लगीं।

जैसे जैसे सप्ताह गुज़रते गये, वैसे वैसे लोग कार्यस्थल पर मुझसे पूछते गये कि क्या कुछ हुआ है। कुछ लोग इस प्रश्न को मुझसे पुछते रहे, उसके बाद मैंनें ये एहसास शुरु कर दिया कि जो कुछ परमेश्वर ने मेरे जीवन में किया है शायद अब लोगों को दिखाई देने लगा है।

इस दर्मियान परमेश्वर ने मुझे कुछ पुस्तकों को पढ़ने एवं कुछ गवाहियों को सुनने के लिये मेरी अगुवाई की, तब मैंने यह महुसस किया कि जो कुछ मेरे साथ घटा है वह और भी दूसरे लोगों के साथ घटा है, साथ ही इसके साथ उनका भी नाम था। मैंने एहसास किया कि मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिल गया है। ईस्वी सन १९७० दशक के दर्मियान सारे संसार में पवित्र आत्मा लोगों पर उंडेला गया। हर सम्प्रदाय के लोग पवित्र आत्मा पाकर अन्य भाषा में बातें कर रहे थे। वास्तव में, मेरे चर्च से भी कई लोग प्राप्त कर चुके थे, और परमेश्वर ने मेरी अगुवाई की कि मैं उन्हें संगति देकर उनके हौसले को बुलंद करूँ।

यह सचमुच में मेरे लिये अनोखी बात थी कि उस शुक्रवार १९७६ में मैंने जब अपने ऑटोमोबाईल में उसके अद्भुत स्पर्श को पाया और किस प्रकार से परमेश्वर ने मेरी अगुवाई की। उदाहरण के लिये जब मैं अपने कार्यस्थल से कार चलाकर लौटती थी तो मैंने कभी भी रेडियो खोलकर नहीं सुना, परन्तु उस समय तुरन्त मैंने महसुस किया कि रेडियो खोलकर सुनूँ। "जस्ट हेप्पन्ड" स्टेशन को मैं खोली और मैंने पाया कि "जस्ट हेप्पन्ड" (सारी बातें अभी घटीं) लोगों की ताजी गवाहियों को मैंने सुना कि वे किस प्रकार से पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाये या भर गये उनके अनुभव को बाँट रहे थे। उनकी गवाहियों को सुनने से मुझे बहुत मदद मिली और जो कुछ परमेश्वर ने मेरे लिये किया था उसमें मेरा विश्वास दृढ़ हो गया।

और अब मैं यह जान गयी हूँ कि सारी बातें ऐसे ही नहीं घटी परन्तु सब कुछ परमेश्वर की पूर्व सुनियोजित योजना के अर्न्तगत होती गई। जैसे ही मैंने अपने जीवन को उसके लिये खोल दिया, वैसे ही उसने मुझे अपनी बाहों में ले लिया। मैंने अपने जीवन में अद्भुत बातों को जगह लेते हुए देखा, मेरे विश्वास

और उत्साह को बढ़ा दिया जैसे कि रेडियो स्टेशन को खोलने के लिये अगुवाई पाना जिससे कि मैं उसी समय मेरे जीवन की जरूरत के अनुसार संदेश सुन पाई।

जिस प्रकार से लोग मुझसे पूछते गये कि क्या कुछ हुआ था, चूँकि उन्होंने मेरे जीवन को स्वच्छ हालत में देखा था कि मैं सबसे अलग थी, और मैंने यह पाया कि लोग धीरे से ग्रहण कर रहे थे क्योंकि वे लोग अब अगोचर नहीं थे।

जब लोग अपने जीवन में परमेश्वर के लिये अत्यधिक भूखे प्यासे रहते हैं, तब वे लोग परमेश्वर के बारे में दूसरों के जीवन से खुलकर सुनना चाहते हैं। यदि वे लोग भूखे नहीं हैं, तो उन्हें जबरदस्ती खिलाना बेकार है; यदि ऐसा करेंगे तो वे मुँह से सब कुछ बाहर निकालकर थूक देंगे।

धीरज रखें, परमेश्वर आपके लिये द्वार खोलेगा जिससे आप अपने विश्वास और उत्साह को बाँट सकें। वह आपको "ईश्वरीय तरंग" देना आरंभ करदेगा। वह आपको ऐसे लोगों से जोड़ देगा जिन्होंने ऐसे ही समान अनुभव को प्राप्त किया था। आप एक अद्‌भुत, गहरी संगति जो सारी मित्रता से भिन्न है और जिसे आपने कभी नहीं पाया है, प्राप्त कर सकेंगे। वास्तव में, जब आप एक दूसरे विश्वासी से मिलेंगे जिसने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया है, तो आपको ऐसा लगेगा कि आप अपने रिश्तेदार से मिल रहे हैं जिसे आपने नहीं देखा था। आप महसुस करेंगे कि आप कुछ विशेष तरीके से जुड़ रहे हैं। यह एक आत्मिक जोड़ है जिसका संबध अक्सर इन्द्रियों से नहीं होता है।

पवित्र आत्मा के विषय में लिखी गई कुछ अच्छी पुस्तकों को प्राप्त करें जैंसे कि *नाइन ओ क्लॉक इन द मार्निंग*, लेखक डेनिस जे. बेनेट, *ए ग्लो विथ द स्पिरिट*, लेखक राबर्ट सी, फ्रॅास्ट, और *दे स्पीक विथ अदर टंग्स*, लेखक जॉन एल, शेरिल, और पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के बारे में अधिक सीखें और यह कि कैसे इसके द्वारा से बहुत से लोगों का जीवन बदल चुका है। जितना अधिक पढ़ेंगे, उतना बेहतर होगा। निम्न पदों का अध्ययन करें: प्रेरितों के काम १:८;२:१-१८; ८:१२-१७; १०:४२-४८;१९:१-६ तक।

पवित्र शास्त्र में खोजें, और जितने पदों का उल्लेख मैंने इस पुस्तक में किया है, उसे पढ़ते जायें। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपकी अगुवाई करे ताकि आप उस स्थान में रहें जहाँ वह चाहता है। यदि आपके पास मौका है तो आत्मा से परिपूर्ण बाइबल अध्ययन या चर्च आराधना में संगति करें। यदि हम आपके क्षेत्र में कान्फ्रेन्स आयोजन कर रहे होते हैं तो जरूर एक बार उसमें शामिल हों या अगर उस माह में कहीं कान्फ्रेन्स का आयोजन होता है तो आप अवकाश लेकर भी शामिल हो सकते हैं।

यदि अभी तक आपने पानी का बपतिस्मा नहीं लिया है जब से मसीह पर विश्वास किया है तो, मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहूँगी कि आप एक ऐसे कलीसिया को खोज लें जहाँ पर आपको आपके विश्वास की बुनियादी सच्चाई मालूम हो सके। पानी का बपतिस्मा और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा इन दोनों को महत्व निम्न दो उदाहरण में दर्शाया गया है।

प्रभु ने फिलिप्पुस को *कूश देश के* खोजे के पास भेजा जो यशायाह की भविष्यद्वाणी की पुस्तक को पढ़ता हुआ जा रहा था, जहाँ पर एक उद्धारकर्त्ता के आगमन के बारे में लिखा हुआ था। तब फिलिप्पुस ने उसे सुसमाचार सुनाया कि वह उद्धारकर्त्ता आ गया है और वह यीशु ही है, तब खोजा आनंदित हुआ और उसी समय वह पानी में बपतिस्मा लेने का आग्रह किया।

प्रेरितों के काम ८:३७ में फिलिप्पुस ने कहा, "यदि तू सारे मन (यदि अपराध बोध हों, आनंद से भरपूर विश्वास के लिये, कि यीशु ही मसीह है और परमेश्वर के राज्य में उसे अपना उद्धार का कर्त्ता ग्रहण करने के लिये, अपनी आज्ञाकारिता प्रगट करते हुए, बाद में) से विश्वास करता है तो हो सकता है।" और खोजा ने उत्तर दिया, "मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।" सो वह तुरन्त पानी में बपतिस्मा लिया।

परन्तु जितने विश्वासी पतरस की सुन रहे थे, जिन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भाँति शाँति की भाषा के साथ पाया था, उन्होंने पानी का बपतिस्मा नहीं लिया था। इस पर पतरस ने कहा, "क्या कोई जल की रोक कर सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएँ, जिन्होंने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है? और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए।" प्रेरितों के काम १०:४७-४८।

परमेश्वर के पास बहुत सारी बातें हैं आपको सिखाने के लिये, बस आपको अपने जीवन के बचे हुए समय में उसकी ओर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है। परन्तु मैं फिर से आपको प्रोत्साहित करना चाहती हूँ - कि धीरज रखें और परमेश्वर आपकी अगुवाई करेगा। प्रतिदिन उसके साथ विशेष समय बिताएँ। उसको बेहतरीन तरीके और जानें। बाइबल पढ़ें; पवित्र आत्मा की परिपूर्णता को पाने के बाद यह आपको समझने के लिये आसान कर देगी।

आप एक यात्री के समान है जो एक बहुत बड़ी यात्रा आरंभ कर चुका हो। कभी कभी आपकी यात्रा की गति तेज़ हो जाती है, और कभी कभी दूसरे समय में ऐसा लगेगा कि आप अपने जीवन यात्रा में कोई तरक्की में नहीं है। परन्तु याद रखें, कि हमें सब वादियों से होकर गुज़रना है, इसलिये धीरज रखें!

अगर आपको इस पुस्तक को पढ़ने के बाद पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लिया है तो कृपया हमसे सम्पर्क करें। हम आपके आनंद में सहभागी होना चाहते हैं और आपके लिये प्रार्थना करना चाहते हैं जैसे ही आप परमेश्वर के साथ नई यात्रा आरंभ करते हैं। यदि आपके पास प्रश्न हैं, तो हम आपकी किसी भी प्रकार से मदद करने में आनंदित होंगे। आप फोन कर सकते हैं या मेरे कार्यालय में लिख सकते हैं, और कोई न कोई आपकी मदद करने के लिये तैयार रहेगा। हमारा टेलीफोन नंबर और पूरा पता इस पुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर लिखा हुआ है।

घनिष्ठ स्तर

३

परमेश्वर की प्रतिबिम्बित महिमा

और यदि (उसके) संतान हैं, तो (उसके) वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह (उसकी वीरासत उसके साथ बाँटते हुए) के संगी वारिस हैं; जब कि हम उसके साथ दुख उठाएँ कि उसके साथ महिमा भी पायें। (परन्तु इससे क्या?) क्योंकि मैं समझता हूँ, कि इस समय (वर्तमान जीवन) के दुख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं है। क्योंकि (यद्यपि सारी) सृष्टि (सब प्रकृति) बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के (प्रगट होने के लिये ठहरी है, उनके पुत्रत्व के खुलासे के लिये) प्रगट होने की बाट जोह रही है।

\- रोमियों ८:१७-१९

१०

“सदा परिपूर्ण रहें” पवित्र आत्मा से

> और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है; पर (पवित्र) आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। (इफिसियों ५:१८)

यदि आप पहले से पवित्र आत्मा से भर गये हैं या इस पुस्तक को पढ़ने के परिणामस्वरुप आप पवित्र आत्मा से भर गये हैं, यह आपके लिये जानना महत्वपूर्ण है कि आत्मा से “सदा परिपूर्ण रहने” के लिये या सदा परिपूर्ण रहने के लिये परमेश्वर के वचन के द्वारा से आपको अनुशासित होने की जरुरत है।

पवित्र आत्मा से “सदा परिपूर्ण रहने” के लिये, यह जरूरी है कि हम अपने जीवन में उसे प्रथम स्थान दें। अक्सर इसमें एक अनुशासन की जरुरत होती है, क्योंकि दूसरी और बातें हमारे समय और ध्यान को खींचती हैं। हमारी और बहुत जरूरते हैं, लेकिन परमेश्वर से बढ़कर और कोई महत्वपूर्ण विषय नहीं है।

पवित्र आत्मा कभी भी वापस नहीं जाती है; वह हमेशा हमारे साथ रहने के लिये भेजी गयी है। वह अपना पता कभी नहीं बदलती है; एक बार जब उसको जगह मिल जाती है, वहाँ वह स्थिर रहना चाहती है और छोड़ना नहीं चाहती है। परन्तु हमारे लिये यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने आपको आत्मिक बातों की हलचल में बनाये रखें। यदि आग बुझ जायेगी तो गर्म वस्तु भी आसानी से ठण्डी हो सकती है।

एक बार परमेश्वर ने मुझे छः महीने तक परमेश्वर से और अधिक किसी और बात को माँगने से मना किया। यह मेरे लिये उसकी निकटता में जाने के लिये बड़ी अनुशासन की बात थी ताकि मैं उसकी घनिष्ठता के स्तर की गहराई को जानूँ जिसे मैंने पहले नहीं जाना था। मैंने ऐसा कहना आरंभ किया कि,

"हे परमेश्वर, मेरी जरूरत है-", तब मैं अपने आपको रोक कर उसके निर्देश को जो उसने मुझे दिया है याद किया करती। और फिर मैं अपनी विनती को इस प्रकार कह कर समाप्त करती कि, "तुझे और अधिक पाने की।"

इस दर्मियान, मैंने घर का बनाया हुआ ज़ुछीनी डिशू ब्रेड (रोटी) के लिये याचना की, मगर इस बात को मैंने किसी से नहीं कहा। हकीकत में मैं अपने आप में बहुत ही व्यस्त थी कि कुछ रोटी वगैरह बना पाती। फिर एक सभा के पश्चात् एक महिला एक छोटा सा बॉक्स लेकर आई और उसे मेरे हाथ में यह कहते हुए थमा दी कि, "प्रभु ने इस बात को मेरे दिल में डाला है कि मैं इसे आपको दूँ।"

उस छोटे से बॉक्स जिसमें किचन की कुछ तस्वीर बनी थी उसकी ओर मैं देखती रही, मगर मैं यह कल्पना नहीं कर पा रही थी कि परमेश्वर ने उससे क्यों कहा कि वह मुझे यह दे। परन्तु जब मैंने उस बॉक्स को खोला तो अन्दर मैंने बहुत ही सुन्दर तरीके से पकाई हुई ज़ुछीनी डिश की ताज़ा ब्रेड (रोटी) पाई।

इस उदाहरण से, परमेश्वर मुझे यह सिखाना चाहता था कि अगर मैं उसे प्रसन्न करूँगी तो वह मुझे मेरे मन की इच्छा को और मनोरथों को पूरा करेगा। यदि मैं उसे सबसे पहले और हर बात में आगे रखकर खोजूँगी तो वह मेरी हर जरूरतों को पूरी करेगा, चाहे लोगों की नज़रों में छोटी हो सकती है, परन्तु मेरे लिये तो यह बहुत बड़ी बात है (देखें भजन संहिता ३७:४)।

वरदान को चमका दे

> इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ, कि तू परमेश्वर के उस (अनुग्रहकारी) वरदान को जो मेरे हाथ रखने (तेरे अभिषेक के समय प्राचीनों के साथ) के द्वारा तुझे (भीतरी आग) मिला है चमका दे (फिर से अंगारों को जला दे, हवा कर ताकि लौ पकड़े, और जलाये रख)। (२ तिमुथियुस १:७)

आत्मिक बातों में या तो हम अपने उद्देश्यों के साथ बढ़ने में अग्रसर होते हैं या तो हम पीछे हटते रहते हैं, या तो हम बढ़ते हैं या तो हम आत्मिक रूप से मरना शुरू कर देते हैं। मसीहियत में कोई निष्क्रियता नहीं होती है। हम मसीही चाल को रोककर रख नहीं सकते या अगले साल के लिये कोल्ड स्टोरेज में, नहीं रख सकते हैं। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि हम आगे बढ़ते ही रहें। इस

कारण पौलुस ने तीमुथियुस को इस परिच्छेद में आज्ञा दी कि वरदान को चमका दे जब उसे उस समय मिला जब पौलुस ने उसका अभिषेक अन्य और प्राचीनों के साथ उस पर हाथ रखने के द्वारा से किया था। उसने कहा कि हाथ पर लौ पकड़े और अंगारों को जलाये रखे जो उसमें एक बार जल रही थी।

वास्तविकता तो यह थी कि तीमुथियुस ने पीछे हटना आरंभ कर दिया था। यह देखते हुए पौलुस ने जाना कि वह अवश्य ही भयभीत हो गया होगा, इसलिये उसने उसे २ तीमुथियुस १:७ में लिखा, "क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की (कायरता की, डर के कारण झुक जाने की, बुजदिल की, खुशामत, पात्र बनने का डर) नहीं, पर (उसनें हमें एक आत्मा दिया है) सामर्थ और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।"

जब कभी भी डर हममें समा जाता है तब हम क्रियाशील होने के बदले में निष्क्रिय हो जाते हैं। भय हमें एक स्थान में रोककर ठण्डा कर देता है; इस कारण हमें कहना चाहिये यह हमें उन्नति से परे रखता है। चूँकि उन दिनों में मसीहियों को बहुत ही सताया जाता था।

शायद इस कारण से तीमुथियुस डर गया होगा, और शायद इस वजह से भी वह अपनी हिम्मत खो बैठा होगा। इन सब बातों के बाद भी उसके उत्तम सलाहकार पौलुस को बन्दीगृह में डाल दिया गया। क्या जाने उसका भी वैसा ही हाल हुआ हो?

यह समझने के लिये बहुत सरल है कि क्यों तीमुथियुस अपने साहस और आत्मविश्वास को खो बैठा। फिर भी पौलुस बड़ी दृढ़ता से उसको प्रोत्साहित किया कि वह अपने आपको चमकाये, पुनः मार्ग पर आ जाये, अपने जीवन में बुलाहट को याद करे, डर का सामना करे, और याद करे कि परमेश्वर ने उसे, "भय की नहीं; पर सामर्थ और प्रेम और सयंम की आत्मा दी है," जिस प्रकार से *किंग जेम्स वर्शन* में लिखा है।

यह सच्चाई है कि जब हम पवित्र आत्मा की परिपूर्णता को प्राप्त करते हैं तब सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा से भर जाते हैं। रोमियों ५:५ के अनुसार कि यह पवित्र आत्मा ही है जो हमारे हृदय में परमेश्वर के प्रेम को डालता है। वह सामर्थ की आत्मा है, प्रेम की आत्मा है, और वह सयंम की आत्मा है जो हमें बलवन्त रखता है।

तीमुथियुस को कुछ प्रोत्साहन की जरूरत थी, और ऐसे समय आयेंगे कि हमें भी कुछ इस प्रकार की जरूरत होगी। शायद तीमुथियुस गलत सोचता होगा और गलत बातचीत भी करता होगा, और जितना अधिक वह सोचता और

बोलता होगा, उतना ही वह बुरा महसूस करता होगा। यदि हममें पवित्र आत्मा में चमकने का इरादा है, तो हमें हमारे विचारों और शब्दों के चयन करने में सावधानी बरतनी होगी।

आपका हृदय आनंदित रहे

> और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्त्तन (बाज-साज) करते रहो। (इफिसियों ५:१९)

द *किंग जेम्स वर्शन* के अनुसार इस पद का अनुवाद इस प्रकार से किया गया है, "आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्त्तन करते रहो।" मैं पवित्र शास्त्र के इस भाग को दोनों तरीके से लागू करना चाहती हूँ। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि मैं किस प्रकार की "व्यक्तिगत-बातचीत" करती हूँ, और किस प्रकार से और लोगों के साथ बातचीत करती हूँ।

नकारात्मक बातों के जाल में फँसना, जीवन की समस्याओं, और निराशाओं में और इत्यादि और बातों में उलझना बड़ा आसान है। परन्तु ये सारी बातें हमें "सदा परिपूर्ण रहने" आत्मा में मदद नहीं करती है। क्यों नहीं? क्योंकि पवित्र आत्मा किसी भी प्रकार से नकारात्मक नहीं हो सकता है। जब वह शांत रहता है तो यह संकेत है कि वह हमारी बातचीत से प्रसन्न नहीं है।

जब पवित्र आत्मा मुझमें हलचल मचाती है तब मैं यह महसुस करती हूँ कि वह मुझसे प्रसन्न है; और जब मैं महसुस करती हूँ कि वह पीछे हट रहा है तब मैं यह मान लेती हूँ कि शायद वह प्रसन्न नहीं है।

पवित्र आत्मा को एकदम "सही" गीत-संगीत बहुत पसंद है जिसमें प्रोत्साहन, ऊँचा उठाने की, सकारात्मक और आनंद से भरपूर संगीत हो जिसमें उपयुक्त संदेश भी हो। इफिसियों ५:१९ के आखिरी हिस्से में द *किंग जेम्स वर्शन* अनुसार ये कहा गया है कि अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। इसका जो अक्षरण मतलब है कि मन में दिन भर हमें गाते हुए रहना है। हम बिना जोरदार चिल्लाए हुए भी दिन में गाकर समय बिता सकते हैं।

जब मेरा हृदय आनंदित रहता है, तब मैं दिन भर सीटी बजाती, गुनगुनाती एवं गाती ही रहती हूँ। एक गीत आपके जीवन को बदहाली से खुशहाली में

बदल सकता है। यह जिन्दगी को कर सकता है आसान और अंधियारे दिन को कर सकता है प्रकाशमान। वास्तव में, यह आत्मिक युद्ध भी है।

शैतान अपनी पूरी शक्ति के साथ हमारे विरोध में खड़ा हो जाता है कि हम इस आनंद को न पा सके। नहेमायाह ८:१० के अनुसार कि यहोवा का आंनद तुम्हारा बल है। शैतान हमें कमजोर करना चाहता है, परन्तु आत्मिक गीत हमको आनंदित करता है, एवं बल देता है। जितना अधिक हम गाते हैं और मन में भजन कीर्त्तन करते रहते हैं उतना हम बेहतरीन रहते हैं।

बाइबल ऐसे सामर्थी वचनों से भरी पड़ी है जो गीतों के संदर्भ में पाये जाते हैं; विशेष करके स्तुति और आराधना करने के सिलसिले में। पवित्र शास्त्र में बार बार यह दोहराया गया है कि, "यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ।"

कुछ लोग उसी पुराने शोक भरे गीत को अपने जीवन भर अब तक गाते रहे हैं। उन्हें एक आनंददायक गीत अर्थात् एक नये गीत की जरूरत है। एक नया गीत जिसे कभी किसी ने नहीं सुना हो, जो किसी के हृदय से प्रभु की प्रशंसा के लिये उठता हो।

हम गीतों को सुनें। गीत सुन सुन कर सीखें, और फिर आप गाने के लिये अपना मुँह खोलें। हो सकता है आप एक बहुत बड़े गायक नहीं होंगे परन्तु भजन संहिता ९८:४ हमें इस प्रकार से प्रोत्साहित करती है कि, "यहोवा की जयजयकार करो।" यह पवित्र आत्मा के द्वारा से उसकी लौ को चमकाने का सबसे बेहतरीन तरीका है जो हमारे अन्दर है।

सदा धन्यवाद करते रहो

> और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो। (इफिसियों ५:२०)।

ऐसे ढेर सारे वचन हैं जो हमें यह सिखाते हैं कि "सदा परिपूर्ण रहें।" पवित्र आत्मा से, और फिर हम इन निर्देशों के द्वारा से यह पाते हैं कि सदा सब बातों के लिये धन्यवाद करते रहें। इसका मतलब यह है कि हमें हमेशा धन्यवादी मन बनाये रखने की आवश्यकता है चाहे परिस्थिति कुछ भी क्यों न हो।

जब हम उतार चढ़ाव की परिस्थितियों से गुज़रते रहते है तो हमें पवित्र आत्मा के सामर्थ की जरूरत होती है क्योंकि मनुष्य होने के नाते यह स्वभाविक है कि हमारी भावनाओं में उतार चढ़ाव का अनुभव हो। हो सकता

है कि हमारी परीक्षा हो और हम हो सकते हैं स्वभाविक, परन्तु पवित्र आत्मा की सामर्थ से हम हमेशा हो सकते हैं ईश्वरीय। हम तो पहले से ही "स्वभाविक" हैं परन्तु जब पवित्र आत्मा हमारे जीवन में आ जाता है तब वह "सर्वोत्तम" को लाता है। जब हम स्वभाविक में सर्वोत्तम को मिलाते हैं तब हमारे पास सार्वलौकिक होता है।

यदि हमें पवित्र आत्मा से "सदा परिपूर्ण रहना" है तो हमें यह एहसास करना होगा कि पवित्र आत्मा हमारी हर उठने वाली चाहे किसी प्रकार की कठिनाई क्यों न हो उसमें वह हमेशा मदद करने के लिये तैयार रहता है। आप और मैं भी हर परिस्थिति में सब कुछ सहीं कर सकते हैं यदि हम पवित्र आत्मा की सामर्थ जो हममें है उसके अनुसार इस्तेमाल करते हैं। परमेश्वर सर्वदा भला है, इसलिये जो कुछ भी हमारे जीवन में घटता है उसके लिये हम हमेशा धन्यवादी बने रहें क्योंकि यह उचित है। और अगर हम अपने संपूर्ण जीवन को देखेंगे तो हम यह पायेंगे कि हम उसके उपकार के लिये उसको बहुत धन्यवाद देना चाहिये।

जब कठिन समय आता है और हम निराश हो जाते हैं, तब नकारात्मक होना बहुत आसान है और फिर हमें वर्तमान समस्याओं के कारण धुँधला दिखाई देने लगता है। परन्तु हम सभी ने परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का अनुभव अपने जीवन में बहुत बार किया है। परमेश्वर के देखभाल करने का तरीका सचमुच में अद्‌भुत है।

उदाहरण के लिये, कितनी ही बार परमेश्वर ने हमें भयानक दुर्घटनाग्रस्त होने से जख्मी होने से या हमारी हानि होने से बचाया है? हम हमेशा उन नकारात्मक बातों पर ध्यान देकर शिकायत करते रहते हैं, परन्तु हम उन सब नकारात्मक बातों के विषय में सोचें अगर परमेश्वर हमें न बचाता तो हमारा बहुत बुरा हाल हो जाता? क्यों न हम उसके बड़े उपकारों का धन्यवाद तहे दिल से करें?

हम हमेशा धन्यवादी बने रहें और पवित्र आत्मा से "सदा परिपूर्ण रहें।" एवं उत्तेजित रहें, जिस प्रकार से हमें इफिसियों ५:१८ में करने के लिये कहा गया है। उस पद में दाखरस से मतवाले एवं उत्तेजित होने के लिये मना किया गया है, बल्कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के लिये कहा गया है।

ज़रा सोचें कि उत्तेजित होने का मतलब कैसे महसुस किया जा सकता है। वेबस्टर शब्दकोश के अनुसार क्रिया *उत्तेजना* का मतलब है "क्रियाशीलता के लिये खड़े होना या क्रिया की ऊँचाई, प्रेरित करने के समान; भावविभोर...क्रियाशील होना या उत्तेजक के रूप में सेवा करना या स्फूर्तिप्रद।"

जब हम धन्यवाद करते रहते हैं तो यह पवित्र आत्मा को जो हमारे अंदर रहती है हिला देता है, और हम सचमुच में उसके आनंद को महसुस कर सकते हैं। और बहुत बार जब हम निराश और नाखुश रहते हैं क्योंकि पवित्र आत्मा को जो हमारे अंदर रहता है उसे हम अपने व्यवहार के द्वारा से शोकित एवं ठेस पहुँचाते हैं। जब पवित्र आत्मा को हमारा चालचलन भाता है तब हम अन्दर से अच्छा महसुस करते हैं; और जब उसको नहीं भाता तब हम अन्दर से अच्छा महसुस नहीं करते हैं।

गाते रहना, उचित प्रकार से स्वयं की बातचीत, दूसरों के साथ उचित वार्तालाप, उचित सोच विचार, एक धन्यवादी हृदय - ये सभी बातें उत्तेजक कारक हैं जो पवित्र आत्मा को हिला देते हैं ताकि वह हमारी सहायता करे जिससे हम "सदा परिपूर्ण रह" सकते हैं।

कुछ लोग शराब को उत्तेजक पदार्थ के रूप में इस्तेमाल करते हैं। यह उनको अच्छा लगता है और वे यह महसुस करते हैं कि वे कम से कम अगले दिन सुबह तक के लिये उस परेशानी को भूल जायेंगे। हम परमेश्वर के वचन के अनुसार पवित्र आत्मा के इस भाव को इस उदाहरण के अनुसार समझना चाहिये। दाखरस से मतवाले न बनो; आपको उससे उत्तेजक होने की जरूरत नहीं है। बल्कि आपको पवित्र आत्मा से "सदा परिपूर्ण रहने की" जरूरत है। आपको इस उत्प्रेरक की हमेशा से जरूरत रहेगी।

मेरा भाई लगभग ३६ साल से नशीली पदार्थों एवं शराब का गुलाम था। जब से उसका मन परिवर्तन हुआ और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिली, उन्होंने कई बार अपनी टिप्पणी दी है कि नशीली पदार्थ या शराब के सेवन करने के कारण से उनमें कभी भी कोई अच्छी भावना पैदा नहीं हुई जितनी की पवित्र आत्मा के निकट आने से एवं उससे परिपूर्ण होने से महसुस हुई।

शारीरिक बल

वह थके हुए को बल देता है और शक्तिहीन को बहुत सामर्थ देता है (गुणा करके बढ़ाता है और असीम बना देता है। (यशायाह ४०:२९)।

वास्तव में पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने से हमें शारीरिक बल मिलता है।

जब मैं बहुत ही थकान को महसुस करती हूँ तब ऐसे समय में बहुत बार पवित्र आत्मा ने मुझे तुरंत ही जागृत किया और मुझ में ऐसा बल दिया मानों

मैं शहर के चारों तरफ दौड़ लगा सकती हूँ। यह एक दूसरा बहुत ही अच्छा कारण है कि हम अपने आपको सदा परिपूर्ण रखें; हमें जितना बल चाहिये उतना हम ले सकते हैं। मैं दृढ़ विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि हम अपने सोच विचार और बातचीत से अपने आपको नाली के प्रवाह के समान तैयार कर सकते हैं। इसी प्रकार से, हम बाइबल के निर्देशों का प्रतिदिन के जीवन में पालन करके अपने आप में ऊर्जावान महसूस कर सकते हैं।

आज की दुनियां में ऐसा लगता है कि बहुत से लोग थके हुए हैं। उनकी थकान का एक हिस्सा उनकी अधिक व्यस्तता है, और दूसरा एक बड़ा हिस्सा ये है कि किस प्रकार से वे लोग जीते हैं - किस प्रकार से वे सोचते हैं, बातचीत करते, और लोगों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं।

पवित्र आत्मा कभी भी हमें नीचा दिखाने, नफरत करने, परस्वार्थी होने में या स्व केन्द्रित रहने के लिये बल प्रदान नहीं करेगा।

प्रेम की आत्मा

> क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दी गयी है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। (रोमियों ५:५)।

जब पवित्र आत्मा हमारे अन्दर रहना शुरु कर देता है तब प्रेम हमारे अन्दर रहना शुरु कर देता है। परमेश्वर प्रेम है। (१ यूहन्ना ४:८), और जब वह आता है, तब प्रेम आता है।

पहली यूहन्ना ४:१२ मेरा एक बहुत पंसदीदा पद है। मैं उस पद को पढ़ने के लिये बहुत प्यार करती हूँ और उस पर मनन करने के लिये समय निकालती हूँ। "परमेश्वर को (अब तक) कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हममें बना रहता (निवास करना और रूकना) है; और उसका प्रेम (जो प्रेम प्रारंभ से उसका है) हममें सिद्ध (इसकी परिपक्वता में, इसके पूर्ण गति में चलायमान होना, सिद्धता में आना) हो गया है।"

यह वचन मुझे ये समझने के लिये सहायता करता है कि जब से मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला उस समय से मैंने यह महसुस किया कि मानों मेरे अन्दर उसके प्रेम की एक छोटी सी बूँद डाल दी गयी हो। उस समय, मेरे हृदय में परमेश्वर के प्रेम का अतिरिक्त परिमाण उण्डेला गया। उस समय मुझे इस प्रेम की जरूरत थी; तब ही मैं परमेश्वर को लौटाना शुरु कर सकती थी ; और फिर उसके बाद अंत में, मैं यह दूसरों तक बहा सकती थी।

जो हमारे पास नहीं हैं उसे हम किसी को नहीं दे सकते हैं। यदि हम में परमेश्वर का प्रेम नहीं है तो हम दूसरों से प्रेम करने के लिये कोशिश करना यह सब बेकार है। हम अपने आप से प्रेम करें मगर समान तरीके से न कि उसमें स्वार्थ और अहंम की भावना हो। मैं इस प्रकार की शिक्षा भी देती हूँ कि हम अपने आप से जरूर प्रेम करें मगर अपने आप में न खो जाएँ।

दूसरे शब्दों में, परमेश्वर ने जो प्रेम आपके लिये रखा है उस पर विश्वास रखिये; यह जानिये कि यह अनंत और शर्त रहित है। उस प्रेम में अपने आपको दृढ़ करें और आप उसमें सुरक्षा पाये, परन्तु जैसा समझना चाहिये उससे बढ़कर कोई भी अपने आपको न समझे (देखें रोमियों १२:३)। मैं विश्वास करती हूँ कि हमें अपने आपको समान तरीके से प्रेम करेंगे तो हमारे द्वारा दूसरों तक यह प्रेम बहता रहेगा जो हमारे चारों तरफ हैं। बिना परमेश्वर के प्रेम को पाये हुए समान तरीके से हमारा प्रेम किसी के लिये सिर्फ एक भावना ही रह जायेगी, एक मानवीय प्रकार का प्रेम; और जब तक परमेश्वर उस प्रेम को हममें न उसकाए तब तक हम लोगों से शर्त रहित प्रेम नहीं कर सकते।

यह पवित्र आत्मा ही है जो हमारे हृदय को पवित्र करता है ताकि हमारे द्वारा से परमेश्वर का निष्कपट प्रेम दूसरों तक बह सके जैसे कि १ पतरस १:२२ में कहा गया है कि, "सो जबकि तुमने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो।" पवित्र आत्मा का मुख्य लक्ष्य यह रहता है कि हमें वह उस स्थान में ले चलता है जहाँ पर सेस परमेश्वर का निष्कपट प्रेम हमारे द्वारा से बह सकता है। पवित्र आत्मा से हमें "सदा परिपूर्ण रहने के लिये" सहायता करता है।

प्रेम में चलना मसीहियत की एक मुख्य मंजिल है। यह हममें से प्रत्येक का प्राथमिक प्रयास होना चाहिये। वचन के अनुसार हममें से प्रत्येक से कहा गया है कि हमें अपना प्रेम सरगर्म रखना चाहिये। हमें नित्य एक दूसरे से प्रेम करना चाहिये। यीशु ने हमें यह आज्ञा दी है कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें जैसा उसने हमसे प्रेम रखा है। उसने कहा कि वह एक नई आज्ञा दे रहा था जिसमें परमेश्वर को प्रेम करना है और एक दूसरे को प्रेम करने की भी बातें उसमें बाताइ गई है। (देखें यूहन्ना १३:३४; मत्ती २२:३७-४०)।

जब मैं अपने बारे में सोचती हूँ कि मैं कुछ कर सकती हूँ या कैसे भी करके दूसरे लोग मेरी मदद करें, तब तो मैं अपनी मय से भरी हूँ। और जब मैं यह सोचती हूँ कि मैं दूसरे लोगों की मदद करूँ कैसे भी करके करूँ, तब तो मैं अपने आपको पवित्र आत्मा से भरपूर पाती हूँ, जो कि प्रेम का आत्मा है।

हम अपने फलों के द्वारा से पहचाने जांएगे।

> *यदि मैं मनुष्यों और (यद्यपि) स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं (सकूँ), और प्रेम न रखूँ (कोई कारण से, इरादा रखकर, आत्मिक भक्ति जैसे कि परमेश्वर के प्रेम के द्वारा प्रेरित होने के लिये और अपने लिये), तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झँझनाती हुई झाँझ हूँ।* और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं (परमेश्वरीय वरदान के अन्तर्गत उसकी इच्छा और उद्देश्य का अनुवाद), और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहाँ तक पूरा (पर्याप्त) विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूँ, परन्तु प्रेम (परमेश्वर का प्रेम मुझमें) न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं (बेकार व्यक्ति)। और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को (गरीबों में बाँट दूँ) खिला दूँ, या अपनी देह जलाने के लिये दे दूँ, और प्रेम न रखूँ (परमेश्वर का प्रेम मुझमें), तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं। १ कुरिन्थियों १३:१-३, मेरी व्याख्या)।

पहली कुरिन्थियों १३:१-३ का आरंभ प्रेम के व्याख्यान से होता है। यहाँ पर हमें स्पष्ट रूप से बतलाया जा रहा है कि इसमें कोई बात नहीं कि हम आत्मा के कितने वरदानों का इस्तेमाल कर रहे हों परन्तु यदि हम इन सबको प्रेम के साथ नहीं कर रहे हैं, तो सब कुछ बेकार है। यदि हम अन्य भाषा में बातें कर रहे हैं, परन्तु प्रेम नहीं है, तो हम केवल एक बहुत बड़े शोर मात्र हैं। यदि हमारे पास भविष्यद्वाणी की शक्ति है और गुप्त और भेद भरी बातों को अनुवाद करने एवं समझने की शक्ति हो, और मुझे पूरा ज्ञान हो एवं पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा सकूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ जिस प्रकार से प्रेरित पौलुस कहता है, तब तो हम बेकार व्यक्ति हैं। यद्यपि अगर हम अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिलाने के लिये दे दें और यदि अपना जीवन भी दे दें, परन्तु प्रेम के साथ और उचित उद्देश्य के साथ न करें तो हमें कुछ भी लाभ नहीं।

हमें इन वचनों को नज़र अंदाज नहीं करना चाहिये। उस दिन जब मसीह पृथ्वी पर किये गये कामों को अपने हाथों से प्रतिफल देगा, तब बहुत से लोग निराश होंगे क्योंकि जब उन्हें मालूम होगा कि उन्होंने जो काम किये सही उद्देश्य के साथ नहीं किये थे, इसलिये वे अपना प्रतिफल खो दिये।

पहली पतरस १:२२ में कहा गया है कि प्रेम शुद्ध मन से होना चाहिये एवं भाईचारा निष्कपट होना चाहिये। और रोमियों १२:९ हमें याद दिलाती है कि हमारा प्रेम निष्कपट एवं वास्तविक होना चाहिये।

१ कुरिन्थियों १२ में प्रेरित पौलुस ने पवित्र आत्मा के वरदानों के बारे में एक गहरी शिक्षा देता है और पद ३१ में अन्त इस प्रकार से करते हुए करता है, "तुम

बड़े से बड़े वरदानों के धुन में रहो (सबसे ऊँचा वरदान एवं अनुग्रह की चाहत)! परन्तु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूँ (एक रास्ता जो सबसे बेहतरीन है और सबसे ऊँचा है - प्रेम।)"

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के बाद मैं उन लोगों के साथ संगति करने लगी जिन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था, और फिर मैं पवित्र आत्मा के वरदानों के बारे में बहुत चर्चा सुना करती थी। ऐसा लगता था कि हर एक अपने पाये हुए वरदान के बारे में संवेदनशील रहते थे एवं उसे कैसे इस्तेमाल कर सकें। मैंने बहुत सारे सेमिनार में भाग लिया एवं पवित्र आत्मा के वरदानों के बारे में बहुत सी पुस्तकें भी पढ़ी। लेकिन मैंने वरदानों के बारे में अधिक सुना फल के बारे में नहीं।

१ कुरिन्थियों १२ में नौ वरदानों की सूची है और रोमियों १२ में अन्य के बारे में है। गलतियों ५ में नौ फल की सूची है। आत्मा के वरदान अति महत्वपूर्ण है, और इसलिये जैसा कि मैंने पहिले भी कहा है, कि हमें उनकी लालसा (गहराई से, इच्छा) करनी चाहिये। हमें निर्देश दिया गया है कि हम उनके बारे में सीखें, बल्कि उनके बारे में हम अगोचर न रहें, परन्तु जो वरदान हमारे पास है उसे हम कैसे बढ़ायें और यह सीखें कि हम उनको सही तरीको से कैसे इस्तेमाल कर सकें।

१ कुरिन्थियों १२:४ में पौलुस ने कुरिन्थियों को याद दिलाया कि वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु पवित्र आत्मा एक ही है। मैं सोचती हूँ कि हम इसका अर्थ इस प्रकार से लगा सकते हैं, "वरदानों में इतना न घुल जायें कि आप उसके देने वाले को भूल जायें।"

आइयें हम पवित्र आत्मा पर केन्द्रित हो जायें और आश्रित रहें कि वह जो वरदान प्रत्येक को देगा उचित ही होगा। हम यह निश्चित कर लें कि जो वरदान हमारे पास है वह पवित्र आत्मा के फल के समतुल्य होना चाहिये।

मत्ती ७:१६-१८ में यीशु ने कहा, "उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।" उसने ये नहीं कहा कि मसीही लोग उनके वरदानों से पहचाने जायेंगे। लोग दान और वरदान के कारण से आसानी से कहीं भी पहुँच सकते हैं, परन्तु अपने दुर्गुणों के कारण ऊँचाई से वंचित रह सकते हैं। हम बहुत से लोगों को जो वरदान पाये हुए रहते हैं उन्हें पाप में गिरकर अपने पद से रहते हुए देखते हैं। क्योंकि उन्होंने कभी भी आत्मा के फल को एवं ईश्वरीय स्वभाव के निर्माण के विषय में ध्यान नहीं दिया।

एक बार एक महिला मेरे एक कॉन्फ्रेन्स में आयी और वह मुझसे मिलकर अपनी समस्याओं के बारे में बिना सोचे और रुके कहती ही जा रही थी जबकि

उसे भिन्न तरीके से सिखाया भी जा रहा था। वह जानती थी कि उसे क्या करने की जरुरत थी, परन्तु ऐसा करने के लिये उसके पास कोई सामर्थ नहीं थी। ऐसा करने के लिये उसमें सामर्थ की कमी थी। वह अन्य महिलाओं से भी भी मुलाकात की जो कि इन सब बातों के शिकार हुए थे।

जब वे दोपहर के भोजन के समय बातचीत कर रहे थे तब उसने यह एहसास किया कि परमेश्वर ने उससे सब कुछ कह दिया है परन्तु औरों ने माना मगर वह अपनी अनाज्ञाकारिता में बनी रही। उन्होंने अपने मन को परमेश्वर के वचन के द्वारा से नया कर लिया जबकि वह अपनी समस्याओं को अपने हृदय की गहराई में और जगह करने दी बिना मन से निकाले हुए।

जो कुछ हमारे मन में रहता है आखिरकार वह हमारे मुँह से निकल ही आता है। चूँकि वह परमेश्वर की आज्ञा की अवहेलना की एवं अपनी समस्याओं के बारे में सोचना एवं बातें करना बंद नहीं की, इसलिये कि वह एक ऐसे बंधन में थी जहाँ से वह निकल नहीं सकती थी। हम कई बातों को सिर्फ सोचने एवं बोलने के द्वारा से प्राप्त करना चाहते हैं। उसे चाहिये था कि वह परमेश्वर को इस तरीके से खोजे; इसके बजाय कि, वह वास्तव में अपनी समस्याओं की अधिकाई को खोजना चाहती थी और उस पर वह जय पाने की कोशिश कर रही थी।

प्रेम को प्रथम रखें

लोगों को आप अपने प्रेमी स्वभाव के द्वारा से जानने दीजिये कि आप एक मसीही हैं।

> क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण (परमेश्वर की सर्वोत्तम कृपा) जो मुझे मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूँ, कि जैसा समझना चाहिये उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे (अपने विषय में कोई अलग महत्वकांक्षी विचार न रखे) पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार बाँट दिया है, वैसी ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे। क्योंकि जैसे हमारी देह में बहुत से अंग हैं (भाग, सदस्य), और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं। वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में (ख्रीष्ट में) एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं (पूर्ण रूप से एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं)। और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न भिन्न वरदान (विशेषाधिकार, प्रतिभा, गुण) मिले हैं। (रोमियों १२:३-६)

वरदान पाये हुए लोग भी आत्मा के फल की कमी के कारण से जल्द ही घमण्ड से फूल सकते हैं। घमंड बहुत ही खतरनाक है। यह नम्रता का विरोध है, जो कि पवित्र आत्मा का फल है। घमण्ड शैतान का फल है और जिसका हमें किसी भी कीमत से परिहार करना चाहिये।

शरीर का स्वभाविक खिंचाव घमण्ड की ओर होता है, और इसी वजह से हम अपने आपको नियमित रूप से याद दिलाना चाहिए कि हम जो कुछ भी करें, हम परमेश्वर की सामर्थ और भलाई के द्वारा से करें। यह परमेश्वर ही है जो हमें दान और वरदान देता है, जबकि हम इसे अपने आपसे प्राप्त नहीं कर सकते हैं। (देखें इफिसियों २:८,९; याकूब १:१७)। वह हमें न केवल दान और वरदान देता है, बल्कि वह हमें उन्हें इस्तेमाल करने के लिये अनुग्रह भी देता है। याद रखें: कि अनुग्रह पवित्र आत्मा प्रदत्त सामर्थ है जो आपके लिये और मेरे लिये उपलब्ध है ताकि हम आसानी से वह सब कुछ कर सकें जो हम अपने प्रयास से नहीं कर सकते हैं।

रोमियों १२:६ में कहा गया है कि जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया उसी परिमाण के अनुसार इस्तेमाल करना चाहिये।

दो जन को एक समान सिखाने का दान मिल सकता है, फिर भी एक शिक्षक दूसरे से ज्यादा मजबूत हो सकता है, क्योंकि हो सकता है कि उनको अपनी बुलाहट के लिए ज्यादा अनुग्रह मिला हो। हो सकता है कि एक पास्टर को एक चर्च में पाँच सौ लोगों की अगुवाई करने के लिये पवित्र आत्मा के द्वारा से अभिषेक मिला हो, जबकि दूसरे पास्टर को एक चर्च में पाँच हजार लोगों की अगुवाई करने के लिये अनुग्रह और अभिषेक मिला हो। ऐसा क्यों? क्योंकि पवित्र आत्मा जिसे जो चाहता वह वरदानों को बाँट देती है (देखें १ कुरिन्थियों १२:११)। जो कुछ वह करता है उस कारण को वह स्वयं जानता है, इसके लिये हमें प्रश्न करने की कोई जरुरत नहीं। जो कुछ वह हमें देता है उसके लिये हमें उसे धन्यवाद देना चाहिये। जिससे घमंड प्रवेश न करने पाये। हम किसी के साथ एक ही समय में प्रेम में और जलन में नहीं चल सकते हैं।

वास्तविकता तो यह है कि जो सेवकाई का दान परमेश्वर ने मुझे दिया है उसके विषय में मेरे पति मुझसे जलन रख सकते थे जो उन्हें नहीं दिया गया। बहुत समय पहले डेव ने यह एहसास किया कि वे खुश नहीं रह सकते थे यदि वे अनुग्रह के बाहर कुछ करने की कोशिश किये होते तो। यदि वे मुझ जैसे बनने की कोशिश किये होते तो, वे अपना आनंद कब के खो चुके होते। परन्तु डेव का अभिषेक हमारी सेवकाई के प्रशासनिक एवं आर्थिक विभाग के देखरेख

के लिये किया गया है, जबकि उनका योगदान हमारी सेवकाई में मेरे जैसा ही महत्वपूर्ण है।

यदि आप सचमुच में आनंदित रहना चाहते हैं तो जिस बुलाहट के लिये आप बुलाये गये हैं उसमें आप लगे रहिये (देखें रोमियों १२:६-८)। आप दूसरों से न जलें। आप अपनी तुलना उनके साथ न करें। घमण्ड का परित्याग करें। जब हम नकारात्मक भावना को जैसे घमण्ड को अपने जीवन में राज्य करने देते हैं, तब पवित्र आत्मा शोकित होता है। और इन सब बातों को केवल एक ही जवाब है कि हमें प्रेम में चलना चाहिये।

सचमुच में, मैं बहुत वर्षों तक आत्मा के द्वारा से शिक्षा के दान पर मैं जोर डालती रही। और जब पवित्र आत्मा ने मेरे हृदय में इस बात को सामने रखा तब मैं और अधिक अपने स्वभाव में समतुल्य लाभ उठाती गई। वह गंभीरता से मुझे आत्मा के फल एवं प्रेम में चलने के बारे में सिखाता गया। जब मैं इन दोनों महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में जो मसीही चाल के विषय में है जितना अधिक अध्ययन करती चली गई, तब उतना ही अधिक मैंने यह एहसास किया कि बाइबल आत्मा के वरदान से कहीं बढ़कर इन सब बातों के बारे में बहुत अधिक कहती है। यह केवल तब ही आरंभ हुआ जब मैं प्रेम में चलने के ऊपर केन्द्रित होने लगी तब मैं पवित्र आत्मा में "सदा परिपूर्ण रहना" महसुस करने लगी।

जब हम उचित बातों के बारे में उत्तेजित हो जाते हैं, तब पवित्र आत्मा भी उत्तेजित हो जाता है - हम उसकी उत्तेजना को महसुस करते हैं, और यह हमें एक प्रकार से ऊर्जावान बनाता है जो और किसी भी प्रकार से नहीं हो सकता है।

आत्मा के वरदान महत्वपूर्ण हैं, परन्तु वे प्रेम के फल से ज्याद महत्वपूर्ण नहीं हैं। सचमुच में, एक व्यक्ति के पास वरदान (प्रतिभाएँ और योग्यताएँ) हो सकता है परन्तु प्रेम (परमेश्वर का प्रेम दूसरों के लिये) रहित होने से वह वास्तव में समस्या का कारण बन सकता है।

इन सब बातों को कहते हुए, मैं किसी भी प्रकार से पवित्र आत्मा के वरदान के रहस्य को हल्का या महत्वहीन नहीं कर रही हूँ। वास्तव में, मैं इस पुस्तक को इसलिये लिख रही हूँ ताकि आप प्रोत्साहित होकर इन बातों के लिये खुलें। परन्तु यह भी महत्वपूर्ण है कि मैं इस सच्चाई को इस तरीके से आपके साथ बाँट रही हूँ जिससे आप एक तरफ झुके हुए न रहें बल्कि जिस बात की आप खोज कर रहे हैं और जिसको परमेश्वर चाहता है कि वह आपको मिल जाये। आत्मा के फल के विषय में और अधिक सीखने के लिये मैं

अपनी पुस्तक "*सीक्रेट्स टू एक्सेप्शनल लिविंग*" को पढ़ने के लिये सलाह देती हूँ।

मैं विश्वास करती हूँ कि अन्य भाषा में बातें करना बहुत ही महत्वपूर्ण है, परन्तु उससे महत्वपूर्ण है प्रेम। मैं विश्वास करती हूँ कि बुद्धि और ज्ञान की बातें निश्चित तौर से महत्वपूर्ण है, चूँकि हम यह जानते हैं इसलिये अगर यह घमण्ड से फूलने का कारण बने तो यह महत्वहीन है। प्रेम नम्र और दीन होता है, घमण्डी और अभिमानी नहीं होता है।

मैं विश्वास करती हूँ कि विश्वास का वरदान, चंगाई का वरदान, और सामर्थ के काम करने का वरदान ये सभी महत्वपूर्ण हैं। परन्तु १ कुरिन्थियों १३ हमें स्पष्ट रूप से कहती है कि यदि ये सभी बातें हमारे पास हों परन्तु प्रेम न हो, तब तो ये सभी बातें हमारे लिये बेकार हैं, और फिर स्वर्ग की दृष्टि में भी हम सिर्फ एक बड़े शोर के समान हो सकते हैं।

मैं विश्वास करती हूँ कि अन्य भाषा का अनुवाद, भविष्यद्वाणी, और आत्माओं की परख उत्तम वरदान हैं, परन्तु प्रेम के जैसा महत्वपूर्ण नहीं। हम प्रेम को सबसे पहले क्रम में रखना चाहिये फिर बाद में दूसरी बातों को रखना चाहिये।

पौलुस ने रोमियों से कहा कि, वे स्वतंत्र किये गये हैं, परन्तु यदि वे अपनी स्वतंत्रता के द्वारा से दूसरों के ठोकर के कारण बनेंगे तो, वे प्रेम में नहीं चल रहे होते हैं (देखें रोमियों १४:१५)। आखिरकार सब बातें प्रेम में ही टिका हुआ है; यही हमारा निशाना होना चाहिये और हर चाल चलन का निर्णायक कारक प्रेम होना चाहिये।

११

पवित्र आत्मा को शोकित मत करो

और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो। (इफिसियाँ ४:३०)।

उपरोक्त वचन मुझे हमेशा से शोकमग्न और गंभीर लगता रहा है। मैं जानती थी कि मैं पवित्र आत्मा को शोकित करना नहीं चाहती थी, परन्तु मैं यह निश्चित कर नहीं पा रही थी कि इसका परिहार कैसे करूँ?

अक्सर हम एक वचन का सही अनुवाद उसके आगे और पीछे का हिस्सा अध्ययन करने के द्वारा से एक ही प्रश्न में कर सकते हैं। इफिसियों ४:३० के आगे पीछे पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि लोगों के आपस में एक दूसरे के साथ बुरा बर्त्ताव करने के कारण से पवित्र आत्मा शोकित होता है।

इफिसियों ४:२९ के अनुसार से हमें प्रोत्साहन मिलता है ताकि हमारे मुँह से निकलने वाली बातों को हम तय कर लेना चाहिये जिससे उन्नति के लिये उत्तम हो एवं सुनने वालों के लिये अनुग्रह का कारण हो। इफिसियों ४:३१ हमें बताती है कि सब प्रकार की कड़वाहट, प्रकोप, क्रोध, कलह और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाएँ। उसी अध्याय का पद ३२ कहता है कि हमे एक दूसरे पर करुणामय होना चाहिये, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में हमारे अपराध क्षमा किए हैं, वैसे ही हम भी एक दूसरे के अपराध को क्षमा करें।

पवित्र आत्मा और प्रेम में चलना आपस का जोड़

और प्रेम में चलो (एक दूसरे को अच्छा समझकर एवं प्रसन्न करते हुए); जैसे मसीह ने भी तुमसे प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आपको सुखदायक सुगंध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया। (इफिसियों ५:२)।

इन पदों से और अन्य पदों से हमें यह सिखने को मिलता है कि प्रेम में चलना और पवित्र आत्मा का सीधा संबंध है, जिससे उसी के द्वारा से परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय में उंडेला जाता है। जब हम किसी के साथ बुरा बर्ताव करते हैं, यह वही है जो हमें कायल करना सिखलाता है। यह वही है जो हम में काम करता है ताकि हमें एक कोमल हृदय दान करे।

यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि हमारा कठोर हृदय हो, जैसे कि वह यहेजकेल ११:१९ में कहता है, “और मैं उनका हृदय एक कर दूँगा; और उनके भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा (एक नया हृदय), और उनकी देह में से पत्थर (अप्राकृति तौर से कठोर) का सा हृदय निकालकर उन्हें मांस का हृदय दूंगा (अपने परमेश्वर के स्पर्श को पाने के लिये संवेदनशील एवं प्रत्युत्तर देने योग्य)।”

मेरा भी कठोर हृदय था चूँकि बचपन मे मेरा शोषण हुआ था और मेरे पहले पति ने मुझे और मेरे बच्चे को छोड़ दिया था। ऐसा लगता था कि, लोगों ने मेरा इस्तेमाल जीवन भर के लिये अपने लाभ और स्वार्थी उद्देश्य के लिये किया था। इसलिये मैंने हमेशा के लिये अपनी भावना को दबाकर कठोर रहने के लिये ठान लिया।

एक बार जब हमारा हृदय कठोर हो जाता है, तब यह अकेले के निर्णय से बदलना बिल्कुल नामुमकिन होता है। इस प्रकार की बदलाहट के लिये पवित्र आत्मा के अलौकिक कार्य की जरूरत होती है। केवल वही है जो हमारे हृदय के अंदर जाकर हमारे घाव और जख्म को चंगा कर सकता है। वह अकेले ही हमारे जख्मों को भरकर हमें पुर्णस्थापित कर सकता है।

अपने आपको कभी कठोर बनाकर रखने की कोशिश मत कीजिए। यदि आप लोगों के जरूरत के प्रति संवेदनशील नहीं रहेंगे तो उनके साथ प्रेम में चलना मुश्किल होगा। परमेश्वर से प्रार्थना कीजिये कि वह आपके हृदय को नरम बनाये एवं आपको एक कोमल विवेक मन दे, जो कि परमेश्वर के स्पर्श का प्रत्युत्तर दे। उससे माँगे कि वह अपने स्वभाव को आप में भर दे एवं जो कुछ वह महसूस करता है वह आप भी महसूस कर सकें।

जब मैंने यह महसूस किया कि जब मैं तेज थी या किसी से नफरत करती थी, या जब मैं किसी के साथ गुस्सा करती थी, और मैं इस प्रकार के स्वभाव को बहुत ही गंभीरता से लिया करती थी। मैं परमेश्वर से प्रेम करती थी, और निश्चित तौर से मैं उसके पवित्र आत्मा को शोकित करना नहीं चाहती थी।

जब आप और मैं पवित्र आत्मा को शोकित करते हैं, तब हम भी शोकित महसूस करते हैं। यद्यपि हम यह एहसास नहीं कर सकते होंगे कि क्या कुछ गलत है हमारे साथ हो रहा है, फिर भी हम ये जानते हैं कि हम दु:खी और निराश होते हैं, या कुछ न कुछ अनुचित हुआ है।

मैं यह विश्वास करती हूँ कि बहुत सारी बातें जैसे दुख, निराशा, और भारीपन का जो हम अनुभव करते हैं, इस प्रकार की बातें न केवल हमारे स्वभाव में है बल्कि अन्य लोगों के साथ जुड़ी हुई हैं। गलतियों ६:७ में कहा गया है कि जो कुछ हम बोते हैं, वही काटेंगे। यदि हम दूसरों के लिये आनंद बाटेंगे, तो हम अपने जीवन में आनंद को काटेंगे।

वास्तव में, मैंने अपने जीवन में हमेशा आनंदित रहने के रहस्य को ढूँढ़ लिया है - और वह है प्रेम में चलना।

"क्यों मैं परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति संवेदनशील नहीं हो सकता"?

> माँगते ही रहो तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ते ही रहो तो तुम पाओगी; खटखटाते ही रहो (आदरपूर्वक) तो तुम्हारे लिये (दरवाज़ा) खोला जाएगा। (मत्ती ७:७)।

मेरी सेवकाई के इन वर्षों के दर्मियान, मुझसे बार बार पूछा गया कि, "क्यों मैं परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति संवेदनशील नहीं हो सकती?" ऐसे समय आये कि मैंने भी अपने आप से इसी प्रश्न को पूछा है।

हम परमेश्वर के वचन के द्वारा से जान सकते हैं कि पवित्र आत्मा कभी भी हमें छोड़कर नहीं भागता है यद्यपि हम कई बार कई ऐसे काम कर जाते हैं जो उसे पसंद नहीं होता है (देखें इब्रानियों १३:५)। वास्तव में वह हमसे लिपटे रहता है हमारी समस्याओं में हमारी मदद करने के लिये वायदा किया है, ऐसा नहीं कि वह हमको बिना मदद के छोड़ दे।

जी नहीं, पवित्र आत्मा हमें कभी नहीं छोड़ता है, परन्तु वह कभी कभी "छिप" जाता है। मैं यह कहना पंसद करूँगी कि कभी कभी परमेश्वर अपने बच्चों के साथ आँख मिचौली खेलता है। कभी कभी वह हमसे अपने आपको ऐसा छिपा लेता है जिससे हमें उसकी बड़ी कमी महसूस होती है और हम उसे ढूँढ़ने लग जाते हैं। परमेश्वर ने बार बार हमें अपने वचन में कहा है कि उसे

ढूँढ़े - उसके मुख, उसकी इच्छा उसके उद्देश्य हमारे जीवन के लिये इत्यादि को ढूँढ़े। और हमें उस बड़े भोर को, नित्य और बड़े यत्न के साथ ढूँढ़ने को कहा गया है। (देखें नीतिवचन ८:१७; इब्रानियों ११:६)। यदि हम उसे नहीं ढूँढ़ेंगे, तो हमारा जीवन एकदम निराशाजनक हो जायेगा।

परमेश्वर को खोजना हमारी चाल का मुख्य केन्द्र है; यह हमारे आत्मिक उन्नति के लिये अति महत्वपूर्ण है। इस सच्चाई के प्रमाण के लिये, आइये हम पवित्रशास्त्र के इन वचनों पर ध्यान करें जिसे हमने आंरभ में देखा था।

> एक वर मैंनें यहोवा से माँगा है, उसी के यत्न में (हठपूर्वक लगी रहूँगी; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में उसकी उपस्थिति) में रहने पाऊँ, जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए (मधुर आकर्षण और प्रसन्न करने वाली सौन्दर्यता) रहूँ; और उसके मंदिर में ध्यान किया करूं। (भजन संहिता २७:४)।

> तू अपने पिता के परमेश्वर का ज्ञान (उसका व्यक्तिगत ज्ञान रख, चिरपरिचित हो जा, उसको समझ; तारीफ कर; ध्यान देना, और प्रिय जानना) रख, और खरे मन और प्रसन्न जीव से उसकी सेवा करता रह; क्योंकि यहोवा मन को जाँचता और विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है उसे समझता है। यदि तू उसकी खोज में रहे (उसके बारे में पूछताछ करना और अपने जीवन का सबसे प्रथम एवं महत्वपूर्ण जरूरत मालूम करना), तो वह तुझको मिलेगा, परन्तु यदि तू उसको त्याग दे तो वह सदा के लिये तुझको छोड़ देगा। (१इतिहास २८:९)।

> परन्तु जितने तुझे ढूँढ़ते हैं, वह सब तेरे कारण हर्षित और आनंदित हो। (भजन संहिता ४०:१६)।

> बुरे लोग न्याय को नहीं समझ सकते, परन्तु यहोवा को ढूंढ़ने वाले सब कुछ समझते हैं। (नीतिवचन २८:५)।

> जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो (यशायाह ५५:६)।

> जब तक वे अपने को अपराधी मानकर मेरे दर्शन के खोजी न होंगे तब तक मैं अपने स्थान को लौटूंगा, और वे संकट में पड़ेंगे, तब जी लगाकर मुझे ढूंढ़ने लगेंगे। (होशे ५:१५)।

> और (परमेश्वर) अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। (इब्रानियों ११:६)।

बाइबल में बहुत सारे ऐसे वचन भरे पड़े हैं जो हमें परमेश्वर को खोजने के लिये प्रोत्साहित करती है। लेकिन परमेश्वर को सही अर्थ में खोजने का क्या मतलब है? *वाईन की कम्पलीट एक्सपोसिटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेन्ट वर्डस के* अनुसार कुछ अद्‌भुत शब्दों के बारे में बताती है। यह कहती है कि हम "सोचने के द्वारा से" उसे खोजते हैं।

हमें परमेश्वर के बारे में अधिक सोचने की जरूरत है। हमें उसके वचन, मार्ग, जो कुछ उसने हमारे लिये किया है, वह कितना भला है, हम कितना उससे प्यार करते हैं, और इत्यादि के बारे में सोचना चाहिये। जो कुछ हम सोचते हैं, हम उसके बारे में बातें करके अन्त कर देते है, लेकिन सबसे उत्तम तरीका है कि हम परमेश्वर के बारे में बात कर सकते हैं। वह हमारे जीवन की हर शंका का समाधान है। सो हम हमेशा समस्याओं के बारे में क्यों बातें करते रहते हैं, जबकि हम उसके उत्तर के बारे में चर्चा कर सकते है?

मलाकी ३:१६ कहती है कि जब हम परमेश्वर के बारे में बातचीत और उसके नाम के ऊपर सोचते रहते हैं तब वह इसे लिख लेता है; "तब यहोवा का भय मानने वालों ने आपस में बातें की, और यहोवा ध्यान धरकर उनकी सुनता था; और जो यहोवा का भय मानते उसके नाम का सम्मान करते थे, उसके स्मरण के निमित्त उसके सामने एक पुस्तक लिखी जाती थी।"

वाईन के अनुसार परमेश्वर को खोजने का दूसरा तरीका है, अपनी इच्छा के द्वारा से। हमारी इच्छाएँ हमारे बारे में बहुत कुछ कहती है। जो कुछ हम चाहते हैं उसके बारें में वह स्पष्ट करती है।

परमेश्वर हमारे जीवन में सर्वप्रथम रहना चाहता है। वह जलन रखने वाला परमेश्वर है; और यद्यपि वह हमे सब बातों से आशीषित करना चाहता है, इसलिये हम हमेशा सब बातों से बढ़कर उसकी इच्छा को करना चाहिये। (निर्गमन ३४:१४)। हम दूसरी और अन्य बातों को पाने की इच्छा करने के लिये परमेश्वर के नाम को आड़ नहीं लेना चाहिये, हमें इस जाल में फँसने से बचना चाहिये एवं सावधान रहना चाहिये।

पुराने नियम में, परमेश्वर ने दाऊद के कुछ गंभीर अपराध करने के बावजूद भी उससे प्रेम किया एवं उसका सम्मान किया। जैसे कि हमने भजन संहिता २७:४ में देखा कि उसकी जो सबसे प्रथम इच्छा थी कि वह परमेश्वर की उपस्थिति में रहे और जीवन भर उसकी मनोहरता पर दृष्टि करता रहे।

यह वचन मेरे लिये उस समय एकदम अति महत्वपूर्ण हुआ जब परमेश्वर मेरी व्यक्तिगत रूप से परिवर्तित होने में मेरी मदद कर रहा था कि मैं उसे खोजूँ कि वह मेरे लिये क्या कर सकता है, एवं वह कौन हैं?

मैं विश्वास करती हूँ कि हम सबी जब नये नये विश्वास में आते हैं तब हम हमारी हर जरूरतों के लिये परमेश्वर के साथ बहुतायत का संबंध कायम करते हैं। वह भी हमारे साथ एक प्रेमी पिता के रूप में अपना संबंध कायम करता है, जो कि वह हमेशा हमारी जरूरतों को पूरी करने के लिये उपलब्ध रहता है क्योंकि हम उसके बिना कुछ भी नहीं कर सकते हैं। यह तो सचमुच में अच्छी शुरूआत होती है, परन्तु ऐसा समय भी आयेगा जब हमें परिवर्तन करने की भी जरूरत होती है। हमें आरंभिक दौर से परिपक्वता की ओर बढ़ जाना चाहिये।

जैसे बच्चे बढ़ते रहते हैं, उस समय माता पिता उनकी देखभाल करने में आनंदित रहते हैं। परन्तु एक दिन ऐसा आ ही जाता है कि माता पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे उनकी देखभाल करें।

मेरे और मेरे पति के चार बड़े बड़े बच्चे हैं। जब वे लोग छोटे थे, तो हमारा सारा समय उनकी देखभाल में बीता। और यह सच है, कि हम अभी भी उनके लिये बहुत कुछ किया करते हैं, ताकि किसी न किसी प्रकार से हम उनकी मदद कर सकें, परन्तु मैं अपने अनुभव से यह कहना चाहती हूँ कि मैं भी चाहती हूँ कि वे लोग भी मेरे लिये कुछ करें। मैं चाहती हूँ कि वे लोग आयें और मुझसे मुलाकात करें, और बुलायें इसलिये कि वे लोग मुझसे प्रेम करते हैं, और इसलिये नहीं कि उन्हें कुछ जरूरत हो या और कुछ चाहते हो। दूसरे शब्दों में, मेरी ये चाहत है कि वे लोग मेरी इच्छा करें - इसलिये नहीं कि मैं उन्हें कुछ दे सकूँ या उनके लिये कुछ कर सकूँ।

जब हम परमेश्वर को नहीं खोजते हैं या जब हम उसे किसी गलत बात के लिये खोजते रहते हैं, इस उद्देश्य के साथ कि हमें उससे कुछ मिलेगा तब पवित्र आत्मा शोकित होता है। जब हम उसको नहीं खोजते हैं, तब वह अक्सर इस आशा से छिप जाता है, जिससे हम उसे उत्साह के साथ खोज सकें।

आखिरकार जब मैंने अपने आपको परिवर्तित किया और परमेश्वर को नियमित रूप से खोजने लगी, तब मैंने हमेशा से यह महसुस किया कि मैं उसकी उपस्थिति का आनंद उठा रही थी। इससे पहले, ऐसा लगता था, कि मैं हमेशा से यह सोचती रहती थी कि मैं क्यों परमेश्वर की उपस्थिति को महसुस नहीं कर सकती हूँ और उसके प्रति संवेदनशील क्यों नही रह सकती हूँ जैसे दूसरों को लगता है।

जब हम परमेश्वर को नियमित रूप से खोजते हैं, तब वह प्रसन्न होता है, और जब वह प्रसन्न होता है, तब हमें सुख चैन मिलता है क्योंकि उसकी आत्मा हममें वास करती है। यदि वह शोकित होता है, तो हम भी शोकित होंगे।

यदि आप हमेशा दुखित और निराश रहते हैं, तो यह पाठ आपको आपके निरंतर दुखित रहने एवं निराश रहने के मूल कारण को खोज निकालने में मदद करेगी।

अनाज्ञाकारिता पवित्र आत्मा को शोकित करता है।

> मैं तो पहले निन्दा करने वाला, और सताने वाला, और अंधेर करनेवाला था (उस पर); तौभी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैंने अविश्वास की दशा में बिना समझे बूझे, ये काम किये थे। (१ तिमुथियुस १:१३)।

सब प्रकार की अनाज्ञाकारिता पाप है, और पाप पवित्र आत्मा को शोकित करता है। अनाज्ञाकारिता विशेषकर पवित्रआत्मा को शोकित करता है यह तब, जब यह मालूम हो जाता है कि यह अनाज्ञाकारिता है। जीवन में ऐसे अवसर आते हैं कि हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करते हैं, परन्तु यह तब होता जब हम बिना समझे बूझे उसकी आज्ञा की अवहेलना करते हैं, तब हम ऐसे समय में परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं करते हैं, और यह जानते हुए कि हमारा स्वभाव उसकी आज्ञा के खिलाफ में है।

प्रेरित पौलुस मसीहियों को बड़ी जलन के साथ सताया करता था, यह सोचकर की वह परमेश्वर के लिये बड़ा उपकार कर रहा है। वह एक बड़ा धर्मी व्यक्ति था जो ईमानदारी से यह विश्वास करता था कि मसीही लोग बुरे थे। जैसे कि हमने पहले भी देख लिया है, कि प्रभु से उसका आमना सामना हुआ, और तुरन्त वह परिवर्तित होकर पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया। बाद में पौलुस ने अपना वक्तव्य दिया कि यद्यपि वह बिना समझे बूझे यह काम किया था फिर भी उसने परमेश्वर की दया को प्राप्त किया।

जो कोई भी शांति एवं आनंद से भरपूर जीवन जीने की इच्छा करता है उसे यह तय कर लेना चाहिये कि वह परमेश्वर की आज्ञाकारिता का जीवन जीये। सब प्रकार के दु:खों का जड़ है अनाज्ञाकारिता।

सभोपदेशक का लेखक उसके अध्याय १२, पद १३ में बहुत ही अच्छा कहा है: "सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान (उसका आदर कर और उसकी आराधना कर, यह जानकर कि वह है) और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही (पूर्ण, उसकी सृष्टि का मूल उद्देश्य, परमेश्वर के प्रबंध का मुद्दा, स्वभाव का मूल, सब प्रकार के आनंद की नींव, सूर्य के नीचे सब परिस्थितियों के सामजस्य का तालमेल) है।"

सभोपदेशक का लेखक एक ऐसा व्यक्ति था जिसने सब प्रकार के आनंद को अक्षरस परख लिया था। वह बड़ा धनी, अति महान और उसके पास बहुत सारी पत्नीयाँ थी। वह किसी भी प्रकार से सब सांसारिक आनंद भोगने से अपने आपको नहीं रोका। जितनी वस्तुओं को देखने की उसने लालसा की, उन सभी को देखने से न रूका। उसने खाया, पीया और आनंद किया। वह अति ज्ञानवान, बुद्धिमान, और सम्मानित हुआ, फिर भी उसने अपने जीवन से घृणा किया। परंतु सारी बाते उसे व्यर्थ लगने लगी। उसने जीवन की सब बातों को परख कर देख लिया और पाया कि सब कुछ व्यर्थ ही व्यर्थ है। और वह और भी ज्यादा उलझता गया है।

आखिरकार, उसने यह एहसास कर ही लिया कि उसकी समस्या अब तक क्यों बनी है। क्योंकि वह परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं मान रहा था। वह दुखी इसलिये था कि उसने स्वयं यह वक्तव्य दिया था कि सब प्रकार के आनंद का नींव था आज्ञाकारिता।

यहाँ पर बहुत सारे दुखी, शोकित चलते फिरते लोग मिलेंगे जो अपने दुखी जीवन के लिये दूसरे लोगों पर और परिस्थितियों पर इल्जाम लगाते हुए फिर रहे हैं, परन्तु वे लोग यह अहसास करने में चूक रहे हैं कि उनकी असंतुष्टि का कारण है परमेश्वर के साथ अनाज्ञाकारिता। सत्य लोगों को स्वतंत्र करता है, परन्तु ऐसा होने के लिये, इसका सामना करना चाहियेएवं इसे स्वीकार करना चाहिये।

और एक प्रकार से हम परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं और वह यह है कि हम उन उच्च अधिकारियों से बलवा करते हैं जिनको परमेश्वर ने हमारे जीवन के लिये रखा है। हो सकता है कि वह हमारी पत्नी, बॉस, शिक्षक, आत्मिक अगुवा, सरकार या किराने दुकान का मालिक हो जहाँ पर हम खरीददारी करते हों। वास्तव में दिन भर में हमारा आमना सामना अधिकारियों से होते रहता है। परमेश्वर कहता है कि अपने अधिकारियों के

आधीन भली मनसा से रहो, फिर भी आज की दूनियाँ में लोग बलवा करने की आत्मा से भरे पड़े हैं।

चूँकि मैं शरीर के अनुसार चलती थी इसलिये मैं भी अपने अधिकारी के साथ हल्के रूप में बलवा करने लगी थी चूँकि उन्होंने मेरे साथ बुरा बर्ताव किया था। परन्तु पवित्र आत्मा से भरने के बाद, वह मेरे बलवा करने के स्वभाव के बारे में मुझको बोध दिलाने लगा खासतौर से मेरे पति की ओर।

मैं याद करती हूँ कि एक सुबह के समय जब मैं सेवकाई के लिये प्रार्थना कर रही थी तब प्रभु ने मुझसे कहा, "जॉयस, जो कुछ मैंने तुमसे कहा है तुम अपने पति के साथ अपने स्वभाव को ठीक कर लो और जब तक तुम इस बात को नहीं मानोगी तब तक और आगे को मैं तुम्हारी सेवकाई के लिये और कुछ नहीं करूँगा।" उस समय में मैं बेकदरी से, झगड़ा करने की प्रवृति से, और तुरन्त गुस्सा करने की आदत से भर जाती थी यदि मुझे बचने के लिये मेरा कोई तरीका काम नहीं आता था।

मैं तड़प रही थी, परन्तु आखिरकार पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा से मैं डेव के आधरन होकर परमेश्वर की आधीनता स्वीकार कर ली। आधीनता का यह मतलब नहीं है कि हम अपने विचारों को व्यक्त न कर सकें या लोगों को हम अपना निरादर करने दें, परन्तु इसका यह मतलब नहीं कि हमें हमेशा रास्ता न मिले। हमें अपने लिये कुछ विचार करना चाहिये और भक्तिभाव स्वभाव रखना चाहिये जिससे जो काम हम करना नहीं चाहते हैं तब उसे करने के लिये कहा जाए कर सकें।

और जब मैं इस पुस्तक को इस समय लिख रही हूँ तो ठीक इसी प्रकार की परिस्थिति जिसके बारे में मैं बातचीत कर रही हूँ उसका मुझे सामना करना पड़ा। डेव चाहते हैं कि इस समय कुछ दिनों के बाद मैं उनके साथ एक सभा में जाऊँ, परन्तु मैं सचमुच में जाना नहीं चाहती हूँ, क्योंकि मैं यह महसुस करती हूँ कि वे अकेले ही उसे संभाल लेंगे। मैंने उनसे कहा है कि मुझे और भी दूसरा काम करना है, परन्तु वे यह महसुस करते हैं कि मेरा वहाँ पर उपस्थित रहना दूसरों के लिये एक महत्वपूर्ण नमूने की बात होगी। फिर मैंने यह निर्णय लिया कि यद्यपि मेरी राय भिन्न है, फिर भी मैंने उनके निवेदन को स्वीकार कर उनके आधीन किया। मुझ पर विश्वास कीजिये, कि यह एक बहुत बड़ा परिवर्तन था जो कि मैं वर्षों पहले इस तरीके से अपने हाथों में ली। मेरा बलवा करना पवित्र आत्मा को शोकित कर सकता था, परन्तु मेरी आज्ञाकारित उसे प्रसन्न करता है।

संबंध के द्वारा से परमेश्वर की आज्ञा मानना

> और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो (अपमानित करना या क्लेशित करना या दुखी करना), जिससे तुम पर छुटकारे के दिन (मसीह के द्वारा से बुराई और पाप के परिणाम से अंतिम छुटकारा) के लिये छाप (चिन्ह, परमेश्वर की अपनी मुहर, सुरक्षित) दी गई है। (इफिसियों ४:३०)

जिस प्रकार से हमने, इफिसियों ४:३० में और आगे पीछे के पदों में देखा है, जिसमें ये निर्देश दिया गया है हम पवित्र आत्मा को शोकित न करें और जिसमें यह प्रगट किया गया है कि हम अपने संबंध को लोगों के साथ कैसे कायम रखते हैं यह परमेश्वर के लिये बड़ी महत्वपूर्ण बात है।

बहुत बार हम एक ऐसी आदत को बना लेते हैं जिससे हम अपने नज़दीकी के लोगों के साथ बुरा बर्त्ताव करने लग जाते हैं जब हमें अच्छा नहीं लगता है, या कार्यस्थल में बुरा समय बीत रहा हो, या निराशा के कारण से परेशान हों, इत्यादि। परन्तु हमें तो हमेशा एक दूसरे के साथ आदरपूर्वक बर्ताव करना चाहिये, यह नहीं कि जब हमें अच्छा लगे।

मैं अपने आप से पूछती रहती हूँ कि क्यों मैंने अपने पति के साथ या बच्चों के साथ बुरा बर्त्ताव किया, परन्तु दूसरे लोगों के साथ नहीं किया। पवित्र आत्मा ने तुरन्त मुझे दिखाया कि जब मैं लोगों से चारों तरह घिरी रहती थी तो उस समय मैं लोगों को प्रभावित करने के लिये अपने नकारात्मक भावना और स्वभाव के ऊपर नियंत्रण कर लेती थी। परन्तु जब मैं अपने परिवार में होती थी, जिनके साथ मेरा पहले से संबंध था, वहाँ पर बड़ी आज़ादी से कोई भी मेरे चरित्र में त्रुटि एवं मेरी आत्मिक परिपक्वता को स्पष्ट रूप से देख सकता था। मैं सचमुच में अपने आप में कायल हो गई थी कि मैं अपनी मदद नहीं कर सकती हूँ, जिससे जब मैं गुस्सा हो जाती थी, बड़बड़ाती, या कठोर हो जाती थी, और फिर मैं अपने आपको अनुशासित नहीं कर सकती थी। मैं इतनी निराश हो जाती थी कि मुझे ऐसा लगता था कि अब मुझे किसी के ऊपर किसी भी कारण से बरसना पड़ेगा।

प्राय: समय जब मैं डेव के साथ या कोई बड़े छोटे बच्चों के साथ, बिना कोई कारण से नाराज हो जाती थी, सचमुच में यह विशेष कारण मुझे परेशान नहीं कर रहा था, परन्तु कुछ जटिल बातें मेरे अन्दर थीं। हो सकता है आर्थिक समस्या के कारण झुंझलाहट, व्यस्त यातायात के बीच में गाड़ी चलाना, सिरदर्द, या कार्यस्थल पर सुधार हो। वास्तव में परवाह नहीं कुछ भी कारण हो; परन्तु

सच्चाई यह है कि मैं गुस्सा करती थी और कठिनाई में थी। मैं शांति की जननी नहीं, परन्तु समस्या की जननी थी - और मैं अनाज्ञाकारी थी।

संबंध हमारे लिये बहुत बड़ी पूँजी के समान है, और परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी कीमत जानें। जब हम किसी बात की कीमत जानते हैं, तब हम उससे सावधानीपूर्वक बर्त्ताव करते हैं। हम उसे सावधानीपूर्वक संभालते हैं। वास्तव में हम उसको हानि से बचाने के लिये सीमा पार कर जाते हैं। निश्चित तौर से हम उसको किसी भी प्रकार से तनिक भी क्षति पहुँचने नहीं देते हैं।

क्या आपने कभी अपने संबंध को बगैर सोचे समझे, असंवेदनशील व्यवहार के द्वारा से तोड़ा है? मुझे निश्चय है कि हम में से प्रत्येक को इस प्रश्न के उत्तर में जी हाँ कहना होगा, परन्तु सुसमाचार का जो शुभ संदेश यह है कि हम परमेश्वर की सामर्थ जो हमारे अन्दर रहती है उसके कारण से हम बदल सकते हैं।

यदि कोई बहुत कीमती चीज़ हमारे पास हो, और जो हमें बहुत प्यारी हो एवं जिसकी कीमत हम जानते हों, यदि उसे दूसरा व्यक्ति लापरवाही से इधर-उधर करे और खराब मौसम में असावधानीपूर्वक इसे बिगड़ने के लिये छोड़ दे और आप उसे देख लें तो आप बहुतायत से शोकित हो जायेंगे।

परमेश्वर भी ठीक इसी तरह से अपनी अमानत के लिये महसूस करता है जिस तरह से हम करते हैं। लोग परमेश्वर के हैं। वे उसकी सृष्टि हैं, और वह शोकित होता है जब उनके साथ बुरा बर्त्ताव होते हुए देखता है। जब परमेश्वर शोकित होता है, तब उसका आत्मा भी शोकित होता है। और जबकि वही आत्मा सभी विश्वासियों के अन्दर वास करता है, तो यह स्वाभाविक है कि जिनके साथ बुरा बर्त्ताव किया जाता है वे भी शोकित होते हैं।

परमेश्वर एक ऐसा मालिक है जो सबको समान अवसर देता है। सभी की एक सी बुलाहट अपने जीवन में नहीं है, परन्तु प्रत्येक की एक जैसी वीरासत है। हर एक नया जन्म पाया हुआ व्यक्ति परमेश्वर का वारिस है वरन मसीह का संगी वारिस है। प्रत्येक को शांति, धार्मिकता और आनंद पाने का अधिकार है। प्रत्येक को ये अधिकार है कि उनकी जरूरते पूरी हों, परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल में लाये जाए, और उसके अभिषेक को उनके द्वारा से बहते देख सकें।

प्रत्येक व्यक्ति को एक समान अवसर है कि वे अपनी सेवकाई में फल को देख सकें, परन्तु उनके दूसरों से प्रेम करने की जो इच्छा है, उसका उसके साथ एक बड़ा रिशता है जिससे वे उसके कितने फल को देख सकेंगे। बहुत समय

पहले परमेश्वर ने मुझसे कहा था "लोग प्रेम में नहीं चल सकते है उसका एक मुख्य कारण है क्योंकि यह एक प्रयत्न है। यदि किसी भी समय वे प्रेम में चलेंगे, तो उन्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

प्रेम हमें कुछ बातों को जो हम कहना चाहते हैं उससे रोक सकता है। प्रेम यह भी मांग करता है कि जो कुछ हम करना पसंद करते हैं वह न करें और जो कुछ हम रखना चाहते हैं उसे दे दें।

जब परमेश्वर मुझसे पहले लोगों से प्रेम करने के बारे में बातें करना आरंभ किया, तब उसने मुझे दिखाया कि किस प्रकार से राजा दाऊद ने परमेश्वर के लिये सेंतमेंत में बलिदान नहीं चढ़ाया (देखें २ शमूएल २४:२४)। मैं अपने कुछ पुराने कपड़ों को उन महिलाओं को दी जो मेरे साथ काम कर रहे थे, परन्तु परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि मुझे यह जरूरत थी कि मैं उन वस्तुओं को दूँ जिनके लिये मैंने कीमत चुकाई है। मैं याद करती हूँ कि मेरे पास एक सुन्दर लाल रंग का ड्रेस था जिसे मैंने अपने लिये खरीदा था और जो साइज़ में मेरे लिये बड़ा हो रहा था, पर यह नया था। और मैंने इसके साथ कानों की बालियाँ भी ले रखी थी जिसे मैं विशेष अवसरों पर पहना करती थी।

यह ड्रेस कुछ समय से मेरी अलमारी में टंगा था, जब एक दिन प्रभु ने इस बात को मेरे हृदय में डाला कि मैं उस ड्रेस को उस महिला को दे दूँ जो हमारे साथ काम करती थी। मैं हिचकिचा रही थी। "परन्तु प्रभु, मैं उस ड्रेस को अब तक नहीं पहनी हूँ।" और फिर मेरे अन्दर की उत्सुकता और प्रबल होती गई, सो इसलिये मैंने आगे और कहा, "और इसके अलावा भी, मैंने सही कानों की बालियाँ भी ले ली है।"

इसलिये प्रभु ने कहा, "जॉयस, मैं चाह रहा था कि तुम कानों की बालियों को रख लेती, परन्तु जबकि वे तुम्हारे लिये अधिक मायने की हैं इसके बजाय कि होना चाहिये, इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम उसे भी दे दो।"

मैंने यह सीखा है कि प्रेम कहेगा कि जो समय आप अपने लिये देते हैं वह किसी दूसरे के लिये दें। वह आपसे कहेगा कि किसी को किसी ऐसे स्थान पर ले जाओं जहाँ पर आप नहीं गये हों - या ऐसे जगह पर निकल जायें और लायें जहाँ पर आप अब तक न गये हों और न ऐसा करना चाहते हों।

प्रेम किसी को क्षमा कर देने के लिये कहेगा जबकि वे इसके योग्य नहीं होंगे। ईर्ष्या, जलन को पकड़े रहने के बजाय क्षमाशीलता बेहतरीन है; अक्षमाशीलता जहर पीने के समान है यह प्रतीक्षा करते हुए कि आपका दुश्मन मर जायेगा। प्रेम बिना विवाद के अपने आप में एक प्रयास है। प्रेम के लिये

आपको कीमत चुकानी पड़ती है। बहुत सारे लोग अपने कार्यों में फल नहीं देखते हैं क्योंकि वे कभी भी कीमत चुकाना नहीं चाहते और न लोगों से प्रेम करते हैं। एक बार मैंने इन बातों को सीखा, तब से मैं लोगों के साथ अधिक सावधानीपूर्वक व्यवहार करना आरंभ कर दी। परमेश्वर से मैं प्रेम करती हूँ और निश्चय मैं उसे शोकित करना नहीं चाहती हूँ। कई ऐसे समय में लोगों के साथ जो मेरा व्यवहार था उसे शोकित किया है जिसे मैं एहसास करती हूँ और जिससे मैं प्रेरित हुई कि मैं अपने स्वभाव को बदलूँ।

यूहन्ना १६:८ हमसे कहता है कि पवित्र आत्मा का काम है पाप के विषय कायल करना और धार्मिकता के विषय में विश्वास दिलाना, जो कि हृदय की खराई है ताकि परमेश्वर के साथ उचित रूप से खड़े रह सकें। वह मुझे हमेशा तुरन्त काईल करता है यदि मैंने क्रूरता की, अनादर किया, दूसरों की मदद करने के बदले में अपशब्द का इस्तेमाल किया, किसी के बारे में मन में हानि का विचार किया, दूसरों पर दोष लगाया था अगर मैं धीरजवन्त और सहनशील नहीं रही।

जैसे परमेश्वर की इच्छा हमारे लिये है वैसे ही हम एक दूसरे के लिये करें। वह दयालु, कृपालु, सहनशील, कोमल, तरसखानेवाला, प्रकाशन देने वाला, और बहुत सारी अच्छी बातें उसमें हैं। इसलिये, आइये हम प्रभु के सामने एक शुद्ध विवेक को लेकर, एवं परमेश्वर और मनुष्यों के सामने बिना दोष के साथ जीयें। इस बात के लिये जिसे प्रेरित पौलुस स्वयं प्रयत्न करता था और कहता था (देखें प्रेरितों के काम २४:१६)। आइये हम शुद्ध विवेक के लिये प्रार्थना करें, जो कि पूरी रीति से एक दूसरे व्यक्ति के प्रति अनुचित व्यवहार करने के कारण कायल हो गया हो, खास करके वह एक परमेश्वर की संतान हो। हम बहुत सारी बातों को सामान्य तरीके से देखकर सीख सकते हैं कि जो कुछ हमें प्रसन्न एवं शोकित करती है वही परमेश्वर को प्रसन्न एवं शोकित करती है।

परमेश्वर के लोगों का आदर करने से हम परमेश्वर का आदर करते हैं यह एक तरीका है। इस सदंर्भ में मैं इसलिये कह सकती हूँ क्योंकि मैं जानती हूँ कि किस प्रकार से लोग मेरे बच्चों का आदर करते हैं, इसलिये के वे मेरे बच्चे हैं। हमारी सेवकाई में भी मैं यह उम्मीद करती हूँ कि हमारे सहकर्मी जिस तरह से डेव और मेरा आदर करते हैं उसी तरह से मेरे बच्चों का भी आदर करें।

एक बार मुझे एक सहकर्मी की बात याद आयी, जो कि हमारे एक बेटे के अभद्रता से पेश आया, उस समय उसकी उम्र लगभग १५ वर्ष की थी, ऊँची आवाज मे बातें करने लगा। इससे मुझे ठोकर लगी क्योंकि मैं यह उम्मीद करती थी कि मेरे बेटे के साथ आदरपूर्वक व्यवहार किया जाये।

आप पूछ सकते हैं कि यदि मेरे बेटे ने कुछ ऐसा काम किया हो जिसके लिये उससे उस प्रकार का व्यवहार किया गया। इसका उत्तर है जी हाँ, वह ऐसा किया होगा। परन्तु फिर भी यह उस सहकर्मी का काम नहीं था कि उसके साथ उस तरीके से पेश आये। मैं एक प्रेमपूर्वक समझाईश को बर्दाश्त कर ली होती जो कि उचित भाषा, स्वर और भावना के साथ किया जाता, परन्तु मुझे उस सहकर्मी का क्रोध, उतावला स्वभाव, जो उसने मेरे बेटे के प्रति दिखाया था उसे मैं बिलकुल पंसद नहीं की। इसी तरीके से, हम सभी विश्वासी लोग परमेश्वर की अमानत हैं। इसी प्रकार से, वह हमारी अच्छी देखभाल करने के लिये समर्पित है, और जब हमारे साथ दुर्व्यवहार किया जाता है जब वह बिल्कुल पसंद नहीं करता है।

मत्ती १८:६ मे यीशु ने स्वयं कहा है और जो कोई "इन छोटों में से एक को" ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे समुद्र में डुबाया जाता। इस उदाहरण को एक छोटे से बालक को लेकर दिया गया था, परन्तु मैं सोचती हूँ कि यह बात एक परमेश्वर के संतान के सिलसिले में भी लागू किया जा सकता है।

निर्णय करें कि लोगों के साथ अच्छी तरह से बात कर सकें। मृदुभाषी होकर बोलें जो शांति दे, अभद्रता से नहीं। हमेशा उनके लिये भला ही सोचें। उनका आदर करें। अभद्र न हों। यदि आपका दिन खराब चल रहा है या आपको अच्छा नहीं लग रहा है, तो इसके लिये आप दूसरों के ऊपर बरस न पड़ें। हम मानव जाति की कीमत का एहसान करें। परमेश्वर के समान बनें; किसी व्यक्ति का तरफदार न बनें; इसका मतलब यह कि पक्षपाती न हों (देखें प्रेरितों के काम १०:३४)। इस क्षेत्र में उन सब बातों का परिहार करें जिससे पवित्र आत्मा शोकित न हो।

१२
पवित्र आत्मा को न बुझाओ

(पवित्र) आत्मा को न बुझाओं (दबाना,मन्द करना)।
१ थिस्सलुनीकियों ५:१९)

इस पद में पवित्र आत्मा को न बुझाने, दबाने और न मन्द करने के लिये हमसे कहा गया है। वेबस्टर के अनुसार बुझाने का मतलब है, "बाहर कर देना", दबाने का मतलब है, "दमन करना या रोके रहना (एक स्वभाविक बहाव)" और मन्द करने का मतलब है "प्रबलता को कम कर देना।" यदि हम आग को बुझाते हैं या तो उसे बाहर करते हैं या उसे बुझा देते हैं। हम पवित्र आत्मा को बुझाना नहीं चाहते हैं; परन्तु इसके बजाय हम उसकी क्रियाओं की बढ़ती और उसके हमारे जीवन में बहाव के लिये निश्चयता से सब कुछ कर सकते हैं।

हमारे प्रतिदिन के जीवन में पवित्र आत्मा के क्रिया की बढ़ती एवं बहाव के लिये हम अकेले क्या कुछ कर सकते हैं? पहली थिस्सलुनीकियों अध्याय ५ में इस विषय पर तह तक जाने के लिये कुछ खास बातें दी गयी हैं।

इसी अध्याय में पद १२ में हमें यह निर्देश दिया गया है कि जो लोग हमारे मध्य में परिश्रम करते हैं उन्हें हमें जानना चाहिये - स्वीकार करें, तारीफ करें, और उनका आदर करें। यद्यपि इस पद का सीधा इशारा अपने अगुवों को जानने की ओर है और मैं यह विश्वास करती हूँ कि यीशु भी यही चाहता होगा कि जो लोग हमारे साथ इर्द गिर्द काम करते हों उनके लिये भी हम सामान्य रूप से इसी सिद्धांत को लागू करें।

पद १३ और १४ हमें शिक्षा देती है कि हमें मेल-मिलाप से और जो ठीक चाल नहीं चलते हैं उनको समझाएँ, और उसी समय एक दूसरे के साथ सहनशीलता दिखाएँ और हमेशा गुस्से से अपने आपको परे रखें।

पद १५ में हमसे कहा गया है कि कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहें आपस में और सब से भी भलाई ही की चेष्टा करें।

पद १६ से २० तक में हमें निर्देश दिया गया है कि विश्वास में सदा आनंदित रहें और हृदय में मग्न रहें, निरंतर प्रार्थना में लगे रहें, हर बात में चाहे कोई परिस्थिति क्यों न हो परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें और किसी वरदान को भविष्यद्वाणी की बातों को, निर्देशों को, प्रकाशन या चेतावनी को तुच्छ न जानें।

इन वचनों से, यह प्रगट हो जाता है कि जब एक बार हमारा व्यवहार चमक जाता है या जो उससे हमारे व्यक्तिगत जीवन में पवित्र आत्मा का बहाव बढ़ता है या तो घटता है।

व्यवहार भाग्य निर्धारित करती है।

> सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्त्रोत वही है। (नीतिवचन ४:२३)।

व्यवहार बहुत ही महत्वपूर्ण है; यह कि हम कैसे क्रियान्वित होते हैं अपने व्यवहार करने के तौर तरीकों से। हमारे चरित्र का समावेश हमारे व्यवहार में है, और हमारे चरित्र का आरंभ हमारे विचारों से होता है।

मैंने किसी को यह कहते सुना, "विचार बोयें, कार्य काटें; कार्य बोयें, आदत काटें; आदत बोयें, चरित्र काटें; चरित्र बोयें, भाग्य काटें।"

भाग्य जीवन का परिणाम है; चरित्र हम कौन हैं; आदत हमारे व्यवहार का तरीका है। हमारा भाग्य, या हमारे जीवन का परिणाम, वास्तव में हमारे विचारों के द्वारा से ही आता है। इस तरीके से सम्पूर्ण पद्धति का आरंभ होता है। इसमें अचभ्भें की कोई बात नहीं कि बाइबल हमें सम्पूर्ण रीति से हमारे मन, स्वभाव, और चालचलन के नयेपन के बारे में शिक्षा देती है (देखें रोमियों १२:२; इफिसियों ४:२३)। हमें परमेश्वर के वचन का अच्छा विद्यार्थी होना चाहिये जिससे हम नये विचारों के पद्धतियों का विकास कर सकें, जो कि सम्पूर्ण भाग्य में अन्त में परिवर्तन ला सके। (हमारे जीवन के परिणाम में)।

जब हमारा बुरा स्वभाव रहता है जैसे कड़वाहट, क्रोध, अक्षमाशीलता, ईर्ष्या, अनादर, बदला लेने की भावना, प्रशंसा की कमी, और इत्यादि बातें

पवित्र आत्मा के लिये रूकावटें हैं। पवित्र आत्मा का बहाव भक्तिपूर्ण स्वभाव के द्वारा होता है, अभक्ति में नहीं।

नियमित रूप से आप अपने व्यवहार की जाँच करें, और चौकसी से उसकी रक्षा करें जैसे नीतिवचन ४:२३ में कहा गया है। मत सोचें कि आप अपने व्यवहार को नहीं बदल सकते; बस आपको अपने विचारों को बदलने की जरूरत है।

बहुत सारे लोग ऐसे ही धोखे में रहकर विश्वास कर लेते हैं कि वे ऐसे विचारों को आने से रोक नहीं सकते हैं, परन्तु हम तो विचारों का चुनाव खुद कर सकते हैं। हमें ये फैसला करने की आवश्यकता है कि हम क्या कुछ सोच रहे हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तब हमें ज्यादा समय नहीं लगता है हमारे बुरे व्यवहार के मूल कारण को खोज निकालने के लिये।

शैतान हमेशा से इस कोशिश में रहता है कि हमारे मन को गलत विचारों से भर दे, परन्तु हमें उसकी किसी भी बात को जिसे वह भरने की कोशिश करता है ग्रहण करने की जरूरत नहीं है। अगर कोई मुझे एक चम्मच जहर भी दे तो मैं उसे नहीं लूंगी, और न तो आप लेंगे। यदि हम इतने होशियार भी हैं तब भी हमें जहर खाने की जरूरत नहीं है, परन्तु हमें आखिरकार इतना बुद्धिमान होना भी चाहिये जिससे शैतान हमारे मन, व्यवहार, और जीवन में जहर धोल न सके।

इसी विषय पर मैंने एक प्रभावशाली पुस्तक लिखी है जिसका शीर्षक है "द *बैटल फील्ड ऑफ दा मांइड"।* यदि आपने इसे नहीं पढ़ा है, तो जरूर इसे लेकर पढ़ें।

सतह के पार देखें

> और प्रेम में चलो (एक दूसरे को ऊँचा उठाते हुए एवं प्रसन्न करते हुए); जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया और हमारे लिये अपने आपको बलिदान कर दिया। (इफिसियों ५:२)।

हमें प्रेम में चलने के लिये निर्देश दिया गया है, और एक दूसरे को ऊँचा उठाते हुए एवं प्रसन्न करते हुए बढ़ें। हमें एक दूसरे को ऊँचा उठाने एवं प्रसन्न करने के लिये, सबसे पहले एक दूसरे को जानना होगा, जो कि प्रेम की क्रिया है।

किसी मनुष्य जाति के स्तर तक पहुँचने के लिये समय और प्रयास लगता है। हम शरीर के अनुसार न्याय करने के लिये आतुर हो जाते है और हम जल्दबाजी में न्याय कर देते हैं। परमेश्वर का वचन इन दोनों प्रयोग का खंडन करता है:

> मुँह देखकर न्याय न चुकाओं (बाहरी दिखावा और दृष्टिगोचर होना), परन्तु ठीक ठीक न्याय चुकाओ। (यूहन्ना ७:२४)।

> सो जब तक प्रभु न आए (दुबारा), समय से पहिले किसी बात का न्याय न करो: वही तो अंधकार की छिपी बातें (अभी छिपी) ज्योति में दिखाएगा, और मनों की मतियों (कारण और उद्देश्य) को प्रगट (गुप्त) करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा (अभी देय) होगी। १ कुरिन्थियों ४:५)।

मैं हमेशा से एक ऐसी व्यक्ति रही जो झटपट न्याय कर देती थी। परन्तु परमेश्वर मुझसे इस विषय में कई बार बातचीत किया और आखिरकार मैंने जल्दबाजी और मुँह देखा न्याय करने के खतरे का एहसास कर लिया।

किसी व्यक्ति का न्याय करने से पहले, हमें उस व्यक्ति के बारे में सही जानकारी ले लेनी चाहिये, जिस प्रकार से १ पतरस ३:४ में कहा गया है, "छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व।"

अन्यथा, हम पहले या दूसरे तरीके से गलतियाँ कर सकते हैं (१) हम किसी के बाहरी रूप को देखकर स्वीकार कर सकते हैं परन्तु जैसे हम देखते हैं वैसे वे होते नहीं; या (२) हम किसी के बाहरी रूप और चलन देखकर उसे अस्वीकार कर सकते हैं; जबकि वह व्यक्ति वास्तव में अन्दर से अनोखा होता है।

मैं जानती हूँ कि हममें से प्रत्येक मैं कुछ न कुछ टाल-मटोल करने को, कुछ अजीब हरकत करने की, जो आदत रहती है जिसे लोग आसानी से नहीं समझ सकते हैं। परमेश्वर स्वयं बाहरी रूप को देखकर न्याय नहीं करता है, इसलिये हम उसके दिखाए हुए नमूने का अनुसरण करना चाहिये।

दाऊद को कभी भी लोगो ने राजा बनने के लिये नहीं चुना गया होता। जबकि उसके परिवार वाले ही उसे तुच्छ जानते थे। उन्होंने उसे चुनने की प्रक्रिया में शामिल नहीं किया। (देखें १ शमूएल १६:१-१३)। परमेश्वर ने दाऊद के हृदय को देखा, एक चरवाहे के हृदय को देखा। परमेश्वर के एक आराधक को देखा, जिसका हृदय उसकी ओर लगा हुआ था, एक ऐसा व्यक्ति जो कि नरम था एवं उसके हाथ के द्वारा से मोड़ा हुआ था, ऐसे ही गुण वालों को परमेश्वर खोज रहा है।

मैं अक्सर उन चट्टानों के गड़ढों और गुफाओं के बारे में सोचती रहती हूँ, जो ऐसे चट्टान है जो कि बाहर से दिखने में असुन्दर और कुरुप लगते हैं परन्तु अन्दर से वास्तव में भव्य है। भीतर में ये मणि के समान सुन्दर लगते हैं, और वास्तव में ये हैं भी, परन्तु बाहर से ये खुरदुरा एवं पपड़ीदार लगते हैं।

अक्सर हम भी इन चट्टानों की तरह बाहर से खुरदुरे, कुरुप और पपड़ीदार लगते हैं, परन्तु परमेश्वर यह जानता है कि उसने हमारे भीतर सुन्दर बातों को भर दिया है। जिस प्रकार से सोने का खनिक सोने का डला खोदने के समय यह जानता है कि उसे धीरज धरना चाहिये, वैसे ही परमेश्वर यह जानता है कि उसे धीरज धरना चाहिये जब उसका पवित्र आत्मा हमारे अन्दर काम करता है ताकि हमारे जीवन के अन्दर से खोदकर आखिरकार निकालता है कि क्या कुछ अन्दर में है।

जो कुछ हम दूसरे लोगों के जीवन में बोते है हम निश्चयता से उसी को हमारे जीवन में काटेंगे। यदि हम उतावलापन, कठोर न्याय बोएंगें, तो ठीक वैसे ही हम काटेंगे। जब लोग हमारा न्याय करने के लिये बैठते हैं, और जब वे हमें बिना समझे बुझे निर्णय ले लेते हैं तब हम यह बिल्कुल कभी भी पसंद नहीं करते हैं। हमें जैसे मत्ती ७:१२ कहता है कि जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।

विरोध का परिहार करें

> विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो (विवादपूर्ण, विरोध, स्वार्थ, या अयोग्यता किनारा)। पर दीनता (मन की नम्रता) से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो (दूसरे के बारे में हम हमेशा अपने से ऊँचा ख्याल रखें)। (फिलिप्पियों २:३)।

विरोध का हिस्सेदार बनकर आप अपने जीवन में पवित्र आत्मा को न बुझायें।

२ तीमुथियुस २:२४ में प्रेरित पौलुस हमें शिक्षा देता है कि यह समझाते हुए कि प्रभु का दास इन खास निम्न बातों के लिये प्रयास नहीं करना चाहिये कि वे, “झगड़ालू होना न चाहिये (लड़ाई और ईर्ष्या करना)” इसके बजाये, उन्हें हर एक के साथ दयालु और भला होना चाहिये। दूसरे शब्दों में, उन्हें शांतिजनक और समस्या निवारक होना चाहिये।

बहुत सारे मसीही घराने एवं कलीसियाएँ विरोध से भरी पड़ी हैं। विरोध अभिषेक को मारता है; यह उसके बहाव को रोकता है - एवं बुझा देता है। जहाँ

अभिषेक नहीं है, वहाँ बंधन नहीं टूटते हैं। शैतान इस बात को जानता है और, इस कारण, वह सावधानीपूर्वक हर जगह विरोध के बीज को बोने की कोशिश करता है। जब हम विरोध में शामिल न होकर इंकार कर देते हैं, और अधिकाई से सक्रिय होकर जब इसको रोकते हैं तब पवित्र आत्मा प्रसन्न होता है:

> सब से मेल मिलाप रखने (या प्रयास करें), और उस पवित्रता के खोजी हों जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि (कभी भी) न देखेगा। और ध्यान से देखते रहो (एक दूसरे को), ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ (कट्टर शत्रुता, कड़वापन, या घृणा) फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जायें। (इब्रानियों १२:१४-१५)

जिस प्रकार से हमने इस परिच्छेद में देखा है कि, अगर हम प्रयास करेंगे तो सकारात्मक व्यवहार का समावेश हो सकता है। ये पद हमें सिखाते हैं कि हमें एक दूसरे की चौकसी बरतना है और निश्चय दूसरे लोगों की मदद करें ताकि उन सब बातों का परिहार कर सकें जो मेलमिलाप को चोरी करता है। हमें नाराजगी, कड़वाहट और घृणा का परित्याग करना है जिसमें विरोध और पीड़ा के लिये कोई जगह न मिले।

मैं आपके ध्यान को जो कुछ बाइबल कहती है उस ओर खींचना चाहती हूँ कि *बहुतेरे* लोग विरोध से संक्रमित होकर अशुद्ध हो जाएँगे। इसलिये यह हमारे लिये अति आवश्यक हो गया है कि जहाँ कहीं इसे देखते हैं इसे रोकें। विरोध एक बीमारी की तरह फैलता है और जो इसके संम्पर्क में आते हैं, उन्हें संक्रमित कर देता है।

यदि हम परमेश्वर पर दिल से भरोसा नहीं कर रहे हैं तो विरोध को अपने अंदर घोलना सरल बात है। डेव और मैं एक बार एक मॉल में गये और मैंने एक तस्वीर देखी जिसे मैं वहां के दुकान से खरीदना चाहती थी। डेव ने सोचा कि हमें इसकी जरूरत नहीं हैं, इस कारण से मैं "गुस्से से भड़क उठी" और अपनी चुप्पी तोड़ दी। मैं अपने वास्तविक रूप में आ गई थी क्योंकि मैं गुस्से में थी।

उन्होंने कहा, "क्या तुम ठीक हो?"

"हाँ, मैं ठीक हूँ, ठीक हूँ, बिल्कुल ठीक हूँ। सब कुछ ठीक है।" मैं ऊपर से तो मुस्कुरा रही थी परन्तु मेरी आँखों में उस खुशी की झलक नहीं थी, और अंदर ही अंदर मैं सोच रही थी कि, *ओह, तुम तो हमेशा ही कहते रहते हो कि मुझे क्या करना है। तुम मुझे अकेले क्यों नहीं छोड़ते कि मैं जो करना चाहूँ कर सकूँ? तुम तो यही सोचते हो कि मुझे कुछ करना आता ही नहीं। अच्छा, यदि*

तुम गोल्फ खेलना चाहते हो तो बाहर जा सकते हो; मैं क्यों उस तस्वीर को खरीद नहीं सकती जिसे मैं पसंद करती हूँ? नहीं, नहीं, नहीं -

यद्यपि हम मॉल के अंदर ऊपर गये फिर नीचे आये तब मैं उदासी के मारे अपने होंठ को लगभग एक घंटे लटकाए रही। मैं डेव से घुमा फिरा के बात करना चाह रही थी। मैं जानती थी कि वह अपने शांत स्वभाव के साथ, संयमी व्यक्तित्व के कारण से कभी भी मुझसे लड़ाई नहीं किये परन्तु हमेशा मुझे मेरी पसंद के अनुसार छोड़ दिया। मैं भी इन बातों को समझने के बहुत ही अपरिपक्व थी कि प्रभु में इस प्रकार का व्यवहार करना कितना अभक्तिपूर्ण है। उसके बाद से मैंने यह सीखा कि इस प्रकार की कठोर माँग करना सच्ची ख़ुशी देने के बदले में विरोध को उत्पन्न करता है।

परन्तु उस दिन, मैं डेव से जिद कर रही थी कि उस दुकान से उस तस्वीर को खरीद लें। चूँकि वे शांतिप्रिय हैं, डेव ने कहा, "आओ, चलो, हम उस तस्वीर को ले लें। चलो भी, उस तस्वीर को हम ले लें।"

सचमुच में मैंने कहा, "नहीं, नहीं, नहीं, मुझे अभी उस तस्वीकर की जरूरत नहीं है। मुझे नहीं चाहिये।"

"चलो भी, तुम उस तस्वीर को खरीदने जा रही हो। मैं चाहता हूँ कि तुम उसे ले लो। उस तस्वीर को निकालो - मैं चाहता हूँ कि तुम उस तस्वीर को खरीद लो।"

सो इस प्रकार से हम उस तस्वीर को खरीद लिये, और जैसे ही मैंने उसे अपने घर में लाकर लगा दिया वैसे ही पवित्र आत्मा ने मुझसे कहा, "तू जानती है, तू सचमुच में विजयी नही हुई। तुझे तेरी तस्वीर मिल गई, परन्तु तू अब तक पराजित हुई है क्योंकि तूने मेरी इच्छा पूरी नहीं की।"

आपको काम में से, पड़ोस में से, रिश्तेदारों में से, परिवार में से चर्च में से, और प्रभु और अपने आप के बीच में से विरोध का परिहार करना चाहिये। वह हमारे साथ कभी भी विरोध नहीं करता है, जबकि कई ऐसे समय में हम उससे नाराज़ हो जाते हैं। यह उचित नहीं हैं, फिर भी यह होते रहता है।

और तो और, यदि मैं अपने कर्त्तव्य के प्रति असावधान रहूँगी तो मैं विरोध के महत्व के बारे में अपने आपको कैसे बता पाऊँगी। बहुत सारे लोग अपने आपको ठीक से संभाल नहीं सकते हैं। जीवन कठिन है अगर आप उसे संवारते हुए न चलें तो। इसके बावजूद भी, आप अकेले व्यक्ति जहाँ भी जाना चाहते हैं वहाँ कभी भी नहीं जा सकते हैं। यदि आप अपनी देखभाल नहीं कर सकते तो आप दूसरों की भी नहीं कर सकते हैं।

यदि कोई कलीसिया विरोध से भरी है, तो जानें कि पूरी संगति इसके द्वारा से बर्बाद हो सकती है। मैं अपनी आँखों से एक कलीसिया को ऐसे ही बर्बाद होते हुए देखा है और यह अनुभव मेरे लिये बहुत ही कष्टदायक रहा। कैसे भी करके इससे मुझे यह सिखने को मिला कि विरोध के द्वारा से खतरा होता है। मैंने यह सीखा कि हर सम्भवतः मुझे इसका परिहार करने की जरूरत है।

> क्योंकि सारी व्यवस्था (मनुष्य के संबंध के सिलसिले में) इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, कि तू अपने पड़ोसी से (जैसे तुम करते हो) अपने समान प्रेम रख। पर यदि एक दूसरे को (साझा विरोध में) दाँत से काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस रहो (अपनी पूरी झूँड की), कि एक दूसरे का सत्यानाश न कर दो। पर मैं कहता हूँ, (पवित्र) आत्मा (प्रत्युत्तरित और नियंत्रित और आत्मा की अगुवाई में) के अनुसार चलो (आदत से)। (गलतियों ५:१४-१६)

पवित्र आत्मा हमें हमेशा मेल मिलाप से रहने के लिये अगुवाई करता है। यद्यपि वह हमें जबरदस्त विरोध के मध्य में भी ले चले, आखिरकाल वह ऐसा कर ही देता है कि हम मेल मिलाप के साथ जी सकते हैं।

पवित्र आत्मा को हमारी अगुवाई करनी चाहिये। हमें लोगों से प्रेम करना चाहिये, न कि उन्हें व्यर्थ बातों से काटें और न न्याय करें। उस प्रकार का नकारात्मक व्यवहार अभक्तिपूर्ण होता है जो कि परमेश्वर की इच्छा को बढ़ावा नहीं देता है। यह हमारे जीवन में पवित्र आत्मा को बुझा देता है, परन्तु हमें तो घटना नही है और न बुझना है, बल्कि बढ़ने और उसके बहाव के लिये हमें उसकी सामर्थ चाहिये।

भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो

> भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानों (नबूवत की बातों की निन्दा न करें, और न प्रेरित निर्देशों को तुच्छ जानें, या प्रकाशन या चेतावनी को भी। (१ थिस्सलुनीकियों ५:२०)

१ थिस्सलुनीकियों ५:१९ के निर्देश का पालन करते हुए जिसमें यह लिखा है कि पवित्र आत्मा को न बुझाओ, और अब हमारे पास एक और निर्देश है कि भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो। आइये हम इस वचन के मूल अर्थ को जानें।

वाईन के अनुसार शब्द भविष्यद्वाणी के लिये यूनानी भाषा में "सूचित करना" अर्थात परमेश्वर के मन एवं परामर्श के अनुसार किया गया है और

इसका संदर्भ "वरदान के प्रयोग में या वह जो कुछ 'नबूवत' की जाती है उसके सिलसिले में कहा जा रहा है।"

वाईन और आगे कहता है: "यद्यपि पुराने नियम की बहुत सारी बातों की नबूवत बहुत शुद्धता से की गई थी...और अब नबूवत की जरूरत नहीं है, न प्रारंभिक तौर की, या भविष्य कहने के लिये भी नहीं। परन्तु यह तो वह उद्घोषणा है जिसे स्वाभाविक तरीके से कोई भी नहीं जान सकता है,... परन्तु यह तो परमेश्वर के इच्छा के आगे पीछे होने वाली बाते हैं, जिसका संदर्भ भूतकाल, वर्तमानकाल, और भविष्यकाल से हैं।"

नये नियम में, परमेश्वर ने मनुष्यों को आत्मिक दान दिये, उनमें से एक भविष्यद्वाणी है। वाईन के अनुसार "उनकी सेवकाई का जो उद्देश्य था उन्नति, शांति, और विश्वासियों को प्रोत्साहित करना,...जबकि इसका प्रभाव अविश्वासियों को ये दिखलाना था कि परमेश्वर मनुष्यों के हृदय के मर्म को जानता है, ताकि पाप के विषय में कायल करे, और आराधना करने के लिये विवश करे।"

पुराने नियम के जो भविष्यद्वक्ता वे परमेश्वर के मुख बनकर बातें करते थे। वह उनके द्वारा से लोगों से बातें करता था। जबकि राजा भी भविष्यद्वक्ताओं की ध्यान से सुनते थे। यदि वे नहीं सुनते थे, तो साधारण तौर से वे अपने राज्य को खो भी देते थे। कुछ दुष्ट राजा लोग भविष्यद्वक्ताओं की सुनने से इंकार करते थे। इस कारण से उनके राज्य काल में बहुत ही उजाड़ और विनाश आ पड़ता था यहां तक कि उनके देश में बुराई चरम सीमा पार कर जाती थी।

सचमुच में, आज की तारीख में भी, भविष्यद्वक्ता है, परन्तु हर एक जो भविष्यद्वाणी करता है उसे इस पद के भविष्यद्वक्ता नहीं कहा जा सकता है। *१ कुरिन्थियों १२:१०* में *द एमप्लीफाइड बाइबल* के अनुसार भविष्यद्वाणी के बारे में बताती है कि परमेश्वर की ''अलौकिक इच्छा और उद्देश्य के अनुवाद करने का वरदान है।'' मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर के वचन के अभिषिक्त शिक्षक गण हमेशा सिखाने के द्वारा से भविष्यद्वाणी करते रहते हैं। वे परमेश्वर की अलौकिक इच्छा और परामर्श का अनुवाद करते एवं भविष्य के विषय में कहते हैं।

परमेश्वर से एक अलौकिक वचन प्राप्त कर लेना किसी को एक भविष्यद्वक्ता नहीं बना देता है। आजकल बहुत सारे लोग अपने आपको भविष्यद्वक्ता कहते हैं, परन्तु वे नहीं हैं। वे लोगों से कहने की कोशिश करते रहते हैं कि वे कैसे जीवन जीयें। वे लोग झूठी भविष्यद्वाणी करके अपने मन की इच्छा प्रगट करके कहते हैं, कि यह परमेश्वर की इच्छा है। बहुत सारे भोले और न परखने वाले

लोग इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा से असंमजस में पड़े है और दूर हो गए है। हमें १ यूहन्ना ४:१ में कहा गया है कि हमें उन आत्माओं को परखना है, और १ थिस्सलुनीकियों ५:२१ में कहा गया है कि सब बातों को परखो और जो अच्छी है उसे पकड़े रहो। कोई भी कुछ भी आपसे कहे उस पर विश्वास मत कीजिए। बल्कि भली भाँति ये जान ले कि उनकी सेवकाई परमेश्वर के वचन के अनुसार है या नही।

यदि हम भविष्यद्वाणी को तुच्छ जानते हैं तो क्या हम पवित्र आत्मा को बुझाते हैं इससे बाइबल का क्या मतलब है।

पहला, मैं विश्वास करती हूँ कि इसका मतलब ये है कि हमें परमेश्वर के वचन के प्रचार से प्रेम करना चाहिये, नहीं तो हम पवित्र आत्मा जो उन्नति हमारे लिये चाहता है उसे बुझा देंगे। परमेश्वर के वचन बिना आत्मिक रुप से बढ़ना नामुमकिन है। जिस प्रकार से हम शरीर के लिये भोजन लेते हैं उसी प्रकार से उसका वचन हमारी आत्मा के लिये रोटी है; इसे हम नियमित रूप से लें ताकि हम स्वस्थ रहें।

दूसरा, मैं विश्वास करती हूँ कि इसका मतलब यह भी है कि हमें दोष लगाने की प्रवृति नहीं होनी चाहिये या भविष्यद्वाणी के वरदान या अन्य आत्मा के वरदान के प्रति हमारा कोई बुरा ख्याल नहीं रहना चाहिये। हमें परमेश्वर के हर तरीकों का जो वह स्त्री और पुरुषों के द्वारा से काम करने के लिये चुनता है आदर करना चाहिये। हमें वरदानों को चमकाना चाहिये और जिनके द्वारा से काम होता है उनका आदर करना चाहिये। ये वरदान उनको पवित्र आत्मा ने हमारे लाभ के लिये दिया है ताकि वह हमारी सहायता करे और परिपक्व करे।

परमेश्वर विभिन्न लोगों को इस्तेमाल करता है

और उसने कितनों को (भिन्न भिन्न, उसने स्वयं मनुष्यों को नियुक्त करके हमको दे दिया) प्रेरित (विशेष संदेशवाहक) नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता (प्रेरणा से भरा प्रचारक एवं व्याख्या करने वाला) नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले (सुसमाचार प्रचारक, यात्रा करने वाले मिशनरीगण) नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले (अपने झुंड का चरवाहा) और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ (उसके पवित्र किये हुए लोग), और सेवा का काम (वे करना चाहिये) किया जाए, और मसीह की देह (कलीसिया) उन्नति पाए। (यह निर्माण

करते जाए) जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में (पूर्ण और सटीक) एक न हो जाएँ, और (न हो जाएँ) एक सिद्ध मनुष्य (सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ जो मसीह की ऊँचाई और सिद्धता के स्तर से भले ही कम हो) न बन जाए और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएँ। (इफिसियों ४:११-१३)।

यद्यपि शिक्षा देने का जो दान मुझे मिला है वह मेरे खुद के जीवन के लिये आशीष का कारण साबित हुआ है, और वास्तव में परमेश्वर ने ही मेरे हृदय में डाला था कि मैं लोगों के हित के लिये सेवा करूँ। कैसे भी हो, लोग तो यही तय करते है कि वे किसी भी प्रकार से विश्वास नहीं करते हैं कि जो वरदान प्रभु ने मेरे जीवन में दिया है उसके कारण से जब लोग ऐसा करते हैं तब तो वे अपने जीवन में पवित्र आत्मा के काम को बुझाते हैं।

ऐसी बातें सब सेवकों के साथ होती है। अक्सर कुछ लोग होते हैं जो अपना हृदय खोलकर उन लोगों से ग्रहण करते हैं, परन्तु दूसरे ऐसा नहीं करते हैं। हमें भिन्न भिन्न लोगों से ग्रहण करने के लिये सीखना चाहिये क्योंकि परमेश्वर विभिन्न लोगों को इस्तेमाल करता है। हम बहुत ही ज्यादा गलती करते हैं कि हम परमेश्वर के उस ठहराये हुए पात्र को जाँचते परखते रहते हैंजिसे परमेश्वर इस्तेमाल करने के लिये चाहता है - कभी कभी हम "घड़े" के रंग रुप को देखकर उसे पसंद नहीं करते हैं और यू ही उसके अंदर जो कुछ है उसका हम तिरस्कार करते हैं।

यदि कोई आपके नाम से दस हजार डॉलर बैंक में जमा कर दे तो आप क्या करेंगे, यह कि जब आप रूपये निकालने के लिये बैंक जायें, तो क्या आप बैंक की इमारत के बदहाली रूप को देखकर उसके अन्दर प्रवेश नहीं करेंगे और रूपये नहीं निकालेंगे? यह, सचमुच में, बड़ी बेवकुफी होगी, यदि गरीबी इसके बाद आ धमके, तो आप इसके योग्य हो जायेंगे।

अक्सर हम अपनी समस्याओं में और बंधनों में पड़े रहते हैं इसलिये कि जब परमेश्वर हमारे लिये मदद भेजता है तब हम उसको स्वीकारते नहीं है। हम इसका सचमुच में बिना जाँचे परखे कि यह जालसाजी होगी कहकर तिरस्कार करते हैं।

ऐसा लगता है कुछ लोग, जैसा वे लोग कहते हैं कि वे बिना किसी बात को कभी जाँचे परखे सब कुछ निगल लेते हैं। इसके बाद दूसरे कुछ लोग ऐसे हैं जो कि बहुत ही आलोचनात्मक एवं हद से भी ज्यादा सावधान रहते हैं कि वे लोग

जिन बातों के आदी है यदि सामने वाला व्यक्ति ठीक उसी तरह न हो तो वे उससे कुछ भी नहीं स्वीकार करेंगे। उनके साथ केवल एक ही समस्या है कि वे जिन बातों के आदी हो चुके हैं यदि हर संभवता कारण उनकी जरुरतें पूरी नहीं हो पा रही है; तो ऐसी बातों से और ज्यादा क्या कुछ लाभ हो सकता है?

ऐसे में परमेश्वर से परिवर्तन के लिये माँग न करें, और जब ऐसा होने लगे तो बाद में न डरें।

मुझे याद है कि एक सज्जन ने मुझसे कहा कि अगर वह जानता कि जिसको वह सुन रहा था एक महिला थी तो वह कभी नहीं सुनता। इसलिये कि वह महिला प्रचारिकाओं पर विश्वास नहीं करता। इस समय मैं सिर्फ रेडियो वक्ता थी, चूँकि मेरी आवाज अन्य और महिलाओं से भारी है इसलिये अक्सर जब लोग बिना देखे हुए मुझे सुनते हैं तो वे यह गलती करते हैं कि कोई आदमी होगा। इस व्यक्ति ने तब तक मुझे पहचान लिया कि मैं एक महिला थी, और उसका जीवन परमेश्वर के वचन के द्वारा से जबरदस्त ढंग से बदल गया जिसका मैं प्रचार कर रही थी और वह इस बात को इंकार नहीं कर सकता था कि मैं परमेश्वर की ओर से थी।

जो लोग महिलाओं की सेवकाई का विरोध करते हैं वे लोग यह भूल करते हैं कि अपना विश्वास और मत बाइबल के दो स्थान पर आधारित कर देते हैं जहाँ पर पौलुस ने लिखा कि स्त्रियाँ कलीसिया में शान्त रहें, और यदि वे खुद सीखना चाहें, तो वे अपने अपने पति से घर में पूछें। (देखें १ तीमुथियुस २:११-१२; १ कुरिन्थियों १४:३४-३५)। इन वचनों को समझने के लिये हम सदियों से चूक कर रहे हैं।

इतिहास के उचित अध्ययन एवं यूनानी मूल लेख के अनुसार जिस समय ये वचन लिखे गये थे, उस समय पुरुष और स्त्रियाँ चर्च के विपरीत दिशा में बैठा करते थे। उस समय बहुत सारी स्त्रियाँ साक्षर नहीं थी और सामान्य तौर पर उन्हें बताया भी नहीं जाता था कि क्या कुछ चल रहा था। आत्मा का वरदान और मसीहीयत उनके लिये एकदम नया था, इसलिये स्वभाविक तौर से स्त्रियों और पुरुष वर्ग भी इसके लिये बहुत जिज्ञासु थे। दूसरे हिसाब से, ऐसा लगता है कि स्त्रियाँ दूसरे कमरे से अपने पतियों को बुलाया करती थीं जबकि सभा चलती रहती थी। यह गड़बड़ी पैदा करता था। जब पूछा गया कि इस परिस्थिति को कैसे नियंत्रित किया जाये, तब पौलुस ने उत्तर दिया कि स्त्री कलीसिया में चुप रहें, और यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने पति से पूछे।

वचन में पौलुस ने कहा है कि स्त्रियाँ कलीसिया में चुप रहें और न सिखायें और न पुरुषों पर "आज्ञा" चलायें, कुछ विद्धानों ने इस प्रकार से कहा है कि पुरुष के लिये यूनानी मूल भाषा का अनुवाद पति किया गया है, और दूसरी जगह पर उसी प्रकार से १ तीमुथियुस २:१२ में स्त्री के लिये यूनानी मूल भाषा का अनुवाद पत्नी किया गया है। यह क्या यदि वे सभी वचनों का अनुवाद यह पढ़ने के लिये किया गया है कि एक स्त्री (या पत्नी) अपने पति को सीखा नहीं सकती थी या उस पर आज्ञा नहीं चला सकती है? नहीं तो संपूर्ण संदर्भ बदल जाता।

हमारे पास बाइबल का मूल पाठ और अध्ययन की पुस्तकें उपलब्ध हैं, इसलिये हम इन बातों का प्रकाशन प्राप्त करने के लिये थोड़ी गहराई में खुदाई कर सकते हैं। वचन का अनुवाद दूसरे वचन के प्रकाश में किया जाना चाहिये।

बाइबल में दूसरे और कई स्थान हैं जहाँ पर परमेश्वर ने महिलाओं को प्रयोग किया है। दबोरा एक नबिया थी और वह परमेश्वर की ओर से स्त्रियों और पुरुषों का न्याय किया करती थी (देखें न्यायियों ४-५)। योएल ने भविष्यद्वाणी की कि अन्त के दिनों में पुरुषों और स्त्रियों पर अपना आत्मा उंडेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे (देखें योएल २:२८-२९)। ऐसे समय में एक स्त्री कैसे भविष्यद्वाणी न करे और ऐसे ही चुपचाप कैसी रहे। प्रेरित पतरस ने इसी वचन को दुबारा पेन्तिकुस्त देखे प्रेरितों के कामों २:१६-१८ दिन में दुहराया है।

यदि इन वचनों को जिसे पौलुस ने स्त्रियों के बारे में बिना गहेर अध्ययन के साथ लिखा है, तो हमें यह भी मानना होगा कि स्त्रियाँ किसी भी प्रकार से पुरुषों को सिखा ही नहीं सकती। इस कारण से वे पाठशाला में शिक्षिका, संडे स्कूल शिक्षिका, ड्राइवर, निर्देशक, डाक्टर, वकील इत्यादी नहीं बन सकती हैं। फिर इसका मतलब यह हुआ कि वे बुनियादी तौर से किसी ऐसे पद पर पदासीन नहीं रह सकती हैं जहाँ पर पुरुषों को निर्देश देने हों। सचमुच में, हम यह नहीं जानते हैं कि इस प्रकार के सोच विचार रखना मूर्खता है।

यदि कोई भी महिला संडे स्कूल टीचर नहीं होंगी, तो सचमुच में मैं नहीं जान सकती हूँ कि आज की कलीसिया की क्या दशा होगी। वास्तव में, यह देखने में आता है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक काम करती हैं। मैं कभी भी ऐसे सभा में शामिल नहीं हुई जहाँ पर पुरुष अधिक और स्त्रियाँ कम हों। वास्तव में, कलीसिया में, मैंने सिर्फ एक ही बात पर गौर किया है कि "पुरुषों क्लब" में पुरुष वर्ग प्रबल है; और बाकी दूसरी बातों में स्त्रियों ने हमेशा से पुरुषों को पछाड़ा है। मैं उस तरीके को बिल्कुल विश्वास नहीं करती हूँ; खास

तौर से जबकि बाइबल यह सिखाती है कि पुरुष जो है घर का आत्मिक मुखिया होना चाहिये। परन्तु मैं निश्चयता के साथ कह सकती हूँ कि परमेश्वर पक्षपात नहीं करता है। गलतियों ३:२८ में पौलुस ने स्वयं लिखा है, "न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।" जब परमेश्वर किसी व्यक्ति को सेवकाई में बुलाता है, तो वह लिंग भेद नहीं करता है; वह उपलब्धता और हृदय का स्वभाव देखता है।

वचन की आज्ञाकारिता में मैं अपने पति के आधीन में रहती हूँ, और फिर मैं उस समय अपने आपको उनके शिक्षक के रुप में नहीं देखती हूँ (देखें इफिसियों ५:२२; कुलुस्सियों ३:१८) हजारों बार उन्होंने मुझे प्रचार करते हुए सुना है, और मुझे निश्चय है कि जो कुछ मैने सिखाया है उसमें से कुछ न कुछ उन्होंने सिखा है। परन्तु हममें से कोई भी मुझे उनके शिक्षक के रूप में नहीं देखा है; मैं उनकी पत्नी हूँ। मैं अपना स्थान पुलपिट में क्या है और घर में क्या है, मैं जानती हूँ। जब लोग पूछते हैं डेव क्या जॉयस मेयर के पति हैं, तब वे हमेशा से कहते हैं कि, "जी नहीं, जॉयस मेयर मेरी पत्नी है।" यह उनके प्रेम से मजाक करके जोर देकर कहने का तरीका है चूँकि वे हमारी शादी और घर के मुखिया होने के कारण से इस पद को बनाये रखना चाहते हैं।

बहुत सारे लोग जो मुझसे पुछते रहते हैं तो मैं सोचती हूँ कि सिखाने और प्रचार करने के द्वारा से बेहतरीन है जो लोग कुछ भी नहीं कर रहे हैं। परन्तु हमको लोगों के जीवन में और सेवकाई में फल को देखना चाहिये इससे पहले कि हम निर्णय करें कि परमेश्वर उन्हें बुलाने पर क्या कर सकता है या नहीं कर सकता है। एक बात तो निश्चय है, कि यदि परमेश्वर मेरे जीवन के पीछे पूर्ण रीति से नहीं रहता तो मैं १९७६ से जो कुछ भी कर रही हूँ वह सफल नहीं होता वरन जो कुछ मैं कर रही होती उसमें मुझे कुछ भी हासिल नहीं होता।

जी हाँ, हम भविष्यद्वक्ताओं या और कोई बात या कोई अन्य वरदानों को ठुकराने के द्वारा से पवित्र आत्मा को बुझा देते हैं। इसलिये आइये हम एक दूसरे के आधीन हो जायें, नम्र हृदय के साथ।

१३

आत्मा के वरदान

> हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों (विशेष अलौकिक दान की शक्ति) के विष में अज्ञात रहो। (१ कुरिन्थियों १२:१)।

१९०० वीं शताब्दी के आरंभ से पवित्र आत्मा की भरपूरी का बहुतायत से उंडेले जाने का कार्य अब तक जारी है और पवित्र आत्मा के वरदानों के बारे में भी बहुत कुछ लिखा जा चुका है।

बाइबल हमें पवित्रआत्मा के वरदानों के महत्व के बारे में सिखाती है। और इसके साथ हमें यह भी सिखाती है कि यह कितना महत्वपूर्ण है जिसके प्रति हमें लापरवाह होने की जरूरत नहीं है, जैसे *किंग्स जेम्स वर्शन* के इस परिच्छेद में कहा गया है। जबकि, इन सारी बातों के बावजूद भी आज हमारे पास इस विषय में सब प्रकार की जानकारी उपलब्ध है, तब भी बहुत सारे लोग इन वरदानों के प्रति पूरी रीति से लापरवाह हैं। मैं, अकेले, जिस कलीसिया में बहुत वर्षो तक संगति करती रही, वहाँ पर मैंने कभी भी किसी भी प्रकार से पवित्र आत्मा के वरदानों के विषय में न तो कोई संदेश और न कोई शिक्षा पाई। और मैं यह भी नहीं जानती थी कि वे कैसे लोग थे, बस मैं उनके साथ संगति करती क्योंकि वे लोग उपलब्ध रहते थे।

"दान" और "वरदान" तो कई प्रकार के हैं, जिस प्रकार से *द एम्प्लीफाइड बाइबल* में कहा गया है, जिसका संदर्भ इस प्रकार से दिया गया है, "असाधारण सामर्थ अलग अलग प्रकार से कई मसीहियों को दिया जाता है।" (१ कुरिन्थियों १२:४)। वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु पवित्र आत्मा एक ही है। १ कुरिन्थियों १२:८-१० में हमें वरदानें की सूची का वर्णन मिलता है जो इस प्रकार से है :

- बुद्धि की बातें
- ज्ञान की बातें
- विश्वास
- चंगा करने का वरदान
- सामर्थ के काम करने की शक्ति
- भविष्यद्वाणी
- आत्माओं की परख
- अनेक प्रकार की भाषा
- भाषाओं का अर्थ बताना

योग्यताएँ, वरदान, उपलब्धियाँ, और दान ये सब परमेश्वरीय सामर्थ प्रदत्त हैं जिसके द्वारा से एक विश्वासी इतना सक्षम हो जाता है कि समझ से परे वह कुछ असाधारण करने लग जाता है।

आइये हम इन महत्वपूर्ण के विषय में अलग अलग तरीके से देखें।

बुद्धि की बातें

क्योंकि एक को (पवित्र) आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें (बोलने की सामर्थ) दी जाती हैं। (१ कुरिन्थियों १२:८)।

पहली कुरिन्थियों १:३० में यीशु की परमेश्वर की बुद्धि कहा गया है। और नीतिवचन का लेखक भी बार बार कहता है कि बुद्धि को खोजो और उसे ग्रहण करो। बुद्धि सब मनुष्यों के लिये उपलब्ध है, परन्तु बुद्धि की बातें जो पवित्र आत्मा के वरदान के रुप में कार्य करती है जो कि एक उच्चतम स्तर का कार्य है।

सब बुद्धि परमेश्वर की ओर से है, परन्तु ऐसी बुद्धि भी है जिसे हम अनुभव से सीखकर दिमाग से प्राप्त कर सकते हैं। यह १ कुरिन्थियों १२:८ में जिस प्रकार से कहा गया बुद्धि की बातें नहीं है। बुद्धि की बातें आत्मिक अगुवाई के प्रारुप के समान है। जब इसका प्रयोग किया जाता है, तब उस व्यक्ति को पवित्र आत्मा अलौकिक तौर से सखता है कि उसका नियंत्रण बुद्धिमानी के साथ खास कारण को लेकर कैसे किया जा सकता है, जो कि स्वाभाविक सीख या अनुभव से परे है, और यह परमेश्वर के उद्देश्य को योजनाबद्ध कर देता है।

हम इस वरदान का इस्तेमाल बिना सजगता के साथ लगातार कर देते हैं। हम किसी को भी कुछ भी सामान्य तौर से कह सकते हैं, परन्तु हो सकता है कि यह सुनने वाले के लिये उसकी परिस्थिति के अनुसार से यह भयानक बुद्धि की बातें साबित हो।

सचमुच में, मैं दृढ़ विश्वास करती हूँ कि प्रभु चाहता है कि वह हमें स्वाभाविक तौर से इन अलौकिक वरदानों के साथ इस्तेमाल करे। मैंने बहुत सारे लोगों को इस आत्मा के वरदान के इस्तेमाल के संदर्भ में खुद को अति आत्मिक बनाने की कोशिश करते हुए देखा है जो कि अपने इर्द गिर्द के लिये परेशानी का कारण बनते हैं। उदाहरण के लिये, हर बार यह आम सूचना देना कि किसी के द्वारा से आत्मा का वरदान काम कर रहा है यह बिल्कुल उचित नहीं है। हमें यीशु की ओर अपना ध्यान खींचना है, अपनी ओर नहीं। पवित्र आत्मा यीशु की महिमा करने के लिये आया, मनुष्यों की नहीं।

हम बुद्धि की बातों का इस्तेमाल जबरदस्ती नहीं कर सकते है। हमें सब वरदानों की लालसा (विश्वासयोग्ता से इच्छा) करनी चाहिये, परन्तु यह पवित्र आत्मा के ऊपर पूरा निर्भर करता है कि कब और किसके द्वारा से इनका प्रयोग किया जाये।

मैंने बुद्धि की बातें बच्चों के द्वारा से प्राप्त की है जबकि मुझे ये निश्चयता से पता है कि उन्हें जरा भी अंदेशा नहीं था कि वे क्या कुछ कर रहे थे। पवित्र आत्मा मुझसे कुछ कहने की कोशिश कर रहा था, और इसलिये वह एक माध्यम अपनाया ताकि मैं जानूँ कि वह मुझसे बोल रहा था।

अक्सर परमेश्वर, या कभी भी लोगों को अधिक चिकनाहट के लिये इस्तेमाल नहीं करता है; सच्चाई तो यह है कि यह इसके बिल्कुल बडे है। पहली कुरिन्थियों १:२७-२९ में कहा गया है कि परमेश्वर ने जगत के मूर्खों और निर्बलों को चुन लिया है, ताकि बुद्धिमानों को लज्जित करे। वह जगत के तुच्छों को इस्तेमाल करता है ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमंड न करने पाए।

मैं निश्चयता के साथ कह सकती हूँ कि अक्सर जो कुछ परमेश्वर हमें देने के लिये कोशिश करता है हम उस पैकेज को लेने के लिये इंकार कर देते हैं। वयस्क होने के नाते, हमारे लिये यह मुश्किल हो जाता है कि कोई बालक हमें सिखाये, या पुराने मसीही होने के नाते, कोई नया विश्वासी सिखाये। यदि हम शिक्षक हैं, तो यह भी हमारे लिये मुश्किल हो जाता है कि कोई विद्यार्थी हमें निर्देश दे। परन्तु कुछ भी हो यह परमेश्वर का कारोबार है हमारा नहीं कि वह किसी भी माध्यम को चुनकर हम तक पहुँचे।

मनुष्य की इच्छा के अनुसार नहीं, परन्तु जैसे पवित्र आत्मा चाहता है वैसे ही वरदान कार्य करता है (देखें १ कुरिन्थियों १२:११)। हम परेशानी में तब पड़ जाते हैं जब हम वरदानों को खुद इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहे हों इसके बजाय कि वरदान हमारे द्वारा से काम करे। हम और भी परेशानी में तब फँस जाते हैं जब हम दान या वरदान को चुनने की कोशिश करते रहते हैं कि कौन सा हमारे पसंद के अनुसार है जिसे हम इस्तेमाल कर सकें।

बहुत सारे लोग चाहते हैं "दिखावा" अर्थात् चंगाई का वरदान या सामर्थ के काम करने की शक्ति। परन्तु १ कुरिन्थियों १२:७ में बाइबल कहती है कि किन्तु सब के लाभ पहुँचाने के लिये हर एक को पवित्र आत्मा का प्रकाश दिया जाता है। हम में से प्रत्येक के द्वारा से दूसरों की भलाई के लिये वरदानों का प्रयोग किया जा सकता है अगर हम ये एहसास करें कि सिर्फ हम उसके पात्र हैं। हमें महत्वपूर्ण बनने के लिये नहीं, परन्तु केवल दूसरों की भलाई के लिये वरदान माँगना चाहिये।

ज्ञान की बातें

> और दूसरे को उसी (पवित्र) आत्मा के अनुसार (व्यक्त करने की सामर्थ) ज्ञान की बातें। (१ कुरिन्थियों १२:८)।

बुद्धि की बातों के समान ज्ञान की बात का भी कार्य है। ज्ञान की बात का विभिन्न प्रकार से अनुवाद किया गया है, परन्तु उसका एक पैमाना ऐसा है: ज्ञान का वरदान तब काम करता है जब परमेश्वर किसी व्यक्ति पर किसी परिस्थिति में जो कुछ वह करना चाहता है उसे प्रगट करता है जिसे मनुष्य स्वभाविक तौर से नहीं जान सकता है।

कभी कभी जब परमेश्वर हमें दूसरों के संदर्भ में ज्ञान की बात प्रदान करता है, तब हम यह जानते हैं कि उनके साथ कुछ न कुछ गड़बड़ है, या हम यह जान लेते हैं कि निश्चय उन्हें उस परिस्थिति में कुछ खास करने की जरूरत है। हमें किसी के ऊपर इस अलौकिक ज्ञान को जबरदस्ती आजमाने की कभी भी जरुरत नहीं है। इसके बजाय, हमें नम्रतापूर्वक प्रस्तुत करना चाहिये और परमेश्वर को कायल करने देना चाहिये।

एक बार मुझे याद है कि जब मेरे पति को मेरे जीवन के संदर्भ में कुछ ज्ञान की बात का प्रकाश मिला। जब उन्होंने मुझसे बाँटा, तब मैं नाराज हो

गई। उन्होंने सामान्य तौर से कहा, "तुम्हें जो अच्छा लगता है वही करो; परन्तु जो कुछ परमेश्वर ने मुझे दिखाया है उसे मैं तुमसे कह रहा हूँ।" उन्होंने मुझे कायल करने की कोपह नहीं की; बस उन्होंने वही कहा जो परमेश्वर ने उन्हें दिखाया था।

तीन दिन के पश्चात् परमेश्वर ने मुझे काईल किया कि जिस बात को उसने मेरे पति को दिया था वह सही था। मैं बहुत आँसु बहा रही थी और मैं सचमुच में यह चाह रही थी कि जो कुछ डेव ने कहा है वह सही न हो।

जो ज्ञान की बातें मुझे मेरे पति के द्वारा से प्राप्त हुई उससे मुझे यह जानने को मिला कि मेरे जीवन के उस खास क्षेत्र में परेशानी क्यों बनी हैं। मैं इस परिस्थिति के बारे में परमेश्वर से पूछ रही थी और मैं इसका उत्तर नहीं पा रही थी। डेव ने इसका उत्तर दे दिया था, परन्तु मैं उनके इस उत्तर को पसंद नहीं कर रही थी जो उन्होंने दिया। हो सकता है, परमेश्वर ने इसी वजह से डेव को दिया हो, क्योंकि वह जानता था कि मैं उससे सुन नहीं सकती थी।

यह ज्ञान की बातें मुझे दोष लगाने एवं गपशप के पाप के प्रति काईल की, और जिसे मैं नहीं चाहती थी कि वह मेरी समस्या का कारण हो। मैं डेव से कह रही थी कि कुछ न कुछ गड़बड़ है, क्योंकि जब मैं प्रचार कर रही थी तब मैं परमेश्वर के अभिषेक को महसुस नहीं कर रही थी परन्तु मैं एक प्रकार का भय महसुस कर रही थी। मैं परमेश्वर से जानना चाह रही थी कि क्या कुछ गड़बड़ है, और उसने डेव के द्वारा से मुझसे बातचीत किया। मैंने दूसरे सेवक के प्रचार पर आलोचनात्मक ढंग से दोष लगाया था, जिससे परमेश्वर प्रसन्न नहीं था। मुझे पश्चाताप् करने की जरुरत थी कि मैं इस प्रकार व्यवहार दुबारा न करूँ।

जो प्रभाव इस अनुभव के द्वारा से मेरे जीवन में पड़ा उसका मैं वर्णन नहीं कर सकती हूँ। क्या परमेश्वर मुझसे सीधा बर्त्ताव कर रहा था, मुझे निश्चय है कि मुझे एक सबक ले लेना चाहिये था, परन्तु यह सबक जब ज्ञान की बातें डेव के द्वारा से मुझ तक पहुँची उस प्रकार की कुछ भी बात नहीं होती। यह परेशानी का कारण भी था, परन्तु बेनकाब भी हो गया।

कभी कभी हम अपने पापों को छिपाना पसंद करते हैं। परमेश्वर जानता है कि वे क्या हैं, परन्तु यह निश्चय है कि हम नहीं चाहते हैं कि कोई दूसरा व्यक्ति जानें। मैं याद करती हूँ कि किस प्रकार से मैं डेव पर दोषारोपण करती जा रही थी, यह कहते हुए कि उन्होंने वैसे ही सलूक किया जिस प्रकार से उस सेवक के प्रचार की आलोचन मैंने की थी। डेव का उत्तर था "तुम सही हो,

मैंने ऐसा किया है। परन्तु मैं तुम्हारी तरह समस्या लेकर बैठा नहीं हूँ - तुम्हें तो परमेश्वर के साथ सब कुछ सही करना होगा।"

पवित्र शास्त्र याकूब अध्याय ३ में से परमेश्वर ने मेरी अगुवाई की कि हम में से बहुत से उपदेशक न बनें, क्योंकि हम जानते हैं कि और भी दोषी ठहरेंगे (देखें पद १) यहीं पर मेरा जवाब था। परमेश्वर डेव से बढ़कर मुझसे कठोरता से व्यवहार कर रहा था। मैं एक बाइबल शिक्षक हूँ और यदि मैं उन लोगों को जो इसी वरदान के अर्न्तगत कार्य कर रहे हों आलोचनात्मक ढंग से दोष लगाऊँ तो मेरी शिक्षा पर गाढ़ा अभिषेक उतरना जारी नहीं रहेगा। सब प्रकार दोषारोपण-आलोचना, नकारात्मक विचार, और संदेहास्पद स्थिति का समावेश सब अनुचित है, परन्तु विशेष करके उनके लिये दोष लगाना ज्यादा खतरनाक है जो कि एक ही प्रकार के कारोबार में लगे हों और जिसमें अभिषेक के साथ रहना चाहते हों।

मैं विश्वास करती हूँ कि बहुत सारे लोगों की सहायता ज्ञान की बातों के द्वारा से मेरे जरिये हुई है। मैं दृढ़ विश्वास करती हूँ कि जब मैं परमेश्वर के वचन की शिक्षा देती रहती हूँ और प्रचार करती रहती हूँ उस समय मेरे द्वारा कई ज्ञान के कार्य होते हैं।

जैसे मैंने पहले भी कहा है, कि अक्सर लोग जिनके बीच में मैंने ज्ञान की बात के द्वारा से सेवा की, वे लोग मुझसे कहते हैं कि, "जॉयस, आप कैसे हमारे बारे में जानते हैं? ऐसा लगता है कि आप हमारे घर में ही रहते हैं।" सचमुच में, जो कुछ भी मैं उन से कह रही थी मैं स्वाभाविक तौर से कुछ भी नहीं जान रही थी। परमेश्वर ने मुझे ज्ञात कराया कि उचित समय पर मैं क्या बोलूँ। यद्यपि मुझे यह स्वाभाविक लग रहा था, परन्तु श्रोतागणों को ये अलौकिक लग रहा था।

जबकि ज्ञान की बातों का अनुवाद सेवकाई में किसी की मदद के लिये हथियार के रूप में किया जाता है, तो मैं यह विश्वास करती हूँ कि यह वरदान बहुता हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिये सहायक साबित होता है। उदाहरण के लिये, अक्सर यह वरदान मेरे जीवन में तब लगातार काम करता है जब मैं कुछ खो देती हूँ या कुछ इधर उधर हो जाता है। फिर तुरन्त पवित्र आत्मा उस वस्तु की तस्वीर को मेरे मन के अंदर डाल देता है कि वह कहाँ है।

एक बार मैं अपने चश्मे को कहीं पर भी खोज नहीं पा रही थी; मैं पूरे घर भर में खोज ली और अन्त में निराश हो गयी। मैं थोड़ा रूक कर ऐसे ही बोली, "पवित्र आत्मा, कृपया मेरा चश्मा खोजने में मदद करें।" तत्काल मैंने अपनी

आत्मा में देखा कि चश्मा कोच कुशन में बीच में पड़ा है। मैं देखने के लिये गई और सचमुच में यह वहाँ पड़ा था। पवित्र आत्मा ने मेरी आत्मा से जो कुछ कहा उसे मैं स्वाभाविक तौर से नहीं जानती थी।

विश्वास का वरदान

किसी को उसी (पवित्र) आत्मा से (अद्‌भुत कार्य का) विश्वास। (१ कुरिन्थियों १२:९)

मैं विश्वास करती हूँ कि ऐसे कई लोग हैं जिनको परमेश्वर विश्वास का वरदान विशेष अवसर के लिये जैसे भयानक मिशनरी सेवकाई या चुनौती पूर्ण परिस्थिति के लिये देता है। जब यह वरदान लोगों में काम करता है, तब लोग परमेश्वर पर आसानी से विश्वास करने लग जाते हैं या कुछ अचरज के काम जो लोग देख सकते हैं। उनके पास कुछ बातों के लिये पूरा विश्वास होता है जिसे दूसरे लोग देखकर चकित हो जाते हैं।

मैं विश्वास करती हूँ कि मेरे पति के पास आर्थिक के क्षेत्र में विश्वास का वरदान है। कोई बात नहीं कि आर्थिक के सिलसिले में हमारी क्या कुछ परिस्थितियाँ रहीं हो, मगर डेव इस मामले में शांत एवं निश्चितं रहे हैं कि परमेश्वर हर जरूरत को पूरी करेगा। डेव, लाईफ इन द वर्ड, हमारी सेवकाई के हर आर्थिक क्षेत्र के निरीक्षक हैं, और वे परमेश्वर पर आर्थिक क्षेत्र के लिये पूर्ण विश्वास करते हैं कि हर बड़ी योजनाएँ जो इसके बिना अधूरी हैं, घुटने के द्वारा पूरी हो जाती हैं।

एक व्यक्ति जिसके द्वारा से विश्वास का वरदान काम कर रहा होता है उसे दूसरों के प्रति सावधान रहना चाहिये और यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि दूसरे लोग जिनके पास यह वरदान नहीं है वे विश्वासहीन या डरपोक हैं, क्योंकि एक व्यक्ति जिसके द्वारा से यह वरदान कार्य करता है, परमेश्वर उसको विश्वास का अनोखा परिणाम देकर रोमियों १२:३ कहती है, "क्योंकि मैं उस अनुग्रह (परमेश्वर के बड़े उपकार) के कारण जो मुझे मिला है, तुम में से हर एक को कहता हूँ, कि जैसा समझना चाहिये, उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे (अपने विषय में बढ़ा चढ़ाकर कोई महत्वपूर्ण विचार न रखे) पर जैसे परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार बांट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।"

यह वचन हमें यह सिखलाता है कि हर एक व्यक्ति को एक निश्चित विश्वास का परिमाण दिया गया है। हमें यह दृढ़ निश्चय होना चाहिये कि परमेश्वर हमें पर्याप्त विश्वास देगा कि उसके अनुग्रह को प्राप्त कर सकें ताकि परमेश्वर प्रदत्त हर कार्य को कर सकें। यद्यपि, यह हमारे लिये मुर्खतापूर्ण बात है कि हम किसी दूसरे के साथ अपनी एवं दूसरे व्यक्ति के विश्वास के साथ तुलना करें। जो जिम्मेदारी परमेश्वर ने हमें दिया है उसका हम इस्तेमाल करें और उससे बेहतरीन करने के लिये प्रयास करें।

मैं यह भी विश्वास करती हूँ कि ऐसे भी लोग हैं जिनके पास विश्वास का वरदान है ताकि कुछ विशेष कामों को जीवन में कर सकें। कुछ लोगों के पास यह वरदान है ताकि बीमार लोगों के लिये प्रार्थना कर सकें ताकि वे चंगे हो जाएँ, या उनके पास यह विश्वास का वरदान इसलिये भी है ताकि चंगाई के विशेष क्षेत्र में जैसे कैंसर या अन्य और बीमारी ठीक हो जाएँ। जैसे मैंने अपने पति के विषय में कहा है कि उनके पास यह विश्वास का वरदान आर्थिक क्षेत्र के लिये है। कुछ लोगों का अभिषेक असाधारण तौर से दान देने के लिये किया जाता है। ऐसे लोगों के पास सामान्य तौर से विश्वास का वरदान होने के कारण से ये उन्हें साहसी बना देता है जिसकी वजह से वे बहुत धन भी कमा लेते हैं। वे लोग ऐसा काम कर सकते हैं जो दूसरे लोग उसे करने से डरते हैं।

विश्वास का वरदान एक व्यक्ति को अलौकिक तौर से बुलंद कर देता है। जिस किसी के द्वारा से यह वरदान काम करता है उसको संवेदनशील होना चाहिये ताकि वह यह अहसास कर सके कि उनकी बुलंदिया परमेश्वर की ओर से है और वह इसके लिये हमेशा उसका धन्यवाद करना चाहिये।

चंगाई का वरदान

> और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है। (१ कुरिन्थियों १२:९)

चंगाई का वरदान विश्वास के वरदान के साथ काम करता है। यद्यपि सब विश्वासियों के लिये यह जरूरी है कि वे बीमारों के लिये प्रार्थना करें जिससे वे चंगे हो जाएं (देखें मरकुस १६:१७-१८), निश्चय परमेश्वर किसी भी व्यक्ति को चुनकर चंगाई की सेवकाई के लिये विशेष तौर से इस्तेमाल कर सकता है।

हमारे कान्फ्रेन्सों में हम हमेशा लोगों के लिये प्रार्थना करते हैं और बहुत अद्‌भुत तरीके से चंगाई को होते हुए देखते रहते हैं। मेरे पास ढेर सारी गवाहियाँ

है उन सब लोगों की प्रमाण के साथ कि इन वर्षों में पूरी रीति से शारीरिक तौर से चंगे हो चुके हैं। मैं हमारे कान्फ्रेन्सों में और टेलीविज़न में विश्वास की प्रार्थना करती हूँ और अक्सर कुछ विशेष प्रकार की चंगाई जो रहते हैं उनके लिये जब मैं प्रार्थना करती रहती हूँ तब मैं ज्ञान की बात प्राप्त करती रहती हूं।

विश्वासी होने के नाते, हम अक्सर बीमारों के लिये प्रार्थना कर सकते हैं, परन्तु अक्सर यह हो सकता है कि चंगाई का वरदान, और साथ ही साथ विश्वास का वरदान भी मौजूद न हो। हम अक्सर विश्वास से प्रार्थना कर सकते हैं, उस विश्वास के परिमाण का इस्तेमाल करते हुए जिसे परमेश्वर ने हर व्यक्ति को दिया है, परन्तु विश्वास का अलौकिक दान वरदान जब पवित्र आत्मा इच्छा करता है तब देता है।

परमेश्वर ने अपनी दासी कैथरीन कुल्हमैन को चंगाई की सेवकाई के लिये इस्तेमाल किया। जब वह अपनी सभा में चंगाई होते हुए देखती थी, तो वह स्वयं देखकर चकित हो जाती थी। उसे "मंजिल की बेटी" के रूप में पुकारा जाता था। चंगाई की सेवकाई वह स्वयं अपने आप से नहीं पाई; परन्तु यह उसके लिये परमेश्वर प्रदत्त भाग था, और इसलिये वह पवित्र आत्मा की अगुवाई में चला करती थी कि अगर उसके बस की बात होती, तो वह सभी को चंगा कर देती। वह यह भी नहीं समझ सकी कि निश्चित तौर से कुछ लोग चंगे होते हैं और कुछ लोग नहीं। परन्तु वह अक्सर यह जानती थी कि एक अलौकिक वरदान के अर्न्तगत काम कर रही थी।

जब किसी को चंगाई मिलती है, हो सकता है यह चंगाई तत्काल प्रगट न हो। चंगाई एक औषधि की प्रक्रिया के समान कार्य करता है। यह जरुरी है कि हम उसे विश्वास के साथ ग्रहण करें, और विश्वास रखें कि यह काम कर रहा है। बाद में, इसका परिणाम दिखता है।

जब सामर्थ के काम करने का वरदान काम करता है, तब हम सामान्य से भी बढ़कर अदभुत चंगाई को, जिन्हें हम अक्सर तुरन्त प्रगट होते हुए देख सकते हैं।

मैंने लोगों को चंगाई के वरदान के लिये बड़ी मशक्कत करते हुए देखा है, परन्तु वास्तव में आत्मा के वरदानों का कार्य बड़ा आसान है; हमें उसके लिये अधिक संघर्ष और प्रयत्न करने की जरूरत नहीं पड़ती है। उदाहरण के लिये, मैंने एक सेवक को एक व्यक्ति के लिये जो व्हील चेयर में था उसके लिये प्रार्थना करते हुए देखा, और बाद में उस पर दबाव डाला कि कुर्सी से उठकर खड़े हो जाये। हम प्रेरितों के काम अध्याय ३ में पढ़ते हैं एक मनुष्य के विषय में जो कि "जन्म से लंगड़ा था" और जिसे मंदिर के उस द्वार पर "जो सुंदर

कहलाता है" उसे बैठा देते थे ताकि वह भीख माँगे (पद २)। जैसे ही पतरस और यूहन्ना मंदिर में प्रार्थना के लिये जाने लगे, तब वह उनसे भीख (रुपये) मांगने लगा। जब उसने ऐसा किया, तब पतरस ने सीधा उसकी ओर देखकर कहा कि उसके पास उसे देने के लिये रूपये नहीं थे, परन्तु जो उसके पास था उसे वह उसे दे देगा। तब पतरस ने उस मनुष्य को यीशु के नाम से चलने की आज्ञा दी :

> और उस (पतरस) ने उसका दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया: और तुरन्त उसके पाँवों और टखनों में बल आ गया। और वह उछलकर खड़ा हो गया, और चलने फिरने लगा और चलता; और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उन के साथ मंदिर में गया। (प्रेरितों के काम ३:७-८)

जैसे पतरस ने इस परिच्छेद में किसी को अपने हाथों के द्वारा से लिया यह लोगों को जबरदस्ती करने की कोशिश करने से एकदम अलग ही है।

एक बार फिर, मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहती हूँ: पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ हम जबरदस्ती नहीं कर सकते हैं। उनकी हम लालसा कर सकते हैं और उन्हें इस्तेमाल करने के द्वारा से बढ़ा सकते हैं, परन्तु उसके साथ जबरदस्ती या बनावटी नहीं रह सकते हैं।

सामर्थ के काम करने की शक्ति

> फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति। (१ कुरिन्थियों १२:१०)

यीशु ने बहुत आश्चर्यकर्म किये। उदाहरण के लिये, उसने पानी को दाखरस बना दिया (देखें यूहन्ना २:१-१०)। और उसने बड़ी भीड़ को एक छोटे से लड़के के भोजन से तृप्त कर दिया और कई भरी टोकरियाँ बटोरीं गई जो बच गई थीं। (देखें यूहन्ना ६:१-१३)। बहुत प्रकार के आश्चर्य कर्म है, जैसे: प्रबंध करने एवं उपलब्ध कराने का आश्चर्यकर्म, छुटकारे का आश्चर्यकर्म, चंगाई का आश्चर्यकर्म, इत्यादि। इससे पहले भी कहा है कि सामर्थ के काम और चंगाई का आपस में जोड़ है, परन्तु अभी मैं उस विषय को एक हमारे मित्र के बारे में बताकर विस्तार से समझाना चाहती हूँ।

हम एक मनुष्य को जानते हैं जो कि एक मिशनरी है, और परमेश्वर उसे चंगाई में सामर्थ के काम के लिये निरंतर इस्तेमाल कर रहा है। जब वह जवान

ही था तब उसकी पहली मिशनरी क्रूसेड हुई थी। उसने दूसरे परमेश्वर के दासों को ऐसा क्रूसेड करते हुए देखा था इसलिये उसने यह जाना कि उसके जीवन में भी इसी प्रकार की बुलाहट है।

उसके पास कोई प्रारंभिक अनुभव नहीं, कोई रुपये नहीं, और कोई पूर्व प्रशिक्षण भी नहीं, फिर भी वह अपनी पहली मिशनरी यात्रा के लिये निकल पड़ा। वह विदेश में एक ऐसे शहर में गया जहाँ पर अपने होने वाले क्रूसेड के बारे में प्रचार किया जिसमें आश्चर्यकर्म, चिन्ह और चमत्कार होंगे। उसने हमें यह भी बताया कि अगर कोई सामर्थ के काम न भी हों तो भीड़ की कैसी प्रतिक्रिया होगी उससे उसे कुछ फर्क नहीं पड़ेगा।

उसने और आगे कहा कि जब वह मंच पर नहीं गया था तब तक वह बिलकुल ठीक था परन्तु जैसे ही वह मंच पर पहली ही बार चढ़ा और जन्म के लंगड़े, अंधे और बहरे लोगों को और उनमें कोढ़ी लोग एवं और भयानक बीमारियों से ग्रसित लोगों को देखा, वैसे ही उसके हृदय में डर समा गया। उसने सोचा, हे मेरे परमेश्वर, यह मैंने क्या किया है? क्या होगा अगर कोई सामर्थ के काम नहीं होंगे तो? इसके बाद तुरन्त उसका हृदय विश्वास से भर गया। उसने परमेश्वर से कहा कि वह अपने नाम से नहीं, परन्तु यीशु के नाम से आया था। उसने आगे और कहा कि यह परमेश्वर की इज्जत का सवाल था, न कि उसकी।

उसी घोषणा को करना शुरु कर दिया। तब वह जैसे ही बीमारों के लिये प्रार्थना करने लगा, वैसे ही तुरन्त सामर्थ के काम होते चले गये - अन्धे देखने लगे और जन्म के लंगड़े चलने लगे। उसने कहा कि वह ऐसा महसूस कर रहा था, कि मानो वह एक दर्शक हो जो पीछे से खड़े होकर देख रहा था। जो कुछ हो रहा था वह देख रहा था, परन्तु वह यह जानता था कि वह कुछ नहीं कर सकता था। सामर्थ के काम का वरदान काम करना आरंभ कर दिया और उसके बाद आज तक उसके क्रूसेड में यह अब तक काम कर रहा है।

दूसरे लोगों की तरह, डेव और मैंने भी इन वर्षों में सामर्थ के काम के द्वारा उपलब्ध सेवा का अनुभव किया है - ऐसा समय जबकि परमेश्वर ने अलौकिक तरीके से प्रबंध किया है कि सामर्थ के काम वास्तव में प्रगट हुए हैं।

सामर्थ के कामों के बारे में हम बयान नहीं कर सकते हैं, और यह ऐसे कार्य है उपलब्ध सेवा का अनुभव किया है - ऐसा समय जबकि परमेश्वर ने अलौकिक तरीके से प्रबंध किया है कि सामर्थ के काम वास्तव में प्रगट हुए हैं। जो साधारण तरीकों से प्रगट नहीं होते हैं। हम सभी को अपने जीवन में सामर्थ के काम होने

के लिये परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिये, परन्तु परमेश्वर किसी किसी व्यक्ति को सामर्थ के काम के वरदान को करने एवं उनके द्वारा से बहाव होने के लिये चुनता है। यह एक बार या उससे अधिक, या यह एक नियमित घटनाचक्र हो सकता है; यह पवित्र आत्मा की बुद्धि पर निर्भर करता है।

भविष्यद्वाणी, अन्य भाषा और अनुवाद

> और किसी को भविष्यद्वाणी की (परमेश्वरीय इच्छा और उद्देश्य के अनुवाद का वरदान)... और किसी को अनेक प्रकार की भाषा (अन्य अन्य भाषा), और किसी को (ऐसे) भाषाओं का अर्थ बताना। १ कुरिन्थियों १२:१०)।

जबकि अन्य भाषा के बारे में बहुत कुछ कहा गया है, जैसे इस परिच्छेद में, और वास्तव में यह एक अद्भुत वरदान है, जैसे १ कुरिन्थियों १४:१ में पौलुस कहता है कि आत्मिक वरदानों की धुन में रहो विशेष करके यह, कि भविष्यद्वाणी करो। उसने यह महसुस किया कि सभा में उपस्थित सभी लोगों के लिये भविष्यद्वाणी अधिक लाभदायक होता था क्योंकि इसे सभी समझ सकते थे, क्योंकि अन्य भाषा का अनुवाद न हो तब तक कोई समझ नहीं सकता। जबकि पद ५ में उसने कहा है कि अन्य भाषा का अनुवाद यदि किया जाता है तो यह भविष्यद्वाणी के बराबर है।

इसी अध्याय के पद २ में पौलुस ने कहा है कि जब हम अन्य भाषा में बातें करते हैं, तब हम मनुष्यों से नहीं वरन परमेश्वर से बातें करते हैं और पवित्र आत्मा में भेद की बातें बोलते हैं। पद ५ में वह कहता है कि उसकी चाहत यही थी कि सब अन्य भाषा में बातें करें, परन्तु “अधिकतर” वह चाहता था कि लोग भविष्यद्वाणी करें या “परमेश्वरीय इच्छा और उद्देश्य (परमेश्वर) की प्रेरणा प्राप्त कर प्रचार करें और अनुवाद करें।”

इन परिच्छेदों में पौलुस सब लोगों की उन्नति और स्थिरता के महत्व पर जोर देता है। वह और भी जोर देता है कि जो कुछ बोला जाता है उससे सब लोगों को लाभ होना चाहिये। पद १७ में जिस प्रकार से वह कहता है, कि जब कोई अन्य भाषा बोलता है तब दूसरे लोग धन्यवाद करते रहें, परन्तु दर्शकों की उन्नति नहीं होती है; इससे उस व्यक्ति की भलाई नहीं होती है।

इसके बाद पद १८ और १९ में, पौलुस कहता है कि वह अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता है, कि वह सब से अधिक अन्य भाषा में बोलता है। परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हजार बातें कहने से यह उसे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि औरों के सिखाने के लिये बुद्धि से पांच ही बातें कहे।

आगे इसी अध्याय में, पौलुस सभाओं में अन्य भाषा बोलने के विषय में कुछ विशेष निर्देश दिया :

> यदि (अनजान) अन्य भाषा में बातें करनी हों, तो दो, या बहुत हो तो तीन तीन जन बारी बारी (अपने वक्त में) बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद (जो कहा जाता है) करे। परन्तु यदि अनुवाद करने वाला न हो, तो अन्य भाषा बोलने वाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करें। (१ कुरिन्थियों १४:२७-२८)।

मैं यह महसुस करती हूँ कि कुरिन्थियों की पत्री को लिखने का जो उद्देश्य रहा है वह यह था कि किस तरह से कलीसियाई आराधना में पवित्र आत्मा के वरदान के कार्य के बारे में निर्देश दे, न कि उनके व्यक्तिगत जीवन के बारे में। जब कलीसिया की आराधना में अन्य भाषा का वरदान काम करता है तब उसका अनुवाद भी होना चाहिये। मैं विश्वास करती हूँ कि जब किसी को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलता है और उस समय में जो अन्य भाषा का वरदान मिलता है, तथा जो व्यक्तिगत प्रार्थना भाषा में होती है यह भिन्न होता है जो कि पवित्र आत्मा की भरपूरी की निशानी है। मेरा मतलब यह नहीं है कि अन्य भाषा अलग है, या व्यर्थ है, परन्तु इसका जो कार्य है, भिन्न है। जैसे पहले भी कहा गया है कि हम अन्य भाषा में प्रार्थना व्यक्तिगत रुप में जितना समय तक चाहते हैं उतना समय तक कर सकते हैं, जब हम ऐसा करते हैं तब हमारी उन्नति होती है और हम विश्वास में दृढ़ होते जाते हैं।

मैं उसी समझदारी से आइए हम कई अन्य वरदानों जैसे कि भविष्यवाणी अन्य भाषाओं में बात और भाषाओं का अर्थ बताने पर दृष्टि करते है।

भविष्यद्वाणी

> (इस) प्रेम का अनुकरण करो (निशाना बनायें, आपकी बड़ी खोज बने); और आत्मिक वरदानों (दान) की भी धुन में रहो, विशेष करके यह, कि भविष्यद्वाणी करो (परमेश्वरीय इच्छा और उद्देश्य का प्रेरणादायक प्रचार और शिक्षा के द्वारा अनुवाद।) (१ कुरिन्थियों १४:१)

एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के लिये या पूरी कलीसिया के लिये भविष्यद्वाणी कर सकता है। कभी कभी भविष्यद्वाणी सामान्य रुप में होता है। और किसी समय यह विशेष होता है। कभी यह तैयार संदेश या व्याख्यान के द्वारा से आ सकता

है, या यह ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा से आ सकता है। भविष्यद्वाणी का संदर्भ परमेश्वर की इच्छा से है, यह चेतावनी है, या उन्नति का कारण है, और यह सुधार के लिये हो सकता है।

भविष्यद्वाणी और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई वास्तव में बहुत ही महत्वपूर्ण है; कैसे भी; यदि मैं प्रभु से आपको साचेत न कर सकूँ इस क्षेत्र में तो मैं भूल कर जाऊँगी।

इस वरदान का खास करके, दुरुपयोग करने के कारण से कलीसिया में बड़ी गड़बड़ीयाँ हुई हैं। झूठे भविष्यद्वक्ता भी हैं, और सच्चे लोग भी हैं। सचमुच में कुछ ऐसे लोग भी हैं अपने आपको भविष्यद्वक्ता समझते हैं और कुछ हानि नहीं होगी ऐसा सोचते हैं, परन्तु वे वास्तव में अपने मन, इच्छा और भावनाओं से बोलते हैं।

संभवत: इस वरदान का सबसे ज्यादा दुरुपयोग उस समय किया जाता है जब एक व्यक्ति दूसरे से बोलता है कि अमुक अमुक के लिये उनको "एक वचन" मिला है यह एक बड़ी दु:खदाई बात हो जाती है। अक्सर जिसके लिये भविष्यद्वाणी की जाती है यह जानते हुए कि यह बात परमेश्वर की ओर से है बिना परखे कि आत्मा की ओर से है या नहीं या बिना जाँचे कि ये "वचन" सचमुच में परमेश्वर की ओर से है या नहीं और उनकी आत्मा इस वचन के साथ गवाही देता है या नहीं (देखें १ यूहन्ना ४:१; रोमियों ८:१६)।

सामान्य तौर से, सच्ची भविष्यद्वाणी एक व्यक्ति के हृदय में पहले से पुष्टि कर देता है कि क्या कुछ प्रगट किया जा रहा है, यद्यपि यह अगर सुधार के लिये भी हो, यह कुछ ऐसा होगा जिसके विषय में परमेश्वर पहले से व्यवहार कर रहा होगा। भविष्यद्वाणी या तो बिन्दु पर जोर देकर समझाईश देती है या तो किसी बात के लिये जिसकी वे अवहेलना कर रहे होंगे उसकी ओर ध्यान खींचती हो।

भविष्यद्वाणी का एक अच्छा उदाहरण है जो १९८५ में मेरे जीवन में सफल हुआ जब मैं निर्णय लेने की कोशिश कर रही थी कि क्या मैं उस खास कलीसिया के सहयोगी पास्टर होने के पद को छोड़ दूँ। मैं वहाँ पर पाँच वर्षों तक सेवा करती रही और मुझे उस कलीसिया में एक सफल सेवकाई करने के लिये आनंद मिला है। मैं लोगों से प्रेम करने लगी, और अगुवाई करने के साथ बड़ी संगति करती थी, परन्तु मुझे दूसरे और काम करने की बड़ी तीव्र इच्छा थी, परन्तु मैं ऐसा नहीं कर सकती थी जब तक मैं अपने स्वयं की सेवकाई में नहीं उतर जाती। मैं यह गलती करना नहीं चाहती थी। सचमुच मे मैंने यह

महसुस किया कि परमेश्वर मेरी अगुवाई कर रहा था कि मैं वहाँ से निकलूँ, परन्तु मैं डरती थी।

ऐसे निर्णय के समय में, बहुत से लोगों ने मेरे लिये भविष्यद्वाणी किये, और वे सभी लोग जो मुझे जानते थे और वे सब लोग जो मुझे नहीं जानते थे। मूल तौर से, वे सभी लोगों ने एक समान बात कही, "परमेश्वर तुम्हें बाहर जाने के लिये बुला रहा है। मैं तुम्हें सभाओं को लेते हुए एवं उत्तर, दक्षिण, पूरब और पश्चिम की ओर जाते हुए देख रहा है। मैं तुम्हें बड़ी भीड़ तक पहुँचते देख रहा हूँ।"

एक महिला कलीसिया में सेवकाई करने के लिये आई थी जिसे मैं पहले कभी भी नहीं देखी थी। उसने मेरे लिये भविष्यद्वाणी की कि मैं एक दिन टेलीविज़न पर विश्वव्यापी तौर से प्रचार करुँगी और उसने मुझे सेटालाइट के साथ देखा। और फिर उसने दूसरी महिला के लिये भविष्यद्वाणी की कि वह किसी दिन किसी बहुत बड़े टेलीविज़न सेवकाई के लिये काम करेगी। आज वह महिला जिसके लिये भविष्यद्वाणी की गई थी मेरे साथ काम करती है, और मुझे संभावित २ सौ करोड़ से भी अधिक दर्शकगण टेलीविज़न पर देखते रहते हैं।

सच्ची भविष्यद्वाणी पूरी होती है। भविष्यद्वाणी को परखने का एक ही तरीका है कि इसे देखें कि यह घटता है या नहीं। जो भविष्यद्वाणियाँ मेरे लिये उस समय की गयी थी सब निश्चित था जिसे मैं पहले से अपने हृदय में जान ली थी। इस कारण से परमेश्वर पर मेरा विश्वास बढ़ गया जिससे मैं आगे कदम बढ़ाकर उसकी आज्ञा मानूँ।

मेरे लिये व्यक्तिगत रुप में भी भविष्यद्वाणी की गई जिससे मुझे बिलकुल भी लाभ नहीं हुआ। उदाहरण के लिये, कुछ लोग जिन्हें मैं बिलकुल भी नहीं जानती थी उन्को मरे लिऐ "परमेश्वर की ओर से संदेश" मिला है कहकर चेतावनी और खतरे की बात करते थे यह सुनने से मुझे ऐसा लगता है कि मानों मैं बहुत भारी गलती करने जा रही थी और बुरा निर्णय कर रही थी। ऐसे बेकार शब्द डर पैदा करते हैं और हिम्मत और आत्मविश्वास को खत्म कर देते हैं। मुझे यह सीखने के लिये बहुत ही लंबा समय लग गया कि इन सब बातों का अंतिम फैसला मेरे हृदय में था। यदि मेरी आत्मा इन बातों के लिये गवाही नहीं देती है, तो मैं इसे दरकिनार कर देती हूँ या फिर इसे परमेश्वर पर छोड़ देती हूँ ताकि वह निश्चयता प्रदान करे - जब उसकी मर्जी में हो।

मैं ऐसे भी लोगों को जानती हूँ जिनसे मैं सुधार की बातों को प्राप्त की हूँ। यद्यपि मुझे इस प्रकार के भावुक संदेश अक्सर अच्छे नहीं लगे, परन्तु बाद में

कुछ दिनों के बीतने पर मैंने यह एहसास किया कि वास्तव में परमेश्वर मुझसे बातें कर रहा था। मैं आशा करती हूँ कि, अगर यह सुधार परमेश्वर की ओर से है तो मैं नम्रतापूर्वक इसे हमेशा स्वीकार करुँगी, परन्तु मेरी इच्छा यह भी है कि मैं बड़ी बुद्धिमानी के साथ सभी लोगों पर विश्वास न करुँ जो मुझसे कुछ करने के लिये कहते हों।

इसी प्रकार की प्रार्थना मैं आपके लिये भी करती हूँ।

अन्य भाषा में बातें करना

> मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि मैं तुम सब से अधिक (अनजान) अन्य भाषा में बोलता हूँ। (१ कुरिन्थियों १४:१८)।

मसीह की देह में विश्वासी लोग अलग अलग अंग होने के कारण शायद कुछ लोगों के द्वारा से आत्मा का वरदान काम करता है विशेष करके उनके द्वारा से जिनकी आत्मिक पृष्ठभूमि अधिक मजबूत होती है। इन कलीसिया समूहों में आत्मा के वरदानों का समावेश के बारे में एक नियमित भाग को लेकर बाइबल से निर्देश दिया जाता है। दूसरे समूह के विश्वासी लोग वरदानों के बारे में अध्ययन करते है, और कुछ समूह इस विषय में कोई शिक्षा नहीं देते हैं।

मैं व्यक्तिगत रुप से यह विश्वास करती हूँ कि बहुत सारी कलीसियाएँ पवित्र आत्मा के वरदानों के कार्य के विषय में लोगों को शिक्षा नहीं देते हैं क्योंकि या तो वे लोग इसके विषय में न ही समझते हैं या तो वे लोग इससे डरते हैं। हो सकता है वे लोग देखे होंगे या इसके दुरुपयोग के बारे में सुने होंगे और संभवत: इसके द्वारा से होने वाली भूलचूक और धोखे से बचना ज्यादा पसंद करते होंगे। मैं नहीं जानती कि प्रत्येक कलीसियाएँ क्या क्या सिखलाती है। मैं केवल उतना जानती हूँ जितना मुझे सिखाया गया था, और मैं लोगों की गवाहियों को सुनती हूँ जो अलग अलग पृष्ठभूमि से आते हैं और वे नियमित रुप से मुझसे कहते रहते हैं कि वे लोग ऐसी बातें पहले कभी भी अपनी कलीसियाओं में नहीं सुने हैं।

क्या यह उचित है कि लोग वर्षो तक चर्च जायें और पवित्र शास्त्र के संपूर्ण विषय के बारे में कभी न सूनें? क्या हमें बाइबल जो कुछ कहती है उस संपूर्ण विषय में शिक्षा प्राप्त करना नहीं चाहिये?

पवित्र आत्मा के बपतिस्मा और उसके वरदानों का तिरस्कार करना कुछ एक समस्याओं को जैसे इसकी अधिकता और दुरुपयोग के द्वार को बंद कर

सकता है, परन्तु यह अनगिनत आशीषों को जिसे लोगों को अपने प्रतिदिन के जीवन तीव्रता के साथ जरुरत है उसके द्वार को भी बंद कर देता है।

हमें पवित्र आत्मा के वरदानों की जरुरत है। परमेश्वर ने हमारी रचना एक अलौकिक इच्छा के साथ की है, और यदि कलीसिया इस उत्कण्ठा को पूरी न करे, तब तो दु:ख के साथ कहना होगा, कि शैतान हमारी इच्छा के साथ खिलवाड़ करने के लिये तैयार खड़ा है।

इससे पहले भी हमने पवित्र आत्मा के बपतिस्मा और अन्य भाषा में बातें करने के विषय में विचार विमर्श किया है। इस आत्मा के वरदान के बारे में सबसे उत्तम और सरल बात यह कहा जा सकता है कि यह आत्मिक भाषा है, और यही पवित्र आत्मा आपको जानकर चुन लेता है ताकि आपके द्वारा से बातें करे, परन्तु आप उसे नहीं जानते हैं।

पौलुस की तरह, मुझे भी अपने पाठकों से कहना है, "मैं आनंदित हूँ कि मैं अन्य भाषा में बोलती हूँ।" मैं अन्य भाषा में बहुत बोलती हूँ। यह मुझे आत्मा के लिये मदद करता है, और परमेश्वर की अगुवाई के प्रति संवेदनशील रहने के लिये मदद करता है। जब मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करती हूँ - तब मेरी आत्मिक उन्नति होती है और स्थिर होती हूँ - और आत्मिक रुप से बलवंत भी होती जाती हूं।

युगों से ऐसा कहा गया है कि जो लोग अन्य भाषा में बोलते है उन्हें जादू टोना करने वाले के समान कहा जाता है। अन्य भाषा बोलने को एक "बुरी गाली" के रुप में कहा गया है। जो लोग अन्य भाषा के वरदान के बारे में व्यक्तिगत रुप से नहीं जानते है, उन्होंने कड़ी आलोचना करके दोष लगाया है।

पौलुस अन्य भाषा में बातें की। पेन्तिकुस्त के दिन में १२० चेले पवित्र आत्मा से भर गये और सबने अन्य भाषा में बातें की। दूसरे विश्वासियों को जिनको पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला जैसे कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में वर्णन किया गया है उन्होंने अन्य भाषा में बातें की। आप और मैं क्यों अन्य भाषा में बातें नहीं कर सकते हैं?

अन्य भाषा का अनुवाद

यदि (अनजान) अन्य भाषा में बातें करनी हो... और एक व्यक्ति (जो कुछ कहा जाता है) अनुवाद करे। (१ कुरिन्थियों १४:२७)।

जिस प्रकार से पौलुस ने इस परिच्छेद में कहा है, कि जब कोई व्यक्ति सभा की आराधना में अन्य भाषा बोलता है, तो उसके संदेश का अनुवाद करना चाहिये। अक्सर मुझे अन्य भाषा के अनुवाद का संदेश प्राप्त होता है। और यह मेरे अंदर प्रभाव डालने के समान आता है या मैं अपनी आत्मा में जान लेती हूं कि परमेश्वर सुनने वालों से क्या कुछ कहना चाहता है।

अन्य भाषा का अनुवाद अन्य भाषा बोलने के समान है। लोग अपनी आत्मा में कम्पन महसुस कर सकते हैं, यह जानते हुए कि वे अन्य भाषा में बातें करने जा रहे हैं, फिर भी उन्हें यह पता नहीं चल सकता कि अन्य भाषा का क्या संदेश होगा। और जो व्यक्ति अनुवाद कर रहा होता है वह अपनी आत्मा में इसके प्रभाव को प्राप्त करता है कि परमेश्वर क्या कहना चाहता है। दोनों पक्ष को विश्वास में कार्य करना चाहिये, इसलिये कि उनका मन इसमें शामिल नहीं रहता है। जो मैं कहना चाहती हूँ वह यह है कि यह संदेश उनके मन के द्वारा से प्रेषित नहीं होता है परन्तु परमेश्वर ही है जो उनकी आत्मा के द्वारा से प्रदान करता है।

पौलुस ने विश्वासियों को प्रोत्साहित किया कि प्रार्थना करें कि वे अनुवाद कर सकें, और मैं विश्वास करती हूँ कि हम सभी को ऐसा करना चाहिये। जिस विषय के लिये हम गुप्त में प्रार्थना करते रहते हैं ऐसे करने से हमें अच्छी समझ मिलती है।

जब मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करती हूँ, तब मैं अक्सर जिन सामान्य विषयों के लिये प्रार्थना करके संवेदनशील रहती हूँ यह बिना ठीक से जानते हुए कि मैं क्या प्रार्थना कर रही हूँ। फिर कुछ समय के लिये मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करती हूँ, फिर उसके बाद मैं कुछ समय के लिये अपनी मातृभाषा (अंग्रेजी) में प्रार्थना करती हूँ। इसी प्रकार से मैं अन्य भाषा और अंग्रेजी में तब तक प्रार्थना करती रहती हूँ जब तक मैं अपनी आत्मा में संतुष्टि महसुस नहीं कर लेती हूँ तब मैं समाप्त करती हूँ।

आप भी इस प्रकार के प्रार्थना के तरीके को अपना सकते हैं जब आप अपनी भाषा में प्रार्थना कर रहे हों या आप पूर्ण रुप से भिन्न तरीके से भी प्रार्थना करने की अगुवाई प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि आप इस क्षेत्र में पवित्र आत्मा की अगुवाई का अनुसरण करें।

आत्माओं की परख

और किसी को (सही कहने की) आत्त्माओं की (और गलत की) परख। (१ कुरिन्थियों १२:१०)

मैं विश्वास करती हूँ कि आत्माओं की परख बहुत बड़ी कीमती वरदान है, और मैं आपको प्रोत्साहित करूँगी कि उसकी इच्छा करें और उसमें बढ़ जायें।

कुछ लोग कहते हैं कि आत्माओं की परख लोगों को जब परमेश्वर अनुमति देता है तब आत्मिक राज्य में अलौकिक निरीक्षण करने प्रदान करता है। वे लोग केवल यह विश्वास नहीं करते हैं जैसे कि पौलुस ने जान लिया कि फिलिप्पी शहर में उस लड़की में भावी कहने वाली आत्मा थी, यह केवल बुरी या दुष्टात्माओं की परख के लिये नहीं है (देखें प्रेरितों के काम १६:१६-१८); परन्तु यह ईश्वरीय आत्मा की परख के लिये हैं, जैसे कि जब मूसा ने आत्मिक राज्य में परमेश्वर की "पीठ" को देखा (देखें निर्गमन ३३:१८-२३), या यूहन्ना जब वह पतमुस नाम टापू में कैद था जिसने पुनरुत्थित यीशु को दर्शन में देखा (देखा प्रकाशित वाक्य १:९)।

बहुत सारे लोग यह विश्वास करते हैं कि आत्माओं की परख यह जानने में सहायता करता है कि जिन लोगों के साथ हम व्यवहार करते रहते हैं, वे सही हैं या गलत। दूसरे शब्दों में, यह हमें एक व्यक्ति के इरादे को जानने में मददर करती है और परिस्थिति के सही स्थिति को हमें बतलाती है। उदाहरण के लिये, कि कोई भी आपको अच्छा करता हुआ दिखता है, फिर भी उस व्यक्ति के लिये हम भीतर से गलत सोच सकते हैं। अक्सर यह परमेश्वर के तरीके हैं जो वह हमें व्यक्ति के बुरे इरादों से सावधान कराता है।

आज बहुत सारे लोग जैसे दिखते हैं वैसे नहीं है। यह संसार कोलाहल से भरपूर है, एवं धोखाधड़ी करने वाले लोग जो केवल कुछ करके अपना काम निकाल लेते हैं - और उन्हें परवाह नहीं कि ये कैसे कर लेते हैं।

हमारी सेवकाई में हम ऐसे लोगों के साथ काम किए हैं जो इन सभी बातों के लिये जवाब के रुप में हैं, जो लोग ऐसे प्रभाव छोड़ते हैं मानों कि वे लोग कार्यस्थल, या चर्च, या समूह, या संघ के लिये बड़ी उन्नति का कारण बनेंगे - और कार्य के दक्ष साबित होंगे, इत्यादि कहने के लिये। वे लोग सब प्रकार की बातों को करने की प्रतिज्ञा करते हैं, परन्तु उसके बाद में बहुत कुछ अनुसरण करना नहीं चाहते हैं। वे लोग हमारा ध्यान आकर्षण करने के लिये कुछ न कुछ सोचकर बोलते हैं; फिर उसके बाद वे लोग वही करते हैं जो वे पसंद करते हैं, हमेशा बहाना बनाते हुए कि क्यों वे अपनी प्रतिज्ञानुसार नहीं कर सके।

बाइबल सावधान करती है कि लोग "अन्तर में फाड़नेवाले भेड़िये के भेष में" रहते हैं (देखें मत्ती ७:१५)। ऐसा लगता है कि वे हमारी मदद करना चाहते हैं परन्तु वास्तव में वे लोग हमारी हानि करने की मनसा करते हैं।

शैतान स्वयं इस प्रकार के लोगों को मसीही लोगों को धोखा देने एवं उनके भक्तिमय प्रयास को बर्बाद करने के लिये इस्तेमाल करता है।

मैं बहुत वर्षों से अपनी सेवकाई में परख के लिये बहुत प्रार्थना कर रही थी। मैंने आंरभिक दौर में पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को छोड़ इसके विषय में न तो कभी प्रार्थना की और न जानती थी, परन्तु बाद में इस अद्‌भुत वरदान के बारे में सीखती गयी - और मैं इसके कार्य और बड़े व्यवहार पर आश्रित रहती हूँ।

हमारी सेवकाई में, डेव और मुझे बहुत ही निर्णय लेने पड़ते हैं, शायद एक औसतन व्यक्ति से भी ज्यादा। बहुत सारे ये निर्णय दूसरे लोगों के जीवन निर्वाह के संदर्भ में, जो कि हम उसे बड़ी जिम्मेदारी के साथ लेते हैं। हमें ऐसे भी निर्णय लेना चाहिये कि किसे हम अपनी सेवकाई स्तर में शामिल करें या नहीं। यह हमारे लिये महत्वपूर्ण है कि हम किसके साथ शामिल हैं क्योंकि आत्मा प्रभावित करता है, इत्यादि। दूसरे शब्दों में, हम आसानी से उन सभी लोगों के समान बन सकते हैं जो हमारे चारो तरफ रहते हैं। उदाहरण के लिये, एलिशा एलिय्याह के समान हो गया क्योंकि वह उसकी घनिष्ठता में रहा। (देखें २ राजा २:१५)।

हम जिन लोगों की संगति में रहते हैं यह हमें प्रभावित करती है और जिन लोगों के संपर्क में रहते हैं उन्हीं के नज़रिए से लोग हमें देखते हैं। यदि कोई बेईमानी के लिये जाना जाता है और यदि हम उस व्यक्ति के साथ दिखते हैं, तो लोग हमे उस व्यक्ति के जैसा आसानी से सोच लेते हैं।

यह महत्वपूर्ण है कि लोग उन पर भरोसा करें जो लोग उनकी सेवा करते हैं, अन्यथा भय और संदेह के द्वारा से उनका हृदय बंद हो सकता है। मैं चाहती हूँ कि लोग मुझ पर भरोसा रखें; मैं चाहती हूँ कि मेरी सेवकाई उनके जीवन में प्रभावशाली हो।

मैं किसी ऐसे व्यक्ति को जिसे मैं नहीं जानती थी उनकी लिखी हुई पुस्तक से लगातार उदाहरण दिया करती थी। मुझे कहीं से एक पत्र प्राप्त हुआ कि क्या मैं उस व्यक्ति के मामले में सजग हूँ या नहीं क्योंकि जिस व्यक्ति ने उस पुस्तक को लिखा है उसका उसकी पत्नि के साथ तलाक हो चुका है और उसने उसके साथ बहुत बेईमानी भी की है। वास्तव में, मैं उन तथ्यों से ज़रा भी वाकिफ नहीं थी, तब मैंने उन सामग्रियों को इस्तेमाल करना बंद कर दिया, क्योंकि यदि दूसरे लोग इन बातों को जानेंगे, तो यह लोगों के हृदय को मेरे और सेवकाई के प्रति सोचने के लिये कम एवं बंद भी कर देगा। इस पुस्तक की सूचनाएँ अच्छी थी; परन्तु इसके पीछे जो व्यक्ति था वह पथभ्रष्ट हो चुका था।

मुझे उसकी सामग्रियों को दूसरों के सामने अनुमोदन करने के लिये सजग रहने की जरूरत थी।

हमें प्रेमपूर्वक बहुत सारे निर्णय करने पड़ते हैं, जिससे दूसरों के आत्मिक जीवन की उन्नति हो।

मैं याद करती हूँ एक मनुष्य को जो नौकरी तलाशने मेरे कार्यालय में आया था। सभी ने सोचा कि यह मनुष्य इस कार्य के लिये सिद्ध साबित होगा, परन्तु कुछ न कुछ उसके विषय में मुझे परेशान किया। मेरे पास ऐसी कोई जानकारी नहीं थी कि मैं उसके बारे में कुछ ऐसा महसुस करुँ। उसके उद्धरण और गुण अच्छे थे, और वह मेरी घर की कलीसिया में नियमित रूप से संगति किया करता था। मैं अपनी भावनाओं से बातचीत करने लगी जैसा कि मैं किया करती थी, परन्तु मैं अपनी भावनाओं को रोक नहीं पा रही थी इसलिये कि कुछ न कुछ उस मनुष्य के विषय में कि वह सही नहीं था। मेरी भावना के बावजूद भी, हमने उसे काम पर रख लिया, पर वह एक बड़ी समस्या का कारण बन गया। मैंने बहुत बार चाहा कि मैं कारण का पीछा नहीं कर रही थी वरन परख का अनुसरण किया।

दूसरी बार हमने एक महिला को काम में रख लिया और फिर से मैंने उसके बारे में वैसा ही महसुस किया, और वह अपने विभाग में बहुत ही छल और कपट करने लगी और इसी के साथ उसकी छुट्टी भी हो गई, फिर भी वह अपने तरफ से बहुत ही मधुर और शरीफ दिखती थी।

और एक दूसरे समय में एक और जवान महिला का जो कालेज से शीघ्र स्नातक हुई थी उसे काम में रख लिया। वह कहने लगी कि वह कालेज़ इसलिये गई और स्नातक हुई ताकि वह हमारी सेवकाई में सहयोग कर सके। वह बहुत बुद्धिमान एवं योग्य थी, परन्तु कुछ न कुछ उसके जीवन के बारे में मुझे ठीक नहीं लग रहा था। इसके बाद हमने उसे काम में रख लिया,परन्तु लोग एक के बाद एक उसके विभाग से लोग छोड़ने लगे, परन्तु किसी ने भी उसके विषय में ज़रा भी शिकायत नहीं की। इसी तरह से एक साल तक चलता रहा, जिसके कारण से हमें हमारे अच्छे कर्मचारियों से हाथ धोना पड़ा। हर इस्तीफा में एक विशेष प्रकरण दर्ज रहता था। तब भी मैं कहा करती थी कि “जब तक कुछ न कुछ गड़बड़ न हो तब तक ये सारे लोग एक विभाग को क्यों छोड़ रहे होंगे” फिर भी हम इस समस्या के लिये कोई स्वाभाविक कारण खोज न सके।

बाद में दूसरी घटनाओं के क्रम के द्वारा से जो इस महिला के संदर्भ में हुआ था, हमने यह खोज निकाला कि यह महिला बेवजह एक दूसरे कर्मचारी को एक दूसरे के विरुद्ध भड़काती थी एवं जब वे छोड़कर चले जाते थे तब वह यह देखकर आनंदित होती थी इसका यह परिणाम था कि वह उनके बारे में झूठ बोला करती थी।

मैं जानती हूँ कि यह बड़ा विचित्र लगता है कि एक मसीही इस प्रकार का कार्य करता है, परन्तु मुझ पर विश्वास कीजिये, कि इसी प्रकार के एवं स्तर के नामधारी मसीही बहुत हैं। ये जवान महिला यीशु पर जरूर विश्वास करती थी परन्तु वह शारीरिक थी और उसके पास कुछ ऐसी भावनात्मक समस्याएँ थी जो उसे काफी लंबे समय तक समझने के बाद वह बातें दरकिनार हुई।

कुछ लोग दिखावा करने में बड़े माहिर हैं। वे लोग कुछ बनना चाहते हैं जैसा वे सोचते हैं और इसके अलावा जैसे दूसरे चाहते हैं, परन्तु यह वे हकीकत में नहीं होते हैं। यह संसार मिली जुली भीड़ है, और हमें उनके मध्य में परख की जरूरत है ताकि हम वहाँ काम भी करें एवं हर मुसीबत से परे भी रहें।

उस जवान महिला के संदर्भ में जो हमारे लिये समस्या का कारण बनती रही, हम एक भी कारण खोज न सके कि उसके विभाग में क्या कुछ हो रहा था। परन्तु मैं दिल की गहराई से ये जानती थी कि जो कुछ हो रहा था यह केवल एक अवसर था।

दुविधा हमारे अंदर से परख को हमेशा चुरा लेता है। हमें परमेश्वर के वचन में सिखाया गया है कि हम अपनी समझ का सहारा न लें और न अपनी दृष्टि में बुद्धिमान बनें (देखें नीतिवचन ३:५-७)। दूसरे शब्दों में, हमें नम्र बनना चाहिये। हमें अपनी सोच समझ पर कभी भी आश्रित रहना नहीं चाहिये, परन्तु परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिये कि वह हमें सारी सच्चाई में हमारी अगुवाई करे।

जैसे मैंने कहा है कि परख हमारी सहायता करता है कि कब परमेश्वर क्या कुछ करेगा। हानि होने के बाद कोई कर्मचारी ऐसा हमारी सेवकाई में कर सकता है, कि गलत निर्णय में कूदना पर यह परीक्षा है या फिर अगर कोई भी इस प्रकार से मुझसे झगड़ना भी आरंभ कर दे। यदि मैं लोगों के साथ अधीर हो जाऊँ, तो हो सकता है कि मैं उनके विचारों के लिये लौ का कारण बन सकती हूँ, परन्तु परमेश्वर हमेशा हस्तक्षेप करता है और कहता है, “नही, मैं चाहता हूँ कि तुम उनके साथ काम करो जैसा मैं तुम्हारे साथ काम करता रहा हूँ।” हो सकता है कि उन्हें बाहरी बदलाव की जरूरत हो, परन्तु उनके पास परमेश्वर के लिये हृदय है तथा हमारी सेवकाई के लिये भी। तब मैंने यह एहसास किया

कि, "अब, मुझे परमेश्वर के अनुग्रह के लिये चलना है।" मैं निश्चित हूँ कि अन्य और कारण वे मुझ पर बरसना चाहते थे, परन्तु परमेश्वर की ओर से परख होने के कारण से वे धीरज धरे एवं मेरे साथ काम करते गये।

आज मसीह की देह के लिये परख जरूरी है क्योंकि जो लोग एक लक्ष्य को मिलकर पूरा करने के लिये एक साथ बुलाये गये हैं उन्हें शैतान अलग करने की कोशिश कर रहा है वह गड़बड़ी डालकर एक दूसरे को ठोकर खिलाकर उनकी एकता को जो उनके बीच में है तोड़कर बर्बाद कर दे और अगर वे एक दूसरो के साथ तालमेल के साथ रहेंगे तो वे अपने लक्ष्य को हासिल कर सकेंगे।

शैतान सहमति की शक्ति को अच्छी रीति से जानता है, क्योंकि मत्ती १८:१९ में यीशु ने कहा, "फिर मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात (कुछ भी और सब कुछ) के लिये जिसे वे माँगे, एक मन के हों (एक साथ तालमेल के, एक लय में सब लय बद्ध हों), तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उनके लिये हो जाएगी।" इन वर्षों के दर्मियान मैंने अच्छी तरह से सीख लिया है कि मैं अपने दिल के अनुसार चलूँ न कि मन के अनुसार। मैं अब भी कई अवसरों पर गलती कर जाती हूँ, परन्तु सबसे पहले इस संदर्भ में मैं परख की कीमत के द्वारा से अच्छाई और बुराई दोनों को जान सकती हूँ।

सभी वरदानों को खोजें

> वरदान तो कई प्रकार के हैं (दान वरदान, असाधारण सामर्थ अलग अलग मसीही लोगों को निश्चित तौर से दिया जाता है, पवित्र आत्मा के द्वारा से उनके हृदय में परमेश्वरीय अनुग्रह का सामर्थ का कार्य होता है।, परन्तु (पवित्र) आत्मा एक ही है। (१ कुरिन्थियों १२:४)

आत्मा के वरदानों के विषय समझाना मुश्किल होता है क्योंकि उनका काम आत्मा के राज्य में होता है। मैं आशा एवं प्रार्थना करती हूँ कि मैं उनके विषय पर्याप्त वर्णन एवं उनके बुनियादी कार्य के बारे में कर चुकी हूँ। मैं महसुस करती हूँ कि इस विषय में बहुत कुछ और कहने की जरूरत है, जैसे मैंने कहा है, कि मैं आप सभी को प्रोत्साहित करती हूँ कि पवित्र आत्मा के वरदान और शिक्षा के विषय में पूर्ण समर्पित अच्छी पुस्तकों को अवश्य पढ़ें।

मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि आत्मा के वरदानों के विषय में प्रार्थना करना आरंभ कर दें। परमेश्वर से कहें कि वह आपको इनके साथ इस्तेमाल करे और

जैसा वह आपको योग्य समझता है वैसा ही आपके द्वारा से कहने दे। "दिखावा वाले" वरदानों को न खोजे, परन्तु उन वरदानों को खोजें जो सबसे उत्तम हैं।

ऐसा लगता है कि विश्वास सबसे उत्तम वरदान है। बुद्धि, ज्ञान और परख से उत्तम है, यद्यपि वे सभी बहुत महत्वपूर्ण हैं। भविष्यद्वाणी, अन्य भाषा या उसके अनुवाद से उत्तम है।

कुछ लोग बड़ी भूल करते हैं कुछ दिखावा करने वाले वरदानों को अधिक खोजकर और उन वरदानों का वास्तव में इंकार करते हैं जो उनको समस्याओं से बचा सकता था जब दूसरे का इस्तेमाल करते हों।

लोगों के पास ज्ञान हो सकता है, फिर भी बुद्धि नहीं कि जानें कि कैसे इसका इस्तेमाल करना चाहिये। उनके पास परख हो सकती है, परन्तु बुद्धि नहीं कि जो परख उन्हें दी गयी है उनका नियंत्रण कैसे करें। दूसरे लोग हमेशा अन्य भाषा में बोल सकते हैं और अपनी उन्नति कर सकते हैं, परन्तु प्रेम में नहीं चलने के कारण से और दूसरों की परवाह न करने के कारण से कि कैसे यह चारों तरफ रहने वालों को प्रभावित करता है। कुछ लोग सामर्थ के काम करने के लिये इस्तेमाल में लाये जा सकते हैं, परन्तु उनके पास पर्याप्त विश्वास नहीं होगा तो यदि उन्हें कुछ मुश्किल परिस्थितियों से गुज़रना पड़े तो वे धीरज धरे हुए नहीं रह सकते है।

आत्मा के वरदानों को काम करने के लिये हमें देना है। हमारे प्रतिदिन के जीवन में और अविश्वासियों के सामने मसीह जो हमारे अन्दर वास करता है उसकी सामर्थ और भलाई को प्रगट करने में मदद करती है। जब पवित्र आत्मा के वरदानों का कार्य हमारे जीवन में होता है, तब हम परमेश्वर की महिमा के अनुग्रह जो हम पर बरसया गया था उसका हम दूसरों पर प्रतिबिंब करते हैं ताकि दूसरे लोग यीशु पर तीव्रता से भरोसा रख सकें। जैसे मसीह हममें दिखता है, और हम उसकी देह होकर, हमें उसकी सच्चाई की सामर्थ को प्रकाशमान करना है जैसा १ कुरिन्थियों १:४-१० में वर्णन किया गया है।

> मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर का धन्यवाद सदा करती हूँ, इसलिये कि परमेश्वर का अनुग्रह (उसके उपकार और आत्मिक आशीषें) तुम पर मसीह यीशु में हुआ। (सो) कि उसमें होकर तुम हर बात में अर्थात् सारे वचन (अपने विश्वास के बारे में कहने के लिये) और सारे ज्ञान में धनी (सारी बातों की तह तक पहुँचने की योग्यता देने का अर्थ) किए गए। कि मसीह की (हमारी) गवाही तुम में पक्की निकली। यहाँ तक

> कि किसी वरदान में तुम्हें घटी (ग्रहणशील होने का जो कि पवित्र आत्मा के द्वारा से उनके हृदय में परमेश्वरीय अनुग्रह की सामर्थ का कार्य होता है) नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते हो। (निरन्तर आशा में जीते रहो)। वह तुम्हें अन्त तक (स्थिर करेगा, आपको बल देगा, जमानत देकर आपको दोष मुक्त करता है; सारे आरोप या अभियोग के विरुद्ध आपका वह प्रमाण पत्र है ताकि आप मुक्त रहें) दृढ़ भी करेगा, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो। परमेश्वर सच्चा है (आश्रित रहने योग्य, भरोसे मंद, और अपने वादे के लिये सच्चा, उस पर भरोसा किया जा सकता है); जिसने तुमको अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है। हे भाइयो, मैं तुमसे यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा विनती करती हूँ, कि तुम सब एक ही बात कहो; और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।

जी हाँ, सब वरदानों को खोजें, परन्तु निश्चय जानें कि जो सबसे उत्तम है उसकी धुन में लगे रहें। विशेष करके प्रेम में चलने के लिये खोजें, क्योंकि प्रेम सबसे बढ़कर है।

घनिष्ठ स्तर

४

परमेश्वर का अनंतकाल का फल

तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में (तुम मुझसे जिओ, और मैं तुम में जाऊँगा); जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न (अत्यधिक तौर से एक होना) रहे, तो अपने आपसे नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो फल नहीं ला सकते। मैं दाखलता हूँ; तुम डालियाँ हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत (बहुतायत) फल फलता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर (मेरी महत्वपूर्ण एकता से विच्छेद हो जाना) तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोइ मुझ में बना न रहे, तो वह (टूटी हुई) डाली की नाईं फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो (मुझ में एक होकर महत्वपूर्ण ढंग से रहना), और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ (उत्पन्न), तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।

- यूहन्ना १५:४-८

१४
हर एक के लिये वरदान

> (उसने स्वयं विभिन्न मनुष्यों को नियुक्त करके हमें दिए) और उसने कितनों को प्रेरित (विशेष संदेशवाहक) नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता (प्रेरणा प्राप्त प्रचारक और व्याख्याकर्त्ता) नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले (सुसमाचार के प्रचारक, यात्री मिशनी) नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले (उसके झुण्ड का चरवाहा) और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। (इफिसियों ४:११)

> और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न भिन्न वरदान (अधिकार, प्रतिभा, गुण) मिले हैं (जिसका जो वरदान हो) तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे। (जिसका जो वरदान हो) यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे। जो उपदेशक हो (प्रोत्साहित करे) वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देने वाला उदारता से दे, जो अगुवाई करे, वह उत्साह से करे, जो दया करे, वह हर्ष से करे। (रोमियों १२:६-८)

इन दोनों परिच्छेदों से हम देख सकते हैं कि परमेश्वर के दान और वरदान कितने है और विभिन्न हैं। हकीकत में, प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर की ओर से कुछ न कुछ दान और वरदान प्राप्त होता है। लोगों के पास बहुत गुण हो सकते हैं, परन्तु सामान्य तौर से कोई एक वरदान होता है जो उनके द्वारा से काम करता है।

उदाहरण के लिये, मैं एक शिक्षिका एवं सुसमाचार प्रचारिका हूँ। मैं मिशनरी यात्रा पर होती हूँ, परन्तु सही मायने में मैं मिशनरी नहीं हूँ। मैं लोगों की सहायता करती हूँ, परन्तु मेरे पास सहायता का वरदान नहीं। (देखें

१ कुरिन्थियों १२:२८) फिर भी ये व्यवहारिक जीवन के लिये अधिक सहायक है। मैं जानती हूँ कि कैसे दयालु होना है, परन्तु मैं दया के दान के अर्न्तगत सेवा नहीं करती हूँ। मैं विश्वास करती हूँ इन दो परिच्छेदों के वर्णन के बारे में साथ ही साथ १ कुरिन्थियों १२ में नौ वरदान के बारे में वर्णन किया गया है भी। वे सभी हममें भिन्न भिन्न प्रकार से समयानुसार काम कर सकते हैं, परन्तु एक प्रारंभिक वरदान हो सकता है।

प्रशासन और संगठन भी दान है। मैं प्रशासनिक हूँ, और मैं अस्त-व्यस्त नहीं हूँ, परन्तु मैं इन बातों को आयोजित करने के लिये प्रेम नहीं करती हूँ। मेरी एक बेटी को इस क्षेत्र में सहायता करने का एक बड़ा दान है; वह जब तक किसी की सहायता न कर ले तब तक वह कभी खुश रह नहीं सकती है। वह हर बातों को आयोजित करना प्रेम करती है। एक बार वह मुझसे बोली कि इस दुनियां में उसकी सबसे पसंदीदा जो काम है वह यह है कि वह हर काम को जो वह करने के लिये जरूरी समझती है वह उसकी सूची तैयार करती है और जब वह पूरा हो जाता है तब वह एक एक करके सूची को काटते जाती है। वह विशेष करके आनंदित होती है "सूची को काटते समय"। वह कहती है कि उसको एक अलौकिक संतुष्टि महसुस होती है।

जैसे मैंने अपने बारे में सोचा और पाया कि ये तरीका मुझको उत्तेजित नहीं करेगा। मैं कभी कभार सूची बनाती हूँ, और जब मैं करती भी हूँ, तब मैं सामान्य तौर से मैं उन्हें काटती नहीं हूँ। मैं ऐसे ही सूची पर नज़र डालती हूँ ताकि देख सकूँ कि क्या कुछ पूरा होना छुट गया। जब मेरा सब कुछ पूरा हो जाता है, तब मैं सूची फेंक देती हूँ।

सूची बनाकर योजनाओं को पूरा करके सूची काटने से बढ़कर जिस बात से मैं ज्यादा आनंदित होती हूँ वह यह है कि दूसरे लोगों को नौकरी प्रदान करना एवं उनकी सूची तैयार करना। मैं एक बॉस हूँ; मेरा जन्म एक बॉस होने के लिये हुआ था, और शायद हमेशा किसी की बॉस बनकर रहूँगी - चाहे यदि वह केवल कुत्ता ही क्यों न हो! मैं एक अगुवा हूँ, और अगुवे हमेशा लोगों से कहते रहते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिये।

मैं आलसी नहीं हूँ, और कोई अच्छी अगुवा भी नहीं हूँ, परन्तु मैं दूसरे लोगों को प्रेरित करके उनसे बहुत सारी बातें पूरी करवाना चाहती हूँ। मेरी बेटी जैसे व्यक्ति अपने तरीके से काम करेंगे क्योंकि वह यह जानती है कि यह एक उत्तम तरीका होगा जिससे वह उन्हें पूरी कर सकेगी।

यह वास्तव में कितनी अज़ीब है कि हम कितने भिन्न है, परन्तु उपरोक्त परिच्छेद पर आधारित, परमेश्वर ने हमें रचा है एवं सुसज्जित किया है।

पाँच प्रकार की सेवकाई

> और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कितनों को पास्टर और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया। जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह से उन्नति पाए। (इफिसियों ४:११-१२)

प्रेरित, भविष्यद्वकता, सुसमाचार सुनानेवाला, रखवाला और उपदेशक ये दान हैं जो कि पाँच प्रकार की सेवकाई के दान के संदर्भ में अक्सर कहा गया है। ये पाँच प्रकार के पद हैं जिसके द्वारा से कलीसिया का संचालन होना चाहिये जिससे लोगों को संपूर्ण सेवकाई मिल सके।

पास्टर को स्थानीय कलीसिया के मध्य रहना चाहिये जिससे वह हमेशा अपनी भेड़ों (सभा) की चरवाही करे, प्रशिक्षण देवे, चेतावनी, उन्नति का कारण बने सुधारे और निर्देश दे। पास्टर उनके व्यक्तिगत जीवन में शामिल रहता है। यह व्यक्ति उन्हें और उनके बच्चों को जानता है ताकि उस परिवार में विवाह एवं अंतिम संस्कार सम्पन्न करा सके, साथ ही साथ वह दूसरे तरीकों से भी उनकी सहायता करे एवं परामर्श दे। पास्टर अपने लोगों से प्रेम करता है और जिस कलीसिया की अगुवाई करता है उसके लिये उसके पास दर्शन होता है।

चार और पद स्थानीय कलीसिया के बाहर काम करना नहीं चाहिये। यदि वे वहाँ निवास नहीं करते हैं, तो मैं विश्वास करती हूँ कि उन्हें एक साथ एकत्रित करना चाहिये जिससे सभी लोगों पर उनके द्वारा से वरदानों का प्रकाशन मिलना चाहिये। ये सभी वरदान बोलने वाले पद हैं, इसका मतलब यह है कि लोगों के जीवन के बारे में बोलना है। यदि मिशनरी (या सुसमाचार सुनाने वाला) कभी नहीं आयेगा, तो लोग सार्वभौम मिशन दर्शन के महत्व को खो सकते हैं। उनका दर्शन संकीर्ण हो सकता है, तथा अन्य बाहर से उनकी सभा, परिवार, समाज, या राष्ट्र में शामिल नहीं हो सकेंगे।

प्रेरित एक संस्थापक होता है, एक ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के द्वारा से एक नई कलीसिया या सेवकाई आरंभ करने के लिये इस्तेमाल किया जाता हो। प्रेरित शिक्षा के दान पर एक नियमित शिक्षक से बढ़कर शिक्षा देता है, और

लगातार सुधार के लिये इस्तेमाल में लाया जाता है। पौलुस एक प्रेरित था। उसने कलीसियाओं को स्थापित की एवं विश्वासियों को स्थिर किया, साथ ही साथ उसने लोगों को प्रभु में जड़ पकड़ने में मदद की। उसकी बुलाहट थी कि वह केवल एक स्थानीय कलीसिया की नहीं, परन्तु मसीह की सम्पूर्ण देह की मदद करे।

भविष्यद्वक्ता हर बातों को देखता है और जानता है। भविष्यद्वक्ता का जो संदेश है हो सकता है रखवाला या प्रेरित के समान स्पष्ट न हो, परन्तु यह अक्सर गहरा होता है। इसे परख की जरूरत हो सकती है या पंक्तियों के बीच पढ़ने की जरूरत हो, इत्यादि, क्योंकि भविष्यद्वक्ता उन बातों को ही बोलते हैं जिसे उन्होंने आत्मिक राज्य में देखा है। भविष्यद्वक्ता सामान्य तौर से गहरे शिक्षक नहीं होते हैं। हो सकता है कि वे अच्छे शिक्षक हों, परन्तु सामान्य तौर से जिस प्रकार से प्रेरित और शिक्षक गहराई में जाते हों मगर वे न जाते हों।

मेरी एक सहेली है जो कि एक अलौकिक प्रचारिका एवं शिक्षिका है जो कि भविष्यद्वाणह की आत्मा से भरी है। वह अपने प्रचार के टेप्स में कई ऐसे शक्तिशाली बिन्दुओं का प्रयोग की है, परन्तु उनमें से किसी का भी व्याख्यान नहीं की है। मैं उसके टेप्स को सुनना पसंद करती हूँ क्योंकि उससे मुझे नई समाग्रियाँ मिलती है। उनमें वह तुरन्त कुछ बिन्दुओं को प्रस्तुत करती थी जिससे लोग विचार करें, जबकि मेरी शिक्षा में मैं समय लिया करती हूँ ताकि लोग एक ही बात में स्थिर रहें। मैं उसके हर एक टेप्स को लेकर उसे चार-भाग का सीरीज़ बनाकर शिक्षा के लिये इस्तेमाल करती हूँ। यद्यपि वह मुझसे कहा करती है कि, "जॉयस, तुम्हें इन विचारों को लेकर इनकी शिक्षाओं को सीरीस बनाने की जरूरत हैं।"

लोग भविष्यद्वक्ताओं को समझने में हमेशा चूक करते हैं क्योंकि वे उन बातों को देख सकते हैं जिसे अन्य लोग नहीं देख सकते हैं। जैसे दर्शी, वे लोग देख सकते हैं जो परमेश्वर करना चाहता है, परन्तु यह नहीं जान सकते कि कैसे करना चाहिये। इफिसियों २:२० कहती है कि कलीसिया का निर्माण प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर की गई है - भविष्यद्वक्ता देखता है कि क्या कुछ करने की आवश्यकता है, और प्रेरित जानते है कि इसे कैसे करना चाहिये।

पुराने नियम में, भविष्यद्वक्ता लोग, राजाओं, राष्ट्रों और हर एक के सुधार के लिये लगातार भारी वचन लाने के लिये इस्तेमाल किये गये। वे परमेश्वर के मुख थे। आजकल, हम सब परमेश्वर की आवाज को सुन सकते हैं, इसलिये भविष्यद्वक्ता की जरूरत नहीं है कि वह हमेशा हम से कहे कि क्या कुछ करना

चाहिये। परन्तु परमेश्वर अब भी भविष्यद्वक्ता को हमारे सुधार और दिशा निर्देश के लिये समयानुसार इस्तेमाल करता है। वे प्रचार और शिक्षा के द्वारा से परमेश्वर की इच्छा का व्याख्यान करते हैं।

उपदेशक एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा कर सकता है या स्थानीय कलीसिया में भी रह सकता है। बहुत वर्षों तक मैं एक स्थानीय कलीसिया में एक सप्ताह में बहुत बार उसके बाइबल कालेज में और वैसे ही उसके साप्ताहिक सभा में नियमित रूप से शिक्षा देती रही। तब परमेश्वर ने मुझे बुलाया कि मैं यात्रा करते हुए अलग अलग जगह में शिक्षा देती जाऊँ, और विश्वासियों को उनके जीवन में परमेश्वर की बुलाहट के विषय में, और यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा से जो वीरासत है उसमें स्थिर करती जाऊँ। परन्तु यह एक बात है, जिसे दूसरे को भी जानना चाहिये कि कैसे इसका सही इस्तेमाल हो। मैं लोगों को सिखाने के लिये हर प्रयास करती हूँ कि किस प्रकार से यीशु मरा ताकि उन्हें सब कुछ दे जिसका इस्तेमाल हो।

पवित्र आत्मा के भिन्न वरदान

> वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है। और सेवा भी कई प्रकार की है। (वरदान, असाधारण शक्ति जो मसीहीयों से अलग होता है, पवित्रआत्मा के द्वारा अद्‌भुत वरदान पवित्र आत्मा के द्वारा दिया जाता है) इसमें अंतर रहता है, परन्तु पवित्र आत्मा एक ही है। (१ कुरुन्थियों १२:४)।

मैंने पवित्र आत्मा के भिन्न भिन्न दिलचस्प वरदानों के विषय में जो लोगों के द्वारा से कार्य करता है गवाहियाँ दी है। उपदेश देने का जो दान है यह मुझे हमेशा दिलचस्प लगता है (देखें रोमियों १२:८)। यह एक ऐसा दान है जो मेरे पास नहीं है, यद्यपि मैंने उपदेशात्मक योग्यता का निर्माण करने की कोशिश किया है।

एक सच्चा उपदेशक प्रत्येक लोगों को ऐसा महसुस करवा देता है कि वह लखपति करोड़पति के जैसा है, मानो ऐसा लगता है कि सारी दुनियाँ में सबसे महत्वपूर्ण एवं सबसे अद्‌भुत व्यक्ति वही है। उपदेशक यह कार्य स्वभाविक तौर से और लगातार किया करता है। इस दान के साथ मैं बहुत सारे लोगों को जानती हूँ, और सभी लोग उनके इर्द गिर्द होना चाहते हैं। वे सामान्य तौर से सकारात्मक और बड़े धुन में रहते हैं, वे सभी को खुश करते हैं। यदि कभी कोई भूल भी हो जाए तब भी सकारात्मक होते हैं, और वास्तव में उसमें वे

समस्या को नहीं देखते हैं, और कुछ दिख भी जाए तब भी उसमें हस्तक्षेप करने की कोशिश नहीं करते हैं। यह सच है, कि सभी उपदेशक ऐसे नहीं है। उनके उपदेश का अंश इस पर निर्भर करता है कि उनका वरदान कितना मजबूत या कितना अत्यधिक आधुनिक है।

हम वास्तव में अपने वरदानों में बढ़ते हैं। हम कह सकते हैं कि वर्षो के दौरान वे अच्छा सामन्जस्य बिठा चुके हैं। इस दौरान हम अपनी सामर्थ और उन फंदों से बचाव भी सीखते हैं जो उनमें से प्रत्येक के साथ आता है।

उदाहरण के लिए, व्यक्ति जिसे करुणा का वरदान प्राप्त है हर एक के लिए खेद महसूस करता है यहाँ तक कि उनके लिए भी जिन्हे जरुरत नहीं कि कोई उनके लिए खेद महसूस करे। एक दयालु व्यक्ति हर एक की सहायता करना चाहता है। मैंने सीखा है कि दयालुता की किसी सेवकाई में दूसरों को शामिल किए बिना दया का वरदान प्राप्त व्यक्ति को जिम्मेदारी देना अच्छा नहीं क्योंकि वह दयालु व्यक्ति संपूर्ण सेवकाई को ही बिखेर सकता है।

कभी कभी दयालुता का वरदान प्राप्त व्यक्ति आत्माओं की परख का उतना उपयोग नहीं करते जितना उन्हे करना चाहिए। शिकारी लोगों के प्रति उनकी दया की भावना कभी कभी सामान्य बुद्धि पर भी हावी हो जाती है।

डेव और मैं इस क्षेत्र में एक दूहरे के साथ संतुलन बनाए रखते हैं। हमने पाया है कि जब हम में से एक सख्त हो जाता है तथा किसी कर्मचारी को और अधिक बर्दाश्त करना नहीं चाहते तब दूसरा तुरंत का वरदान प्राप्त करता है। कभी यह डेव होते हैं तो कभी यह मैं होती हूँ। इस प्रकार परमेश्वर हमें अच्छी तरह संतुलित बनाए रखता है।

हमें सभी वरदानों को एक साथ कार्य करने की जरुरत है। हो साकता है कि एक व्यक्ति जो भविष्यवक्ता की या प्ररितीय सेवकाई की ओर झुकाव रखता है वह किसी जरुरतमंद व्यक्ति के प्रति पर्याप्त संवेदनशील न हो और यह आवश्यक हो कि वह किसी दया का वरदान प्राप्त व्यक्ति के साथ रहेगे या कार्य कर।

मेरे पति मुझेसे अधिक धैर्यवान है। वह किसी बात के लिए हमेशा के लिए इंतजार कर सकते है और इसे दिल से लगाएंगे भी नहीं। कभी कभी वह मुझे थाम लेते और अधिक जल्दबाजी करने से रोक लेते हैं और अन्य समय पर मैं उनमे एक चिनगारी भड़काती और थोड़ा और तेज चलने में सहायता करती हूँ।

हमें एक दूसरे की जरुरत होती है एक दूसरे को हम जो संतुलन प्रदान करते हैं वह परमेश्वर के समय पर चलते रहने में सहायता करता है न कि अपने समय पर।

यह देखना आसान है कि परमेश्वर की बुद्धि के द्वारा से वरदानों का वितरण होता है। वह सब कुछ बराबर सुनिश्चित कर लेता है। कौन मुझे मेरे जीवन और सेवकाई में सहयोग करना एवं प्रोत्साहित करना न चाहेगा कि मैं बिना सहायक, प्रशासनकर्ता, संगीतकारों एवं अन्य और मदद से रहित रहूँ? हम द्वीप के समान नहीं हैं; हमें एक दूसरे की आवश्यकता है।

डेव और मैं निरंतर यह चर्चा करते रहते हैं कि किस प्रकार से इस दुनियाँ में सारे काम अद्‌भुत तरीके से किये जाते हैं। बहुत सारे लोग हैं जो ऊँची ऊँची इमारते में पाड़ बाँधकर तथा बैठकर उनकी खिड़कियों को धोना पसंद करते हैं। मैं चाहती हूँ कि मेरी सेवकाई की खिड़कियाँ भी इस प्रकार से धुल जायें, परन्तु मैं निश्चित तौर से खुश हूँ कि इस काम को कौन कर रहा है।

मेरा एक बेटा है जो दुनियाँ में कही भी जाने से नहीं डरता है क्योंकि वह मिशन के कारोबार से जुड़ा हुआ है। जितनी उसकी यात्रा बेकार होती है, उतना वह उत्तेजित होता है। मैं व्यक्तिगत रूप से झोपड़ियों में नहीं परन्तु होटलों में रहना पंसद करती हूँ। मुझे गंदगी पसँद नहीं है। मैं जानना चाहती हूँ कि क्या कुछ खा रही हूँ। मैं पसीना बहाना नहीं चाहती हूँ, और मुझे उन जग हों में परेशानी होती है जहाँ पर मैं भाषा को नहीं समझती हूँ। मैं अपने मिशन के यात्रा पर जाया करती हूँ, क्योंकि मैं दुनियाँ भर में जो जख्मी लोग हैं उस क्षेत्र में लोगों का मरहम करके मदद करना चाहती हूँ। मैं लोगों से प्यार करती हूँ और मैं लोगों को परमेश्वर के वचन की सामर्थ के द्वारा से बदलते हुए देखकर मैं आनंदित होती हूँ, परन्तु मैं एक सच्ची मिशनरी नहीं हूँ।

मुझे यह जानकर खुशी होती है कि मैं सब कुछ नहीं हूँ इससे मुझे तसल्ली मिलती है, यह कि मेरे पास वरदान नहीं है। जब हम यह जान सकते हैं कि हमारे यह वरदान हमारे लिये क्या है या क्या नहीं है तब हम बहुत आज़ाद महसुस करते हैं। मैंने अपनी कमजोरियों को दूर करना सीख लिया है। दूसरे शब्दों में, जब मैं कुछ अच्छा नहीं कर पाती हूँ और प्रसन्न नहीं रह पाती हूँ तब मैं अपने आपको चारों ओर से लोगों के द्वारा से घेर लेती हूँ। जो लोग अपने लिये सब कुछ करना चाहते हैं, और जो लोग दूसरों का प्रतिनिधित्व नहीं चाहते या उन्हें ऊपर उठाना नहीं चाहते हैं और परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होना नहीं चाहते हैं, वे लोग किसी भी प्रकार से सफलता को थामें नहीं रह सकते हैं।

कोई तुलना नहीं कोई मुकाबला नहीं

> क्योंकि हमें यह हियाव नहीं कि हम अपने आपको उनमें से ऐसे कितनों के साथ गिनें, या उनसे अपने को मिलाएँ, जो अपनी प्रशंसा करते हैं, और अपने आपको आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से मिलान करके मूर्ख ठहरते हैं। (२ कुरिन्थियों १०:१२)।

मैं विश्वास करती हूँ कि एक बहुत बड़ी भूल जो हम करते हैं कि दूसरे लोगों के साथ हम अपनी तुलना एवं उनके वरदानों के साथ हम अपने वरदानों की तुलना करते हैं।

परमेश्वर मेरी कभी मदद नहीं करेगा कि मैं किसी दूसरे के समान बनूँ परन्तु मैं ही रहूँ, ठीक वैसे ही, वह आपकी मदद कभी नहीं करेगा कि आप किसी दूसरे के समान बनें, परन्तु आप आप ही रहें। वह हमें दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा के लिये नहीं बुला रहा है, परन्तु उनसे प्रेम करें एवं उनकी सहायता करें। हम अपने वरदानों का इस्तेमाल लोगों के वरदानों की उन्नति के लिये करना चाहिये, और कभी जलन की आत्मा का शिकार नहीं होना चाहिये जो कि हमारे समाज में बहुत ही व्याप्त है।

ऐसा लगता है कि सभी एक दूसरे से आगे बढ़ना चाहते हैं। हम सोचते हैं कि प्रथम उत्तम है, परन्तु सचमुच में परमेश्वर जहाँ चाहता है वहाँ होना उत्तम है। कुछ लोगों का इरादा रहता है कि वे दूसरे स्थान पर रहें, इसलिये वे प्रथम रह नहीं सकते हैं, चूँकि वे दूसरे स्थान पर रहना चाहते हैं। वे जीवन भर उस प्रथम स्थान पर रहने वाले व्यक्ति के साथ बुरा बर्त्ताव करते हुए एवं जलन करते हुए व्यतीत कर देते हैं।

हमारे साथ कुछ लोग काम करते हैं जिनको हमने उनके विभाग से प्रथम स्तर पर पदोन्नति करने के लिये चाहा परन्तु इसके बदले में उन्होनें उल्टा जवाब दिया कि वे बेहतर सहयोग करते हैं चाहे जो कुछ भी करें। उन्हें अपनी अंतिम जिम्मेदारी को लेकर संतुष्टि नहीं होती है।

मैं बता नहीं सकती हूँ कि मैं उन लोगों को जो अपने वरदान और प्रतिभा के अवलोकन के प्रति कितने ईमानदार हैं उनका मैं बहुत आदर करती हूँ। यह बड़ा दुखदाई होता है उन लोगों को देखकर कि वे जो हैं नहीं वह बनने की कोशिश करते हैं।

बहुत वर्षों तक मैं कभी ऐसा ही किया करती थी क्योंकि मैं अपने पद और गरिमा के विचार के कारण यह भूल करती थी। मैं बहुत ही खुश हूँ कि यीशु ने

मुझे आज़ाद किया कि मेरा अस्तित्व कायम रहे। मैंने यह सीखा है कि जब हम किसी के प्रति जलन करते है तब ये जलन हमारे लिये विघ्न का कारण बनता है जिससे जो वरदान उस व्यक्ति विशेष के पास है उसका संपूर्ण आनंद हम न ले सकें। वास्तव में, परमेश्वर हमारे आनंद के लिये दूसरों के अंदर वरदान को डाल देता है, और वैसे ही वह हमारे अंदर वरदान को डालता है ताकि लोग आनंदित रह सकें। उदाहरण के लिये, यदि किसी के पास मधुर आवाज है, तो हम उसकी इस संगीत कला के लिये उसकी तारीफ करते हैं। जब ऐसे लोग गाते हैं और काम भी करते हैं, तब हम उस परमेश्वरीय प्रदत्त दान का आनंद उठाते रहते हैं।

मेरे जीवन में भी ऐसा अवसर आया कि मैं लोगों के प्रति जलन करती थी, खास तौर से जो लोग अच्छी तरह से गीत गा सकते थे उनकी तरह मैं भी गाना गा सकूँ। यद्यपि मैं प्रभु के लिये एक आनंद का ललकार कर सकती थी, हां यह सच बात है कि कोई भी म्यूजिक कन्सर्ट के लिये नहीं बुलाना चाहेगा। दूसरे शब्दों में, मैं जन समूह के आनंद के लिये नहीं गाती हूँ। नहाने के समय मेरी आवाज़ मुझे बहुत मधुर लगती है, परन्तु वह तो ऐसी ही है। एक दिन परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि मैं एक स्थान पर बैठकर अभिवादन कर रही थी तब काफी देर तक मैं किसी के समान गा सकती थी, परन्तु मैं अपने आप के लिये रूकावट का कारण बनी ताकि परमेश्वर ने जो दान उस व्यक्ति के अन्दर डाला था उसका मैं पूर्णरूपेण आनंद उठा न सकूँ। परन्तु उसके बाद से, मैंने लोगों के अन्दर जो वरदान है उसका आनंद उठाती रही हूँ। यूहन्ना ३:२७ कहता है:

> जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाय (एक व्यक्ति को जब स्वर्ग से वरदान दिया जाता है उसे प्राप्त करके उसे संतुष्ट रहना चाहिये; इसके लिये और कोई दुसरा स्त्रोत नहीं है) तब तक वह कुछ नहीं पा सकता (वह कुछ दावा नहीं कर सकता है, वह अपने आपके लिये कुछ नहीं ले सकता है)।

इससे हमें यह पता चलता है कि हमारे पास जो वरदान है उससे हमें संतुष्ट रहना चाहिये, क्योंकि स्वर्ग के अलावा इन वरदानों का और कोई स्त्रोत नहीं है। दूसरे शब्दों में, जब तक परमेश्वर स्वतंत्रतापूर्वक हमें दूसरे वरदान को देना न चाहे या पवित्र आत्मा के द्वारा से अन्य वरदान न दे, तब तक जो हमारे पास पहले से है उससे हमें संतुष्ट रहना चाहिये, क्योंकि वह सचमुच में पिता की योजना को जानता है और वह पृथ्वी पर सहायता करने के लिये भेजा गया है कि वह परमेश्वर की इच्छा को निश्चित रूप से पृथ्वी में और हम में से हर एक को पूरी करे।

कृपया इस वास्तविकता पर मनन करें कि परमेश्वर ने पवित्र आत्मा को हममें निवास करने के लिये भेजा गया है। वह वास्तव में हर व्यक्ति के अन्दर निवास करता है जिन्होंने यीशु मसीह को सचमुच में अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु ग्रहण कर लिया है। पवित्र आत्मा छुटकारे के अंतिम दिन तक के लिये भेजा गया है जिससे जब यीशु अपने लोगों को लेने के लिये आये और दावा करे। वह हम में से प्रत्येक का नेतृत्व व अगुवाई यीशु की मृत्यु के द्वारा से वीरासत की भरपूरी पाने के लिये प्रयत्न करता है। जब हम अपनी बुलाहट के विरुद्ध बलवा करते हैं या जो कुछ हम में हैं और जो कुछ हमारे पास हैं उससे असंतुष्ट रहते हैं तब हम पवित्र आत्मा के कार्य जो हमारे अंदर होते रहता है उसके विरुद्ध बलवा करते रहते हैं। उसके प्रति समर्पित हो जायें, और वरदानों को बढ़ायें जो उसने अपनी सहायता से हमारे अंदर रखा है, और परमेश्वर की महिमा के लिये जीयें, न कि अपनी महिमा के लिये।

असंतुष्ट होने का सिर्फ एक कारण है कि हमारे पास जो वरदान है उसके बारे में हम सोचते हैं कि इस संदर्भ में दूसरे लोग क्या सोचते होंगे। हम तुलना एवं प्रतिस्पर्धा करते हैं, और ऐसा करने के द्वारा से जिस आकार के लिये परमेश्वर ने हमें बनाया है उसके आनंद को हम खो देते हैं।

क्यों एक सचिव जीवन भर एक लेखापाल बनने के लिये प्रयत्न करती रहे जबकि उसके पास कोई अच्छी योग्यता नहीं है? क्यों एक प्रधान रसोइया एक खिलाड़ी बनने के लिये संघर्ष करे शायद इसलिये कि उसमें ज्यादा आकर्षण है या ज्यादा रूपये मिलेंगे? यदि वह खाना पकाने से प्रेम करता है तब उसे खाना पकाना चाहिये।

एक बार मैंने सिलाई सिखने के लिये पूरी कोशिश की। मेरी एक सहेली अपने परिवार के लिये कपड़ा तैयार किया करती थी, इसलिये मैं भी उसके समान बनना चाहती थी। मैंने एक सिलाई मशीन खरीद ली, सिलाई सीखी, और डेव के लिये कपड़ा तैयार करना शुरु कर दी। मैंने उनके लिये एक जोड़ी शॉटर्स तैयार की। जब मैं समाप्त कर चुकी, तब मैंने पाया कि उसका पाकेट पैर के छोर में लटक गया था। तब मुझे सिलाई से नफरत हो गई, परन्तु दिन प्रतिदिन मैं सिलाई मशीन पर बैठती गई ये सोचकर उस समय एक "नियमित सामान्य महिला" के समान कोशिश करती रही। परन्तु मैं यह अहसास करने में असफल हुई कि मैं परमेश्वर के लिये सामान्य हूँ। यद्यपि मेरे जीवन में और महिलाओं से एक अलग बुलाहट थी। जिसे मैं जानती थी, जो मुझे असामान्य नहीं लगता था, पर हो सकता है कि दुनियाँ के नज़रों में ऐसा हो।

हमें रोमियों १२:२ में कहा गया है कि इस संसार के सदृश न बनें, परन्तु हमारे मन के नये हो जाने से, हम परमेश्वर की इच्छा को व्यक्तिगत रुप से प्रत्येक के लिये जान सकेंगे; "और इस संसार (इस युग) के सदृश (बाहरी आधुनिक प्रणाली के अनुसार ढलने योग्य, सतह रिवाज के अनुसार) न बनों; परन्तु तुम्हारी बुद्धि (उसके नये सिद्धान्त और नये गुण के अनुसार के नये हो जाने से (संपूर्ण) तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध (उसकी दृष्टि में तुम्हारे लिये) इच्छा अनुभव से मालुम (अपने लिये) करते रहो।)" जब तक हम इस संसार के रीति-रिवाज़ों का इंकार नहीं करेंगे, तब तक हम परमेश्वर की सिद्ध इच्छा जो हम में से प्रत्येक के लिये है, उसका कभी अनुभव नहीं कर पायेंगे।

रोमियों की इस पुस्तक के इसी अध्याय में हर एक भिन्न भिन्न दान वरदान दिये जाने के बारे में वर्णन किया गया है। हम मसीह के देह के अंग हैं, और वह इसका सिर है। शारीरिक क्षेत्र में, देह के हर अंग को सिर को प्रत्युतर देना चाहिये जिससे सारा कार्य क्रमानुसार अच्छा होना चाहिये। शरीर के अलग अलग अंग मिलकर काम करते हैं; वे एक दूसरे से नहीं जलते हैं और नही प्रतिस्पर्धा करते हैं। हाथ पैर की मदद करता है ताकि जूता पहन सके। पैर शरीर को जहाँ जरूरत होती है वहाँ ले जाता है। मुँह पूरे शरीर के लिये बोलता है। शरीर में बहुत से अंग है। उनके एक जैसे काम नहीं हैं, परन्तु वे सब मिलकर एक उद्देश्य के लिये काम करते हैं। मसीह की आत्मिक देह भी इसी तरीके से काम करना चाहिये। इस कारण से पवित्र आत्मा ने भौतिक शरीर के उदाहरण को लेकर पौलुस को रोमियों की पुस्तक के लिखने के लिये प्रेरित किया। (देखें रोमियों १२:४-७)।

जो वरदान हमें नहीं मिला रहता है और हम उसके अनुसार जब काम करने का प्रयास करते रहते हैं, तब हमारे जीवन में से केवल दबाव का कारण बन जाता है। हमें पवित्र आत्मा के अनुसार कार्य करना चाहिये जिससे हम अपने लिये उसकी निराला एवं निर्धारित मंजिल को खोज सकें, तब हम सब कुछ पूर्ण कर सकेंगे।

इन दान-वरदानों के अलावा जिसका वर्णन हमने यहाँ किया है, और बहुत सारे हैं। शिल्पकार, संगीतकार और गायक हैं। बड़े व्यापारी हैं। बहुत से ऐसे हैं जो दूसरों के परोपकार के लिये उपलब्ध रहते हैं, दूसरों को हंसाते हैं, और लोगों के जीवन में आनंद लाते हैं। फिर भी दूसरे लोग बुलाये और अभिषेक किये गये हैं जिससे वे अपने बच्चों का पालन पोषण करें।

ऐसी कोई भी बात नहीं है जैसे "ऐसी ही गृहणी" या "ऐसे ही पिता या माता।" मैं लोगों से ऐसा कहते हुए बिल्कुल सुनना पंसद नहीं करती हूँ कि वे "ऐसे ही" कुछ भी कहते रहते हैं। हर बात में जो हम है सब परमेश्वर की आंखों के सामने महत्वपूर्ण है। हमारा न्याय दूसरे किसी को उनकी मंजिल तक पहुँचाने के लिये नहीं किया जायेगा, परन्तु जो दान और वरदान और प्रतिभा हमें दिया गया है उसका हिसाब लिया जायेगा कि हम दिखायें कि उनके साथ क्या किया है।

आप अपने प्रतिभा को गाड़कर न रखें क्योंकि यह दूसरे के समान नहीं है। परमेश्वर ने जिन दान वरदान को आपको दिया है उसे बुझाकर आप पवित्र आत्मा को न बुझायें।

१५
आग का बपतिस्मा

> मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव (यह कि, क्योंकि आप अपनी अच्छाई के लिये मन को परिवर्तित कर रहे हैं, हृदय से अपने मार्ग का संशोधन कर रहे हैं, अपने भूतकाल के पापों से नफरत करते हुए) का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। (मत्ती ३:११)।

विश्वासी होने के नाते से, रविवार की सुबह कलीसिया में जाने से बढ़कर लिखित रीति-विधि का पालन करने से बढ़कर, और निश्चय सिर पर जल का छिड़काव लेकर या नदी में पानी का बपतिस्मा डूबकी रीति पर लेने से बढ़कर बुलाये गये हैं। उपरोक्त ये सभी महत्वपूर्ण है और इनका इंकार नहीं किया जा सकता है, परन्तु इनका अनुसरण इस मनसा के साथ किया जाना चाहिये जिससे "आग के बपतिस्मा" का अनुभव किया जा सके।

मत्ती २०:२०-२१ में जबदी के बेटों की माँ यीशु के पास आकर कहा कि आज्ञा दें कि मेरे ये दोनों पुत्र तेरे राज्य में, एक दाहिने तरफ और दूसरा बाईं तरफ बैठें। यीशु ने उत्तर दिया कि वे लोग नहीं जान रहे थे कि क्या कुछ मांग रहे थे। तब पद २२ में उसने कहा, "जो कटोरा मैं पीने पर हूं क्या तुम पी सकते हो और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ क्या तुम ले सकते हो?"

कौन से बपतिस्मा के बारे में यीशु कह रहा था। वह तो यूहन्ना के द्वारा से पहले से यरदन नदी में पानी का बपतिस्मा ले लिया था और उसी समय उसे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी मिल गया। (देखें मरकुस १:९-१२)। और कौन सा दूसरा बपतिस्मा उपलब्ध है?

आग के बपतिस्मा के बारे में यीशु बातें कर रहा था। आग शुद्ध करनेवाला एजेन्ट है, जब यह काम करने लगता है तब यह कुछ तहस नहस कर देता है। यीशु पाप रहित था और इस कारण से उसे शुद्धता की जरूरत नहीं पड़ी, परन्तु हमें इसकी आवश्यकता है। यूहन्ना बपतिस्मादाता ने कहा कि यीशु पवित्र आत्मा और आग का बपतिस्मा देगा। (देखें मरकुस १:८; मत्ती ३:११)।

परमेश्वर की आग यीशु में जल रही थी। वह परमेश्वर की महिमा के लिये आग से जल रहा था। उसे क्रूस तक जाकर उस कर्ज को चुकाना पड़ा जिसका वह धारक नहीं था। उसे इन सब बातों को करने की आवश्यकता नहीं थी, परन्तु वह पिता की इच्छा को पूरी करने के लिये तैयार था चाहे वह कितना कठिन भी क्यों न हो (देखें मत्ती २६:३७-३९)। उसे समर्पण करने का दर्द अनुभव हुआ जैसा हम भी करते हैं।

यीशु भी महसुस करता था। हमें स्मरण करना चाहिये कि वह परमेश्वर का पुत्र एवं मनुष्य का पुत्र होकर आया (देखें मत्ती १२:८)। और, हाँ, परमेश्वर की आग उसके जीवन में जल रही थी, जैसे उन स्त्री और पुरुषों के जीवन में जलती रही जैसे हम बाइबल में देखते हैं जिन्होंने परमेश्वर के लिये बड़े अचंभे के काम किए।

यीशु ने पिता से हमारी पवित्रता और एकता के लिये विनती की ताकि इस पृथ्वी पर उसकी महिमा प्रगट हो, उसने इस प्रकार कहा-

> सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर (शुद्ध कर, निर्मल कर, आप के आपके लिये उन्हें अलग कर, उन्हें पवित्र कर); तेरा वचन सत्य है जैसे तूने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैंने भी उन्हें जगत में भेजा। और उनके लिये मैं अपेन आप को पवित्र (समर्पित,निर्मल) करता हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र (समर्पित, निर्मल और पवित्र) किए जाएँ। (मैं केवल उनके कारण से यह निवेदन नहीं करता), परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा से मुझ पर विश्वास (भरोसा, लिपटे, आश्रित) करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा। और वह महिमा जो तूने मुझे दी, मैंने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं। मैं उनमें और तू मुझमें कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत (निश्चय) जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तूने मुझसे प्रेम रखा, वैसा ही उनसे प्रेम रखा। (यूहन्ना १७:१७-२३)।

मैं आपको स्मरण दिला दूँ कि जिस प्रकार से दानिय्येल ३:२०-२७ में शद्रक, मेशक और अबेदनगो को आग में से गुजरना पड़ा, उसी प्रकार से हमें भी उसमें से होकर जाना है। इन तीनों इब्री पुरुषों के समान जब हम भी निकल आयेंगे, तो हमें भी धुँए की गंध भी नही आयेगी।

परमेश्वर इस्त्राएलियों की अगुवाई जंगल में दिन में महिमा के बादल के छाया और रात में अग्नि के ज्वाला के रूप में करता गया। जैसे ही मैं निर्गमन १३ के इस वृतान्त पर मनन कर रही थी, तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "लोगों से कह कि यदि ये लोग आग के पीछे नहीं चलेंगे तो उनकी अगुवाई महिमा में कभी भी नहीं हो सकती है।"

हर व्यक्ति परमेश्वर की महिमा का आनंद उठाना चाहता है, परन्तु बहुत ही कम हैं जो उसकी आग के अनुसार करने के लिये इच्छुक रहते हैं। यदि आप दिन की ज्योति में महिमा की अगुवाई में चलना चाहते हैं जिससे आपको सभी देख सकें, तब तो परमेश्वर की आग आपके जीवन के अंधेरों को दूर भगायेगी। परमेश्वर की महिमा और आग का स्वागत करना सीख जाये। यह अत्यन्त आवश्यक है कि आपको परमेश्वर के साथ की घनिष्ठता को उच्चतम स्तर में लाये।

परमेश्वर की आग आपके जीवन के कचरों को यूँ ही जला देगी। इस प्रकार के शुद्धीकरण का कार्य सिर्फ एक बार का अनुभव नहीं होता है। यह उस आंधी के समान नहीं है जो आपके जीवन में कोई बड़ा काम कर दे और ऊँचे पर ले जाये जिससे कभी फिर से आपको कुछ करना न पड़े। जी हाँ, परमेश्वर की शुद्ध करने वाली आग आपके कार की बारबार मरम्मत करने से बढ़कर है, जिसे एक नियमित चाल एवं सुधार के लिये डीलर के पास जाने की जरूरत होती है।

सप्ताह में आप कितनी ही बार उदाहरण के लिये, अपनी चाल चलन को ठीक करते हैं? यदि परमेश्वर की महिमा आपके जीवन से चमकती है, तो शैतान हर कोशिश करेगा कि वह आपको हर प्राप्त अवसर पर निराश करे। किसी सप्ताह हर समय जो बाते आपको निराश या परेशान करती हैं उन बातों का मिलान करें, तब आप महीना में देख सकेंगे कि कितने बार अपने मुँह या विचारों के बारे में आपको सहायता की जरूरत पड़ेगी।

कभी कभी परमेश्वर अपने वचन को आपकी परिस्थिति के अनुसार शुद्ध करने वाली आग के समान इस्तेमाल करता है। जितना अधिक आप उसके वचन को सीखेंगे, तो उतना अधिक परमेश्वर आपको आसानी से स्मरण

दिलाएगा कि आप वचन के अनुसार कायल हो जाये ताकि जो बातें आपके जीवन में मसीह के अनुरूप नहीं है उसके लिये आप पश्चताप करें।

आखिरकार, जब आप उसके शुद्ध करने के फल को देख सकते हैं, तब आप वास्तव में उसके कायल करने की शक्ति का स्वागत करते हुए कह सकेंगे कि, "हाँ प्रभु, तू सही है। मैं कायल हो गया हूँ, और क्षमा मांगता हूँ। इस बंधन से छुटकारे के मार्ग को दिखाने के लिये धन्यवाद। मैं जिस मार्ग में था उस में और आगे बना नहीं रहना चाहता हूँ।"

यह अहसास कराते ही परिवर्तन होना आसान नहीं है। मैं परमेश्वर के वचन को छब्बीस वर्ष से अध्ययन करती रही हूँ, और तब भी मैं बहुत सारे काम को करती हूं। परिवर्तन आसान नहीं है, फिर भी मैं जहाँ तक नहीं पहुँची हूँ जहाँ मुझे पहुँचना चाहिये, परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि मैं जहाँ रहा करती थी अब वहाँ नहीं रहा करती हूँ

यदि हम कठारे (पश्चाताम करने के लिये अनिइच्छुक) रहते हैं जब प्रभु हमारे किसी व्यवहार की नवीनता के लिये प्रगट करता है - तब प्रेम कठोर हो जाता है। जिस प्रकार से हमने देखा है कि परमेश्वर प्रेम है,और वह एक ज्वलनशील परमेश्वर है। वह यह नहीं चाहता है कि जो उसका स्थान है उसे और कोई दूसरी बात न ले ले। और प्रेम, स्वयं परमेश्वर ही इतना जलनशील और सख्त हो जायेगा और तब तक लिपटा रहेगा जब तक उसका रास्ता न निकल जाये। प्रेम हमें उन बातों को दिखायेगा जिन बातों को हम देखना नहीं चाहते हैं ताकि हमारी मदद हो जाये। जिससे हम और कुछ बन जायें।

परमेश्वर आपको चाहता है। वह न केवल आपसे मुलाकात करना चाहता है बल्कि आपके हृदय की पूरी देखभाल करना चाहता है। लोग अक्सर शिकायत करते रहते हैं कि वे यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं परन्तु कुछ नहीं होता है - परन्तु समय के बारे में यदि सोचा जाय कि वे उसके साथ कितना व्यतीत करते हैं, तो यह निश्चित पता चलता है कि वे सिर्फ उससे नियुक्ति लेते रहते हैं। मुझे मेरे पति का नाम तब तक नहीं मिला जब तक मेरा उनसे विवाह नहीं हुआ। यीशु चाहता है कि कलीसिया के साथ उसका वैवाहिक रिश्ता हो जिससे हम जरूरत के अनुसार उसके नाम का इस्तेमाल जहां कहीं भी कर सकें, और उसकी सामर्थ को शक्तिशाली तरीके से कार्य करते हुए देख सकें।

परमेश्वर के साथ की घनिष्ठता हमें हर जरूरतों को प्रदान करता है, साथ ही साथ बुराई के ऊपर जय पाने के लिये सामर्थ मिलती है। भजन संहिता ९१:१-२, ९-११:

जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा (जिसकी सामर्थ के सामने कोई शत्रु खड़ा नहीं रह सकता)। मैं यहोवा के विषय कहूँगा, कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है,मैं उस पर भरोसा (दृढ़तापूर्वक) रखूंगा।... तू ने परम प्रधान को अपना धाम मान लिया है, इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दु:ख तेरे डेरे के निकट आएगा। क्योंकि वह अपने दूतों (विशेष करके) को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहाँ कहीं तू जाए वे तेरी (आज्ञाकारिता और सेवा की) रक्षा करें।

कुछ लोग जंगली घोड़ो के समान होते हैं जो बधिया न गया हो तथा जो अपने घुड़सवार के लिये काठी बांधने के लिये तैयार न होता हो; उन्होंने ये कभी नहीं सीखा कि जब वे परमेश्वर के प्रति पूरी रीति से समर्पित हो जायेंगे तो उनके जीवन में एक नया काम शांतिपूर्ण तरीके से होता चला जायेगा। वे लोग उन घोड़े के छोटे बछड़े के समान है जो खोले न गये हो तथा जो अपने मुँह में लगाने के अनुभव को न जानते हो परन्तु उनको परमेश्वर एक सुरक्षित प्रबंध के स्थान में अगुवाई करके इस्तेमाल कर सकता है।

कुछ लोग अपने जीवन के बागडोर को परमेश्वर के हाथ में देना नहीं चाहते हैं क्योंकि वे अपनी मंजिल को खुद नियंत्रित करके चलना चाहते हैं। परन्तु वे कभी भी अपने आप में सुरक्षित लंबे समय तक सुरक्षित महसुस नहीं कर सकते हैं, या जब तक वे अपने आपको पवित्र आत्मा के हवाले नहीं कर देते तब तक उस शांति को प्राप्त नहीं कर सकते हैं जो मनुष्य के समझ से परे है। यदि आप उस शक्ति और सुरक्षा को प्राप्त करना चाहते हैं, तो इस प्रकार से प्रार्थना करें:

हे परमेश्वर, मैं अपने जीवन की समस्या का समाधान नहीं कर सकता हूँ; मैं अपनी परिस्थितियों को बदल नहीं सकता हूँ। तू जैसा चाहता है वैसा ही मेरे साथ कर और मेरी परिस्थितियों के अनुसार भी वैसा ही कर। मैं तेरा हूँ, और मैं अपने आपको तेरे ही हवाले करता हूँ। मैं तेरी महिमा की अगुवाई में चलना चाहता हूँ, और तेरी आग का अनुसार करना चाहता हूँ।

आग सब गंदगी को अपना कौर बना लेती है और बाकी जो रह जाती है वह परमेश्वर की महिमा की आग के लिये रह जाती है। इन वर्षों में पुरानी जॉयस मेयर का बहुत कुछ आग के बपतिस्मा में जलाया जा चुका है। यह निश्चित तौर से आसान नहीं था, परन्तु निश्चित तौर से इसका मूल्य बड़ा है।

भस्म करने वाली आग

क्योंकि हमारा परमेश्वर (नि:संदेह) भस्म करने वाली आग है। (इब्रानियों १२:२९)।

जिन बातों से हमारे परमेश्वर को महिमा नहीं मिलती है उनको वह हमारे जीवन में से भस्म कर डालता है। उसने अपनी पवित्र आत्मा को विश्वासियों के अन्दर निवास करने के लिये भेजा है, ताकि हमारे साथ घनिष्ठ संगति करे, और हर एक गलत सोच विचार, वचन और कर्म के विषय में कायल करे। हम सभी को "शुद्ध करने वाली आग से" गुजरना चाहिये। (मलाकी ३:२)।

इसका मतलब क्या है? इसका मतलब यह है कि परमेश्वर हमारे साथ व्यवहार करेगा। वह हमारे स्वभाव, इच्छा, तरीको को, विचारों को, एवं वार्तालाप को बदल देगा। जो लोग आग से दूर भागने के बजाय उससे गुजरते हैं आखिरकार वे परमेश्वर की बड़ी महिमा करने वाले होते हैं।

आग से गुजरना यह डरावना होता है। यह हमें पीड़ा और मृत्यु की याद दिलाता है। रोमियों ८:१७ में पौलुस ने कहा कि यदि हम मसीह के संगी वारिस होना चाहते हैं तो हमें उसके साथ दु:ख भी उठाना चाहिये। किस प्रकार से यीशु दु:ख उठाया? क्या हमें भी क्रूस तक जाने की आवश्यकता है? इसका उत्तर हाँ और नहीं दोनों है। हमें अक्षरक्ष: क्रूस तक जाकर अपने पापों के लिये कीले ठुकवाने की जरूरत नहीं है, परन्तु मरकुस ८:३४ में यीशु ने कहा कि हमें अपना अपना क्रूस उठाकर उसके पीछे चलने की आवश्यकता है। उसने ऐसा इसलिये कहा कि हम अपने स्वार्थी एवं अहंकारमय जीवन शैली को त्यागकर जीयें। मेरा विश्वास कीजिये, कि अपने स्वार्थ से छुटकारा पाना कुछ आग को ले जाता है-वरन सामान्य तौर से बहुत कुछ।

हम "आत्मा में चलने के लिये" बुलाये गये हैं, "आत्मा में परमेश्वर के अनुसार जरीयें", (देखें गलतियों ५:२५ १ पतरस ४:६; रोमियों ८:९)। ऐसा करने के लिये निर्णय करना यह शुरूआती बिन्दु है, पर मैं परमेश्वर के वचन और अनुभव के अनुसार कह सकती हूँ कि यह निर्णय करने से भी बढ़कर है, परन्तु यह हमारे जीवन में पवित्र आत्मा के गहरे कार्य को दिखाता है। वह हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा से "सुधारता" जो कि हमारे आत्मा और प्राण को आर पार करता है (देखें इब्रानियों ४:१२)। वह हमारे लिये परिस्थितियों को ऐसा निर्मित करता है ताकि हम प्रशिक्षित हो जायें एवं प्रेम में चलने के लिये हमेशा स्थिर हो जायें।

इन बातों को करने के लिये हमें ऐसे ही नहीं बुलाया गया है, परन्तु इनका लागूकरण हमें करने की आवश्यकता है। जैसे सने हुए आटे में खमीर काम करता है, उसे अंजाम देने के लिये छिड़का नहीं जाता है, वैसे ही मसीह भी हमारे अंदर कार्य करना चाहिये।

फिलिप्पियों २:१२ में प्रेरित पौलुस हमें यह शिक्षा दी है कि अपने अपने उद्धार के कार्य को डरते और थरथराते हुए पूरा करो। इसका मतलब यह है कि हमें पवित्र आत्मा के साथ सहभागिता रखना है जैसे कि वह न केवल हमारी आत्मा में रहता है बल्कि हमारे प्राण में रहता है। वह हमें क्रूसित होने के अनुभव को आरंभ करता है या "अपने आप के लिये मरन जाना" इस काम को आरंभ करता है। पौलुस ने कहा, "मैं प्रतिदिन मरता हूँ।" (१ कुरिन्थियों १५:३१)। दूसरे शब्दों में वह यह कह रहा था कि वह हमेशा "अपने शरीर को मारता कूटता था।" वह अपनी शारीरिक मृत्यु के बारे में नहीं कह रहा था, बल्कि अपनी इच्छा और तौर तरीको को मारने के विषय में कह रहा था।

आत्मा प्राण और देह

> शांति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र (अपवित्र बातों से अलग रखे, परमेश्वर के लिये पूरी रीति से शुद्ध करके पवित्र बनाये); और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष (पाये जायें) सुरक्षित रहें। (१ थिस्सलुनीकियों ५:२३)।

हम आत्मा, प्राण और देह हैं (१ थिस्सलुनीकियों ५:२३)। हमारी देह सामान्य तौर से हमारे प्राण और आत्मा के लिये वाहन है - जो कि सदा अमर हैं। जब हम मरते हैं, तब हमारी पार्थिव देह राख और धूल बन जाती है, परन्तु हमारा प्राण और आत्मा अमर रहते हैं।

याद रखें, कि जब हम अपने हृदय में यीशु को आमंत्रित करते हैं, तब पवित्र आत्मा हमारी आत्मा को अपना घर, अपना निवास स्थान बना लेता है। हमारे हृदय की उस स्थिति में, जो मनुष्यत्व का केन्द्रबिन्दु है, पवित्र आत्मा हमारे प्राण (हमारे मन में, इच्छा और भावना) में शुद्धता का कार्य आरंभ कर देता है। हमारा मन हमसे कहता है कि हम क्या सोचते हैं, न कि परमेश्वर क्या सोचता है। पवित्र आत्मा इसको बदलने के लिये कार्य करता है। १ कुरिन्थियों २:१६ के अनुसार, हम में मसीह का मन है। रोमियों ८ हमें दो प्रकार के मन के बारे में सिखाती है - शरीर का मन और आत्मा का मन। हमें

पवित्र आत्मा के द्वारा से यह सिखने की आवश्यकता है कि परमेश्वर के साथ सहमति में कैसे विचार करना चाहिये कि परमेश्वर के लिये कैसे पात्र होना चाहिये यह विचार करना चाहिये। हमारे अंदर से पुराने विचार शुद्ध किया जाना चाहिये।

हमारी भावनाएँ हमसे कहती हैं कि हम कैसे महसुस करते हैं, न कि परमेश्वर क्या महसुह करता है हमारी परिस्थितियों, लोगों और जो निर्णय हम करते हैं उसके बारे में महसुस करता है। भजन संहिता ७:९ के अनुसार, परमेश्वर हमारी भावनाओं को परखता और जाँचता है। और जब तक हम मानवीय भावनाओं के द्वारा से केवल हटाये नहीं जाते, तब तक उसका आत्मा हमोर साथ बल्कि वह हमारे द्वारा से काम करता है।

भावनाओं के क्षेत्र में जीना हमारे लिये एक बहुत बड़ी समस्या है। भावनाएं विश्वासीयो की सबसे बड़ी बैरी नामांकित की गई है। किन्हीं दूसरी बातों से बढ़कर शैतान ने इसे इस्तेमाल किया है ताकि हम परमेश्वर की इच्छा से परे हो जायें। भावनाएँ नज़रअंदाज या इंकार करने के लिये शक्तिशाली और कठिन होती है। वे अस्थिर, हमेशा से बदलती रहती है, और इस कारण से अनुसरण करने के लिये खतरनाक होती हैं। परमेश्वर परिस्थितियों के बारे में महसुस करता है, क्योंकि ये पवित्र भावनाएँ है, शारीरिक नहीं। हमें परमेश्वर के हृदय के विषय में महसुस करना चाहिये ताकि जब वह हमारी हर परिस्थिति में अगुवाई करे उसका हम अनुसरण कर सकें।

हमारी इच्छा हमसें कहती है कि हमें क्या चाहिये, न कि परमेश्वर को कुछ चाहिये। हमारे पास स्वतंत्र इच्छा है, और परमेश्वर हमको जबरदस्ती कुछ करने के लिये मजबूर नहीं करता है। वह अपनी आत्मा के द्वारा से जो हमारे भलाई के लिये हैं उसमें अगुवाई करता है, परन्तु इसके विषय में अंतिम फैसला करना हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम करें या न करें। परमेश्वर चाहता है कि हम में से प्रत्येक नियमित रूप से उसकी इच्छा की सहमति के साथ फैसला करे।

हमें हमारी स्वतंत्र इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के लिये इस्तेमाल करना चाहिये। इच्छा भावनाओं और सकारत्मक विचारों की अवहेलना करती है। इसका एक अंतिम मत रहता है जो प्रत्येक फैसले पर जो हम सामना करते हैं। हमारी इच्छा की प्रतिक्रिया के द्वारा से, आप और मैं उचित कार्य को करने के लिये चयन कर सकते हैं यद्यपि हम ये करने के लिये न भी चाहते हों।

एक बार जब हम इन तीनों क्षेत्रों में - मन, इच्छा और भावनाओं में - यीशु मसीह की प्रभुता को लाते हैं, तब हम परिपक्व, या आत्मिक समझे जाते हैं जिस प्रकार से पौलुस ने कहा है (देखें १ कुरिन्थियों २:१५)।

१ कुरिन्थियों ३:३ में पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखा, जो कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त कर चुके थे और जिनमें वरदान काम कर रहे थे उन्हें उसने "शारीरिक" कहा क्योंकि वे लोग शरीर में जीवन व्यतीत कर रहे थे; जैसे हम एम्पलीफाईड बाइबल वर्सन में इस पद को पढ़ते हैं कि वे लोग "सामान्य आवेश में" शरीर का अनुसरण कर रहे थे; क्योंकि अब तक (अनात्मिक,स्वभाव को रखते हुए) शारीरिक हो (सामान्य आवेश के कब्जे में), इसलिये (वहां), कि जब तुम में डाह और झगड़ा है, तो तुम शारीरिक नहीं? और मनुष्य की रीति पर (बदले नहीं) नहीं चलते?

अनात्मिक तरीकों को परिहार करने सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम पवित्र आत्मा की अगुवाई करने के लिये अनुमति दें।

पवित्र आत्मा के चलाये चलना

> पर मैं कहता हूं, (पवित्र) आत्मा के अनुसार (आदतन) चलो (आत्मा के प्रति प्रत्युरित और नियंत्रित और उसकी अगुवाई में), तो तुम शरीर (मनुष्य का स्वभाव परमेश्वर रहित) की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। (देखें गलतियों ५:१६)।

पौलुस ने कभी यह नहीं कहा कि परमेश्वर की सन्तान के शरीर की इच्छा या अभिलाषा मर जायेगी या नहीं उठेगी। उसने कहा कि हम आत्मा में चलने के लिये चुनें, और ऐसा चुनाव करने से, हम कभी भी शरीर की अभिलाषा जो हमारी निरंतर परीक्षा करती रहती है उसे पूरा नहीं करेंगे।

हमारी अगुवाई करने के लिये बहुत सारे माध्यम है जैसे लोग, शैतान और उसके दुष्ट दूत, शरीर (हमारे खुद का शरीर, मन, इच्छा या भावनाएं) या पवित्र आत्मा। इस दुनियाँ में बहुत सारी आवाज़ है जो हमसे बोलती हैं, और वह भी अक्सर एक साथ। यह सिखना हमारे लिये अति आवश्यक है कि किस प्रकार से पवित्र आत्मा की अगुवाई में हमें चलना है। याद रखें: वह केवल परमेश्वर की इच्छा को जानता है जो कि हम में से प्रत्येक के अन्दर निवास करने के लिये भेजा गया है ताकि वह हमारी सहायता कर सके कि परमेश्वर ने

जिस तरीके से हमें बनाया हम वैसे ही हों और सब कुछ जो परमेश्वर चाहता है वह सब हमारे पास हो।

पवित्र आत्मा हम में से प्रत्येक से इसलिये रहता है ताकि वह हमारी सहायता करे।

उसकी सहायता सिर्फ स्वागत करने से पहले नहीं आती है, परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह धीरजवन्त है और हमारे लिये सदैव कार्यशील रहता है। हम प्रतिदिन अपने संपूर्ण जीवन को उठाकर अपनी पूरी शक्ति के साथ कहना चाहिये, "पवित्र आत्मा, मेरे जीवन के हर क्षेत्र में तेरा स्वागत है।"

जैसे ही मैं अपने जीवन के अतीत के वर्षों की ओर मुड़कर देखती हूँ तब मैं यह पाती हूँ कि परमेश्वर के साथ का सफर कितना हसीन था। उसने निश्चित तौर से मुझे बदला है और अब भी प्रतिदिन बदल रहा है। जब मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला उस समय में मेरे जीवन में और परिस्थितियों के साथ बहुत सारी समस्यायें थीं। जो कुछ मेरे जीवन में घटने पर होता था उसके बारे में थोड़ा ही महसुस कर पाती थी। मैं परमेश्वर से बदलने को कह रही थी, परन्तु मैं पूर्ण रूप से अनभिज्ञ थी कि किस बात में बदलाहट की मेरे जीवन में आवश्यकता थी और वह यह थी कि मैं स्वयं बदलूँ।

परमेश्वर ने अपनी प्रक्रिया मुझमें जारी रखी - और वह भी धीरे से, दृढ़तापूर्वक और हमेशा से मन्द गति से किया ताकि मैं सह सकूँ। एक शुद्ध करने वाले के रूप में, वह आग के ऊपर बैठना जो हमारे जीवन में जलता है यह निश्चित करने के लिये कि यह कभी भी अधिक गरम न हो जाये और जिससे यह मर न जायें। केवल वह हमें देख सकता है और वह अपना प्रतिबिंब वह आग में देखता है ताकि उसे बुझा भी सकेऔर उसके बाद भी हमें समय असमय कुछ बदलाहट और तालमेल की जरूरत पड़ जाती है।

जब परमेश्वर मुझे से धीरज के विषय में व्यवहार कर रहा था, मेरे पास कई परिस्थितिया थी जिसमें मैं या तो धीरजवंत होती या बहुत बुरा बर्ताव कर सकती थी। अक्सर मैं बुरा बर्ताव करती रही, परन्तु पवित्र आत्मा मुझे कायल करती रही, सिखाती रही, और परमेश्वर की महिमा के लिये जीने के लिये इच्छा प्रदान करती रही। धीरे से, थोड़ा थोड़ा करके, मैं एक क्षेत्र से फिर दूसरे क्षेत्र में बदलती गयी। मैं सामान्य तौर से बीच के द्वंद में थोड़ा उलझ गई और अक्सर सोचने लगी कि शायद मैं आखिर स्नातक हो गई रहती, तो केवल खोज करने के लिये मुझे और कुछ सीखने की जरूरत होती।

क्या यह बातें आपको शोभनीय लगती हैं? मैं निश्चित हूँ कि यह सही है, क्योंकि हम सभी को इन्हीं दौर से गुज़रना होता है जब हम सचमुच में एक स्थान से दूसरे स्थान में पवित्र आत्मा के बजाय, संसार, शरीर और शैतान के द्वारा से चलने लग जाते हैं तब ऐसा ही होता है।

पवित्र आत्मा के द्वारा चलाये जाने का अर्थ है कि हम जो निर्णय करते हैं उसमें वह शामिल होता है, चाहे वह छोटा हो या बड़ा हो। वह हमारी अगुवाई शांति और बुद्धि के द्वारा से, और वचन के द्वारा से करता है। वह हमारे हृदय में शांत, धीमे शब्द में बोलता है, जिसे हम अक्सर "अंदर की गवाही" बोलते हैं। जो लोग पवित्र आत्मा के चलाये चलने की इच्छा करते हैं उन्हें अन्दर की गवाही का अनुसरण करने एवं उसका तत्काल प्रत्युत्तर देने के लिये सीखना चाहिये।

उदाहरण के लिये, यदि हम किसी वार्तालाप में व्यस्त हैं, और यदि हमें अन्दर से आरामदायक महसुस न हो, तब तो हमें यह समझ लेना चाहिए कि यह पवित्र आत्मा का संकेत होगा इसलिये हमें वार्तालाप को दूसरी दिशा में बदल देना चाहिये या शांत हो जाना चाहिये। यदि हम कुछ खरीदना चाहते हैं, और यदि हमें अन्दर से आरामदायक महसुस नहीं लगता है। शायद हमें कोई चीज़ की आवश्यकता न हो या हो सकता हो कि कहीं पर बिक्री के लिये लगी हो या हो सकता हैं कि यह खरीदने का समय न हो। याद रखें कि, हमें हमेशा क्यों का कारण जानना नहीं चाहिये; परन्तु हमें आज्ञा पालन करने की आवश्यकता है।

एक बार मुझे याद है कि जब मैं जूते की दुकान पर गई हुई थी। मैंने कई जोड़े जूतों को परखा और तुरन्त मुझे असुविधा मालुम पड़ी। मेरी यह असुविधा और बढ़ गयी और आखिर में प्रभु की आवाज को मैंने सुना कि, "इस दुकान से बाहर निकल जाओ।" और मैंने डेव से बाहर चलने के लिये कहा, और हम बाहर निकल गये। मैं यह नहीं जानती कि क्यों और मुझे जानने की आवश्यकता भी नहीं पड़ी। हो सकता है परमेश्वर मुझे मेरी आनेवाली हानि से बचा रहा हो, या दुकान में रहने वाले लोगों के जानबुझकर कुछ गलत व्यवहार से बचाये। हो सकता है कि यह मेरी आज्ञाकारिता की परख हो। जैसे मैंने कहा कि, हमें हमेशा यह जानने की आवश्यकता नहीं कि परमेश्वर हमें क्यों ऐसी परिस्थितियों में अगुवाई करता है। हमारा भाग है कि हम उसकी मानें, जो कि उसका आदर का कारण है। जब हम उसका आदर करते हैं, तब वह हमारा भी आदर करता है। (देखें १ शमूएल २:३०)।

जहाँ मैं जाने के लिये इच्छा भी नहीं करती थी, परन्तु परमेश्वर मुझे तब कुछ "सामान" को लेने के लिये एवं कुछ शिक्षाप्रद पाठ को सिखाने के लिये लेता रहा। सबसे पहले मैंने यह सीखा कि उत्तम चीज़ों को प्राप्त करने में कोई कसूर नहीं क्योंकि हम उन चीज़ों के पीछे भागते नहीं रहते हैं।

> यह सच है कि, यदि हम परमेश्वर के पीछे चलते हैं, तब आशीष और धन हमारे पीछे पीछे चली आती हैं। याद रखें कि यीशु ने कहा कि यदि हम उसके राज्य की खोज करें जो उसके पवित्र आत्मा में उसकी धार्मिकता, शांति और आनंद है, तब ये सब वस्तुएं जो हमें आवश्यकता है (जैसे रोटी, कपड़ा) यह सब हमें मिल जाएंगी। (देखें मत्ती ६:३२-३३)।

परन्तु मैंने यह भी सीखा है कि हमें आवश्यकता है कि हम जो भी करते हैं उसमें एक समतुल्य परिपक्व संवेदनशीलता का विकास करना चाहिये। कुछ लोग दूसरों के लिये अत्यधिक कार्य करते हैं, परन्तु अपने लिये कुछ भी नहीं करते हैं। अतिरिक्त तौर से अपने आपको अपमानित करने का मतलब है कि अपने आप में अधिक रूचि लेकर अपने आपको असंतुलित करने के समान है। १ पतरस ५:८ कहती है, "सचेत हो (आत्मसंचयी, मन में शांत), और आगते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले (भूख में, क्रोध से), सिंह की नाईं इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए।"

संतुलित होने का मतलब है कि हम अपने आप से अत्यधिक प्रेम नहीं करते हैं और अपने लिये सब कुछ नहीं करते हैं जो हम करना चाहते हैं, परन्तु इसका यह भी मतलब नहीं कि हम अपने लिये कुछ भी अच्छा करने के लिये इंकार करे और अपनी सीमा पार करें। उदाहरण के लिये, जब मैं दुकानदारी करने के लिये जाती हूँ तब भी मैं परमेश्वर की इच्छा जानना चाहती हूँ।

मैं एक छल्ला देखी थी जिसे मैं सचमुच में पसंद कर ली थी और जिसके लिये मैं कुछ रूपये भी बचा रखी थी। इस कारण में दुकान पहुँची और इसके विषय में थोड़ी देर प्रार्थना भी की। इसकी कीमत भी अच्छी थी और मैं यह जानती थी कि इसका मैं कुछ आनंद उठा सकूँगी। लगभग आधे घंटे तक मैं अपनी धड़कन को देखती रही और बाद में मैंने कहा, "हे परमेश्वर, क्या यह उचित है कि मैं इस छल्ले को खरीद लूँ? मैं जानती हूँ कि जो तू चाहेगा उन्हीं रूपयों से मैं वहीं करूँगी, परन्तु मैं यह तभी लूँगी जब यह उचित होगा।"

मुझे किसी भी प्रकार की पायलता महसूस नहीं हुई, उसे खरीदने के समय पर इसलिए मैं उसे खरीद ली।

इस बात का यह अन्त हो सकता था, परन्तु इसके बावजूद भी कुछ और अधिक था - और वह यह था कि यहाँ एक कंगन भी था। फिर विक्रेता ने उसकाया, “यह सामग्री बस कल तक के लिये बिक्री पर है और आपको यह खरीद ही लेना चाहिये। यह आपके ऊपर खूब जंच रहा है।”

जब आप सचमुच में कुछ पसंद करते हैं, तब तो यह सब संतुलन को भूलने के लिये मजबूर कर देता है। मैं हिचकिचा रही थी,परन्तु डेव को पाकर मैंने कहा, “आइये, मैं चाहती हूँ कि आप इस कंगन को देखें।” मैं सोच रही थी, हो सकता है कि परमेश्वर उनसे बातचीत करेगा कि वे इसे मेरे लिये खरीदें।

सो वे इसे देखकर कहने लगे, “ठीक है, यदि तुम चाहती हो तो इसे खरीद सकती हो, यह अच्छा है।”

मैं अपने दिल में यह जान रही थी कि मुझे यह कंगन नहीं खरीदना चाहिये, परन्तु इसलिये नहीं कि ऐसा करने से यह कोई पाप हो जाता। इसे खरीदने से कोई गलती नहीं हो रही थी, परन्तु उस समय जो सबसे बड़े कायदे की बात यह थी कि मुझे उस चरित्र का निर्माण करना था कि मुझे जो चीज़ जिसे मैं सचमुच में पसंद करती थी परन्तु जिसकी मुझे जरूरत नहीं थी उससे मुझे भागना था।

मैंने यह महसुस किया कि शायद बाद में परमेश्वर व इसको लेने के लिये रास्ता खोलेगा, जिसे मैं चाह रही थी। लेकिन, पीछे मुड़कर देखने पर, मैंने यह पाया कि इसकी अत्यधिक रूचि बढ़ने के बदले में मेरे अंदर बहुतायत का आत्म नियंत्रण आ गया और मैं संतुष्ट होती चली गयी।

उस दिन डेव ने सेल्समैन कार्ड को उठाकर उसे फोन करने की कोशिश की कि कंगन का दाम और कम हुआ या नहीं, परन्तु मुझमें इसके विषय में कभी शांति नहीं थी, और किसी खरीददारी से बढ़कर शांति बहुत बेशकीमती है। सो आखिरकार मैंने डेव से कह दिया कि हमें वापस जाकर कंगन खरीदने की आवश्यकता नहीं है।

उनके आश्चर्य का अंदाजा आप लगा सकते है। उन्होंने कहा, “क्या तुम्हें यह नहीं चाहिये।”

मैंने कहा, “हाँ मुझे चाहिये, परन्तु इस समय जो सबसे बड़ी बात है कि मैं अपने आप को रोकूं। और इस समय में कंगन मेरी आवश्यकता नहीं है।”

निम्नलिखित पाक्त्याँ यह बताती है कि है कि यदि हम सचमुच में खुश रहना चाहते हैं, तो हमें परमेश्वर की सुनने की आवश्यकता है। वह हमें बता

देगा कि क्या उचित है या नहीं है। परमेश्वर का वचन हमारी अगुवाई मूल्यवान तरीके से करता है कि कैसे बहुतायत जीवन का आनंद उठाये; "पर जो भोगविलास (अपने आपको सुखविलास में देती और उसमें अधिक रूचि रखती) वह जीते जी (तब भी) मर गई है।" १ तीमुथियुस ५:६)। हो सकता है कि हम अपने शरीर में संसार का सारा सामान लटका सकते हैं परन्तु अंदर से मरे हुए हो सकते हैं।

उन सस्ते आभूषण और चुड़ियों से सजकर रहने के बजाय मैं जीवन से भरपूर रहना चाहूँगी। मैं विश्वास करती हूँ कि यदि मैं उन रूपयों को कंगन खरीदने में खर्च कर देती तो, मैं अपनी शांति को खो देती और कभी भी इससे खुश रह नहीं पाती। मेरे पास एक चमकदार कंगन हो सकता था, परन्तु इसकी चमक तुरन्त मेरी खुशी को दबा देती थी।

जब हम अपने आपको किसी वस्तु को जिसे हम चाहते हैं न खरीदने के विषय में अनुशासित करते हैं, तब हम यह महसुस करते हैं कि परमेश्वर हमें ऊंचा उठाना चाहता है यह न खरीद कर, यह बीज बोने के समान है।जब हम बोते हैं; तब हम अक्सर काटते भी हैं। शायद मुझे उस समय कई ऐसे कंगन उपहार में मिल गये, यह बिना एहसास किये कि यह मेरी आज्ञाकारिता की कटनी थी जिसे मैंने बहुत समय पहले बोया था।

जब हम यह महसुस करते हैं कि परमेश्वर हमें रूपयों को अपने आप में खर्च करने के लिये अनुमति नहीं दे रहा है - और यह अक्सर इसलिये होता है कि वह यह चाहता है कि हम उन रूपयों को किसी दूसरे के जीवन के लिये बो दें। और यह मुझे भी अच्छा लगता है। रूपयों से भौतिक वस्तुएँ खरीदी जा सकती है, उससे बढ़कर मुझे शांति और आनंद चाहिये। परमेश्वर जिस तरीके से हमें देता है उसे हम कभी भी ज्यादा कुछ नहीं दे सकते हैं। वह हमसे कभी भी कोई भी वस्तु छीनना नहीं चाहता है। वह हमें हमेशा उस ओहदे में पहुंचाना चाहता है जहाँ पर वह हमें बहुतायत से सब कुछ दे सके। जो लोग अब तक शारीरिक या अनात्मिक है, उनके लिये यह बन्धन के समान लग सकता है। वे लोग यह महसुस कर सकते हैं कि वे विशेष हैं और कुछ भी कर सकते हैं। परन्तु, कैसे भी जो लोग पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलने के लिये चुनाव कर चुके हैं, उनके लिये यह क्रूसित जीवन आनंद का कारण है। वास्तव में तब आनंदित हो सकते हैं जब हमारा शरीर यातनाओं और इंकार को महसुस करता है क्योंकि हम जानते हैं कि हमारे लिये एक ऊंचा और एक पवित्रस्थान तैयार किया जा रहा है।

अपने आपको प्रसन्न से बजाय परमेश्वर को हमेशा प्रसन्न करना उत्तम है; रोमियों ८:१३ कहती है क्यों; "क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार (निर्देशानुसार) दिन काटोगे, तो मरोगे, तो (सचमुच में और (खास करके) जीवित रहोगे।"

> वे विश्वासी जो शारीरिक होकर जीते हैं वे कभी भी जीवित नहीं रह सकते, परन्तु जो लोग पवित्र आत्मा के साथ कार्य करते हैं और जो लोग अपने शरीर को मारकर अपने आप को नहीं और परमेश्वर को हाँ कहते हैं, एक ऐसे जीवन के गुण का अनुभव करते हैं जो कि अद्भुत है। हमारे पास पवित्र आत्मा में धार्मिकता, मेल मिलाप और आनंद है - और फिर से मैं कहना चाहती हूँ कि यह अद्भुत है। (देखें रोमियों १४:१७)

आत्मा का फल

> पर (पवित्र) आत्मा का फल (जो काम उसकी उपस्थिति में पूर्ण होती है) प्रेम, आनंद (खुशी), मेल, धीरज (मिजाज, सहिष्णुता) कृपा, भलाई(उपकार), विश्वास, नम्रता (कोमलता, सरलता) और सयंम स्वय का प्रतिबंध, जितेन्द्रिय। ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं(जो दंड ला सके)। (गलतियों ५:२२-२३)

यह परिच्छेद आत्मा के फल के विषय में वर्णन करती है जिसे हम तभी ला सकते हैं तब हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण रहेंगे। यूहन्ना १५:८ में यीशु ने कहा कि मेरे पिता की महिमा इसी से होती है जब हम फल लाते हैं। और फिर से उसने मत्ती १२:३३ में कहा कि पेड़ अपने फलों से पहचाना जाता है और मत्ती ७:१५-१६ इसी सिद्धांत को उसने लोगों के जीवन में लागू किया। यह पद हमें यह बताता है कि हम विश्वासी लोगों को किस प्रकार के फल को लाने की आवश्यकता है। हम किस प्रकार से पवित्र आत्मा के अच्छे फल को ला सकते हैं?

हमने देखा कि परमेश्वर भस्म करने वाली आग है, और यह कि यीशु पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देने के लिये भेजा गया था। जब तक हम परमेश्वर को हमारे जीवन को जलाने न दें, तब तक हम कभी भी पवित्र आत्मा के फल नहीं देख सकेंगे।

जैसे हम यूहन्ना १५:२ में यीशु के वचनों से हमें पाते हैं कि फल लाने के निमित्त हमें छांटा जाना जरूरी है; "जो डाली मुझमें हैं, और नहीं फलती (जो

फलना बंद कर देता है) उसे वह काट (साफ सुथरा करता है, निकाल देता है) डालता है, और जो फलती है, उसे वह छाँटता है ताकि और फले।" जिस प्रकार से आग का वर्णन पवित्र आत्मा के कार्य के रूप में किया गया है, वैसे ही छाँटे जाने का कार्य है। शुद्धता और शरीर की मृत्यु के लिये आग जरूरी है; बढ़ने के लिये छाँटा जाना जरूरी है मृत चीजें और वे बातें जो अनुचित दिशा में जाती हैं, उन्हें काट डालना चाहिये ताकि धर्म के वृक्ष के समान हम परमेश्वर के लिये अच्छे फल ला सकें। (देखें यशायाह ६१:३)।

मैं कभी भी नहीं भूल सकती हूँ जब डेव ने यह फैसला किया कि हमारे घर के बाहर एक सुंदर पेड़ था जिसे छाँटने की आवश्यकता थी। मैं इसके बारे में अधिक नहीं सोच पाई कि उन्होंने कहा कि वह अच्छे दक्ष लोगों को ला रहे हैं ताकि उसे पतला कर सकें। लेकिन जब मैं घर में आयी और पाई तब मैं इन लोगों को खुश देखकर मैं भयभीत हो गई क्योंकि इन्होंने मेरे पेड़ को तोड़ - फोड़ कर दिया था।

डेव ने कहा, "अगले वर्ष तक के लिये जरा इंतजार करो, यह फिर से सुदंर हो जायेगा।"

परन्तु मैं इंतजार करना पसंद नहीं करती हूँ।

और जब मैंने उन दन्त कुरेदने जैसे वृक्ष की डाली को देखा तो मुझे यह अच्छा नहीं लगा जो पहले कभी हरियाली से भरपूर था। परन्तु अभी वह पेड़ पहले से अधिक सुन्दर दिख रहा था और मजबूत था जिससे बहुत वर्षों तक आँधी तूफान शक्तिशाली ढंग से खड़े रह सके। गलतियों ५ में हम शरीर के काम अर्थात् पाप की सूची एवं आत्मा के फल की सूची को प्राप्त कर सकते हैं या जैसे द एम्प्लीफाईड बाईबल इस पद २२ को इस प्रकार से रखती है, "जो काम उसकी उपस्थिति में पूर्ण होती है।" मैं सचमुच में इस वक्तव्य को पसंद करती हूँ। यह (पवित्र) आत्मा का फल है, ये सारे गुण यीशु में स्वयं पाये जाते हैं; प्रेम, आंनद, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता (कोमलता या सरलता), और सयंम है। यह उस पवित्र का मंजिल है जो हमारे अदंर रहता है, हमारे जीवन में फल उत्पन्न करने या पूर्ण करने के लिये - बड़ा, स्वादिष्ट फल जो देखने और सबकी तारीफ करने के लिये है।

प्रेम अनंत जीवन का फल है जो कभी खत्म नहीं होगा। फल लाने के लिये हमें परमेश्वर के प्रेम में बने रहना चाहिये - उसका जो प्रेम हमारे लिये है उसके प्रति हम सजग रहें, दूसरों से प्रेम करके उसके प्रेम में बने रहना, परख और परीक्षाओं को प्रेम की प्रतिक्रिया के द्वारा से सह लेना। यीशु ने कहा कि

यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे तो परमेश्वर और दूसरों से प्रेम कर सकेंगे, और तब हम उसके मित्र कहलाएंगे।

> "मैंने यह बातें तुम से इसलिये कही है, कि मेरा आनंद तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनंद पूरा हो जाए। मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा, वैसे ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं (किसी ने भी इतनी शक्तिशाली स्नेह नहीं दिखाया है), कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे (न्यौछावर करे)। जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूं, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो। (यूहन्ना १५:११-१४)।"

परमेश्वर के नज़दीक आप कितना रहना चाहते हैं? क्या आप उसके मित्र बनना चाहते हैं? क्या आप उसे देखना और जानना नहीं चाहेंगे जैसा वह वास्तव में हैं? जिस तरीके से यीशु ने लोगों से प्यार किया वैसा करना परमेश्वर का मित्र बनाता है। इसलिये बहुत सारे लोग पूछते है, "लेकिन मैं कौन हूं जो परमेश्वर का मित्र हो सकता हूं?"

> यीशु ने कहा, "तुमने मुझे नहीं चुना परन्तु मैंने तुम्हें चुना है, और तुम्हें ठहराया (मैंने तुम्हें रोपा है) ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना (लगा रहे, रहना), कि तुम मेरे नाम (जो कुछ मैं हूं मुझे प्रस्तुत करते हुए) से जो कुछ पिता से माँगों, वह तुम्हें दे।" (यूहन्ना १५:१६)

ये पद हमें स्पष्ट करते हैं कि यदि हम परमेश्वर और लोगों से प्रेम करते हैं, तो हम लोग कभी भी कोई भी भी बात जो परमेश्वर के मर्जी के बाहर है उसे नहीं मांगेगें। हम जो कुछ भी माँगेंगे वह देगा, यदि हम उसे और लोगों को दूसरी इच्छाओं के सामने रखेंगे। इस प्रकार का प्रेमी स्वभाव हमारे हृदय को शुद्ध रखता है। याकूब ने इस बात को स्पष्ट कर दिया कि हम माँगते हैं और पाते नहीं क्योंकि हम परमेश्वर से बुरी लालसा के साथ मांगते हैं ताकि भोग विलास में उड़ा दें। (देखें याकूब ४:३); परन्तु प्रेम कभी असफल नहीं होता है। (देखें १ कुरिन्थियों १३:८)

जब पवित्र आत्मा एक घमंडी, बड़बड़ाने वाले, ढ़ीठ, तानाशाही और गलत तकृ लगाने वालों को, नम्र, कृपालु, समर्पित और अनूकुलीय व्यक्ति में बदल देता है तब लोग इसे देखते हैं। आज की दुनियां कुछ इसी तथ्य को देखना चाहती है। यह झूठी आत्मिकता, खोखले वाणी, निर्जीव सिद्धांत जो कार्यशील

नहीं है, और बिना काम के चल रहे हैं उससे उकता चुकी है। मसीह में विश्वासी होने के नाते, हम पवित्र आत्मा के साथ सहयोग करें जिससे हम इस दुनियां की आवश्यकता के अनुसार वास्तविकता को प्रस्तुत कर सकें।

फल के निरीक्षक बनें।

सो उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। (मत्ती ७:२०)

आप अपने और दूसरों के फल को देखें। आप दूसरों पर दोष लगाने एवं उनकी आलोचना करने के लिये न देखें, परन्तु सामान्य तौर से यह जानने के लिये कि वे जो दावा करते हैं वास्तव में हैं या नहीं। यह एक तरीका है हम उन आत्माओं को जांचे और परखें और समस्याओं से परे रहें।

बहुत वर्षों तक मैं एक सेव के पेड़ के समान पूरे दिन भर खड़ी रहकर चिखती रहती थी, "मैं एक सेब का पेड़ हूं", परन्तु कभी भी मुझमें सेव नहीं फले।

एक बार मेरे पति और मैं फ्लोरिडा में थे, और मैंने एक पेड़ को देखा और सोचा कि यह बहुत आकर्षित होगा। मैंने पूछा, "कोन सा यह पेड़ है?" इससे पहले कोई जवाब दे पाये मैंने डालियों में संतरे फले हुए देखा, और फिर मैंने कहा, "यह संतरे का पेड़ है।" मैंने उसे उसके फल से जाना।

अक्सर मसीही लोग बाहरी आडम्बर को दिखाकर यह कहना चाहते हैं कि वे विश्वासी हैं। आटोमोबाईल में बम्पर स्टीकर्स लगे रहना एक अच्छा उदाहरण है। इस संकेत का यह इशारा है कि ड्राइवर मसीही है, परन्तु यातायात में किस प्रकार का फल लाना चाहते हैं? क्या वे तेज गति या निर्धारित गति में वाहन चलाते हैं, या कम सीमा गति में चलाते हैं? वे दूसरे ड्राइवर के साथ किस प्रकार से प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं, खासकर के जब वे यातायात के दर्मियान उन्हें पार करके आगे निकल जाते हैं? ये संकेत जाहिर करते हैं कि वे सचमुच में किस प्रवृति के हैं।

आप और मैं एक बड़ी बाइबल रख सकते हैं, मसीही आभूषण जैसा क्रूस को लटका सकते हैं, अपने काम में बम्पर स्टीकर लगा सकते हैं, एक अपनी बड़ी लाइब्रेरी मसीह साहित्य की हो सकती है जिसे हम अपने घर के मुख्य स्थान में रख सकते हैं। हम वे सब काम कर सकते हैं फिर फलहीन रह सकते हैं। हमें पवित्र आत्मा के फल से ताल्लुकात रखना चाहिये, क्योंकि पवित्र आत्मा

इससे ताल्लुकात रखता है। उसका एक मुख्य उद्देश्य है हमारे जीवन में निवास करने का कि वह हमारे अदंर फल को उत्पन्न करने का काम जारी रखता है।

यूहन्ना १५ में यीशु ने हमारी और हमारे उसके साथ संबंध की तुलना एक सजीव पौधे से की है। वह दाखलता है; और हम डालियां हैं। यद्यपि यूहन्ना १५ में यह बयान नहीं किया गया है, फिर भी हम ये कह सकते हैं कि पवित्र आत्मा माली है जो हमारी छंटाई करता है और फल के रूकावटों को हमसें अलग करता है।

परमेश्वर ने हममें से प्रत्येक में एक बारी को लगाया है, और उसने पवित्र आत्मा को माली के काम करने के लिये निर्दिष्ट किया है; *"क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी (सयुंक्त संयुक्त स्थापित करने में सहायता करने वाला, साथ में परिश्रम करने वाला) हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर की रचना हो"* (१ कुरिन्थियों ३:९)

एक माली फल के उत्पादन में सहायता करता है। इसलिये पवित्र आत्मा भेजा गया था कि हममें काम करे - कि हम परमेश्वर के लिये अच्छे फल ला सकें।

> उसने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उसकी सृष्टि की हुई वस्तुओं में से एक प्रकार के प्रथम फल हों। हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जानते हो; इसलिये हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीरा और क्रोध में धीमा हो। क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म की निर्वाह नहीं कर सकता है। इसलिये सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उसे वचन की नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारें प्राणों का उद्धार कर सकता है। (याकूब १:१८-२१)

अपने फल को नियमित रूप से निरीक्षण करते रहें। यदि इनमें से किसी को रोग लग जाता है या सड़ जाता है, तो माली की सहायता करने के लिये कहें जिससे उसका इलाज हो और नई फसल की पैदावार हो। हो सकता है कि आपके पास कुछ फल हो परन्तु यह सामान्य तौर नहीं बढ़ रहे हों। यह डाली में हो सकता है, परन्तु बहुत छोटा होगा, और निश्चित तौर से ऐसे आकार का होगा जो किसी के लिये कोई फायदे का कारण नहीं होगा। हो सकता है आपको और थोड़े उर्बरक की आवश्यकता हो। यीशु ने इसी उदाहरण को लेकर एक दृष्टान्त भी कहा है।

अच्छा फल लाऐ

> फिर उसने यह दृष्टानंत भी कहा, के अंगूर के बागा में एक अंजीर का पेड़ लगा हुआ था; वह उसमें फल ढूढ़ने आया, परन्तु (एक भी) न पाया। तब उसने बारी के रखवाले से कहा, देख तीन वर्ष से मैं इस अंजीर के पेड़ में फल ढूंढ़ने आता हूँ, परन्तु नहीं पाता, उसे काट डाल कि यह भूमि को भी क्यों रोके रहे (भूमि को बर्बाद करे, सूर्य की किरण के लिये रूकावट का कारण बने, जगह घेरे रहे)। उसने उसको उत्तर दिया, कि हे स्वामी, इसे इस वर्ष तो (ऐसे) और रहने दे; कि मैं इसके चारों ओर (भूमि के) खोदकर खाद डालूँ। सो आगे को फले तो भला, नहीं तो उसे काट डालना। (लूका १३:६-९)

यह एक ऐसा अच्छा उदाहरण है जिसके विषय में मैं बात कर रही हूँ। यदि हम अच्छा फल नहीं ला रहे हैं, तो हम ऐसे ही जगह घेरे हुए हैं।

उद्धार पाने के बाद परमेश्वर की एक खास योजना हमारे लिये होती है; अन्यथा, वह हमें संसार से उठा ही लेता। यदि हम उसकी योजना का अनुसरण नहीं करते हैं, तब तो हम ऐसे ही जीते है और परमेश्वर के लिये कोई भला काम नहीं करते हैं, न ही अपने लिये, और न ही किसी दूसरे के लिये भी। यदि हम उसकी आशीषों के विरूद्ध में प्रयत्न करते हैं, तो हमारे लिये यह बेहतर होगा कि यदि वह अपने घर स्वर्ग में हमें ले ले। हम निश्चित तौर से उसकी महिमा नहीं करते हैं या दूसरों को उसकी भलाई नहीं दिखलाते हैं, जब हम उसकी इच्छा के बजाय अपनी इच्छा के अनुसार चलते हैं।

मैं बहुत धन्यवादित हूँ कि दाख की बारी में काम करने वाला (माली) हमारे साथ हमेशा थोड़ी देर और काम करने के लिये तैयार रहता है। यद्यपि जब हम अपने आप से हार जाते हैं, तब भी वह हमारे लिये थकता नहीं है।

कोई भी जिसके अन्दर पवित्र आत्मा रहता है उसमें यह फल लग सकता है जिसके विषय में मैं बात कर रही हूँ, प्रेम, आनंद, मेल, धीरज़, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता (कोमलता, सरलता) और सयंम। ये सारी बातें एक हममें एक पौधे की मानिन्द बढ़ना चाहिये, परन्तु हम विश्वासियों में ये सारी बातें हैं और हमें इस प्रकार के फल उत्पन्न करने की आवश्यकता है।

जिस प्रकार से यीशु ने यूहन्ना १५:४ में कहा कि कोई भी डाली अपने आपसे नहीं फल सकती है; फलने के लिये इसे दाखलता में रहना होगा। इस

कारण से कि *पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के साथ संगति एवं सहभागिता रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है।*

हमें प्रभु की उपस्थिति में रहने की आवश्यकता है। यह एक पौधा सूर्य की रोशनी को प्राप्त करने के बराबर है, वैसे ही हम "पुत्र की रोशनी" को प्राप्त करते हैं। जिस तरीके से पौधे की सिंचाई होती है, वैसे ही यीशु अपनी कलीसिया को परमेश्वर के वचन के द्वारा से सींचता है। (देखें इफिसियों ५:२५-२६)।

यदि हम निर्दिष्ट योजना का फल लाने के खातिर अनुसरण करेंगे - रोपे जाकर, जड़ पकड़कर और पुत्र की रोशनी में बहुतायत से फलेंगे, वचन की बहुतायत के साथ, और माली के हाथ में सौंप देंगे - *तो निश्चय हम फल लायेंगे।*

१६
आत्मा की संगति

> प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह (उपकार और आत्मिक आशीषें) और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता (संगति और आदान प्रदान एक साथ और भाग लेने की क्रिया) तुम सब के साथ होती रहे। (२ कुरिन्थियों १३:१४)।

पवित्र आत्मा की संगति का इशारा है दूसरे विश्वासियों के साथ संगति और स्वयं आत्मा के साथ। चूंकि पवित्र आत्मा हमारे अंदर निवास करता है, हमें उसके साथ संगति और सहभागिता रखने के लिये दूर जाने की आवश्यकता नहीं है।

बहुत वर्षों तक, मैं एक कलीसिया में संगति किया करती थी, और वहाँ पर आराधना के पश्चात सभा के लिये आशीष का वचन उच्चारित किया जाता था। उसके वचन अक्सर ऐसे हुआ करते थे; "पवित्र आत्मा की संगति तुम सब के साथ होती रहे।" यह बहुत ही आत्मिक प्रतीत होता था, परन्तु इसके विषय में मुझे कोई जानकारी नहीं थी। मैं विश्वास करती हूँ कि इसी तरह का बहुत से अन्य लोगों को भी अनुभव है।

जैसे मैंने इस किताब में पहले भी उल्लेख कर चुकी हूँ, कि मैं बहुत वर्षों तक परमेश्वर तक "पहुँचने" के लिये समय व्यतीत की, यह बिना जानते हुए कि वह मुझमें सदा वास करता है। मैं विधि और विधान का पालन किया करती थी, जबकि मुझे संगति का आनंद उठाना चाहिये था। मैं संघर्ष करती थी और ऐसा महसुस करती रही कि मैं विफल हो चुकी हूँ, परन्तु प्रभु सदा मेरे साथ रहा कि जो मैं करती हूँ उसमें वह मेरी सहायता करे।

पवित्र आत्मा हमारी मदद करने के लिये आता है, क्योंकि वह जानता है कि हमें निरन्तर उसकी आवश्यकता है। मदद लेने में कोई लज्जा की बात नहीं; क्योंकि मानवता का यह एक हिस्सा है।

पहला यूहन्ना १:३ कहता है, "और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।" यह संगति या सहभागिता सिर्फ पवित्र आत्मा के द्वारा से ही संभव है, जो हमारे अंदर रहता है।

मैं अपने पति के साथ घर में रहती हूँ और हम एक दूसरे के बहुत नज़दीक रहते हैं। डेव और मैं एक दूसरे के साथ काम करते हैं और बहुत सारे काम साथ में करते रहते हैं। ऐसे समय भी रहते है कि वे कभी गोल्फ खेलने जाते हैं, परन्तु हम फोन के द्वारा से एक दूसरे के नज़दीक में रहते हैं। वे घर में टेलीविज़न में खेल भी देखते रहते हैं परन्तु मुझे उसमें दिलचस्पी नहीं होने पर भी, मैं घर में ही रहती हूँ। हम एक साथ खाना खाते हैं, एक साथ सोते हैं,और सुबह के समय बाथरूम भी बाट लेते हैं जिससे हम अपनी दिनचर्या में निकल सकें। हम एक दूसरे के साथ अधिक समय व्यतीत करते हैं। हम केवल बाते ही नहीं करते रहते हैं परन्तु हम अक्सर एक दूसरे के प्रति सजग भी रहते हैं। मैं डेव से महत्वपूर्ण एवं महत्वहीन दोनों बातों के बारे में बातचीत करती हूँ। जब वे मुझसे बाते करते हैं तब मैं सुनती हूँ। संगति करने का मतलब केवल बातें करना नहीं है परन्तु इसमें सुनना भी है।

डेव और मैं ऐसे एक साथ शान्त रहकर भी आनंदित रहते हैं। अक्सर हम ये भी चर्चा करते रहते हैं कि यह कितना अदभुत होगा कि हम शान्त रहने से किसी को असुविधा नहीं होगी। हम हमेशा एक दूसरे से पूछताछ करते हैं इससे पहले कि कोई महत्वपूर्ण फैसला लें या कोई बड़ी खरीददारी करें, ऐसा करने से हम एक दूसरे का बहुत सम्मान करते हैं इसके बजाय कि हम एक दूसरे से अनुमति लें।

नीतिवचन ३:६ कहती है कि परमेश्वर को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा। मेरे लिये परमेश्वर को स्मरण करने का मतलब है कि जो वह मेरे लिये सोचता है उसके बारे में, अपनी चालचलन और अपनी इच्छा से बढ़कर उसकी इच्छा की चाह करने के बारे में देखभाल करना।

यिर्मयाह २:१३ में यहोवा ने कहा, "क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयाँ की है; उन्होंने मुझ बहते जल के सोते को त्याग दिया है और, उन्होंने हौद बना लिये, वरन ऐसे हौद जो टूट गए हैं, और जिनमें जल नहीं रह सकता।" प्रथम और सबसे बड़ी गलती प्रायः सभी लोग करते हैं कि परमेश्वर को त्याग देते हैं और नजरअंदाज ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे कि उसका अस्तित्व है ही नहीं। यिर्मयाह २:३२ में वह कहता है "तौभी मेरी प्रजा ने युगों से मुझे बिसरा दिया

है।" यह एक दुखान्त वृतान्त है, इससे ऐसा लगता है कि परमेश्वर दुखी है या हो सकता है कि वह अकेला है।

निश्चय मैं यह पसंद नहीं करूँ गी कि मेरे बच्चे मुझे भूल जायें। मैं उनसे बातें करने में कभी भी ज्यादा दिन का अन्तराल नहीं रखती हूँ। मेरे दो बेटे हैं जो निरंतर सेवकाई के साथ यात्रा करते रहते हैं। यदि वे विदेश यात्रा में भी रहते, तब भी कुछ दिनों के अन्तराल वे मुझसे बाते करते रहते हैं।

हाल ही में, डेव और मैं अपने एक बेटे के साथ रात्रिकाल का भोजन में एक साथ किया। फिर भी वह अगले दिन वह हमसे पूछ रहा था और जानने की इच्छा जाहिर की कि अगली शाम फिर एक साथ कुछ करना चाहिये। उसने ऐसा इसलिये पूछा कि वह और उसकी पत्नी सचमुच में वे हमारी तारीफ कर रहे थे इसलिये कि हम हर बातों में उनकी मदद किया करते हैं।

इस प्रकार की जो बातें हैं अच्छे रिश्तों को बनाने एवं स्थिर करने में सहायता करती है। कभी कभी छोटी छोटी बातों का बड़ा गहरा अर्थ होता है। मेरे बच्चों के चाल चलन से मुझे ऐसा लगता है कि वे मुझे प्रेम कर रहे हैं। मेरा तर्क कह सकता है कि वे मुझसे प्रेम करते हैं, परन्तु निश्चय यह और भी अच्छा है कि यह महसुस किया जाये।

इस तरीके से परमेश्वर हमारे एवं उसके अतिप्रिय बच्चों के साथ रहता है। वह यह जान सकता है कि हम उससे प्रेम करते हैं, परन्तु वह यह चाहता है कि वह हमारे प्रेम को सारी चालचलन, और खासतौर से उसके साथ संगति करने के द्वारा से अनुभव करे।

संगति के द्वारा से नया किया जाना

> जब हम (अपने ही) अपराधों के कारण मरे (मारे गये) हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया। (इफिसियों २:५)

संगति के द्वारा से हमें जीवन मिलता है। हम इसके द्वारा से नये किये जाते हैं। यह हमारे जीवन की बैटरी में शक्ति भर देता है, ताकि हम बोल सकें। हम परमेश्वर के साथ संगति करने के द्वारा से बलवंत होकर एक हो जाते हैं - इतने बलवंत की हमारे प्राण के बैरी शैतान के हर प्रहार के सामने खड़े रह पाये। (देखें इफिसियों ६:१०-११)

जब हम परमेश्वर के साथ संगति कर रहे होते हैं, तब हम गुप्त स्थान में रहते हैं जहाँ पर शत्रु से सुरक्षित रहते हैं। भजन संहिता ९१ में हम एक गुप्त स्थान के बारे में पढ़ते हैं, और पद १ में कहा गया है कि जो लोग वहाँ वास करेंगे वे लोग अपने हर एक शत्रु को हरायेंगे; "जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान (जिसकी सामर्थ के सामने कोई भी खड़ा नहीं रह सकता है) की छाया में ठिकाना पाएगा।"

मैं विश्वास करती हूँ कि वह गुप्त स्थान परमेश्वर की उपस्थिति है। जब हम उसकी उपस्थिति में रहते हैं, तब हम उसकी शान्ति का अनुभव करते हैं। शैतान ऐसे में जान नहीं सकता है कि एक विश्वासी के साथ क्या करना चाहिये जो शान्ति में रहता है और इसमें परवाह करने की कोई बात नहीं कि परिस्थितियों कैसी भी क्यों न हो। ऐसा करना समय में कठिन मालूम पड़ता है, परन्तु हमें परमेश्वर की आत्मा के द्वारा से स्थिरता के लिये सामर्थ मिलती है जैसे हम उसकी सहभागिता और संगति में बढ़ते हैं।

भजन संहिता १६:८ कहती है कि यदि यहोवा निरन्तर हमारे सम्मुख रहता है, तो हम कभी नहीं डगमगाएंगे। भजनसंहिता ३१:२० के अनुसार, जब हम परमेश्वर के गुप्त स्थान में उसकी उपस्थिति में रहते हैं, तब हम मनुष्यों की बुरी गोष्ठी और उनके झगड़े-रगड़े से छिपा रखेगा। यशायाह ५४:१७ कहती है कि जीभ हमारे विरूद्ध में हथियार के समान प्रयोग किया जाता है ।शैतान लोगों को परीक्षा में डाल ही देता कि उन लोगों के विरूद्ध में वे बातें करें जो लोग परमेश्वर के साथ आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं, और यह आशा करते हुए कि हमको निराश व कमजोर कर दे। परन्तु परमेश्वर के साथ संगति करते हुए, हम हर नकारात्मक प्रभाव और प्रहार से बचाये जाते हैं।

शैतान परमेश्वर के साथ हमारी संगति को तुच्छ जानता है। वह यह जानता है कि यदि हम परमेश्वर के साथ लगातार संगति करेंगे तो कितने शक्तिशाली हो जायेंगे, इसलिये वह संगति के विरूद्ध वह अपनी पूरी शक्ति के साथ लड़ाई करता है।

किसी विश्वासी से यह पूछे कि क्या आप परमेश्वर के साथ लगातार समय व्यतीत करने का गुण है जो कि वास्तव में उनके लिये चुनौती है, और वे लोग अक्सर यही कहेंगे, हाँ।

हम दूसरी बातों को बड़ी आसानी से समय निकाल लेते हैं (जैसे टेलीविज़न देखन या दूसरे प्रकार के आमोद-प्रमोद में व्यस्त रहना), परन्तु परमेश्वर के साथ प्रार्थना करना, संगति करना, और उसके वचन को पढ़ना, इसके लिये

नियमित समय निकालना हमारे लिये यह कठिन हो जाता है। हमें परमेश्वर को केवल हमारे जीवन के "आपातकालीन" अवस्था में ही नहीं परन्तु हमारे प्रतिदिन के जीवन में उसे कार्य करने देना है। हमें कैसे लगेगा यदि हमारे प्रियजन हमसे केवल उनके आपातकालीन अवस्था में ही बातें करें?

यह सचमुच में, हमारे रिश्तों को बर्बाद कर सकता है?

परमेश्वर ने मुझे समस्या समाधान प्रबंध के सिलसिले में कुछ शिक्षाप्रद बातों को सिखाया। यीशु ने कहा, "मेरे पास आओ", परन्तु उसने यह नहीं कहा कि दौड़कर फोन के पास जाओ और हमारे तीन मित्रों को बुला लाओ। मैं लोगों से प्रार्थना कराने के लिये कहने के विरूद्ध में नहीं हूँ, परन्तु यदि हम लोगों के पास दौड़ेंगे तो हम कभी चंगे नहीं होंगे, बल्कि हमें सिर्फ एक बैड - एड मिलेगा।

हमें लगातार आपातकालीन अवस्था का परिहार करने के लिये, प्रभु ने मुझे निरंतर, या धीरज से उसकी बाट जोहने के लिये प्रभावित किया। मैं परमेश्वर को खोजने में कभी कभार एक बार या जब मैं बड़ी समस्या में रहती थी तभी खोजती थी। आखिरकार, मैंनें यह सीख लिया कि यदि मैं केवल आपात कालीन अवस्था से निकलकर जीना चाहूँगी तो, मुझे हमेशा परमेश्वर को हर परिस्थिति में चाहे भयानक सम्पन्नता या आशीष और निराशा में भी उसे खोजने की आवश्यकता है।

जिस प्रकार से इस्त्राएल की संतान परमेश्वर की अपनी सम्पन्नता के समय भूल गये, उसी प्रकार से हम भी जब हमारे अच्छे दिन कटते रहते हैं परमेश्वर को कम महत्व देते हैं। हमें परमेश्वर के हृदय की इन निम्न सिद्धांतों के विषय में ध्यानपूर्वक सुनने की आवश्यकता है; यदि हम उसे निराशा के समय केवल उसे खोजेंगे, तब तो वह हमें निराशा की अवस्था में रखेगा, क्योंकि वह हमारे साथ संगति करने के लिये भी निराश होगा।

> परमेश्वर हमें हमेशा संकट से बचायेगा जब हम उसके पास आयेंगे। परन्तु यदि हम निरंतर विजय के स्थान में रहना चाहते हैं, तो हमें हमेशा उसे धीरज से खोजना चाहिये। सुलेमान ने इस महान सत्य को सीख लिया, और इस बुद्धि की अभिव्यक्ति इस प्रकार से व्यक्त की, "तौभी मुझे निश्चय है कि जो परमेश्वर से डरते (अधिक भययोग्य समझना) है और अपने तई उसको सम्मुख जानकर भय से चलते हैं, उनका भला ही होगा।" (सभोपदेशक ८:१२)

हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि यह संबंध संगति के द्वारा से ही निर्माण किया जाता है।

व्यक्तिगत हो जाऐं

> अब से मैं तुम्हें दास (गुलाम) न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या कहता है; परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैंने जो बाते अपने पिता (सब कुछ जो मैंने उससे सीखा है तुम पर प्रगट कर दिया है) से सुनी, वे सब तुम्हें बता दीं। (यूहन्ना १५:१५)।

परमेश्वर चाहता है कि हम उसके साथ व्यक्तिगत हो जाऐं। वह यह इस सच्चाई से प्रमाणित करता है कि वह हमारे अन्दर निवास करता है। एक व्यक्ति और कितना व्यक्तिगत होगा जबकि वह एक दूसरे व्यक्ति के अंदर रहता है?

यदि परमेश्वर हमसे कुछ तटस्थ, व्यवसायिक तौर से और पेशेवर तरीके से रिश्ता रखता, तो वह कब का हमसे दूर ही रहता था। शायद वह हमसे कभी कभार ही मुलाकात करने के लिये आता, और उसी घर में वह हमारे साथ अपना चिरस्थाई निवास बनाने के लिये नहीं आता।

जब यीशु की क्रूस पर मृत्यु हुई, तो उसने सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ हमें व्यक्तिगत बनाने के लिये द्वार को खोल दिया। कितना अनोखा यह विचार है। इस पर जरा सोचे; परमेश्वर हमारा व्यक्तिगत मित्र है।

यदि हम किसी बड़े व्यक्ति को जिसे हम जानते हों, तो हम हमेशा ऐसे अवसरों से प्रेम करेंगे जिनमें हमको कहने के लिये मिलेगा कि, "ओह, जी हाँ, वह मेरा मित्र है। मैं उसके घर अक्सर जाया करता हूँ। हम अक्सर एक दूसरे से मुलाकात किया करते हैं।" हम इसी तरीके से परमेश्वर के विषय में भी कह सकते हैं यदि हम उसका अनुसरण करते हैं और नियमित रूप से उसकी संगति और सहभागिता रखकर अपना भाग पूरा करते हैं।

परमेश्वर हमसे जलन करता है।

> क्या तुम यह समझते हो, कि पवित्र शास्त्र व्यर्थ कहता है? जिस आत्मा को उसने हमारे भीतर बसाया है, क्या वह ऐसी लालसा (उसका स्वागत हो) करता है, जिसका प्रतिफल डाह हो? (याकूब ४:५)

एक ही पद में यह बात आ जाती है; पवित्र आत्मा चाहता है कि उसका स्वागत हो; वह हमारे साथ संगति करने के लिये लालसा या प्रतीक्षा करता है।

अपने सम्पूर्ण जीवन को और सम्पूर्ण हृदय को खोलकर कहें कि, "पवित्र आत्मा आपका स्वागत है; मैं आनंदित हूँ कि आपने मेरे अंदर अपना घर बना लिया है।"

याकूब ४:४ के अनुसार, जब हम परमेश्वर से बढ़कर संसार की बातों में ज्यादा ध्यान लगाते हैं, तब वह हमें एक अविश्वासयोग्य पत्नी के रूप में देखता है जो संसार के साथ अवैध रूप से प्रेम करके हमारी शादी एवं उसके साथ वादे को तोड़ती है। हमें विश्वासयोग्य रखने के लिये, उसकी घनिष्ठ संगति और सहभागिता में रखने के लिये, कभी कभी वह हमारे जीवन से उन बातों को जो हमें उससे परे रखती हैं,अलग करना चाहिये।

हो सकता है कि हम नौकरी या परमेश्वर को अपने बीच में ला सकते हैं, और हम उससे प्रेम कर सकते हैं। यदि रूपया हमें उससे अलग करता है, तब तो हमें यह सीखना चाहिये कि हम भले कंगाल हो जाऐं मगर परमेश्वर से अलग न हों। यदि सफलता हमारे और स्वर्गीय पिता के बीच में आती है तो हमें बढ़ती के बदले में घटती मिल सकती है। यदि हमारे मित्र हमारे जीवन में प्रथम स्थान ले लेते हैं, तब तो हम अपने आपको अकेलेपन में पायेंगे। अकेलेपन में रहने वाले लोग अक्सर परमेश्वर के अधिक घनिष्ठ हो जाते हैं। यह जानना कितना अनोखा और अच्छा है जबकि कोई व्यक्ति हमारे साथ रहता है।

एक बार मैं अपने जीवन में एक भयानक अकेलेपन के दौर से गुज़री। मेरे साथ मेरा परिवार था, परन्तु मेरे सारे मित्र मुझ से बिछुड़ चुके थे। यह मुझे ऐसा लगा कि परमेश्वर मुझसे उन हर एक लोगों को जानबुझकर अलग कर रहा था, जिनको मैं चाहती थी और जिनके साथ आनंदित रहती थी; तब भी यह सब कुछ भी समझ नहीं पायी। बाद में, मैंने यह महसुस किया कि मैं उन मित्रों पर बहुत ही ज्यादा भरोसा रखा करती थी। मैं उनकी बातों में आसानी से आ जाती थी। परमेश्वर मुझे मेरे मित्रों के द्वारा से नहीं, परन्तु अपनी आत्मा के द्वारा से चलाना चाहता था। यदि उसने मुझे उनसे अलग नहीं किया होता,और अपने प्रेम में जड़ पकड़ने एवं दृढ़ नहीं किया होता, तो शायद आज जो सेवकाई मेरे पास है, वह कभी भी नहीं होती।

सैकड़ों लोग यह अहसास करने में विफल हो जाते हैं चूंकि जो वे चाहते हैं वे कभी भी प्राप्त नहीं कर सकते है क्योंकि वे सचमुच में परमेश्वर को जीवन में प्रथम स्थान नहीं देते हैं, जैसे हमें मत्ती ६:३३ में करने के लिये कहा गया

है; "इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुऐं भी तुम्हें मिल जाऐंगी।"

लूका रचित सुसमाचार में हम एक उदाहरण पाते हैं कि किसी ने प्रभु को प्रथम स्थान दिया, और दूसरे ने संसार की चिन्ता को स्थान दिया जिससे उसकी घनिष्ठ संगति में हस्तक्षेप हो सके।

मरियम और मार्था

> फिर जब वे जा रहे थे, तो वह एक गांव में गया, और मार्था नाम की एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा। और मरियम नाम उसकी एक बहिन थी; वह प्रभु के पांवों के पास बैठकर उसका वचन सुनती थी। पर मार्था (प्रचुर मात्रा से भर गई, और अधिक व्यस्त) सेवा करते करते घबरा गई और उसके पास आकर कहने लगी, हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी सोच नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली ही छोड़ दिया है? सो उससे कह, कि मेरी सहायता (अपना हाथ बँटाए और मेरे साथ अपना भाग पूरा करे) करे। (लूका १०:३८-४०)।

यीशु मार्था और मरियम से मुलाकात करने के लिये आया। मार्था उसके लिये सब कुछ तैयार करने में व्यस्त थी। वह घर साफ कर रही थी, पका रही थी, और सब कुछ सही तरीके से ठीक करके एक अच्छा प्रभाव छोड़ने की कोशिश कर रही थी। दूसरी तरफ, मरियम, यीशु के साथ संगति करने के अवसर प्राप्त कर ली। मार्था अपने बहिन के साथ गुस्सा हो गई, और वह यह चाहती थी कि वह उसके काम में सहायता करे। उसने यीशु से शिकायत की, यह निवेदन करते हुए कि वह कहे कि मरियम उसकी सहायता करे।

> प्रभु ने उसे उत्तर दिया, मार्था, हे मार्था; तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है, और उस उत्तम भाग (जो उसके लाभ के लिये हैं) को मरियम ने चुन लिया है; जो उससे छीना न जाएगा। (लूका १०:४१-४२)।

जब यीशु ने कहा, "मार्था मार्था," इन दोनों शब्द में हमारे अहसास करने से बढ़कर अर्थ लागू होता है। मार्था रिश्तों के सिलसिले में बहुत व्यस्त थी; वह घनिष्ठता के कार्य का चुनाव कर रही थी। ऐसे में, वह समय का दुरुपयोग कर रही थी और जो उसके लिये महत्वपूर्ण था उससे वह चूक रही थी।

मरियम बुद्धि से काम कर रही थी; वह समय का सदुपयोग कर ली। वह भी साफ सफाई में अपने बाकी का समय व्यतीत कर सकती थी, परन्तु यीशु उसके घर में आया था, इसलिये वह यह महसुस कर रही थी, कि उसका स्वागत करे। वह उसे और मार्था को देखने के लिये आया था, न कि उनके साफ सुथरे घर को। इसका मतलब यह नहीं कि हमें साफ सुथरे घर की आवश्यकता नही है, परन्तु हर बातों का समय है - और यह समय घर की सफाइ्र करने का नहीं था। बहुधा मेरे जीवन भी मार्था के समान था। एक दु:ख की बात यह है जब मेरे बच्चे छोटे थे तब मैंने उनके साथ खेलने में अधिक समय व्यतीत नहीं किया। जब मेरा बेटा मुझे उसके साथ कुछ करने के लिये कहता था तब मैं अक्सर व्यस्त रहती थी। एक पँच मिनट का समय भी हमारे में बदलाव लाता है। और एक अच्चा और बहुत सुंदर रिश्ता बन जाता है जब वह बड़द होते है।

अभी मैं अपने सभी बच्चों के करीब हूँ, और ९९ प्रतिशत समय मैं अपना कार्य रोककर उनके साथ समय बिताती हूँ, क्योंकि मैं यह महसुस करती हूँ कि रिश्ते बहुत ही महत्वपूर्ण है। वास्तव में, परमेश्वर ने जो समय हमें दिया है उसका हम आदर करेंगे जिससे हम सदा के रिश्ते को बनाकर एक दूसरे के घनिष्ठ रहकर आनंदित रहें। हमें परमेश्वर से प्रेम करना है, और दूसरों से भी, परन्तु बहुतेरे, मसीही लोग एक दूसरे की सेवा करने में "जैसा प्रभु के लिये" इसके बजाय काम करने में अत्याधिक व्यस्त रहते हैं।

आईये हम बुद्धि का इस्तेमाल करें और जब परमेश्वर की उपस्थिति उपलब्ध है तो इसे न खोंए। कई ऐसे अवसर आते हैं जब पवित्र आत्मा हमें उत्तेजित करता है कि हम प्रार्थना करें, परन्तु उस समय हम काम करना या खेलना पसंद करते हैं। जब वह बुलाता है, तब हमें तुरन्त प्रत्युत्तर देना चाहिये। कितनी ही बार हम प्रभु से कहते रहते हैं कि हम सुबह या शाम आपके साथ समय बिताएँगे, और जब समय आता है, तो जैसे हम उसके साथ वायदा किये रहते हैं, तब रास्तें में कुछ रूकावटें आने के कारण से हम उसके साथ संगति करने में विफल हो जाते हैं?

निम्न आशीषें उनका इंतजार करती है जो लोग बुद्धि (यह परमेश्वर है) को धीरज से हमेशा खोजते हैं;

> जो मुझसे प्रेम रखते हैं, उन से मैं भी प्रेम रखती हूँ, और जो मुझकों यत्न से तड़के उठकर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं। धन और प्रतिष्ठा मेरे पास है, वरन ठहरने वाला धन और धर्म (हर क्षेत्र और रिश्तों में खराई,

> और परमेश्वर के साथ सही स्थान में खड़े रहना) भी है। मेरा फल चोखे सोने से, वरन कुन्दन से भी उत्तम है, और मेरी उपज उत्तम चाँदी से अच्छी है। मैं (बुद्धि) धर्म (नैतिक और आत्मिक सदाचार हर क्षेत्र और रिश्ते में), की बाट में, न्याय की डगरों के बीच में चलती हूँ, जिससे मैं अपने प्रेमियों को परमार्थ के भागी करूँ, और उनके भंडारों को भर दू। नीतिवचन ८:१७-२१)।

परमेश्वर के लिये नियमित समय निकालें। याद रखें कि आपको उसे दूर जाकर खोजने की आवश्यकता नहीं है। बस क्षण भर के लिये अपनी आंखे बंद करें, और आप अपने हृदय की शान्त अवस्था में उसे खोज ही लेंगे। उसका पवित्र आत्मा सदा आपके लिये इंतजार कर रहा है। आप उसे अकेला मत छोड़िये जिससे उसका ध्यान आपकी ओर से हटे। उसे आनंदित कीजिये क्योंकि वह आपके अंदर वास करता है। उसका स्वागत कीजिए जिससे वह अपनापन समझे। उसे आराम महसुस करने दीजिए। उससे सब कुछ आदान प्रदान कीजिए, क्योंकि वह इसलिये आया है कि वह आपके साथ भी सब कुछ आदान प्रदान करे।

१७

सबसे अद्‌भुत !

> वह (आत्मा) उसके मोल लिये हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास (प्रथम फल, प्रतिज्ञा और किसी घटना के घटने का पूर्व आभास, पैतृक-सम्पति का अदा करना) का (संपूर्ण) बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो। (इफिसियों १:१४)।

पवित्र आत्मा हमारी हर अच्छी बातों की जो घटने पर हैं उसका बयाना है। मैं अक्सर कहा करती हूं, विशेष करके जब मैं सचमुच में पवित्र आत्मा की भरपूरी महसुस करती हूं, “यह कितना अच्छा है, मैं उस महिमा की कल्पना भी नहीं कर सकती हूँ जिसकी सम्पूर्ण भरपूरी किस प्रकार की होगी।” यदि हम १० प्रतिशत का (एक सामान्य किश्त) अर्थात् जो हमारी विरासत का अनुभव करते हैं, तो मैं चकित होती हूँ, जब मैं सोचती हूँ कि यह वास्तव में कैसा होगा जब हम परमेश्वर को आमने सामने देखेंगे, जहाँ पर कोई आँसु नहीं, कोई दु:ख नहीं, कोई मृत्यु नहीं - कितना अनोखा होगा!

इफिसियों १:१३-१४ में बाइबल कहती है कि हम पर पवित्र आत्मा की छाप लगी है और वह बयाना देता है, जिससे हम छुटकारे के दिन में सुरक्षित पहुँच सकें, विनाश से बचे रहें और पाप और उसके सारे प्रभाव से छुटकारा पायें। इस अद्‌भुत विषय में जरा सोचें - कि पवित्र आत्मा हमारे अदंर वास करता है, हमें हमारे अंतिम विश्राम स्थान तक पहुँचाकर बचाये रखने के लिये, जो कि कब्रस्थान नहीं है परन्तु स्वर्ग में जो तैयार है (देखें यूहन्ना १४:२)।

जैसे मैं इस पुस्तक को अंतिम चरण में पहुँच रही हूँ, मैं चकित और आश्चर्य होकर सोचती हूँ कि पवित्र आत्मा की यह ठहरने वाली बड़ी आशीष है। वह हमें बड़े कार्यों को करने के लिये प्रेरित करता है। वह हमारे हर कार्यो में अपनी सामर्थ के द्वारा से सुसज्जित करता है। वह हमारे साथ निकट संगति में रहता है, और न कभी छोड़ता है और न त्यागता है।

जरा इस विषय में सोंचें - कि यदि आप और मैं यीशु मसीह के विश्वासी हैं, तो हम परमेश्वर के पवित्र आत्मा का घर हैं! हमें इस सच्चाई पर बारंबार मनन तब तक करना चाहिये जब तक यह हमारे जीवन में हकीकत बन न जाये। यदि हम ऐसा करेंगे, तो हम कभी भी असहाय, आशाहीन या सामर्थहीन नहीं होंगे, क्योंकि उसने हमसे प्रतिज्ञा की है कि वह हमें सामर्थ और अधिकार दे। हम कभी भी मित्र हीन, या दिशाहीन नहीं रहेंगे, क्योंकि उसने प्रतिज्ञा की है वह हमारी अगुवाई करे एवं हमारे साथ चले।

मैं आपके साथ इन बातों को बांटते हुए बहुत ही उत्तेजित हूँ कि मैं इस योग्य हो सकी, और मैं ईमानदारीपूर्वक प्रार्थना करती हूँ कि जो बातें मैं आपके साथ बाँट रही हूँ वह आपके हृदय को खोल रहा है जो कि सबसे अदभुत है।

पौलुस ने अपने जवान चेला तीमुथियुस को लिखा; "और पवित्र आत्मा के द्वारा (सहायता से) जो हममें बसा हुआ है, इस (बड़ी देखभाल के साथ) अच्छी खातीर (सच्चाई) की रखवाली (तू) कर।" (२ तीमुथियुस १:१४)

इस सच्चाई जिसके बारे में मैं आपको बताते आई हूँ यह बहुत ही कीमती है. मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि इसकी आप रखवाली करें, जिससे आप अपने हृदय में इसे रख सकें। यह आपके हाथ से जाने न पाये। चूंकि आप यीशु मसीह में एक विश्वासी हैं, अतः पवित्र आत्मा आपके अंदर न केवल आपकी मदद प्रकाशन को बनाये रखने में करता है, परन्तु इसके अलावा कई और बातों में करता है। उसे सराहें, उसका आदर करें, प्रेम करें और उसकी आराधना करें। वह बहुत अच्छा है, बहुत दयालु है, बहुत अनोखा है। वह अद्‌भुत है!

त्रिएक

> और गवाही देने वाले तीन हैं, पिता, वचन और पवित्र आत्मा; और ये तीनों एक हैं। (१ यूहन्ना ५:७)

इससे पहले मैं इस पुस्तक को लिखना समाप्त करुँ, मैं फिर से पवित्र त्रिएक के बारे में बता दू; पिता पुत्र और पवित्र आत्मा। जैसे मैंनें कहा है कि ये तीन है, और फिर भी वे एक हैं। इसमें गुणा भाग करने वाली बात नहीं है, फिर भी यह पवित्र शास्त के अनुसार सत्य है। पवित्र आत्मा हमारे अंदर रहने के द्वारा से, पिता और पुत्र भी हमारे अंदर रहते हैं। ओह, यह सबसे अदभुत है।

यह समझाने के लिये बहुत ही अनोखा है। हमें इसे ऐसे ही विश्वास कर लेना चाहिये। इसे समझने की कोशिश न करें। जैसे बाइबल कहती है वैसे ही एक बालक की तरह विश्वास कीजिये। सम्पूर्ण परमेश्वर-पिता,पुत्र और पवित्र आत्मा-आपके और मेरे और नया जन्म पाये हुए विश्वासी, जिनहोंने वास्तव में यीशु मसीह को अपना प्रभु और मुक्तिदाता ग्रहण कर लिया है, उनके अंदर रहते हैं। (देखें कुलुस्सियों २:९-१०)

यह सच्चाई हमें बुलंद, निडर और आक्रामक बनाये जिससे हम हर प्रकार से संतुलित हो जायें। हमें विश्वास करना चाहिये ताकि जो योजना परमेश्वर ने हमारे जीवन के लिये तैयार की है उस भाग के अनुसार हम आवश्यकता के अनुसार कार्य कर सकें क्योंकि पवित्र त्रिएक हमें लैस करते हैं। वह हमारे प्रतिदिन का मन्ना है, हमारे जीवन का भाग है (देखें भजन संहिता ११९:५७)। उसके साथ, हमारी हर आवश्यकता और उससे बढ़कर पूरी की जाती है।

मरकुस १०:२७ कहती है कि मनुष्यों से सब कुछ असंभव है, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ संभव है। जीवन में आगे बढ़ते जाइये और एक सकारात्मक व्यवहार के साथ बढ़िये, यह निश्चयता के साथ की परमेश्वर आपके साथ है और आपके लिये है। वह आपकी ओर है, और चूंकि ऐसा ही है, इसलिये परवाह करने की कोई बात नहीं कि कौन और क्या हमारे विरुद्ध खड़े हो जायें (देखें रोमियों ८:३१)। आप जयवंत से भी बढ़कर है, मसीह के द्वारा से जो आपसे प्रेम करता है रोमियों (देखे ८:३७) और जो आपके अन्दर वह उससे जो इस संसार में है उससे महान है (देखें १ यूहन्ना ४:४) और जो महान आपके अंदर रहता है वह चाहता है कि आप उसकी पवित्र आत्मा के द्वारा से उसे घनिष्ठता से जाने!

यह पूरी तरह से अनोखा है। परमेश्वर में मसीह के द्वारा से विश्वास करने के कारण से, आप परमेश्वर के घर हैं। इन शिक्षाओं से आपकी आत्मा को शान्ति मिले। इस समय में मैं आपको बड़ी राहत की साँस लेते हुए सुन सकती हूँ। मैं आपको अपने हाथों को उठाकर जोर से कहते हुए देख सकती हूँ, *"पिता, आपका धन्यवाद, आपकी पवित्र आत्मा के लिये! मैं बहुत ही आभारी हूँ कि आप मुझ मे रहते हैं।"*

सारांश : वेदना निवारक रहस्य

परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा (सत्य को देने वाला आत्मा) आएगा, तो तुम्हें सब सत्य (संपूर्ण, पूरा सत्य) का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा (अपने अधिकार से), परन्तु जो कुछ सुनेगा (पिता की ओर से, वह उसी संदेश को देगा जिसे उसे दिया गया है) वही कहेगा, और आने वाली (भविष्य में घटने वाली) बातें तुम्हें बताएगा। (यूहन्ना १६:१३)

मैं आपको बता नहीं सकती हूँ कि मैं कितनी आत्मविभोर हो चुकी थी जब मैं पहली बार पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व और कार्यों के विषय में पढ़ी थी। यह खोज लेना कि परमेश्वर मेरा पिता है, और यीशु मेरा उद्धारकर्त्ता है, उससे बढ़कर यह मुझे सबसे अद्भुत प्रकाशन लगा जिसे मैं प्राप्त की थी।

जैसे हमने देखा है, कि हम मसीही लोग त्रिएक परमेश्वर की सेवा करते हैं, और परमेश्वर (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) जिसे हम त्रिएक कहते हैं। सामान्य तौर से आज लोग परमेश्वर के एक व्यक्तित्व के प्रकाशन से जाते हैं; और यह पवित्र आत्मा का प्रकाशन है जिससे वे वंचित रह जाते हैं। क्यों? क्योंकि शैतान बहुत ही परिश्रम कर रहा है और हमें निश्चयत दिलाता है कि आज पवित्र आत्मा के द्वारा से जो सब सामर्थ उपलब्ध है उसके बारें में हम कुछ नहीं जानते हैं।

इस पुस्तक का संपूर्ण उद्देश्य यही है - कि लोग जाने कि किस प्रकार से पवित्र आत्मा की सामर्थ को प्राप्त करें जो आज हमारे लिये उपलब्ध है।

मैंने पवित्र आत्मा के सच्चे स्वभाव और अदभुत सेवकाई जो लोगों के जीवन में हुए उसे प्रगट करने का प्रयास किया है। मैं आपको प्रोत्साहित करूँगी कि उसके बारे जितना सीख सकते सब कुछ सीखना जारी रखें। उसे अपनापन महसुस करने दीजिये और उस तरीके से जीवन यापन करना सीख लीजिये कि

उसे अपने घर में कभी भी असुविधा न हो। अपने जीवन के हर मोड़ पर उसका स्वागत करें। प्रतिदिन उसकी सेवकाई की ओर खींचे चले आयें जो आपके लिये तैयार उपलब्ध है। उसकी इच्छा यही है कि वह आपका सहायक बना रहे।

आप अकेले संघर्ष न करें क्योंकि आपके पास एक अलौकिक सहायक खड़ा हुआ इंतजार कर रहा है आपके आमंत्रण के लिये जिससे वह आपकी सहायता करे। वर्तमान में पवित्र आत्मा की सेवकाई का जो प्रकाशन है यह आपकी वेदना का निवारक बने इसलिये कि आप अपने ही तरीके से कोशिश कर रहे हैं। जब आप उसे अपने जीवन पर नियंत्रण करने देंगे, वह आपकी अगुवाई परमेश्वर की सिद्ध इच्छा में करेगा, जहां पर आप बहुतायत, भरपूर आशीष, शांति, आनंद और एक बड़ी निकटता और परमेश्वर की घनिष्ठता का अनुभव करेंगे।

लेखक के बारे में

जॉयस मेयर विश्व की एक प्रसिद्ध बाइबल शिक्षिका है। नीयोर्क टाइम्स के अत्यधिक बिकने वाले लेखक में से वे अस्सी से भी अधिक प्रेरणदायी पुस्तकों की सबसे उत्तम बिकने वाली लेखिका है। जैसे कि *Battlefield of the Mind* की लेखिका है। उन्होंने हजारों शिक्षा देनेवाली कैसेट तथा एक पूर्ण विडियो लाईब्रेरी प्रदान की है। जॉयस के *एंजॉयिंग एवरी डे लाइफ* रेडियो तथा टेलीज़िन कार्यक्रम संपूर्ण विश्व में प्रसारित किये जाते हैं और वे सम्मेलन आयोजित करने के लिये बहुत यात्रा करती रहती है। जॉयस और उनके पति डेव चार वयस्क बच्चोदं के मासा पिता हैं और सेंट लूईस, मिसूरी में रहते हैं।

Other Books By Joyce Meyer

Books Available In English

A Celebration of Simplicity
Approval Addiction
Battlefield of the Mind - KIDS
Battlefield of the Mind - TEENS
Battlefield of the Mind Devotional
Be Anxious for Nothing
Be Healed in Jesus Name
Beauty for Ashes
Do it Afraid
Don't Dread
Eat and Stay Thin
Enjoy where you are on the way….
Expect a move of God Suddenly
Filled with the Holy Spirit
Healing the Brokenhearted
Help Me! I'm Married
Help Me, I'm Afraid
How To Succeed At Being Your Self
I Dare you
If not for the Grace of God
In Pursuit of PEACE
Knowing God Intimately
Life in the Word - Devotional
Life in the Word - Journal
Life in the Word - Quotes
Look Great Feel Great
Managing Your Emotions
Me and My Big Mouth
Never Lose Heart

Nuggets of Life

PEACE

The Penny

Power of Simple Prayer

Prepare to Prosper

Reduce Me To Love

Secrets to Exceptional Living

Seven Things That Steal Your Joy

Teenagers Are People Too

Tell them I love Them

The Confident Woman

The Every Day Life BIBLE

The Joy of Believing Prayer

The Secret To True Happiness

The Love Revolution

When God When

Why God Why

Woman to Woman

Books Available In Hindi

A Leader in the Making

Battle Field Of The Mind - Devotional

Battlefield of the Mind

Beauty For Ashes

Reduce Me To Love

Secrets To Exceptional Living

The Battle Belongs To The Lord

The Power of Simple Prayer

The Secret Power of Speaking God's Word

The Love Revolution

To contact the author in the United States, please write:

Joyce Meyer Ministries
P.O. Box 655,
Fenton, Missouri 63026
or call: (636) 349-0303
or log on to: www.joycemeyer.org

To contact the author in India, please write:

Joyce Meyer Ministries
Nanakramguda,
Hyderabad - 500 008
or call: 2300 6777
or log on to: www.jmmindia.org